दास्तान -ए- नसरुद्दीन

पापुल्स पब्लिशिंग हाउस लि.

दास्तान
-ए-
नसरुद्दीन

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, लि.

मुलाक़ात

दास्तान-ए-नसरुद्दीन !

किताब का नाम पढ़ते ही आप पूछ बैठेंगे
नसरुद्दीन ? मैं तो उसे जानता नहीं !"

तो आइए, ख़ोजा नसरुद्दीन से आपकी
करा दें।

ख़ोजा नसरुद्दीन (बुख़ारा से यहां तक
पहुंचते ही शायद यह नाम 'ख्वाजा नस
'ख़ोजा नसरुद्दीन' हो गया हो) बुख़ारा
बाशिंदा था। उसके ख़यालात, जो दहकती
मानिन्द पाक थे, न मालूम क्यों बुख़ारा के प
को ख़तरनाक लगते थे। वह उसे आवारा, फ़
फ़साद फैलाने वाला, न जाने क्या-क्या स
उनके चंगुल से बचकर ख़ोजा नसरुद्दीन
भाग निकला। लेकिन अमीर ने उसके बाग़-
तहस-नहस करवा दिया और उसके रिश्तेदा
के घाट उतार दिया।

दस साल तक बग़दाद, तेहरान, बख़्शी
दूसरे शहरों में भटकते रहने के बाद यही
रुद्दीन अपने पाक वतन बुख़ारा लौटता
साथ कोई है तो सिर्फ़ उसका गधा—उसका
वफ़ादार साथी, जो अपने मालिक के मिज़ा
तरीक़ों से वाक़िफ़ है, जो दुनिया में सबसे
शरारती गधा है।

ख़ोजा नसरुद्दीन के बुख़ारा में क़दम
अजीबोग़रीब वाक़यात शुरू हो जाते हैं।

शहर के फाटक पर वह शहर में दाख़ि
टैक्स, मेहमान टैक्स, तिजारत टैक्स व

है। मस्जिदों की आराइश के लिए अतिया भी अदा कर चुका हूँ। लेकिन टैक्स अफसर पूछता है :

"तुम्हारे उस गधे का टैक्स कौन अदा करेगा? अगर तुम अपने रिश्तेदारों से मिलने आये हो तो तुम्हारा गधा भी अपने रिश्तेदारों से मिलेगा ही!"

"आप बजा फरमाते हैं," ख्वाजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया, "वाकई, मेरे गधे के रिश्तेदारों की बुखारा में कमी नहीं है; वर्ना तो जिस ढंग से यहां काम चल रहा है, आपके अमीर बहुत पहले ही तख्त से धकेल दिये गये होते और मेरे बहुत काबिल हुजूर आप, अपने लालच के लिए, न जाने कब के फांसी पर लटक गये होते।"

अजीबोगरीब वाकयात की धुंध में से ख्वाजा नसरुद्दीन की अजीम शख्सियत साफ उभरती है। नये अमीर ने जैसे ही बुखारा में उसके आने की खबर सुनी वह चौंक कर तख्त पर सीधे बैठ गये, मानो किसी ने उनके कांटा चुभा दिया हो। वह बोले :

"...कुछ ही दिन पहले बगदाद के खलीफा ने मुझे लिखा था कि उन्होंने उसका सिर कलम करवा दिया है। तुर्की के सुलतान ने लिखा था कि उन्होंने उसे सूली पर लटकवा दिया है। ईरान के शाह ने खुद अपने हाथ से मुझे लिखा था कि उन्होंने उसे फांसी दे दी है...। यह ख्वाजा नसरुद्दीन, उस पर लानत, इतने बादशाहों के हाथों से कैसे बेदाग बचकर निकल सकता है?"

बेशक, ख्वाजा नसरुद्दीन में कुछ ऐसी ही सिफत थी जिससे वह हर बार बच निकलता था।

बुखारा पहुंचते ही वह वहां के गरीब बाशिंदे—भिश्तियों, कुम्हारों, ठठेरों, लुहारों, वगैरा—का सच्चा दोस्त और मददगार बन जाता है। उसके नाम से बुखारा का वजीर बौखलाया रहता है क्योंकि ख्वाजा नसरुद्दीन ने मजहब के नाम पर लूट बन्द करा दी। उसके नाम से सूदखोर/जाबर को सांप सूंघ

है क्योंकि ख्वाजा नसरुद्दीन ने गरीबों को

उस लुटेरे की चालों से होशियार कर दिया। सोचकर रूफिया को उसके नाम से भय आ जाता है क्योंकि . . . ।

और आफताब-ए-जहां खुद अमीर!

हां, इस सिलसिले में एक नाम और आता है—गुलजान। यह हसीन दोशीजा खोजा नसरुद्दीन की होने वाली दुल्हिन थी, जिसे नापाक इरादे से अमीर ने अपने हरम में कैद कर लिया था। मगर, वाह रे खोजा नसरुद्दीन। खैर, आप खुद पढ़ लेंगे . . . ।

बेशक, अमीर-उमरा, रईस, मुल्ला, सूदखोर—गरीबों को ठगने और लूटने वाले—सभी खोजा नसरुद्दीन से नफरत करते थे। इसकी वजह भी थी। खोजा नसरुद्दीन आदमी ही दूसरी किस्म का था :

"उसके ख्यालात की दुनिया ऐसी थी जहां इन्सान भाई-भाई की तरह रहें, जहां लालच, हसद, दंगा और गुस्से का नाम न हो, जहां सब एक-दूसरे की वक्त पर मदद करें . . . ।" उसकी जिन्दगी के दो पहलू थे : एक वह जो तीखा था, जहर में बुझा हुआ—लुटेरों व बदमाशों के लिए; दूसरा वह जो नर्म व मुलायम था—सभी भले व नेक इन्सानों के लिए।

लेकिन शायद अब आप हमसे नाराज हो चले होंगे क्योंकि हम आपका ज्यादा वक्त ले रहे हैं। लेकिन, चन्द मिनट और। बस, बहुत थोड़े।

"दास्तान-ए-नसरुद्दीन" किताब का तर्जुमा अंग्रेजी से किया गया है। हमें यकीन है कि इसमें आपको दास्तान का रस मिलेगा। किताब में उर्दू अल्फाज के नीचे नुक्ते नहीं हैं। आप इससे बहुत नाराज न हों। किताब नागरी लिपि में है, हिन्दी में है, लेकिन है दास्तान। बस इतनी सी बात ध्यान में रखिए।

लीजिए, अब खुद ही दास्तान [illegible]

मैं बोला नसरुद्दीन मियां!
आवारा हमेशा रहा किया!
यह झूठ न कोई बकता हूँ!
मैं कभी नहीं मर सकता हूँ!
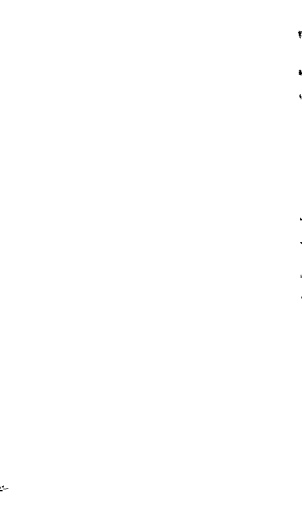
"..यह कहानी हमने अबूअम्र-अहमद-इब्न-मुहम्मद से सुनी, जिन्होंने इसे मुहम्मद-इब्न-अली-इब्न-रिफ़ा से सुना, जिन्होंने इसे अली-इब्न-अब्दुल-अजीज से सुना, जिन्होंने अबू-उबैद-अल-कासिम-इब्नसलाम का हवाला दिया, जिन्होंने इसे अपने बुजुर्ग उस्तादों के मुंह से सुना और आखिरी उस्ताद ने सबूत में उमर-इब्न-अल-खत्ताब व उनके बेटे अब्दुल्ला—अल्लाह उन पर करम करे—का जिक्र किया.."

इब्नहज्म—"बतख का हार"

मैं यह किताब अपने दोस्त मोमिन आदिलोव की, जो १८ अप्रैल सन् १९३० को एक कायर की गोली का शिकार बने, पाक याद को भेंट करता हूं।

उनमें खोजा नसरुद्दीन के कई हुनर थे—जनता की सच्ची सेवा, हिम्मत, आला समझ और ईमानदारी की चतुराई। जब मैं यह किताब लिख रहा था, कई बार, रात के सन्नाटे में मुझे लगा कि उनका साया मेरे साथ है और मेरी कलम को मदद पहुंचा रहा है।

वह पहाड़ के एक गांव—नाने—में मरे और कनीबादम में उनकी कब्र है। कुछ दिन पहले मैं वहां गया था। बसन्त की घास और फूल मिट्टी के उस ढेर पर उग रहे थे और बच्चे वहां खेल रहे थे; और वह हमेशा की गहरी नींद में सोये हुए थे—उन्होंने मेरे दिल की आवाज नहीं सुनी...

—लि. सो.

फिलमिलदार झरोखे से आसमान में रोशनी की एक किरन दिखायी देती, सितारे धुंधले हो जाते, सुबह होने की खबर देने वाली हवा हौले से नम सब्ज़े में सरसराने लगती और खिड़कियों पर जगली चिड़ियां चहचहाने और चोंच से अपने पर सवारने लगतीं। अलसायी आंखों वाली सुन्दरी का मुंह चूमता हुआ ख्वाजा नसरुद्दीन कहता :

"वक्त हो गया। अलविदा, ऐ मेरी दिलबर, भूल न जाना मुझे।"

"अभी रुको!" अपनी सलोनी बांहें उसकी गरदन में डालकर वह कहती, "क्या तुम हमेशा के लिए जा रहे हो? सुनो, आज रात को जैसे ही अंधेरा होगा, तुम्हें बुलाने के लिए मैं बुढ़िया को फिर भेज दूंगी।"

"नहीं। एक ही मकान में दो रातें गुजारना क्या होता है, यह मैं एक अरसे से भूल चुका हूं। मुझे अपनी राह लगने दो। देर हो रही है मुझे।"

"अपनी राह? किसी और शहर में तुम्हें कोई जरूरी काम है क्या? तुम जा कहां रहे हो?"

"मुझे नहीं मालूम। लेकिन उजाला हो चुका है: शहर के फाटक खुल गये हैं और पहले कारवां रवाना हो रहे हैं। ऊंटों की घंटियों की रुनझुन सुन रही हो न? इसे सुनते ही मुझे लगता है कि जिन मेरे पैरों में समा गये हैं और मैं रुक नहीं सकता।"

"तो, जाओ!" अपनी लम्बी पलकों में आंसू छिपाने की नाकाम कोशिश करती हुई वह नाजनीने हरम नाराजगी से कहती। "लेकिन सुनो तो! जाने से पहले अपना नाम तो मुझे बता जाओ।"

"मेरा नाम? तो सुनो: तुमने यह रात ख्वाजा नसरुद्दीन के साथ बितायी है। मैं हूं ख्वाजा नसरुद्दीन। अमन में खलल डालने वाला और फूट और फसाद फैलाने वाला। मैं वही हूं जिसका सिर काटने वाले को भारी इनाम देने का ऐलान किया गया है;

झिलमिलदार झरोखे से आसमान में रोशनी की एक किरन दिखायी देती, सितारे धुंधले हो जाते, सुबह होने की खबर देने वाली हवा हौले से नम सब्ज़े में सरसराने लगती और खिड़कियों पर जंगली चिड़ियां चहचहाने और चोंच से अपने पर सवारने लगतीं। अलसायी आंखों वाली सुन्दरी का मुंह चूमता हुआ ख्वाजा नसरुद्दीन कहता :

"वक्त हो गया। अलविदा, ऐ मेरी दिलबर, भूल न जाना मुझे।"

"अभी रुको!" अपनी सलोनी बाहें उसकी गरदन में डालकर वह कहती, "क्या तुम हमेशा के लिए जा रहे हो? सुनो, आज रात को जैसे ही अंधेरा होगा, तुम्हें बुलाने के लिए मैं बुढ़िया को फिर भेज दूंगी।"

"नहीं। एक ही मकान में दो रातें गुज़ारना क्या होता है, यह मैं एक अरसे से भूल चुका हूं। मुझे अपनी राह लगने दो। देर हो रही है मुझे।"

"अपनी राह? किसी और शहर में तुम्हें कोई ज़रूरी काम है क्या? तुम जा कहां रहे हो?"

"मुझे नहीं मालूम। लेकिन उजाला हो चुका है; शहर के फाटक खुल गये हैं और पहले कारवां रवाना हो रहे हैं। ऊंटों की घंटियों की रुनझुन सुन रही हो न? इसे सुनते ही मुझे लगता है कि जिन मेरे पैरों में समा गये हैं और मैं रुक नहीं सकता।"

"तो, जाओ!" अपनी लम्बी पलकों में आंसू छिपाने की नाकाम कोशिश करती हुई वह नाज़नीन हरम नाराजगी से कहती। "लेकिन सुनो तो! जाने से पहले अपना नाम तो मुझे बता जाओ।"

"मेरा नाम? तो सुनो, तुमने यह रात ख्वाजा नसरुद्दीन के साथ बितायी है। मैं हूं ख्वाजा नसरुद्दीन। अमन में खलल डालने वाला और फूट और फसाद फैलाने वाला। मैं वही हूं जिसका सिर काटने वाले को भारी इनाम देने का ऐलान किया गया है;

हर दिन नकीबची बाजारों और आम जगहों पर इसका ढिंढोरा पीटते हैं। कल तो वे लोग मुझे पकड़नेवाले को तीन हजार तुमान देने का लालच दे रहे थे। मेरा मन हुआ कि इतनी अच्छी कीमत पर मैं खुद ही अपना सिर दे दूं। तू हंसती है, मेरी नन्हीं बुलबुल? अच्छा, तो ला, आखिरी बार अपने होंठ चूम लेने दे। मेरा दिल तो चाहता है कि तुझे कोई जमर्रुद दूं, लेकिन वह मेरे पास है नहीं। ले, मैं यह सफेद पत्थर का टुकड़ा दे रहा हूं, जिसको देखकर तू मुझे याद किया करे।"

वह अपनी फटी खलअत पहनता जो अलाव की चिनगारियों से कई जगह जल चुकी थी और चुपचाप बाहर हो जाता। दरवाजे पर महल के समस्त कीमती खजाने का रखवाला, काहिल और बेवकूफ ख्वाजा साफा बांधे और सामने की ओर ऊपर को मुड़ी मुलायम जूतियां पहने खर्राटे लेता रहता। आगे गलीचों व दरियों पर नंगी तलवारों का तकिया बनाये पहरेदार लम्बे पड़े होते। ख्वाजा नसरुद्दीन पंजों के बल चुपचाप निकल जाता—हमेशा सहीसलामत, मानो इस वक्त वह दूसरों की नजरों से छूमन्तर हो गया हो।

और पथरीली सड़क फिर एक बार उसके गधे के तेज खुरों से गूंजने लगती और धूआं उड़ाने लगती। नीले आसमान का सूरज दुनिया पर चमकता। ख्वाजा नसरुद्दीन बिना आंखें झपकाये उसकी ओर देखता। ओस से नम खेत और ऊसर रेगिस्तान—जहां रेत की आंधियों से सफेद हुई ऊंटों की हड्डियां पड़ी होतीं—हरे-भरे बाग और उफनती नदियां, नंगी बंजर पहाड़ियां और हंसते मुस्कराते चरागाह ख्वाजा नसरुद्दीन के गीतों से गूंज उठते। अपने गधे पर सवार, पीछे मुड़कर एक बार भी देखे बिना, गुजरी बातों के लिए किसी भी कसक के बिना और आगे आने वाली मुसीबतों के लिए किसी डर के बिना, वह आगे बढ़ता जाता।

पर जो कस्बा वह अभी-अभी छोड़कर आया है उसकी याद हमेशा ताजा रहेगी। मुल्ला और उमरा उसका नाम सुनते ही गुस्से से लाल-पीले होने लगते। भिश्ती, गाड़ीवान, बुनकर, ठठेरे और जीनसाज रात को चाय-खानों में इकट्ठे होकर उसकी वीरता की कहानियां कह-कर अपना मनोरंजन करते और ये कहानियां खत्म होने तक हमेशा उसके माफिक बन जातीं। हरम की अल-सायी हुई सुन्दरी बार-बार सफेद पत्थर के टुकड़े को देखती और अपने शौहर के कदमों की आवाज सुनते ही जल्दी से उसे सीप की पिटारी में छिपा लेती।

जरबफ्त की खलअत को उतारता हुआ, हाफता-कांखता मोटा अमीर कहता—"ओफ! इस कम्बख्त, आवारा ख्वाजा नसरुद्दीन ने हम सभी को पस्त कर दिया। उसने तो पूरे मुल्क को उभारकर, गड़बड़ फैला रखी है। आज मुझे मेरे पुराने दोस्त, खुरासान के आला हाकिम का खत मिला। तुम समझती हो न। उनके शहरों में यह आवारा पहुंचा ही था कि यकायक सभी लुहारों ने टैक्स देना बन्द कर दिया और सराय वालों ने बिना दाम लिये सिपाहियों को खाना खिलाने से इनकार कर दिया। और, सबसे बड़ी बात तो यह कि यह चोट्टा, इस्लाम को नापाक करने वाला यह हरामजादा, हाकिम के हरम में घुसने की गुस्ताखी कर बैठा और उनकी सबसे चहेती बीबी को फुसला लिया। सच ही, दुनिया ने ऐसा बदमाश कभी नहीं देखा। अफसोस यही है कि यह दो कौड़ी का भिखमंगा मेरे हरम में घुसने की कोशिश करने नहीं आया, नहीं तो उसका सिर बाजार के चौराहे पर सूली पर लटका दिखायी देता।"

नाजनी, अपने आप मुस्कराती हुई, मौन रहती। और, इस बीच ख्वाजा नसरुद्दीन के गानों और उसके गधे के तेज खुरों से सड़क गूंजा करती और धूंआ उड़ा करता।

इन दस सालों में वह हर जगह से आया था : बगदाद और इस्ताम्बूल, तेहरान, बग्दी सराय, तिफ्लिस, दमिश्क, तबरेज और अखमेज। इन सभी शहरों से वह वाकिफ था और इनके अलावा और भी बहुत से शहरों से। और हर जगह वह अपनी कभी न भुलायी जा सकने वाली याद छोड़ आता। और अब वह अपने वतन, अपने शहर बुखारा शरीफ लौट रहा था—पाक बुखारा, जहां वह नाम बदलकर कुछ दिन अपनी भटकन से छुट्टी पाकर आराम करना चाहता था।

व्यापारियों के एक काफिले के साथ, जिसके पीछे वह लग लिया था, उसने बुखारा की सरहद पार की। सफर के आठवें दिन, दूर गर्द के धुन्ध में, इस बड़े और मशहूर शहर की ऊंची मीनारें दिखीं।

प्यास और गर्मी से पस्त ऊंटवालों ने फटे गलों से आवाज लगायी और ऊंट और तेजी से आगे बढ़ चले। सूरज डूब रहा था। शहर के फाटक बन्द होने से पहले बुखारा में दाखिल होने के लिए जल्दी करने की जरूरत थी। ख्वाजा नसरुद्दीन कारवां में सबसे पीछे था—गर्द के मोटे और भारी बादल में लिपटा हुआ। यह उसके अपने वतन की पाक गर्द थी जिसकी खुशबू उसे दूर देशों की मिट्टी से ज्यादा अच्छी लग रही थी। छींकता, खांसता, वह बराबर अपने गधे से कहता जाता—"ले! अच्छा ले! हम लोग आ ही पहुंचे। आखिर अपने वतन आ ही गये। इंशा अल्लाह, कामयाबी और मसर्रत यहां हमारा इन्तजार कर रही है।"

कारवां शहर की चहारदीवारी तक पहुंचा तो पहरेदार फाटक बन्द कर रहे थे।

"खुदा के वास्ते हमारा इन्तजार करो!" कारवां का सरदार दूर से सोने का सिक्का दिखाते हुए चिल्लाया।

लेकिन तब तक फाटक बन्द हो गये। झनझनाहट के साथ सांकलें लग गयीं। ऊपर बुर्जियों पर लगी तोपों के पास पहरेदार तैनात हो गये। ताजा हवा

ल निकली। धुन्ध-भरे आसमान में गुलाबी रोशनी
तम हो गयी। नया, नाजुक दूज का चांद आसमान
 झांकने लगा। झुटपुटे की खामोशी में अनगिनत
नारों से, मुसलमानों को शाम की इबादत के लिए
लाती हुई मुअज्जिनों की तीखी, उदास, ऊंची आवाजें
रती हुई आने लगीं।

जैसे ही व्यापारी और ऊंट वाले नमाज के लिए
रोजानू हुए, ख्वाजा नसरुद्दीन अपने गधे के साथ
एक तरफ को खिसक लिया।

"इन ताजिरों के पास तो कुछ है जिसके लिए वे
खुदा का शुक्र करें," वह बोला, "शाम का खाना ये
लोग खा चुके हैं और अभी ब्यालू करेंगे। ऐ मेरे
वफादार गधे! तू और मैं अभी भूखे हैं। न शाम
का खाना मिला है, न रात का मिलेगा। अगर
अल्लाह हमारा शुक्रिया चाहता है, तो मेरे लिए पुलाव
की रकाबी और तेरे लिए एक गट्ठर तिपतिया घास
भेज दे!"

गधे को उसने सड़क के किनारे एक पेड़ से बांधा
और पास ही एक पत्थर का तकिया लगाकर नंगी
जमीन पर पड़ रहा। ऊपर साफ़-साफ़ आसमान में
सितारों के चमकते हुए जाल को देखने लगा। तारों
के हर झुण्ड को वह पहचानता था। इन दसों सालों में
उसने न जाने कितनी बार इस तरह खुले आसमान
को ताका था। हमेशा उसे यही लगता था कि रातों
के खामोश और पाक-साफ दुआ के घंटे उसे सबसे बड़े
दौलतमन्दों से भी ज्यादा दौलतमन्द बना देते थे,
क्योंकि दुनिया में हर एक की अपनी-अपनी किस्मत
होती है। रईस भले ही सोने की थाली में खाना
खायें, पर वे अपनी रातें छत के नीचे गुजारने को ही
मजबूर होते हैं और इस तरह सर्द, नीले, तारों भरे
कुहासे में आधी रात के सन्नाटे में इस दुनिया की

उड़ान के ख्याल को महसूस करने से महरूम रह जाते हैं।

इस बीच शहर की उस चहारदीवारी के बाहर, जिस पर तोपें चढ़ी हुई थीं, चायखानों और सरायों में, जो पिचपिच बने हुए थे, बड़े-बड़े कड़ाहों के नीचे आग जल चुकी थी और जिबह होने के लिए ले जायी जाने वाली भेड़ों ने दर्दनाक आवाज में मिमियाना शुरू कर दिया था। तजुरबे से होशियार हुए ख्वाजा नसरुद्दीन ने रात भर के अपने आराम के लिए हवा के रुख के खिलाफ जगह तलाश की थी ताकि खाने की ललचाने वाली महक रात में उसे परेशान न करे। बुखारा के रिवाजों की पूरी जानकारी होने के कारण उसने अगले दिन शहर के फाटक पर चुंगी अदा करने के लिए अपनी रकम का आखिरी हिस्सा भी बचा रखा था।

बहुत देर तक वह करवटें बदलता रहा, पर उसे नींद न आयी। नींद न आने की वजह भूख नहीं, बल्कि वे कड़ुवे विचार थे जो उसे सता रहे थे।

उसे अपने वतन से मुहब्बत थी। धूप से तपे, तांबे के रंग के चेहरे पर छोटी सी काली दाढ़ी और साफ आंखों में एक शैतान चमक वाले इस चालाक और खुशमिजाज इन्सान को सबसे ज्यादा मुहब्बत थी अपने वतन से। और फटा पैबन्द लगा कोट, तेल से भरा कुलाह और टूटे जूते पहने वह बुखारा से जितनी ज्यादा दूरी पर होता उतनी ही ज्यादा मुहब्बत अपने वतन के लिए उसके दिल में उमड़ती और उतनी ही ज्यादा उसकी याद सताती। अपनी जलावतनी में उसे बुखारा की उन तंग गलियों की याद आती जो इतनी पतली थीं कि आराबा (एक तरह की गाड़ी) दोनों तरफ की कच्ची दीवारों को रगड़ कर ही निकल पाता, उन ऊंची मीनारों की याद आती जिनके रोगनदार ईंटों वाले नक्काशीदार गुम्बदों

पर सूरज निकलने और डूबने के वक्त लाल रोशनी पैर टिकाती थी; उन पुराने और पाक दरख्तों की याद आती जिनकी शाखों पर सारस के घोसले के काले बोझ झूलते रहते थे।

नहरों के किनारे के चायखाने, जिन पर सरसराते हुए चिनारों का साया था, नानबाइयों की बेहद गर्म दूकानों से निकलता हुआ धुआं और खाने की खुशबू, बाजारों के तरह-तरह के शोरगुल उसे याद आते। उसे अपने वतन के झरने और पहाड़ियां याद आतीं। खेत, चरागाह, गांव, रेगिस्तान याद आते। बगदाद या दमिश्क में अपने हमवतन लोगों को वह उनकी पोशाक या कुलाह की बनावट से पहचान लेता। उस वक्त ख्वाजा नसरुद्दीन का दिल जोर से धड़कने लगता और उसका गला भर आता। जाते वक्त के मुकाबले अपनी वापसी पर उसे अपना मुल्क और भी दुखी लगा। पुराना अमीर बहुत पहले दफन हो चुका था। पिछले आठ साल में नये अमीर ने बुखारा को बरबाद करने में कोई कसर नहीं उठा रखी थी। ख्वाजा नसरुद्दीन ने टूटे हुए पुल, नहरों के धूप से चटकते सूखे तले, गेहूं और जौ के धूप से जले ऊबड़-खाबड़ खेत देखे। घास और कटीली झाड़ियों से खेत बरबाद हो रहे थे। बाग बिना पानी से मुरझा रहे थे। काश्तकारों के पास न मवेशी थे, न रोटी। सड़कों पर कतार बांधे फकीर उन लोगों से भीख मांगा करते थे जो खुद ही रोटी के जरूरतमन्द थे।

नये अमीर ने हर गांव में सिपाहियों की टुकड़ियां भेज रखी थीं और गांव वालों को हिदायत दी थी कि इन सिपाहियों के खाने-पीने की जिम्मेदारी गांव वालों की होगी। उसने बहुत सी मस्जिदों की नींव डाली और फिर गांव वालों से उन्हें पूरा करने को कहा। नया अमीर बड़ा मजहबी था और साल में दो बार लासानी और सबसे ज्यादा पाक शेख बहाउद्दीन के मजार

की, जो मुगाहा के नजदीक ही थी, जियारत करने से न चूकता। चार टैक्स, जो पहले से लागू थे, उनमें तीन नये टैक्सों का उसने इजाफा कर दिया था। हर पुल पर उसने चुंगी लगा दी थी। तिजारत पर उसने टैक्स बढ़ा दिया था। कानूनी टैक्स में भी उसने इजाफा कर दिया था और इस तरह बहुत-सी नापाक रकम जमा कर ली थी। दस्तकारियां खत्म हो रही थीं। तिजारत कम होती जा रही थी।

ख्वाजा नसरुद्दीन की वापसी के वक्त उसके वतन में बड़ी उदासी छायी हुई थी।

. . . सबेरे तड़के मुअज्जिनों ने फिर मीनारों से अजान दी। फाटक खुले और कारवां धीरे-धीरे शहर में दाखिल हुआ। घंटियां हौले-हौले बज रही थीं।

फाटक से घुसकर कारवां ठहर गया। सड़क पहरेदारों से घिरी हुई थी। वे बहुत बड़ी तादाद में थे। कुछ ठीक से वर्दी पहने थे और करीने-से थे; कुछ, जिन्हें अमीर की नौकरी में माल काटने का पूरा मौका अभी नहीं मिला था, अधनंगे और नंगे पांव थे। वे चीख-चिल्ला रहे थे और उस लूट के लिए झगड़ व एक-दूसरे को ठेल रहे थे, जो उन्हें अभी मिलने वाली थी। आखिर, एक चायखाने से एक मोटा-ताजा और नींद में भरा टैक्स अफसर निकला। उसकी रेशमी खलअत की आस्तीनों में तेल लगा था। उसके नंगे पांव जूतियों में पड़े थे, उसके मोटे थलथल चेहरे पर अय्याशी और बदकारी के निशान साफ झलक रहे थे। व्यापारियों की ओर उसने ललचायी नजरों से देखा और कहा: "ताजिरो खुशामदीद। अल्लाह करे तुम्हें अपने काम में कामयाबी हासिल हो। तुम्हें मालूम हो कि अमीर का हुक्म है कि जो तिजारी अपने माल का छोटे-से-छोटा हिस्सा भी छिपाने की कोशिश करेगा उसे बेंत लगाकर मार डाला जायेगा।"

परेशान और चौकन्ने व्यापारी चुपचाप अपनी रंगी

हुई दाढ़ियां सहलाते रहे। बेताबी से चहलकदमी करते हुए पहरेदारों की ओर टैक्स-अफसर मुड़ा और अपनी मोटी उंगलियां नचायीं। इशारा पाते ही वे सिपाही चीखते-चिल्लाते हुए ऊंटों पर टूट पड़े। उता-वली में एक-दूसरे पर गिरते-पड़ते, उन्होंने तलवारों से बालों के बने रस्से काट डाले और सामान की गांठें खोल डालीं, जिससे सड़क पर जरबफ्त, रेशम और मखमल के थान, काली मिर्च, चाय, काफूर, गुलाब के कीमती इत्र की शीशियां और तिब्बती दवाओं के डिब्बे बिखर गये।

खौफ और परेशानी से व्यापारियों की जुबान पर मानो ताला पड़ गया।

दो मिनट में जांच पूरी हो गयी। सिपाही अफसर के पीछे कतार बांधकर खड़े हो गये। उनके कोटों की जेबें लूट के माल से फटी जा रही थीं। अब शहर में आने और सामान लाने की टैक्स वसूली शुरू हुई। ख्वाजा नसरुद्दीन के पास तिजारत के लिए कोई सामान था नहीं। उसे शहर में घुसने का ही टैक्स अदा करना था।

अफसर ने पूछा, "तुम कहां से आये हो और तुम्हारे आने का मकसद क्या है?"

मुहर्रिर ने सींग में भरी स्याही में नेजे की कलम डुबोयी और मोटे रजिस्टर पर ख्वाजा नसरुद्दीन का बयान दर्ज करने को तैयार हो गया।

"हुजूर आला! मैं ईरान से आ रहा हूं और यहां बुखारा में मेरे कुछ रिश्तेदार रहते हैं।"

"अच्छा," अफसर ने कहा, "तो तुम अपने रिश्ते-दारों से मिलने आये हो? इस हालत में तुम्हें मिलने वालों का टैक्स अदा करना होगा।"

"पर मैं उनसे मिलूंगा नहीं। मैं तो एक जरूरी काम से आया हूं।" ख्वाजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया।

"काम से आये हो ?" अफसर चिल्लाया और उसकी आंखें चमकने लगीं। "तो तुम रिश्तेदारों से मिलने भी आये हो और काम के लिए भी आये हो। तुम मिलने वालों का टैक्स अदा करो, काम पर लगने वाला टैक्स दो और खुदा की अजमत में बनी मस्जिदों की आराइश के लिए अतिया अदा करो, जिसने रास्ते में डाकुओं से तुम्हारी रक्षा की।"

ख्वाजा नसरुद्दीन ने सोचा, "मैं तो चाहता था कि वह खुदा मेरी इस वक्त हिफाजत करता—डाकुओं से बचने का इन्तजाम तो मैं खुद ही कर लेता।" पर वह खामोश ही रहा, क्योंकि उसने हिसाब लगा लिया था कि इस बातचीत के हर लफ्ज की कीमत उसे दस तंके देकर अदा करनी पड़ रही है। उसने अपना पटका खोला और पहरेदारों की ललचायी, घूरने वाली आंखों के सामने शहर में दाखिल होने का टैक्स, मेहमान टैक्स, तिजारत टैक्स और मस्जिदों की आराइश के लिए अतिया अदा किया। अफसर ने सिपाहियों की ओर घूरा तो वे पीछे हट गये। मुहर्रिर रजिस्टर में नाक गड़ाये नेजे की कलम घसीटता रहा।

टैक्स अदा करने के बाद ख्वाजा नसरुद्दीन रवाना होने ही वाला था कि टैक्स अफसर ने देखा कि उसके पटके में अब भी कुछ सिक्के बाकी हैं।

"ठहरो !" वह चिल्लाया। "तुम्हारे उस गधे का टैक्स कौन अदा करेगा ? अगर तुम अपने रिश्तेदारों से मिलने आये हो, तो तुम्हारा गधा भी अपने रिश्तेदारों से मिलेगा ही।"

अपना पटका एक बार फिर खोलते हुए ख्वाजा नसरुद्दीन ने बहुत नरमी से जवाब दिया : "मेरे दानिशमन्द आका ! आप बजा फरमाते हैं। वाकई, मेरे गधे के रिश्तेदारों की तादाद बुखारा में बहुत बड़ी है: [illegible] ढंग से यहां काम चल रहा है, [illegible] पहले ही तख्त से धकेल दिये गये

होते और मेरे बहुत काबिल हुजूर आप, अपने लालच के लिए, न जाने कब सूली पर चढ़ा दिये गये होते।"

इसके पहले कि अफसर अपने होश दुरुस्त कर पाये, ख्वाजा नसरुद्दीन कूदकर अपने गधे पर सवार हुआ, उसे सरपट भगाया और सबसे नजदीक की गली में गायब हो गया।

वह बराबर कहता जा रहा था : "और तेज। और जल्दी, मेरे वफादार गधे! जल्दी भाग नहीं तो तेरे मालिक को एक टैक्स और अपना सिर देकर अदा करना पड़ेगा।"

ख्वाजा नसरुद्दीन का गधा बहुत होशियार था। हर बात समझता था। उसके लम्बे कानों में शहर के फाटक से आती आवाजें और पहरेदारों की चिल्लाहट पड़ चुकी थीं और वह सड़क की परवाह किये बिना सरपट भागा जा रहा था—इतनी तेज रफ्तार से भाग रहा था वह कि उसके मालिक को अपने पैर ऊंचे उठाने पड़ रहे थे, उसके हाथ गधे की गरदन से लिपटे हुए थे और वह जीन से चिपका हुआ था। भारी आवाज में भौंकते कुत्ते उसके पीछे दौड़ रहे थे, मुर्गियों के चूजे डर से इधर और तितर-बितर होकर भाग रहे थे और सड़क पर चलने वाले लोग दीवारों से चिपटे, अपने सिर हिलाते हुए उसे देख रहे थे।

शहर के फाटकों पर पहरेदार इस हिम्मतवार आजाद खयाल इन्सान की तलाश में भीड़ छान रहे थे। व्यापारी मुस्कराकर एक-दूसरे से फुसफुसा रहे थे :

"यह जवाब तो खुद ख्वाजा नसरुद्दीन के काबिल था।"

दोपहर होते-होते पूरा शहर इस खबर को सुन चुका था। बाजार में व्यापारी अपने ग्राहकों को चुपचाप यह किस्सा सुनाते और वे इसे दूसरों को सुनाते। हर एक हंसता और कहता :

बजार जमीन को लांघता हुआ जा रहा था। ख्वाजा नसरुद्दीन ने उसे रोका।

"अस्सलामालेकुम बुजुर्गवार। अल्लाह आपको सेहत और तरक्की बख्शे। क्या आप मुझे बतायेंगे कि इस जमीन पर किसका मकान था?"

"यह जीनसाज शेर मुहम्मद का घर था," बूढ़े ने जवाब दिया, "मैं उनसे एक जमाने में खूब वाकिफ था। शेर मुहम्मद मशहूर ख्वाजा नसरुद्दीन के वालिद थे और ख्वाजा के बारे में, ऐ मुसाफिर, तुमने जरूर बहुत कुछ सुना होगा।"

"हां, मैंने कुछ सुना तो है। लेकिन आप बतायें कि मशहूर ख्वाजा नसरुद्दीन के वालिद जीनसाज शेर मुहम्मद और उनके घरवाले गये कहां?"

"इतने जोर से बोलो, मेरे बेटे। बुखारा में हजारों जासूस हैं। अगर वे हम लोगों की बातचीत सुन लेंगे तो हमारे लिए परेशानी ही परेशानी रह जायगी। तुम जरूर कहीं बहुत दूर से आ रहे हो, तभी नहीं जानते कि हमारे शहर में ख्वाजा नसरुद्दीन का नाम लेने की सख्त मुमानियत है। उनका नाम लेना ही जेल में भर दिये जाने के लिए काफी है। आओ, मेरे और नजदीक आ जाओ। मैं तुम्हें बताऊं कि शेर मुहम्मद का क्या हुआ?"

घबराहट और खलबली को छिपाते हुए ख्वाजा नसरुद्दीन बूढ़े के नजदीक आ गया।

बूढ़े ने खांसते हुए कहना शुरू किया : "यह वाकया पुराने अमीर के जमाने का है। ख्वाजा नसरुद्दीन के बुखारा से निकाले जाने के कोई अट्ठारह महीने बाद बाजारों में अफवाह फैली कि वह खुफिया तौर पर, गैर कानूनी ढंग से, फिर लौट आया है और अमीर का मजाक उड़ाने वाले गीत लिख रहा है। अफवाह अमीर के महल तक पहुंची। सिपाहियों ने ख्वाजा नसरुद्दीन की बहुत तलाश की, लेकिन नाकामयाब रहे। अब

अमीर ने उसके वालिद, उसके दो भाई, चाचा व दूर के रिश्तेदारों व दोस्तों को पकड़ लेने का हुक्म जारी किया। उन लोगों को तब तक तकलीफें दी जाने वाली थीं, जब तक वे ख्वाजा नसरुद्दीन का पता न बता दें। अलहम्दुलिल्लाह (अल्लाह का शुक्र है) कि उसने उन लोगों को खामोश रहने की हिम्मत व जब्र दी कि ख्वाजा नसरुद्दीन अमीर के हाथों नहीं पड़ा। पर उसका वालिद जीनसाज शेर मुहम्मद तकलीफों से बीमार पड़ गया और फौरन बाद मर गया। उसके रिश्तेदार और दोस्त अमीर के गुस्से से बचने के लिए बुखारा छोड़कर भाग गये। किसी को मालूम नहीं कि वे अब कहां हैं। अमीर ने उनके मकानों-बगीचों को तहस-नहस और बरबाद करने का हुक्म जारी कर दिया ताकि ख्वाजा नसरुद्दीन की याद भी बाकी न रह जाय।"

"पर उन्हें तकलीफें क्यों दी गयीं?" ख्वाजा नसरुद्दीन ने जोर से पूछा। आंसू उसके गालों पर बह रहे थे लेकिन बूढ़े ने उन्हें नहीं देखा। उसकी निगाह कमजोर थी। "उन्हें सताया क्यों गया? ख्वाजा नसरुद्दीन उस वक्त बुखारा में तो था नहीं। मैं यह बात बखूबी जानता हूं।"

"यह कौन कह सकता है?" बूढ़े ने जवाब दिया। "ख्वाजा नसरुद्दीन जहां जब उसकी मरजी होती है, आता जाता है। हमारा लासानी ख्वाजा नसरुद्दीन हर जगह है और कहीं भी नहीं है!"

यह कहकर बूढ़ा खांसता-कराहता हुआ आगे बढ़ गया। अपना मुंह हाथों में छिपाये, ख्वाजा नसरुद्दीन अपने गधे की तरफ बढ़ा।

गधे की गरदन में बाहें डालकर और अपना भीगा हुआ गाल उसकी गर्म, गंधाती गरदन से सटाते हुए ख्वाजा नसरुद्दीन बोला :

"ऐ मेरे अच्छे, मेरे सच्चे दोस्त! तू देख रहा है

कि मेरे प्यारे लोगों में यहां तेरे सिवा और कोई नहीं बचा। तू ही मेरी आवारागर्दी में मेरा वफादार और बराबर का साथी है।"

गधा मानो अपने मालिक का गम समझ रहा हो। वह बिलकुल चुपचाप खड़ा रहा। झाड़ी की पत्तियां खाना तक उसने छोड़ दिया। वे उसके मुंह से लटकती रह गयीं।

घंटे भर में खोजा नसरुद्दीन अपने गम पर काबू पा चुका था और उसके आंसू उसके चेहरे पर सूख चुके थे।

"कोई बात नहीं!" गधे की पीठ पर धौल जमाते हुए वह चिल्लाया, "कोई फिक्र नहीं! बुखारा में लोग मुझे अब भी याद रखे हैं। लोग मुझे अब भी जानते और याद करते हैं। किसी न किसी तरह हम लोग कुछ दोस्त ढूंढ ही निकालेंगे। और, अमीर के बारे में हम ऐसा गीत बनायेंगे—ऐसा, कि वह गुस्से से अपने तख्त पर ही फट जायगा और उसकी गन्दी आंतें महल की सजी-सजायी दीवारों पर जा पड़ेंगी। चल, मेरे वफादार गधे। आगे बढ़!"

: ४ :
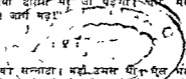
तीसरे पहर का सन्नाटा। बड़ी उमस थी। धूल भरी सड़क। पत्थरों, पक्की दीवारों और बाड़ों से अलसायी-सी गरमी उठ रही थी। इससे पहले कि वह पोंछ सके, खोजा नसरुद्दीन के चेहरे पर पसीना सूख जाता था।

बड़े प्यार से उसने बुखारा की जानी-पहचानी सड़कों, चायखानों और मीनारों को पहचाना। दस साल में बुखारा में कुछ भी नहीं बदला था। हमेशा की तरह कुछ मरगिल्ले कुत्ते अब भी तालाबों के किनारे पड़े सो रहे थे। रंगे हुए नाखूनों वाले हाथों से बुरका उठाये एक औरत बड़े सजीले ढंग से झुकी गहरे रंग

के पानी में एक पतली-सी, बजती हुई, सुराही डूबी रही थी।

सवाल था यह कि खाना कहां और कैसे मिले। ख्वाजा नसरुद्दीन ने कल से तीसरी बार अपना पटका और कसके बांधा।

"कोई न कोई तर्कीब तो करनी ही होगी, मेरे वफादार गधे!" उसने कहा। "यहां रुककर हम कोई तरकीब सोचें। खुशकिस्मती से यहीं एक चायखाना भी है।"

लगाम ढीली करते हुए उसने गधे को खूंटे के आसपास पड़े तिपतिया घास के टुकड़े चरने के लिए छोड़ दिया। अपनी खलअत का दामन सिकोड़कर वह सिंचाई वाली नहर के किनारे बैठ गया। वहां गंदला पानी मोड़ पर उफन रहा था और बुलबुले छोड़ रहा था।

ख्यालों में डूबा ख्वाजा नसरुद्दीन सोच रहा था: "क्यों, कैसे और कहां से बह रहा है यह पानी? पानी को खुद न इसकी खबर है, न इस बारे में वह कुछ सोचता ही है। मैं, खुद भी, न यह जानता हूं कि मैं कहां जा रहा हूं, न मुझे घर या आराम ही मयस्सर है। मैं बुखारा क्यों आया? कल मैं कहां हूंगा? मुझे खाना खरीदने के लिए आधे तंके का सिक्का भी कहां से मिलेगा? क्या मैं भूखा ही रह जाऊंगा? वह कम्बख्त टैक्स वसूलने वाला अफसर! उसने मेरी सारी रकम साफ कर दी! मुझसे डाकुओं की बात करना कितनी बड़ी गुस्ताखी थी।"

उसी वक्त उसे वह आदमी दिखायी दिया जो उसकी बदकिस्मती का बायस था। टैक्स-अफसर घोड़े पर चढ़ा चायखाने की ओर आ रहा था। दो सिपाही उसके अरबी घोड़े की लगाम पकड़े-पकड़े आगे चल रहे थे। घोड़ा कत्थई भूरे रंग का खूबसूरत जानवर था ... गहरे रंग की आंखों में बहुत अच्छी चमक थी ... उसकी सुराहीदार थी और जब वह अपनी खू...

सूरत पतली टांगें बड़े अन्दाज से आगे बढ़ाकर साफ़ साफ़ ज़ाहिर होता कि वह अपने मालिक की पस्त-कद मोटी लाश को ढोने से नाराज़ है।

सिपाहियों ने बड़े अदब से अपने सरदार को उतारने में मदद दी। वह उतरा और चायख़ाने में चला गया। चायख़ाने का घबराया हुआ मालिक फ़रमा-बरदारी से उसे रेशमी गद्दों की ओर ले गया जहां वह बैठ गया। फिर मालिक ने बेहतरीन चाय का एक ख़ास प्याला तैयार किया और चीनी कारीगरी के एक नाज़ुक गिलास में अपने मेहमान को चाय दी।

"देखो तो! मेरी कमाई पर यह कितनी शानदार ख़ातिर पा रहा है।" ख़्वाजा नसरुद्दीन सोच रहा था।

अफ़सर ने डटकर चाय पी और वहीं गद्दों पर लुढ़ककर सो गया। उसके ख़र्राटें, होंठ चटख़ारने और गलल-गलल की आवाज़ों के शोर से पूरा चायख़ाना भर गया। उसकी नींद में ख़लल न पड़े इस डर से चायख़ाने के दूसरे मेहमानों ने फुसफुसाकर बातें करना शुरू किया। पहरेदार उसके दोनों तरफ़ बैठ गये और पत्तियों की चौरियों से मक्खियां उड़ाने लगे। जब उन्हें यकीन हो गया कि उनका सरदार गहरी नींद में सो गया है तो उन्होंने आंखों से इशारा किया, उठकर घोड़े की लगाम खोली, उसके सामने घास का एक गट्ठर डाला और एक नारियली हुक्का लेकर चायख़ाने के अंधेरे हिस्से की तरफ़ बढ़ गये। थोड़ी देर बाद ख़्वाजा नसरुद्दीन को गांजे की मीठी-मीठी महक मिली। पहरेदार नशे में मदहोश थे।

शहर के फाटक पर सवेरे की घटनाओं को यादकर और इस डर से कि कहीं पहरेदार उसे पहचान न लें, ख़्वाजा नसरुद्दीन ने तय किया कि अब रफ़ूचक्कर होने का वक्त आ गया है। "तो भी, वह आधा तंका कहां मिलेगा? ऐ कातिबे तकदीर! तू ख़्वाजा नसरुद्दीन

की मदद के लिए न जाने कितनी बार आया हूँ। अब फिर उस पर करम की नजर कर!"

तभी किसी ने उसे पुकारा—"अरे सुन! हां हां तू, जो वहां बैठा है!"

ख्वाजा नसरुद्दीन पलटा और उसे सड़क पर एक बहुत सजावटदार टकी हुई गाड़ी नजर आयी। एक बड़ा साफा बांधे और कीमती मखमल पहने एक आदमी गाड़ी के परदे से बाहर झांक रहा था। इससे पहले कि वह अजनबी एक लफ्ज भी और बोले, ख्वाजा नसरुद्दीन समझ गया कि उसकी दुआ सुन ली गयी है और हमेशा की तरह किस्मत ने, उसे मुसीबत में देखकर, उस पर करम की नजर की है।

उस रईस अजनबी ने खूबसूरत अरबी घोड़े को देखते हुए और उसकी तारीफ करते हुए, अकड़कर कहा : "मुझे यह घोड़ा पसन्द है। बोल, क्या यह घोड़ा बिकाऊ है?"

बात बनाते हुए ख्वाजा नसरुद्दीन ने कहा : "दुनिया में कोई ऐसा घोड़ा है ही नहीं जो बेचा न जा सके।"

"शायद तुम्हारी जेब बिलकुल खाली है।" अजनबी बोला। "मेरी बात कान देकर सुनो। मैं नहीं जानता कि यह घोड़ा किसका है, कहां से आया है और इसका पहले वाला मालिक कौन है। मैं तुम से पूछ भी नहीं रहा। तुम्हारे कपड़ों पर पड़ी गर्द से लगता है कि तुम कहीं बहुत दूर से बुखारा आये हो। मेरे लिए यह बहुत काफी है। तुम समझ रहे हो न?"

ख्वाजा नसरुद्दीन ने सिर हिलाकर हामी भरी। वह फौरन भांप गया कि रईस क्या कहना चाहता है, और वह इससे भी आगे की बात समझ गया। अब वह सिर्फ यह मना रहा था कि कोई बेवकूफ मक्खी टैक्स-अफसर की गरदन या नाक पर कूदकर कहीं उसे जगा न दे। पहरेदारों की उसे ज्यादा फिक्र न थी, क्योंकि शाय-

खाने के अंधेरे हिस्से से आने वाले गहरे धुएं से जाहिर था कि वे नशे में धुत हैं।

अजनबी अमीर बड़े मुजर्गाना और गम्भीर लहजे में बोला : "तुम्हें यह समझना चाहिए कि इस फटी खलअत को पहनकर ऐसे घोड़े पर चढ़ना तुम्हें जेब नहीं देता। तुम्हारे लिए यह खतरनाक भी साबित हो सकता है, क्योंकि हर कोई सोचेगा : इस मिसकीन को इतना बढ़िया घोड़ा मिला कहां से? इसकी भी गुंजायश है कि तुम फंदे में डाल दिये जाओ।"

ख्वाजा नसरुद्दीन बहुत आजिजी से बोला : "ठीक फरमाते हैं आप, मेरे आका। सचमुच यह घोड़ा मेरे टोंसों के लिए जरूरत से ज्यादा बढ़िया है। इस फटी खलअत में मैं जिन्दगी भर गधे पर ही चढ़ता रहा हूं और मैं ऐसे घोड़े पर सवारी करने की सोचने की हिम्मत भी नहीं कर सकता।"

जवाब सुनकर अजनबी खुश हुआ।

"यह ठीक है कि तुम गरीब हो, लेकिन घमंड ने तुम्हें अंधा नहीं बना दिया। नाचीज गरीब को खाकसारियत ही जेब देती है, क्योंकि खूबसूरत फूल बादाम के खान-दार दरख्त पर ही अच्छे लगते हैं, मैदान की कंटीली झाड़ी पर नहीं। अब तुम मुझे जवाब दो : क्या तुम्हें यह थैली चाहिए? इसमें चांदी के पूरे तीन सौ तंके मौजूद हैं।"

"चाहिए?" भौंचक्का होकर—क्योंकि एक बेवकूफ मक्खी उसी वक्त टॅक्स-अफसर की नाक में घुस गयी थी, जिससे कि वह छींक रहा था और कुनमुना रहा था—ख्वाजा नसरुद्दीन चिल्लाया, "चाहिए? मैं समझता हूं जरूर चाहिए! चांदी के तीन सौ तंके लेने से कौन इन्कार करेगा? अरे, यह तो ऐसे ही हुआ जैसे किसी को थैली सड़क पर पड़ी मिल जाय!"

बड़े जानकार ढंग से मुस्कराते हुए वह अजनबी बोला : "लगता है कि तुम्हें सड़क पर बिलकुल दूसरी

चीज मिली है। लेकिन मैं यह रकम उस चीज से बदलने को तैयार हूं, जो तुम्हें सड़क पर मिली है। यह रहे तुम्हारे तीन सौ तंके।"

उसने यह भारी थैली ख्वाजा नसरुद्दीन को सौंप दी और अपने नौकर को इशारा किया जो चाबुक से अपनी पीठ खुजलाता हुआ सब खड़ा बातचीत सुन रहा था। काउ जैसे उसके चेचकरू चेहरे की मुस्कान और उसकी आंखों के कांइयांपन को देखकर ख्वाजा नसरुद्दीन समझ गया कि यह नौकर जो घोड़े की तरफ जा रहा है उतना ही बड़ा मक्कार है जितना बड़ा उसका मालिक।

"एक ही सड़क पर तीन-तीन मक्कारों का एक साथ होना ठीक नहीं।" उसने तय किया। "इनमें से कम से कम एक जरूर ही फालतू है। वक्त आ गया है कि मैं यहां से नौ दो ग्यारह हो जाऊं।"

उस अजनबी रईस नेकनीयती और दरियादिली की तारीफ करता हुआ नसरुद्दीन जल्दी से अपने गधे पर सवार हो गया और उसे इतने जोर से एड़ लगायी कि तबियत से काहिल होने पर भी गधा एकदम दनदनाता भाग चला।

ख्वाजा नसरुद्दीन ने पीछे मुड़कर देखा तो नौकर अभी घोड़े को गाड़ी से बांध रहा था। वह फिर मुड़ा तो देखा कि अजनबी रईस और टैक्स-अफसर एक दूसरे से गुथे हुए दाड़ियां नोच रहे हैं और सिपाही उन्हें अलग करने की बेकार कोशिश कर रहे हैं।

अक्लमन्द लोग दूसरों के झगड़े में दिलचस्पी नहीं लेते। ख्वाजा नसरुद्दीन गली-कूचों में चक्कर काटता हुआ काफी दूर बढ़ गया—यहां तक कि उसे यकीन हो गया कि अब वह पीछा करने वालों से बच गया है। ...ने अपने गधे की लगाम खींची।

"ठहरो, ठहरो," उसने कहना शुरू किया, "अब जल्दी नहीं है...।" यकायक बिलकुल पास ही

घोड़े की तेज और चौंका देने वाली टापें सुनायी
"ओह, आगे बढ़, मेरे वफादार गधे! मुझे यहां से
ही निकाल ले चल!" वह चिल्लाया, लेकिन तब
देर हो चुकी थी। पीछे से एक घुड़सवार छलांग
ता हुआ सड़क पर आ गया था।

यह वही चेचकरू नौकर था। वह गाड़ी से खोलकर
ये घोड़े पर सवार था। अपने पैर फुलाता हुआ वह
ही से ख्वाजा नसरुद्दीन की बगल से गुजर गया और
ड़े को सड़क पर आड़ा खड़ा करके यकायक रा
था।

ख्वाजा नसरुद्दीन बहुत आजिजी से बोला—"अ
लेमानस! मुझे आगे बढ़ने दे। ऐसी तंग सड़कों प
लोगों को सीधे-सीधे सवारी करनी चाहिए, आड़े-आ
हीं।"

बदनीयती से भरी हंसी के साथ नौकर ने जवा
दया : "आहा! कैदखाने से बचने का अब को
रास्ता तुम्हारे लिए नहीं है। मालूम है तुम्हें! घो
के मालिक उस अफसर ने मेरे मालिक की आधी दा
नोच डाली है और मेरे मालिक ने उसकी नाक से ख
निकाल दिया है। कल तुम अमीर की अदालत में
होगे। सच है, दोस्त! तुम्हारी तकदीर बहुत खर
है।"

ख्वाजा नसरुद्दीन ने ताज्जुब से पूछा, "तुम
क्या रहे हो? ऐसे इज्जतदार लोगों के इस तरह
पड़ने की वजह क्या है? और तुमने मुझे रोका
है? उनके झगड़े का फैसला मैं तो कर नहीं सक
उन्हें इसका फैसला अपने-आप करने दो, जैसे भ
कर पायें।"

"खामोश!" नौकर चिल्लाया। "वापस लौट।
उस घोड़े के लिए जवाब देना होगा।"

"कौन-सा घोड़ा?"

"तेरी यह पूछने की मजाल! अरे, वही घोड़ा जिसके लिए मुझे मेरे मालिक से चांदी की थैली मिली थी!"

"खुदा गवाह है। तुम गलती कर रहे हो।" ख्वाजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया। "इस मामले का घोड़े से कोई वास्ता नहीं। तुम खुद फैसला करो। तुमने तो पूरी बातचीत सुनी थी। तुम्हारे दरियादिल मालिक ने, एक गरीब इन्सान की मदद करने के इरादे से, मुझसे पूछा कि क्या मैं चांदी के तीन सौ तंके लेना पसन्द करूंगा और मैंने जवाब दिया : 'हां, वाकई, मैं यह रकम लेना पसंद करूंगा।' तब उसने मुझे तीन सौ तंके दिये। अल्लाह उसे लम्बी जिन्दगी दे। पर मुझे रुपया देने से पहले उसने यह देखने के लिए कि मैं इस इनाम का हकदार भी हूं या नहीं, जांचना चाहा कि मुझ नाचीज में आजिजी और इंकिसारी है या नहीं। उसने कहा, 'मैं नहीं जानना चाहता कि यह घोड़ा किसका है और कहां से आया है।'

"देखा तुमने! वह यह जानना चाहता था कि कहीं मैं झूठे घमण्ड में अपने को घोड़े का मालिक तो नहीं बता बैठता। मैं खामोश रहा। वह फैयाज मुकद्दस इन्सान खुश हुआ। उसने कहा कि मेरे जैसों के लिए यह घोड़ा जरूरत से ज्यादा अच्छा है। मैं उसकी बात मान गया। इससे वह और भी खुश हुआ। तब उसने कहा कि मैं सड़क पर ऐसी चीज पा गया हूं जिसके बदले में चांदी के सिक्के मिल सकते हैं। उसका इशारा मुस्तकिल मिजाजी व जोश के साथ इसलाम में मेरे यकीन की तरफ था। यह यकीन मुझे पाक जगहों के सफर में हासिल हुआ। इस सबके बाद उसने मुझे इनाम दिया। इस नेक काम के जरिये वह कुरआन शरीफ में बताये गये बहिश्त जाने के रास्ते में पड़ने वाले उस पुल पर से अपना सफर ज्यादा आसान बनाना चाहता था, जो बाल से भी ज्यादा बारीक है और तलवार की धार से भी ज्यादा तेज है। इबादत के वक्त मैं अल्लाह

से गुज़रते माल

ताकि उसके लिए वह पुल पर बाड़ लगवा दे।"

चाबुक से अपनी पीठ खुजलाता हुआ नौकर लम्बी तकरीर सुनाता रहा। तकरीर खत्म होने पर ख़ोजा नस-रुद्दीन को परेशान कर डालने वाली बाद्शों हंसी के साथ वह बोला :

"ऐ मुसाफिर ! तुम ठीक कहते हो। मेरे मालिक से हुई तुम्हारी बातचीत का मतलब इतना गहरा है, यह पहले मेरी समझ में क्यों न आया ! लेकिन, चूंकि उस दूसरी दुनिया के रास्ते का पुल पार करने में तुमने मेरे मालिक की मदद करना तय किया है, तो ज्यादा हिफाजत इसी में होगी कि पुल पर दोनों तरफ बाड़ें लगायी जायें। मैं भी, बख़ुशी, अल्लाह से दुआ मांगूंगा ताकि वह मेरे मालिक के लिए दूसरी तरफ भी बाड़ लगा दे।"

"तो मांगो दुआ !" ख़ोजा नसरुद्दीन चिल्लाया। "तुम्हें रोकता कौन है ? बल्कि ऐसा करना तो तुम्हारा फर्ज है। क्या क़ुरआन में हिदायत नहीं है कि गुलामों और नौकरों को अपने मालिकों के लिए रोज़ दुआ मांगनी चाहिए और इसके लिए कोई ख़ास इनाम अलग से नहीं मांगना चाहिए।"

घोड़े को एड़ लगाकर ख़ोजा नसरुद्दीन को दीवाल की तरफ दबाते हुए नौकर सख्ती से बोला : "अपना गधा वापस लौटा ! चल, जल्दी कर, मेरा ज्यादा वक्त खराब न कर।"

ख़ोजा नसरुद्दीन ने उसे बीच में ही टोककर जल्दी से कहा : "ठहरो, मुझे बात तो ख़त्म कर लेने दो भाई। मैं तीन सौ तंकों के हिसाब से उतने ही अल्फाज़ की एक दुआ करने वाला था। पर अब मैं सोचता हूं कि ढाई सौ अल्फाज़ की दुआ ही काफी होगी। मेरी तरफ की [illegible] छोटी [illegible] जायेगी। जहां तक तुम्हारी [illegible] दो

अल्फाज की दुआ मांगना और सब कुछ जानने वाला अल्लाह उतनी ही लकड़ी से तुम्हारी तरफ भी बाड़ लगा देगा।"

"क्यों? मेरी तरफ की बाड़," नौकर बोला, "तुम्हारी बाड़ का पांचवां हिस्सा ही क्यों हो?"

"वह सबसे ज्यादा खतरनाक मुकाम पर जो बनेगी।" नसरुद्दीन ने जल्दी से कहा।

नौकर अकड़कर बोला: "नहीं, मैं ऐसी छोटी बाड़ के लायक नहीं हूं। इसका मतलब तो यह हुआ कि पुल का कुछ हिस्सा बिना बाड़ का रह जायेगा। मेरे मालिक के लिए इससे जो खतरा पैदा होगा, मैं उसे सोचकर ही कांप जाता हूं। मेरी राय में तो हम दोनों ही डेढ़-डेढ़ सौ अल्फाज की दुआ मांगें ताकि पुल के दोनों तरफ बाड़ एक ही लम्बाई की हो। पतली जरूर होगी, पर कम से कम दोनों तरफ हिफाजत तो रहेगी। और अगर तुम राजी नहीं होते, तो इसका मतलब यह हुआ कि तुम मेरे मालिक का बुरा चाहते हो और यह चाहते हो कि वह पुल से गिर जाये। तब मैं मदद मांगूंगा और तुम कैदखाने का सबसे नजदीक का रास्ता अख्तियार करोगे।"

गुस्से से खीझकर नसरुद्दीन बोला: "पतली बाड़! तुम जो कुछ कह रहे हो उससे लगता है कि पतली टहनियों की बाड़ लगा देना ही तुम्हारे लिए काफी होगा। क्या तुम समझ नहीं रहे कि बाड़ एक तरफ मोटी और मजबूत होनी चाहिए, ताकि अगर तुम्हारे मालिक के पैर डगमगायें तो उनके पकड़ने के लिए कुछ तो रहे।" उसे लग रहा था कि [illegible] की [illegible] पर खिसक रही है।

गुस्से में तिलमिलाता हुआ नौकर बोला: "सचमुच तुम हद कर रहे हो [illegible] बड़ी है। बाड़ को मेरी तरफ मजबूत रहने दो और [illegible] दो सौ अल्फाज की दुआ मांगने से [illegible] नहीं करूंगा।"

"तुम शायद तीः
चाहोगे ?" जहरीली आवाज में खोजा नसरुद्दीन बोला।

वे दोनों अलग हुए तो खोजा नसरुद्दीन की थैली का आधा वजन कम हो चुका था। उन लोगों ने तय किया था कि मालिक के लिए बहिश्त के रास्ते वाले पुल के दोनों तरफ बराबर-बराबर मजबूती और मोटाई की बाड़ लगायी जाये।

"अलविदा मुसाफिर!" नौकर ने कहा। "हम दोनों ने आज बड़े सवाब का काम किया है।"

"अलविदा, ऐ मेहरबान, वफादार और भले नौकर! अपने मालिक की रूह के लिए तुम्हें कितनी फिक्र है। मैं यह और कह दूं कि तुम बहुत जल्दी खुद खोजा नसरुद्दीन की टक्कर के हो जाओगे।"

नौकर के कान खड़े हुए। उसने पूछा :"उसका जिक्र तुमने क्यों किया?"

"कुछ नहीं, यूं ही। बस मुझे ऐसा लगा," खोजा नसरुद्दीन ने बोला। वह सोच रहा था—"आहा। यह शख्स बिलकुल सीधा-सादा नहीं है।"

नौकर ने पूछा "शायद तुम्हारा उससे कोई दूर का रिश्ता है! शायद तुम उसके खानदान के किसी शख्स से वाकिफ हो।"

"नहीं, मैं उससे कभी नहीं मिला और मैं उसके किसी रिश्तेदार को भी नहीं जानता।"

नौकर अपनी जीन से झुककर बोला :"सुनो, मैं तुम्हें एक राज की बात बताऊं। मैं उसका रिश्तेदार हूं। असल में, उसका चचेरा भाई हूं। हम दोनों का बचपन में साथ रहा था।"

खोजा नसरुद्दीन का शक पक्का हो गया और वह बिलकुल खामोश रहा। नौकर उसकी ओर और ज्यादा झुक आया :

ऱमी टैक्स वसूल करने वाले अफसर और अजनबी रईस
के बीच की लड़ाई की याद करके हंस उठता।

: ५ :

शहर के दूसरे सिरे पर पहुंच कर ख्वाजा नसरुद्दीन रुक गया। अपने गधे को एक चायखाने के मालिक के सुपुर्द किया और फौरन एक नानबाई की दूकान में घुस गया।

वहां बड़ी भीड़ थी। धुंआ था। खाना पकने की महक भारी थी। चूल्हे गर्म थे और कमर तक नंगे बावर्चियों की पसीने से तर पीठों पर चूल्हों की लपटों की चमक पड़ रही थी। वे चीखते-चिल्लाते, शोर-शराबा करते, एक-दूसरे को धक्के देते, अपना काम कर रहे थे। आम शोरगुल, गोलमाल और भगदड़ को बढ़ाते हुए आंखें फाड़े वे उन छोटे लड़कों के कान उमेठ रहे थे जो मेहमानों को खाना दे रहे थे। बड़े-बड़े देगचों और पतीलों के लकड़ी के ढक्कनों के नीचे खाना उबल रहा था। छत के पास भाप जमा हो रही थी, जहां मक्खियां भनभना रही थीं। धुएं में फैले अंधेरे में मक्खन के जलने और कड़कड़ाने की आवाज सुनायी पड़ रही थी। गर्मी से सुर्ख अंगीठियों के किनारे दमक रहे थे। सीखचों पर भुनते गोश्त के अंगारों पर टपकती चर्बी नीली धुएंदार लपटों में जल रही थी। यहां पुलाव पक रहा था, सीख कबाब भुन रहे थे, बैलों का गोश्त उबल रहा था, प्याज, कालीमिर्च और भेड़ की दुम की चर्बी व गोश्त भरे समोसे तले जा रहे थे। इन समोसों से चर्बी निकल कर तवों पर बुलबुले बना रही थी।

कभी टैक्स वसूल करने वाले अफसर और अजनबी रईस के बीच की लड़ाई को याद करके हंस उठता।

: ५ :

शहर के दूसरे सिरे पर पहुंच कर खोजा नसरुद्दीन रुक गया। अपने गधे को एक धायखाने के मालिक के सुपुर्द किया और फौरन एक नानबाई की दुकान में घुस गया।

वहां बड़ी भीड़ थी। धुंआ था। खाना पकने की महक भरी थी। चूल्हे गर्म थे और कमर तक नंगे बावर्चियों की पसीने से तर पीठों पर चूल्हों की लपटों की चमक पड़ रही थी। वे चीखते-चिल्लाते, शोर-शराबा करते, एक-दूसरे को धकके देते, अपना काम कर रहे थे। आम शोरगुल, गोलमाल और भगदड़ को बढ़ाते हुए आंखें फाड़े थे इन छोटे लड़कों के कान उमेठ रहे थे जो मेहमानों को खाना दे रहे थे। बड़े-बड़े देगचों और पतीलों के लकड़ी के ढक्कनों के नीचे खाना उबल रहा था। छत के पास भाप जमा हो रही थी, जहां मक्खियां भनभना रही थीं। धुएं में फंसे अंधेरे में मक्खन के जलने और कड़कड़ाने की आवाज सुनायी पड़ रही थी। गर्मी से सुर्ख अंगीठियों के किनारे दमक रहे थे। सीखचों पर भुनते गोश्त के अंगारों पर टपकती चर्बी नीली धुएंदार लपटों में जल रही थी। यहां पुलाव पक रहा था, सीख कबाब भुन रहे थे, भैंसों का गोश्त उबल रहा था, प्याज, कालीमिर्च और भेड़ की दुम की चर्बी व गोश्त भरे समोसे तले जा रहे थे। इन समोसों से चर्बी निकल कर तवों पर बुलबुले बना रही थी।

बड़ी मुश्किल से नसरुद्दीन [illegible] जगह तलाश की। [illegible] जिस [illegible]

इतनी तंग थी [illegible]

वह बैठा था वे जोर से गुर्रा उठे। पर किसी ने बुरा नहीं माना; किसी ने उससे कुछ कहा नहीं। न वह खुद ही भुनभुनाया। बाजारों में नानबाइयों की दुकानों की भारी भीड़-भाड़। झगड़े का शोरगुल। हंसी-मजाक। धक्कम-धक्का और चीख-पुकार। सैकड़ों लोगों का, जो दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद खाने छांटने की फुरसत भी नहीं पाते थे और जिनके मजबूत जबड़े कड़ा और मुलायम हर तरह का गोश्त, हर चीज, चबा जाते थे और जिनके मजबूत मेदे हर चीज हजम कर लेते थे—बशर्ते कि ये चीजें सस्ती और खूब हों। उनका जोर से नाक साफ करना, खाना चबाना और जुबान चटखारना—यह सब ख्वाजा नसरुद्दीन को हमेशा से पसंद था।

ख्वाजा नसरुद्दीन एक बार में ही ढेर-सा खाना खा सकता था। एक बार में उसने तीन प्याले कीमा, तीन रकाबी चावल और दो दर्जन समोसे डकार लिये। समोसे खत्म करने में कुछ कोशिश जरूर करनी पड़ी, पर अपने इस उसूल के मुताबिक कि जिसकी कीमत अदा कर दी जाये, वह खाना थाली में नहीं छोड़ना चाहिए, उसने उन समोसों को भी खत्म कर ही डाला।

खाना खत्म कर वह दरवाजे की तरफ बढ़ा और जब कुहनियों से धक्कम-धक्का करने के बाद, आखिर खुली हवा में पहुंचा, तो वह पसीने से नहा रहा था। हाथ-पैरों में कमजोरी भर रही थी, जैसे वे हल्के पड़ गये हों और उनमें ताकत न रही हो—मानो किसी तगड़े आदमी ने हमाम में उसका बदन रगड़ा हो। खाने और गर्मी की वजह से तबियत में भारीपन लिये पैर घसीटता हुआ वह उस चायखाने तक पहुंचा जहां अपना गधा छोड़ आया था। उसने चाय मंगायी और गद्दों पर आराम से पसर गया। उसकी पलकें झपकने लगीं और खुशगवार ख्याल उसके दिमाग में धीरे-धीरे तैरने लगे।

"मेरे पास इस वक्त अच्छी-खासी रकम है। किसी

कारखाने में जीनसाज़ी या बरतन बनाने के काम में इसे लगा देना अच्छा रहेगा। मैं इन दोनों कामों को जानता हूं। घुमक्कड़ी छोड़ने का वक़्त अब आ गया है। क्या मैं और लोगों से बदतर हूं? क्या मैं उनसे ज़्यादा बेवक़ूफ़ हूं? क्या मैं भी एक ख़ूबसूरत और मेहरबान बीवी नहीं हासिल कर सकता? क्या मेरे भी एक बेटा नहीं हो सकता जिसे मैं अपनी गोद में खिला सकूं? पैग़म्बर की क़सम, वह नन्हा, शोर मचाने वाला बच्चा, बड़ा होकर मशहूर शैतान निकलेगा, और मैं अपनी सारी दानिशमन्दी व तजरबे से हासिल अक़लमन्दी उसमें उंडेल दूंगा। हां, मेरा इरादा पक्का हो गया है। अब मैं बेचैन आवारागर्दी की ज़िन्दगी छोड़ूंगा। काम शुरू करने के लिए मुझे जीनसाज या कुम्हार की दुकान ख़रीद लेनी चाहिए . . ."

उसने हिसाब लगाना शुरू किया : "अच्छी दुकान की क़ीमत कम-से-कम तीन सौ तंके होगी और इस वक़्त मेरे पास है कुल डेढ़ सौ तंके।" चेचकरू नौकर को उसने कोसना शुरू कर दिया : "अल्लाह डाकू को अंधा कर दे। वह मुझ से वही रकम छीन ले गया है जिसकी किसी काम को शुरू करने के लिए जरूरत थी।"

एक बार फिर क़िस्मत ने साथ दिया। "बीस तंके!" किसी ने यकायक आवाज़ लगायी। फिर तांबे की थाल में पांसा गिरने की आवाज़ सुनायी दी।

सरसाती के किनारे, जानवर बांधने के खूंटों बिलकुल पास, कुछ लोग घेरा बनाये बैठे थे। चाय ख़ाने का मालिक उनके पीछे खड़ा था। गरदन उठा वह उनके सिरों के ऊपर से झांक रहा था।

"जुआ!" कोहनी के सहारे उठते हुए ख़्वाजा नस दद्दीन ने भांप लिया। "उनके जुआ खेलने की ब उतनी ही सच है जितनी यह कि मेरा नाम ख़्वाजा न रुद्दीन है। मैं भी क्यों न देखूं: भले ही दूर देखूं। जुआ तो नहीं खेलूंगा मैं। ऐसा बेवक़

नहीं । पर कोई अक्लमंद आदमी बेवकूफों को दांव क्यों नहीं ?"

वह उठकर जुआरियों के पास चला गया ।

"बेवकूफ लोग," चायखाने के मालिक के कान में वह फुसफुसाया, "मुनाफे के लालच में अपना आखिरी सिक्का भी गवां देते हैं । क्या पैगम्बर ने रुपये के लिए जुआ खेलने को मना नहीं किया है ? अल्लाह का शुक्र है कि यह खतरनाक आदत मुझ में नहीं है ! पर उस लाल बालों वाले जुआरी की तकदीर तो देखो ! लगातार चौथी बार जीता है । देखो-देखो ! अरे, वह तो पांचवीं बार भी जीत गया ! ओ मोंदमाग बेवकूफ! उसे तो दौलत का झूठा सपना जुए की ओर खींच रहा है, हालांकि गरीबी ने उसके रास्ते में गड्डा खोद रखा है । क्या ? फिर छठी बार जीत गया ? नहीं देखी, ऐसी किस्मत मैंने कभी नहीं देखी । देखो, देखो, वह फिर दांव लगा रहा है । वाकई, इन्सान की बेवकूफी की इन्तिहा नहीं । ऐसा तो नामुमकिन है कि लगातार जीतता ही जाय । झूठी किस्मत में यकीन करने वाले लोग ऐसे ही बर्बाद होते हैं ! इस लाल बालों वाले आदमी को सबक सिखाना चाहिए। अगर वह सातवीं बार फिर जीता तो मैं उससे दांव बदूंगा— गर्चे दिल से मैं जुए के खिलाफ ही हूं । काश मैं अमीर होता, तो जुआ न जाने कब का मन्द करा चुका होता ।"

लाल बालों वाले ने फिर पासा फेंका और सातवीं बार फिर जीता ।

तब ख्वाजा नसरुद्दीन पक्के इरादे से आगे बढ़ा। कन्धों से खिलाड़ियों को अलग हटाते हुए वह घेरे में

लाल बालों वाले ने भर्राये गले से पूछा : "कितनी रकम ?" उसका सारा बदन कांप गया। जल्दी ही खत्म होने वाली खुशकिस्मती में ज्यादा से ज्यादा जीत लेने के लिए वह उतावला हो रहा था।

ख्वाजा नसरुद्दीन ने अपना बटुआ निकाला। जरूरत के लिए पच्चीस तंके उसमें रख दिये और बाकी निकाल लिये। तांबे के थाल में चांदी के सिक्के खन-खनाकर गिरे और चमकने लगे। जुआरियों ने ऊंचा दांव लगाने वाले इस इन्सान का खुसफुसाहट के साथ इस्तकबाल किया। ऊंचे दांवों का खेल शुरू हो गया था।

लाल बालोंवाले ने पांसे उठा लिये और बड़ी देर तक उन्हें खनखनाता रहा, मानो फेंकने की झिझक रहा हो। हर कोई सांस रोके देख रहा था—यहां तक कि गधे ने भी मुंह उठा लिया था और कान खड़े कर लिये थे। अब सिर्फ जुआरी की मुट्ठी से पांसों के खनखनाने की आवाज आ रही थी। उस हल्की खन-खनाहट से ख्वाजा नसरुद्दीन के पेट और बदन में चाहत भरी कमजोरी आ गयी। आखिर लाल बालों-वाले ने पांसे फेंके। दूसरे खिलाड़ी गरदन बढ़ाकर देखने लगे और एक साथ ही ठीक से पीछे की ओर लुढ़क कर बैठ गये। एक साथ ही उन्होंने लम्बी सांसें लीं—मानो वे सब सांसें एक ही सीने से निकली हों। जुआरी पीला पड़ गया। उसके भिंचे हुए दांतों से कराह निकल गयी। पांसे पर तीन दिखायी दिये। वह जरूर हार रहा था, क्योंकि एक उतना ही कम निक-लता है जितना कि छः और कोई भी दूसरा पांसा ख्वाजा नसरुद्दीन के माफिक होगा।

मुट्ठी में पांसे हिलाते हुए उसने तकदीर का शुक्रिया अदा किया कि आज वह उस पर मेहरबान थी। पर वह भूल गया [illegible]
सनकी होती [illegible]

दगा दे जाती हैं जो उस पर भरोसा करते हैं। अब
पर इतना भरोसा करने के लिए, अब उसने तो
नसरुद्दीन को सबक सिखाने की सोची। इसके लि
उसने चुना उसके गधे, या कहो गधे की दुम क
जिसके आखीर में कांटे और कटाव थे। गधा जुआ
रियों की ओर पलटा और जो उसने दुम घुमायी तो
जाकर सीधे उसके मालिक के हाथ से टकरायी। पांसे
हाथ से फिसल गये। लाल बालों वाला जुआरी खुशी
से भर्रायी चीख के साथ फौरन घास पर लेट गया
और दांव पर लगी रकम अपने बदन से ढंक ली।

ख्वाजा नसरुद्दीन ने दो काने फेंके थे।

देर तक होंठ चबाता हुआ वह चुपचाप बैठा रहा।
फटी-फटी आंखों के सामने दुनिया तैरती और डगमगाती
सी नजर आ रही थी। कानों में एक अजब सनसनाहट

खेल लो। दो-चार दाव और लग जायें। तुम्हारे पास अभी पच्चीस तके तो हैं ही।"

यह कह कर उसने अपना बायां पैर फैला दिया और खोजा नसरुद्दीन के लिए हिकारत दिखाते हुए उसे थोड़ा हिलाया।

"हां, क्यों नहीं।" खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया। वह सोच रहा था—जब सवा सौ तंके चले गये तो अब बाकी पच्चीस का क्या होगा, यह सोचना ही फिजूल है।

लापरवाही से उसने पासे फेंके। वह जीत गया।

हारी हुई रकम पाल फेंकते हुए लाल बालो-वाले ने कहा—"पूरी रकम।"

खोजा नसरुद्दीन फिर जीत गया।

लाल बालो वाले को यकीन नहीं आ रहा था कि किस्मत पलट गयी है।

"पूरी रकम।" उसने फिर कहा।

सात बार लगातार उसने यही कहा और हर बार वह हारा।

थाल रुपयों से भर चुका था। जुआरी खामोश बैठे थे। सिर्फ उनकी आंखों की चमक से उस आग का पता लग रहा था, जो उनके भीतर सुलग रही थी और उन्हें जलाये डाल रही थी।

लाल बालोंवाला चिल्लाया : "अगर शैतान ही तुम्हारी मदद कर रहा है तो दूसरी बात है, वर्ना तुम हर बार नहीं जीत सकते। कभी तो तुम हारोगे ही। इस थाल पर तुम्हारे सोलह सौ तके हैं। लगाओगे एक बार फिर पूरी रकम? कल मैं अपनी दुकान के लिए इस रकम से माल खरीदने वाला था। लो तुम्हारी रकम के मुकाबले मैं इसे भी दांव पर लगाता हूं।"

सोने के सिक्कों—तिल्लों, रुपयों और तूमानों—से भरी एक छोटी सी थैली उसने निकाली।

उतावली भरी आवाज में ख्वाजा नसरुद्दीन चिल्लाय
—"अपना सोना इस थाल में उंडेल!"

इस चायखाने में ऐसे भारी दांव कभी नहीं दे
गये थे। मालिक उबलती हुई केतलियों को भ
गया। जुआरियों की सांसें लम्बी चलने लगीं। लाल
बालोंवाले ने पांसे फेंके और आंखें बन्द कर लीं
पांसे देखने में उसे डर लग रहा था।

"ग्यारह!"—सब एक साथ चिल्ला उठे। ख्वा
नसरुद्दीन अपने को करीब-करीब हारा हुआ समझ
लगा। अब सिर्फ दो छक्के, यानी बारह काने, ही उ
बचा सकते थे।

अपनी खुशी को छिपाये बिना लाल बालोंवा
जुआरी भी दोहराने लगा : "ग्यारह! ग्यारह काने
[illegible] हार गये तुम। हार गये

जड़ी रह गयी। धीरे से वह उठा और रोता, डगमगाता हुआ, चला गया : "हाय री किस्मत! हाय कमबख्ती!"

कहते हैं कि उस दिन के बाद लाल बालोंवाला फिर कभी शहर में नहीं दिखायी दिया। भागकर वह रेगिस्तान चला गया और वहां बाल बढ़ाये हुए और देखने में बदनुमा वह रेत और कटीली झाड़ियों के बीच लगातार चिल्लाता रहता—"हाय कमबख्ती! हाय री किस्मत!" आखिर सियारों ने उसका काम तमाम कर दिया। किसी ने उसके लिए अफसोस नहीं किया, क्योंकि वह बहुत बेरहम था और इंसाफ की बात तक नहीं करता था। सीधे-सादे और आसानी से यकीन कर लेनेवाले लोगों को उसने बहुत नुकसान पहुंचाया था।

रही खोजा नसरुद्दीन की बात, सो उसने जीती हुई दौलत को जीन से लगे थैलों में भरा, गधे को गले लगाया, उसका मुंह चूमा और उसी वक्त बढ़िया मालपुए उसे खिलाये। उस होशियार जानवर को भी अचम्भा था। अभी चन्द मिनट पहले ही उसके साथ बिलकुल दूसरा सलूक हुआ था।

: ६ :

बुद्धिमानी से भरे इस उसूल को याद कर कि, उन लोगों से दूर रहना चाहिए जो यह जानते हैं कि तुम्हारा रुपया कहां रखा है, खोजा नसरुद्दीन उस चायखाने पर नहीं रुका और फौरन बाजार की ओर बढ़ गया। बीच-बीच में मुड़कर वह देखता जाता था कि कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा, क्योंकि जुआरियों और चायखाने के [illegible] पहरे [illegible] से भल-मनसाहत नहीं [illegible]

उसका सफर [illegible] गुजार थी [illegible] मैं [illegible]

महीं तीन-तीन कारखाने खरीद सकता था। वही करना उसने तय भी किया।
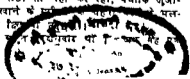
"मैं चार दूकाने खरीदूंगा। एक कुम्हार की, एक जीनसाज की, एक दरजी की और एक मोची की। हर दूकान में मैं दो-दो कारीगर रखूंगा। मेरा काम सिर्फ रुपया वसूल करना होगा। दो साल में मैं रईस बन जाऊंगा। फिर तो ऐसा मकान खरीदूंगा, जिसके बाग में फव्वारे हों। हर जगह सोने के पिंजरे लटकाऊंगा, जिनमें गानेवाली चिड़ियां रहेंगी और दो... शायद तीन भी बीवियां रखूंगा और हर बीवी से मेरे तीन बेटे होंगे।"

ऐसे ही खुशनुमा खयालों की नदी में डूबता-उतराता वह गधे पर बैठा चला आ रहा था कि गधे ने लगाम ढीली पायी और मालिक के खयालों में खोये रहने का फायदा उठाया। वह एक छोटे पुल के पास पहुंचा ही था कि दूसरे गधों की तरह सीधे पुल पर चलने की बजाय, वह एक तरफ को मोड़ मुड़ा और [illegible]

मानो वह मालिक को फिर से जीन पर बैठने क
दे रहा हो ।

गुस्से से कांपती आवाज में खोजा नस
चिल्लाया, "अरे तू ! तूने मेरे ही नहीं, मेरे ब
के गुनाहों की भी सजा के एवज में भेजा ग
इसलामी इन्साफ के मुताबिक किसी भी इंसान
सिर्फ अपने गुनाहों के लिए इतनी सख्त सज
मिल सकती। अबे फौगूर और लकड़बग्घे की
अरे . . ."

लेकिन एक अधटूटी दीवाल के साये में प
पर बैठे कुछ लोगों की भीड़ को देखकर वह
चुप हो गया ।

गालियां खोजा नसरुद्दीन के होठों में
गयीं । उसे खयाल आया कि जो भी ऐसी
और बेइज्जती की हालत में पड़ा हो और
देख रहे हों तो अपनी परेशानी पर सबसे ज्य
से उसे खुद हंसना चाहिए । उन पर बैठे हुए
के गिरोह की ओर आंख मारकर अपने स
दिखाते हुए वह हसने लगा ।

"अहा ! मैंने कितनी बढ़िया उड़ान भरी !"
भरी आवाज में वह जोर से बोला : "बताओ
मैंने कितनी कलाबाजियां खायीं ? भई, खुद
गिनने का वक्त मिला नहीं । अरे शैतान !"
हंसी से थपथपाते हुए वह कहने लगा, हालां
तबियत कर रही थी कि जी भरकर उसकी मरा
"इसे ऐसी ही शरारतें सूझती हैं । जानव
ऐसा है ! मेरी नजर दूसरी तरफ घूमी
इसे कोई न कोई शरारत सूझी !"

खोजा नसरुद्दीन फिर खुशगवार हंसी हंस
लेकिन उसे बड़ा ताज्जुब हुआ जब कोई
हसी में शामिल नहीं हुआ । सिर
गमगीन चेहरे लिए, वे लोग खामोश बैठे रह

औरतें, जिनकी गोदों में बच्चे थे, चुपचाप रोती रहीं।
"जरूर कुछ गड़बड़ है।" ख्वाजा नसरुद्दीन ने सोचा।
वह उन लोगों के पास गया और सफेद बालों और सूखे चेहरेवाले एक बूढ़े से पूछा :
"बुजुर्गवार! बताइये न कि हुआ क्या है? ऐसा क्यों है कि न मुझे मुस्कान दिखायी देती है, न हंसी सुनायी पड़ती है? ये औरतें क्यों रो रही हैं! इस गरमी और धूल में आप सड़क के किनारे क्यों बैठे हैं? क्या यह बेहतर न होता कि आप लोग घरों की ठंडी छांह में आराम करते?"
"घरों में बैठना उनके लिए बेहतर है, जिनके पास घर हों।" बूढ़े ने रंज भरे लहजे में कहा। "ऐ मुसाफिर! मुझ से सवाल न कर। हमारी तकलीफ बहुत ज्यादा है और तू किसी भी तरह हमारी मदद नहीं कर सकता। रही मेरी बात, सो मैं बूढ़ा हूं और खुदा से दुआ मांगता हूं कि मुझे जल्द ही उठा ले।"
"आप ऐसी बातें क्यों करते हैं?" झिड़कते हुए ख्वाजा नसरुद्दीन ने कहा। "मर्दों को इस तरह नहीं सोचना चाहिए। अपनी परेशानी मुझे बताइए। गरीबों जैसी मेरी शक्ल पर न जाइए। कौन जाने, शायद मैं आपकी कुछ मदद कर सकूं।"
"मेरी कहानी बहुत छोटी है। अभी सिर्फ एक घंटे पहले सूदखोर जाफर यहां के अमीर के दो सिपाही लेकर हमारी गली से गुजरा। मुझ पर उसका कर्ज है। अदायगी की आखिरी तारीख कल है। सो उन्होंने मुझे उस घर से ही निकाल दिया, जहां मेरी उम्र गुजरी है। कोई मेरा खानदान नहीं, जहां मैं सारी उम्र गुजरी है। कोई मेरा खानदान नहीं है। कोई घर नहीं, जहां मैं सिर छिपा सकूं . . .। और मेरी सारी जायदाद—मेरा घर, बगीचा, ढोर-डांगर, अंगूर की बेलें, सब कुछ वह कल बेच देगा।"

बूढ़े की आंखें आंसुओं से तर हो गयीं। उसकी आवाज़ कांपने लगी।

"क्या आप पर बहुत कर्ज है?" ख्वाजा नसरुद्दीन ने पूछा।

"बहुत ज्यादा! ऐ मुसाफिर, मुझे उसको ढाई सौ तंके देने हैं।"

"ढाई सौ तंके!!" नसरुद्दीन के मुंह से निकला। ढाई सौ तंकों की मामूली रकम के लिए भी भला कोई इंसान मरना चाहता है? बस-बस! आप ज्यादा अफसोस न करें," कहकर वह गधे की तरफ पलटा और जीन से कसे थैले को खोलने लगा। "बस, मेरे बुज़ुर्ग दोस्त! लो! ये रहे ढाई सौ तंके! आप उस सूदखोर को ये वापस कर दीजिये, फिर लात मारकर उसे घर से निकाल दीजिए और जिन्दगी के बाकी दिन चैन से काटिए।"

चांदी के सिक्कों की खनखनाहट सुनकर उस पूरे झुण्ड में जैसे जान आ गयी हो। बूढ़ा हक्का-बक्का आंसू भरे, ख्वाजा नसरुद्दीन की तरफ अहसान भरी आंखों से देखता रह गया।

"देखा आपने! तिस पर भी आप अपनी परेशानी मुझे नहीं बता रहे थे," आखिरी सिक्का गिनते हुए ख्वाजा नसरुद्दीन ने कहा। वह सोचता जा रहा था, "कोई हर्ज नहीं। न सही आठ कारीगर, सात को ही नौकर रखूंगा। तब भी बहुत काफी होंगे।"

यकायक बूढ़े की बगल में बैठी एक औरत ख्वाजा नसरुद्दीन के पैरों पर गिर पड़ी। जोर-जोर से रोते हुए उसने अपना बच्चा उसकी तरफ बढ़ा दिया।

"देखिए, यह बीमार है।" सुबकियां भरती हुई वह बोली। "इसके होंठ सूख रहे हैं, चेहरा जल रहा है। बेचारा नन्हा-सा बच्चा सड़क पर ही मर जायगा। हाय, मैं भी अपने घर से निकाल दी गयी हूं।"

ख्वाजा नसरुद्दीन ने बच्चे के पतले मुर्दे चेहरे को देखा। उसके पतले हाथ देखे जिनमें होकर रोशनी गुजर रही थी। फिर उसने बैठे हुए लोगों के चेहरों को देखा। दुख की लकीरों और झुर्रियों से भरे चेहरों, और लगातार रोने की वजह से धुंधली हुई आंखों को देखकर उसे लगा जैसे किसी ने उसकी छाती में गर्म छुरा भोंक दिया हो। यकायक उसका गला भर आया। रहम और गुस्से से उसका चेहरा तमतमा उठा। वह दूसरी तरफ देखने लगा।

"मैं बेवा हूं।" औरत कह रही थी। "मेरा शौहर छः महीने पहले मर गया। सूदखोरों के दो सौ तंके उसे देने थे। कानूनन वह कर्ज अब मुझे चुकाना है।"

"वाकई, बच्चा बीमार है।" नसरुद्दीन बोला। "लो ये रहे दो सौ तंके। जल्दी घर जाओ और बच्चे के सिर पर ठंडी पट्टी रखो। और सुनो—ये पचास तंके और लेती जाओ। जाकर, किसी हकीम को बुलाओ और इसे कोई दवा दिलवाओ।"

"छः कारीगरों से भी मैं बखूबी काम चला लूंगा।" मन ही मन उसने सोचा।

तभी एक भारी-भरकम संगतराश उसके पैरों पर आ गिरा। अगले ही दिन उसका पूरा खानदान गुलामों की तरह बेचा जाने वाला था। जाफर के चार सौ तंके उसे भी देने थे।

"चलो, पांच कारीगर ही सही।" एक बार फिर अपना थैला खोलते हुए ख्वाजा नसरुद्दीन ने सोचा। जैसे ही वह थैले का मुंह बांध चुका, दो और औरतें उसके सामने घुटनों के बल आ गिरीं। उनकी कहानी भी इतनी दर्दनाक थी कि ख्वाजा नसरुद्दीन सूदखोर का कर्ज चुकाने के लिए उन्हें भी काफी रकम देने से नहीं हिचका। और अब, यह देखकर कि जो रकम उसके पास बची है वह मुश्किल से तीन कारीगरों लायक ही होगी, उसने तय किया कि अब कारखाने के बारे

में परेशान होना बेकार है। पूरी फैयाजी के साथ अप
दौलत उसने सूदखोर जाफर के कर्जदारों में बांटने
ठान ली।

उसके पास थैले में अब बचे थे कुल पांच सौ तंके
तभी ख्वाजा नसरुद्दीन की नजर एक आदमी पर प
जो अकेला बैठा था। उसने मदद नहीं मांगी थ
लेकिन उसके चेहरे से परेशानी और तकलीफ झल
रही थी।

ख्वाजा नसरुद्दीन जोर से बोला : "अरे सुनो भाइ
अगर आप पर सूदखोर का कर्ज नहीं है, तो आप य
क्यों बैठे हैं?"

"हां कर्ज मुझ पर भी है!" भर्राये गले से
बोला। "जंजीरों में जकड़ा कल ही मैं गुलामों के बाज
में बिकने जाऊंगा।"

"लेकिन आप खामोश क्यों रहे?"

"ऐ सखी और मेहरबान मुसाफिर। मैं नहीं जान
कि तुम कौन हो। हो सकता है कि तुम फकीर बहाउद्द
हो जो गरीबों की मदद करने के लिए अपनी कब्र
उठ आये हो, या शायद हारूनर-रशीद हो। मैंने तुम
मदद नहीं मांगी क्योंकि तुम काफी खर्च कर चुके
और मेरा कर्ज सबसे भारी है—पांच सौ तंके। मुझे
था कि अगर तुमने मुझे रकम दे दी तो कहीं इन बु
और इन औरतों की मदद के लिए तुम्हारे पास का
रकम न बचे।"

"आप बड़े भलेमानुस हैं" दया से भरकर ख्वा
नसरुद्दीन बोला। "पर मैं भी मामूली भलामान
नहीं हूं। मेरे भी जमीर है और मैं कसम खाता हूं
आप कल गुलामों के बाजार में नहीं बिकेंगे। फैला
अपना दामन।"

और उसके दामन में अपने थैले का आखिरी सिक
तक उसने उंडेल दिया। खलअत का दामन बायें ह
से पकड़, दाहिने हाथ से उस आदमी ने ख्वाजा नस

द्दीन को गले लगाया, फिर आंसुओं से भरा अपना चेहरा उसके सीने पर रख दिया।

यकायक जोर से हंसता हुआ लम्बी दाढ़ी वाला भारी-भरकम संगतराश बोला : "सचमुच ही आप गधे से बड़े मजे से उछले।" फिर तो सभी हंसने लगे: मर्द भारी मोटी आवाज में, औरतें महीन तेज आवाज में। और बच्चे मुस्करा कर अपने हाथ ख्वाजा नसरुद्दीन की तरफ बढ़ाने लगे—जो खुद सबसे ज्यादा जोर से हंस रहा था।

"हो हो हो हो। हा हा हा हा!" वह खुशी से दोहरा होता हुआ हंस रहा था। "आप नहीं जानते कि यह गधा है किस किस्म का! यह बड़ा पाजी गधा है।"

"नहीं-नहीं, अपने गधे के बारे में ऐसा न कहिए।" बीमार बच्चे वाली औरत बोली। "यह दुनिया का सबसे बेशकीमत, होशियार और भला गधा है। इसकी तरह का न कोई गधा हुआ है और न होगा। मैं इससे ज्यादा और कुछ भी पसन्द न करूंगी कि जिन्दगी भर इस गधे की सेवा-टहल करती रहूं; खाने के लिए इसे सबसे बढ़िया अनाज दूं, इसके खरैरा करूं और इसकी दुम पर कंघी करूं—क्योंकि ऐसा बेमिसाल गधा, गुलाब की तरह जिसमें भलाइयों के सिवा और कुछ भी नहीं है, खाई पार करने में अगर उछला न होता और जीन पर से तुम्हें फेंक न दिया होता तो, ए मुसाफिर, तुम जो हमारे लिए अंधेरे में सूरज बनकर आये हो, यह बिना हमारी तरफ ताके चुपचाप सामने से गुजर जाते और तुम्हें रोकने की हिम्मत हम में से किसी को न होती।"

"ठीक कहती है यह!" बड़ी अहमियत के लहजे में बूढ़ा बोला। "हम सब अपना दुख दूर करने के लिए इस गधे के अहसानमन्द हैं। वाकई यह गधा दुनिया का जेवर है। सब गधों में यह हीरे की तरह चमकता है।"

सबने जोरों से गधे की तारीफ की। उसे भुना हुआ गल्ला, सूखे आड़ू, खूबानी और पूड़ियां खिलाने में सब एक दूसरे से बाजी लेने लगे। परेशान करने वाली मक्खियों पर गधे ने दुम फटकारी और बहुत अदब और गम्भीरता से सब की भेंट कबूल की—हालांकि उसकी एक आंख कुछ परेशानी लिये हुए उस चाबुक पर भी गड़ी थी जो ख्वाजा नसरुद्दीन चुपके से उसे दिखाता हुआ हिला रहा था।

दिन डूबने वाला था। साये लम्बे हो रहे थे। लाल पैरों वाले सारस पर फड़फड़ाते हुए और कें-कें करते हुए शोर मचाते अपने घोंसलों को लौट रहे थे, जहां उनके बच्चे लालच से खुली चोंचें आगे बढ़ाये उनका इंतजार कर रहे थे।

ख्वाजा नसरुद्दीन ने उन लोगों से जाने की इजाजत ली। सबने झुककर शुक्रिया अदा किया।

"आपका बहुत-बहुत शुक्रिया। आपने हमारी मुसीबतें समझीं।"

"कैसे न समझता मैं?" उसने जवाब दिया। "आज ही मेरे चार कारखाने छिन गये हैं, जिनमें आठ-आठ होशियार कारीगर मेरे लिए काम करते थे; एक मकान छिन गया जिसके बाग में फव्वारे लगे थे और पेड़ों से लटकते सोने के पिंजरों में चिड़ियां गाती थीं। कैसे न मैं आपकी मुसीबतें समझता?"

तब अपने पोपले मुंह से बूढ़े ने बुदबुदाकर कहा : "ऐ मुसाफिर! शुक्रिया के तौर पर भेंट देने के लिए मेरे पास कुछ है नहीं। जब मैंने अपना घर छोड़ा, तो मैं सिर्फ एक चीज अपने साथ लाया था। यह है कुरआन शरीफ। इसे तुम ले लो और खुदा करे इस दुनिया में यह तुम्हें रास्ता दिखाने वाली रोशनी बने।"

ख्वाजा नसरुद्दीन के लिए मजहबी किताबें बेकार थीं। पर बूढ़े के दिल को ठेस न पहुंचाने की गरज
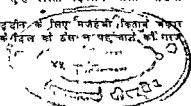
से उसने किताब ले ली, उसे जीन से लगे थैले में डाला और कूदकर गधे पर सवार हो गया।

"तुम्हारा नाम? तुम्हारा नाम क्या है?" बाकी लोगों ने एक साथ पूछा। "अपना नाम तो बताते जाओ, ताकि हमें मालूम रहे कि इबादत में किसके लिए दुआ मांगें।"

"आप लोगों को मेरा नाम जानने की क्या जरूरत! सच्ची नेकी को शोहरत की जरूरत नहीं। रहा दुआ मांगने का सवाल, सो अल्लाह के बहुत से फरिश्ते हैं जो उसे नेक कामों की खबर देते हैं। फरिश्ते अगर

सको रूह को रोशनी और गर्मी से गरीब और
र लोगों को राहत मिलती है। और यह इंसा
मीरर..."

"खबरदार! जुबान बन्द करो!" दूसरे आद
से फौरन टोका। "क्या तुम भूल गये कि दी
रि कान होते हैं, पत्थरों के भी आंखें होती
सैकड़ों कुत्ते सूंघते-सूंघते उसे तलाश कर सकते

"सच कहते हो तुम," तीसरे ने कहा, "हमें
मुंह बन्द रखना चाहिए, क्योंकि यह वक्त तो
मानो वह तलवार की धार पर चल रहा है।
भी धक्का उसके लिए खतरनाक बन सकता है

बीमार बच्चे वाली औरत बोली—"भले ही
मेरी जुबान खींच ले, लेकिन मैं उसका ना
लूंगी।"

"मैं भी खामोश रहूंगी।" दूसरी औरत बोल
चाहे मर जाऊं, लेकिन ऐसी गलती न करूंगी
उसके गले में रस्से का फन्दा पड़े।"

सब इसी तरह कहते रहे, सिवा संगतराश
कुछ कुन्दजहन था। उसकी समझ में न आ
कि मुसाफिर अगर कसाई या बैल का उक
बेचने वाला नहीं है तो क्योंकर कुत्ते उ
तलाश कर लेंगे। फिर, मुसाफिर अगर रस्से
वाला नट है, तो उसका नाम जोर से लेने
हरज था? वह औरत उस नेक शख्स के पे
जरूरी रस्सा देने के बजाय आखिर मरने को
है? संगतराश एकदम चक्कर में था। उस
नथुने फटकारे, गहरी सांस भरी और तय
इस मामले में अब वह और ज्यादा न सो
कहीं पागल न हो जाय।

ख्वाजा नसरुद्दीन इस बीच काफी सप
चुका था, तो भी उसकी आंखों के सामने अ
गरीबों के सूखे-मुरझाये चेहरे ही नाच र

बीमार बच्चे की, उसके सूखे होंठों और तमतमाये गालों की उसे बार-बार याद हो आती थी। उसकी आंखों के सामने सफेद बालों वाले उस बूढ़े की तस्वीर नाच गयी जो अपने घर से निकाल दिया गया था, और उसका दिल गुस्से से भर उठा।

अब वह जीन पर ज्यादा देर न बैठ सका। कूदकर वह नीचे आ गया और गधे के साथ-साथ चलता ठोकर से रास्ते के पत्थरों को हटाने लगा।

"ठहर, सूदखोरों के सरदार! ठहर, तुझे देखूंगा!" वह बड़बड़ा रहा था और एक शैतानी चमक उसकी काली आंखों में समायी हुई थी। "एक न एक दिन मेरी तेरी मुलाकात होगी ही और तब तेरी शामत आयेगी। और तू अमीर! तू, कांप और थर्रा, क्योंकि मैं, ख्वाजा नसरुद्दीन, बुखारा में आ पहुंचा हूं। मक्कार और शैतान जोंको! तुमने दुखी अवाम का खून चूसा है। लालची लकड़बग्घो! घिनौने गीदड़ो! हमेशा तुम्हारी दाल नहीं गलेगी! न ही अवाम पर हमेशा मुसीबत बरपा होगी! और तू, सूदखोर जाफर! मेरे नाम पर लानत बरसे, अगर मैंने तुझसे उस सारे गम और मुसीबत का हिसाब न चुकता किया जो तू गरीबों पर लादता रहा है!"

: ७ :

जिन्दगी में जिसने बहुत कुछ देखा और किया था, उस ख्वाजा नसरुद्दीन के लिए भी, अपने वतन में वापसी का पहला दिन बहुत से वाकओं और बेचैनी से भरा साबित हुआ। वह बहुत थका हुआ था और चाहता था कि कोई अलग जगह मिल जाय, जहां आराम कर सके।

"नहीं," एक तालाब के किनारे बहुत से लोगों की भीड़ देखकर, लम्बी सांस भरता हुआ वह बोला, "लगता

है आज मुझे आराम का मौका नहीं मिलेगा। जरूर यहां कुछ गड़बड़ है।"

तालाब सड़क से कुछ दूरी पर था। ख्वाजा नसरुद्दीन सीधा अपनी राह पर जा सकता था। लेकिन वह उन लोगों में नहीं था जो किसी भी झगड़े-फसाद या लड़ाई में कूदने का मौका हाथ से निकल जाने देते

इतने सालों से साथ होने की वजह से मालिक के तरीकों से बखूबी वाकिफ गधा अपने-आप ही तालाब तरफ मुड़ गया।

बचाव भीड़ के बीच गधा घुसेड़ते हुए ख्वाजा नसरुद्दीन चिल्लाया—"क्या बात है, भाइयो? क्या किसी का कत्ल हो गया है? कोई लुट गया है या? जगह खाली करो। अलग हटो।"

भीड़ में जगह बनाते हुए उस तालाब के बिलकुल किनारे पहुंचकर, जो काई और चिकनी मिट्टी से ढका ... ख्वाजा ने एक अजीब नजारा देखा। किनारे से ... डूब रहा था। बीच-बीच में ... मगर फिर डूब जाता। पानी में बुलबुले उठ ...

कई लोग किनारे खड़े हड़बड़ी मचा रहे थे और डूबते हुए आदमी के कपड़े पकड़कर बाहर खींच लेने के लिए बार-बार हाथ बढ़ा रहे थे। लेकिन, वह पहुंच से जरा बाहर था।

"हाथ बढ़ाओ! इधर! यहां! अपना हाथ दो!" वे चिल्ला रहे थे।

लग रहा था कि डूबता हुआ आदमी इन लोगों की बातें सुन नहीं रहा; वह एक बार पानी के ऊपर आता और फिर डूब जाता। जैसे ही वह डूबता, तालाब में हलकी लहरें उठतीं और किनारे से हौले से टकरातीं।

यह नजारा देखता हुआ ख्वाजा नसरुद्दीन सोचने लगा, "अजीब ...

वजह हो सकती है इसकी? क्यों वह अपना हाथ नहीं बढ़ाता? हो सकता है वह कोई होशियार गोताखोर हो और कोई शर्त लगाकर गोते लगा रहा हो। लेकिन यह बात है, तो वह अपनी खलअत क्यों पहने हुए है?"

वह इन ख्यालों में डूब गया। इस बीच वह डूबने वाला आदमी कम से कम चार बार पानी की सतह पर आया और हर बार डूब गया। पानी के भीतर रहने का वक्त हर बार पहले से ज्यादा था।

"बड़ी अजीब बात है।" गधे से उतरते हुए ख्वाजा नसरुद्दीन ने फिर दोहराया। "तू यहीं ठहर," अपने गधे से वह बोला, "मैं जाकर जरा नजदीक से देखूं तो कि बात क्या है।"

डूबता हुआ आदमी तब तक फिर पानी के भीतर पहुंच चुका था। इस बार वह इतनी देर तक पानी में रहा कि किनारे पर खड़े लोग उसे मरा हुआ समझ कर उसके लिए दुआ मांगने लगे।

यकायक वह फिर दिखाई दिया।

"यहां! इधर!" लोग चिल्लाये। "अपना हाथ दे हमें, हाथ" और उन लोगों ने उसकी ओर अपने हाथ बढ़ाये। पर वह उनकी ओर सूनी आंखों से देखता रहा और फिर चुपचाप पानी के भीतर समा गया।

"अरे बेवकूफो!" ख्वाजा नसरुद्दीन चिल्लाया। "उसके रेशमी साफे और कीमती खलअत को देखकर तुम्हें समझ लेना चाहिए कि वह कोई मुल्ला या अफसर है। मुल्लों और अफसरों के तौर-तरीकों से क्या तुम लोग इतने भी वाकिफ नहीं कि जान सको कि उन्हें किस तरह पानी से निकालना चाहिए?"

भीड़ में से आवाजें उठीं—"तुम तरकीब जानते हो तो निकालो उसे बाहर। और हां, जरा जल्दी करो। जाओ, उसे बचाओ। वह पानी के ऊपर आ गया है। जाओ उसे बाहर खींच लो।"

"ठहरो!" ख्वाजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया, "मैंने

तकरीर अभी खत्म नहीं की है। मैं पूछता हूं :
कब किसी मुल्ला या अफसर को किसी को कुछ देते
हैं? अरे जाहिलो! याद रखो कि मुल्ला या अफ-
भी कोई चीज देते नहीं हैं, सिर्फ लेते हैं। उनको
के लिए साइंस के उसूलों पर चलना चाहिए।
यह कि उन लोगों की अजब तबीयत का ख्याल
ही उन्हें बचाने की कोशिश करनी चाहिए। अच्छा,
के देखो।"

हैं अब तक तो बहुत देर हो चुकी है," भीड़ से
आयीं, "वह अब फिर पानी के ऊपर नहीं
।"

ा तुम समझते हो कि पानी की रूहें इतनी
ी से मुल्ला या अफसर को कुबूल कर लेंगी?
लती पर हो। पानी की रूहें उससे बचने की
शिश करेंगी।"

ा नसरुद्दीन बैठ गया और इतमीनान से इन्त-
रने लगा। वह तालाब के तले से उठते बुलबुलों
की हवा से किनारों की ओर तैरते देखता रहा।
आखिरकार पानी की गहराइयों से गहरे रंग की
ल धीरे-धीरे बाहर आयी। डूबता आदमी फिर
की सतह पर दिखायी दिया। अगर ख्वाजा नसरु-
वहां न होता तो वह आखिरी बार ऊपर आया-

ं! यह लीजिए! यह लीजिए।" ख्वाजा नसरु-
चिल्लाया।

ी आदमी ने अकड़ के साथ उस आगे बढ़े हाथ
ड़ लिया। उसकी पकड़ के दर्द से ख्वाजा नसरु-
कराह उठा।

आदमी के जबरदस्त चंगुल से छूटने और
उंगलियों को खोलने में बहुत देर लगी।
देर वह बिना हिले-डुले चुपचाप पड़ा रहा।
आई, चिकनी बदबूदार मिट्टी उस पर पुती हुई

थी और उसका चेहरा छिप गया था। उसके मुंह और नाक-कानों से पानी निकल रहा था।

"मेरा बटुआ! हाय, मेरा बटुआ! अरे, मेरा बटुआ कहां है?" वह कराहा। तब तक उसने चैन न ली, जब तक कमर में ठुंसा बटुआ उसने टटोल न लिया। फिर धीरे-धीरे उसने घास हटायी और खलअत के दामन से अपना मुंह पोंछा। ख्वाजा नसरुद्दीन झटके से पीछे हट गया। टूटी चपटी नाक; चौड़े नथुने; एक फूटी आंख—इस आदमी का चेहरा बहुत बदनुमा था। आदमी कुबड़ा भी था।

अपनी आंख से भीड़ को देखते हुए खरखराती आवाज में उसने पूछा : "मुझे बचाने वाला कौन है?"

"यह रहा तुम्हें बचाने वाला।" भीड़ ने चिल्लाकर ख्वाजा नसरुद्दीन को आगे ठेलते हुए कहा।

"इधर आओ! मैं तुम्हें इनाम दूंगा।" पानी से पिचपिचाते बटुए में हाथ डालकर उसने मुट्ठी भर चांदी के गीले सिक्के निकाले। "मुझे बाहर खींच लेने में कोई गैरमामूली या अजीब बात नहीं हुई। मैं तो आप ही निकल आता, फिर भी ..." शिकायत के लहजे में वह बोला।

वह बोल ही रहा था कि कमजोरी या किसी और वजह से उसका हाथ धीरे से खुल गया और सिक्के उसकी उंगलियों के बीच से खनखनाते हुए फिर बटुए में पहुंच गये। बस, उसके हाथ में सिर्फ एक सिक्का बचा—आधा तके का सिक्का। लम्बी सांस भरते हुए उसने सिक्का ख्वाजा नसरुद्दीन की ओर बढ़ा दिया।

"लो! रुपया लो और जाकर बाजार में एक प्याला पुलाव खरीद लो।"

"पुलाव का प्याला खरीदने को यह सिक्का काफी नहीं है।" ख्वाजा नसरुद्दीन बोला।

"परवाह नहीं। बिना गोश्त वाला भात खरीद लेना।" पास खड़े लोगों से ख्वाजा नसरुद्दीन बोला—"देख

न तुम लोगों ने कि कैसे मैंने इसे ताइम्स के उसूलों से बचाया।"

और वह अपने गधे की तरफ बढ़ चला।

रास्ते में वह एक आदमी के पास रुका। यह आदमी लम्बा, दुबला, कड़ियल और चिड़चिड़ी शक्ल का था और उस पर दोस्ती की छाप नहीं दिखायी पड़ती थी। उसके हाथ और बाहें कोयले और कालिख से काले हो रहे थे। उसके हाथ में लुहार का हथौड़ा था।

"कहो, लुहार भाई! क्या बात है?" ख़ोजा नसरुद्दीन ने पूछा।

बैर-भरी निगाहों से उसे ऊपर से नीचे तक घूरता हुआ लुहार बोला—"क्या तुम जानते हो कि तुमने किसे बचाया है? हां, और उस आख़िरी वक़्त बचाया है जिसके बाद फिर कोई उसे बचा नहीं सकता था! क्या तुम जानते हो तुमने जो कुछ किया है, उसकी वजह से कितने लोगों को कितने आंसू बहाने पड़ेंगे! क्या तुम जानते हो कितने लोगों को अपने घरों, खेतों और अंगूर के बागों से हाथ धोना पड़ेगा, कितने लोगों को गुलामों के बाजार में बिकना होगा और फिर वहां से खीवा की सड़क पकड़नी होगी?"

नसरुद्दीन उसकी ओर ताज्जुब से देखता रह गया।

"तुम्हारी बात मैं समझ नहीं पा रहा हूं, लुहार भाई! क्या यह किसी इंसान और मुसलमान को जेब देता है कि वह एक डूबते इंसान के पास से गुज़र जाय और उसकी मदद के लिए हाथ न बढ़ाये?"

"तो तुम समझते हो कि सभी सांपों, लकड़बग्घों और ज़हरीले जानवरों को बचा लेना चाहिए?" लुहार चिल्लाया। फिर यकायक कोई बात उसके दिमाग में चमकी, क्योंकि उसने पूछा: "क्या तुम यहीं के रहने वाले हो?"

"नहीं, मैं बहुत दूर से आया हूं।"

"तब तुम नहीं जानते कि जिस ख़ास को तुमने

थी और उसका चेहरा छिप गया था। उसके मुंह
नाक-कानों से पानी निकल रहा था।

"मेरा बटुआ! हाय, मेरा बटुआ! अरे, मेरा ब
कहां है?" वह कराहा। तब तक उसने चैन न ली,
तक कमर में खुंसा बटुआ उसने टटोल न लिया।
धीरे-धीरे उसने घास हटायी और खलअत के द
से अपना मुंह पोंछा। ख्वाजा नसरुद्दीन झटके से
हट गया। टूटी चपटी नाक; चौड़े नथुने; एक
आंख—इस आदमी का चेहरा बहुत बदनुमा
आदमी कुबड़ा भी था।

अपनी आंख से भीड़ को देखते हुए खरखर
आवाज में उसने पूछा : "मुझे बचाने वाला कौन है

"यह रहा तुम्हें बचाने वाला।" भीड़ ने चिल्ल
ख्वाजा नसरुद्दीन को आगे ठेलते हुए कहा।

"इधर आओ। मैं तुम्हें इनाम दूंगा।" पानी
पिचपिचाते बटुए में हाथ डालकर उसने मुट्ठी
चांदी के गीले सिक्के निकाले। "मुझे बाहर खींच
में कोई गैरमामूली या अजीब बात नहीं हुई। मैं
आप ही निकल आता, फिर भी..." शिकायत के लह
में वह बोला।

वह बोल ही रहा था कि कमजोरी या किसी और क
से उसका हाथ धीरे से खुल गया और सिक्के उस
उंगलियों के बीच से खनखनाते हुए फिर बटुए
पहुंच गये। बस, उसके हाथ में सिर्फ एक सिक्क
बचा—आधा तंके का सिक्का। लम्बी सांस भरते हु
उसने सिक्का ख्वाजा नसरुद्दीन की ओर बढ़ा दिया

"लो। रुपया लो और जाकर बाजार में एक प्याल
पुलाव खरीद लो।"

"पुलाव का प्याला खरीदने को यह सिक्का काफ
नहीं है।" ख्वाजा नसरुद्दीन बोला।

"परवाह नहीं। बिना गोश्तवाला भात खरीद लेना।"
साथ खड़े लोगों से ख्वाजा नसरुद्दीन बोला—"देखा

न तुम लोगों ने कि कैसे मैंने इसे साहूकार के चंगुलों से बचाया।"

और वह अपने गधे की तरफ बढ़ चला।

रास्ते में वह एक आदमी के पास रुका। यह आदमी लम्बा, दुबला, बदिमस और चिड़चिड़ी शक्ल का था और उस पर दोस्ती की छाप नहीं दिखायी पड़ती थी। उसके हाथ और बाहें कोयले और कालिख से काले हो रहे थे। उसके हाथ में लुहार का हथौड़ा था।

"कहो, लुहार भाई! क्या बात है?" ख्वाजा नसरुद्दीन ने पूछा।

बैर-भरी निगाहों से उसे ऊपर से नीचे तक घूरता हुआ लुहार बोला—"क्या तुम जानते हो कि तुमने किसे बचाया है? हां, और उस आखिरी वक्त बचाया है जिसके बाद फिर कोई उसे बचा नहीं सकता था? क्या तुम जानते हो तुमने जो कुछ किया है, उसकी वजह से कितने लोगों को कितने आंसू बहाने पड़ेंगे? क्या तुम जानते हो कितने लोगों को अपने घरों, खेतों और अंगूर के बागों से हाथ धोना पड़ेगा, कितने लोगों को गुलामों के बाजार में बिकना होगा और फिर वहां से खीवा की सड़क पकड़नी होगी?"

नसरुद्दीन उसकी ओर ताज्जुब से देखता रह गया।

"तुम्हारी बात मैं समझ नहीं पा रहा हूं, लुहार भाई! क्या यह किसी इंसान और मुसलमान को शोभा देता है कि वह एक डूबते इंसान के पास से गुजर जाय और उसकी मदद के लिए हाथ न बढ़ाये?"

"तो तुम समझते हो कि सभी सांपों, लकड़बग्घों और जहरीले जानवरों को बचा लेना चाहिए?" लुहार चिल्लाया। फिर यकायक कोई बात उसके दिमाग में चमकी, क्योंकि उसने पूछा : "क्या तुम यहीं के रहने वाले हो?"

"नहीं, मैं बहुत दूर से आया हूं।"

"तब तुम नहीं जानते कि जिस शख्स को तुमने

"हां, यह सही है," सुहार उसकी बात मानते हुए बोला, "पर जो हो चुका वह अब बदला नहीं जा सकता। कोई उस सूदखोर को फिर से तो पानी में धकेल नहीं सकता।"

ख्वाजा नसरुद्दीन को जोश आ गया।

"मैंने बुरा काम किया। पर मैं उसे ठीक कर दूंगा। सुनो, सुहार भाई। मैं कसम खाता हूं कि मैं सूदखोर जाफर को डुबाकर दम लूंगा। मैं अपने वालिद की कसम खाता हूं। मैं उसे डुबा कर रहूंगा, हां। और इसी तालाब में डुबाऊंगा। लुहार भाई! मेरा कौल याद रखना, क्योंकि मैंने कभी फिजूल बकवास नहीं की। सूदखोर को डूबना ही होगा। और जब तुम बाजार में यह खबर सुनो, तो समझ लेना कि बुखारा अजीम के शहरियों का मैंने जो कसूर किया था, उसका मैंने बदला चुका दिया है।"

: ८ :

ख्वाजा नसरुद्दीन बाजार पहुंचा तो शहर पर ठंडे, खुशगवार कोहरे की तरह शफक छा रही थी।

चायखानों में खुशगवार आग जल रही थी और थोड़ी ही देर में पूरे बाजार में रोशनी होने लगी। अगले दिन बड़ा बाजार लगने वाला था। एक-एक करके ऊंटों के काफिले आ रहे थे। काफिले अंधेरे में गायब हो जाते पर घंटियों की उदास, साफ, लयदार आवाज हवा में गूंजती रहती। जब यह गूंज दूर जाकर खत्म हो जाती, तो बाजार में आने वाले दूसरे काफिले की घंटियां उदास टिनटिनाहट करने लगतीं।

यह सिलसिला बराबर जारी रहता, मानो खुद रात आवाज कर रही हो, कांप रही हो और धीरे-धीरे कराह रही हो—दुनिया के कोने-कोने से आयी आवाजों से भर रही हो। हिन्दुस्तान, ईरान, अरब, अफगानिस्तान

और मिस्र से आयीं, ये न दिखायी पड़ने वाली घंटियां, कोई ललक भरा गीत गाती लग रही थीं। ख्वाजा नसारुद्दीन यह सब सुनता रहा। उसे लग रहा था कि वह हमेशा-हमेशा यह संगीत सुनता रह सकता है। पड़ोस के एक चायखाने से तम्बूरे की आवाज आ रही थी और एक दुतारा मानो उसके जवाब में बज रहा था। कहीं कोई गवैया (जो दिखायी नहीं दे रहा था) अपनी तेज, साफ आवाज ऊंची करके सितारों तक पहुंचा रहा था। अपनी माशूका के बारे में वह गीत गा रहा था उसकी बेवफाई की शिकायत कर रहा था।

इस गाने को सुनता हुआ ख्वाजा नसारुद्दीन रात में सोने की जगह तलाश करने के लिए चल पड़ा।

एक चायखाने के मालिक से वह बोला : "मेरे पास अपने और अपने गधे के लिए कुल आधा तंका है।"

"आधे तंके में तुम यह रात गुजार सकते हो, लेकिन तुम्हें कम्बल नहीं मिलेगा।' उसने जवाब दिया।

'तो मैं अपना गधा कहां बांधूं?"

"तुम्हारे गधे के बारे में मैं क्यों सिरदर्द मोल लूं!'

चायखाने में कहीं खूंटा नहीं था। ऊंचे [illegible] बारादरी से निकला एक कुंडा ख्वाजा नसारुद्दीन को दिखाई दिया। यह देखे बिना कि यह कुंडा किस चीज में लगा है उसने गधे को बांध दिया। चायखाने में पहुंचते ही वह फौरन लेट गया क्योंकि वह बहुत थका हुआ था।

उसे झपकी आ रही थी कि एकाएक उसे अपना नाम सुनायी दिया। उसने आंखें आधी खोलीं।

पास ही, बाजार से आये कुछ [illegible] चायखाने [illegible] आ गये थे। इनमें एक ऊंटवान था, एक [illegible] और [illegible]। कोई धीमी आवाज में कह रहा था :

"ख्वाजा नसारुद्दीन के बारे में यह भी कहा जाता है, एक दिन जब वह बगदाद में था, तो बाजार के [illegible] हांका सुनाई पड़ा। [illegible] उसे एक [illegible] के

रिमूल सुनायी दिया। तुम तो जानते ही हो, हमार
रोजा नसरुद्दीन ऐसी बातें जानने के लिए कितन
बावला रहता है। वह सराय के भीतर जा पहुंचा
हैं मोटा लाल मुंहवाला सराय का मालिक एक भिख
गे की गरदन पकड़े उसे झकझोर रहा था। वह दा
ग रहा था और फकीर देने से इन्कार कर रहा था
यह शोरगुल क्यों हो रहा है?' ख्वोजा नसरुद्दीन
छा, 'तुम लोग क्यों झगड़ रहे हो?' सराय क
मालिक जोर से बोला—'यह आवारा, यह कमीना, य
दगाबाज भिखमंगा, खुदा करे इसकी आंतों में की
ड़े, यह मेरी दूकान में घुस आया। अपनी खलअत
दामन से इसने रोटी का एक टुकड़ा निकाला और देर त
उसे वहीं अंगीठी के ऊपर किये खड़ा रहा जहां मैं बढ़
रसीला सीख कबाब भून रहा था। यह तब तक य
खड़ा रहा जब तक इसकी रोटी में भुने गोश्त की खुश
न भर गयी और रोटी दुगनी मुलायम और जायकेद
न बन गयी। फिर यह रोटी को निगल गया। अब
उसकी कीमत अदा करने से इनकार करता है। खु
करे इसके दांत गिर जायें, इसकी खाल उधड़कर अल
जा गिरे।' 'क्या यह सच है?' ख्वोजा नसरुद्दीन
सख्ती से पूछा। भिखमंगे के मुंह से डर के मारे ब
न निकली। ख्वोजा नसरुद्दीन ने कहा—'तुम जान
हो कि दूसरे की चीज अदा किये बिना उसे इस्तेमा
कर लेना गलत है।' बहुत खुश होकर सराय
मालिक बोला 'सुना तूने बदमाश? तूने इस काबि
और बाइज्जत शख्स की बात सुनी?' ख्वोजा नस
रुद्दीन ने भिखारी से पूछा—'तुम्हारे पास पैसा है
भिखमंगे ने अपनी जेब से आखिरी पैसे निकाले अ
उन्हें ख्वोजा नसरुद्दीन के सिपुर्द कर दिया। सर
के मालिक ने अपना चर्बीदार पंजा पैसे लेने के लि
आगे बढ़ाया। ख्वोजा नसरुद्दीन बोला—'ठहरि
हजरत। पहले अपना कान मेरे पास लाइये।' क

दानिशमन्दी की दूसरी बात यह है कि अगर तुम से
कोई कहे कि गरीब इंसान की जिन्दगी अमीर के मुका-
बले में ज्यादा आसान और आरामदेह है, तो उसका
यकीन न करना। लेकिन यह दूसरी बात भी कुछ
तीसरी बात के मुकाबले कुछ नहीं है, जिसकी तेज
चमक सूरज को अंधा बना देने वाली रोशनी की तरह
है और जिसकी गहराई सिर्फ समन्दर की गहराई
से मिलाई जा सकती है। यह तीसरी बात मैं तुम्हें अपने
घर के फाटक पर पहुंचकर बताऊंगा। अब जल्दी
चल—क्योंकि मैं सुस्ता चुका हूं।'

''ख्वाजा नसरुद्दीन बोला—'ठहरिए, मुल्ला साहब।
मुझे आपकी दानिशमन्दी की तीसरी बात पहले
से ही मालूम है। अपने घर के दरवाजे पर पहुंचकर
आप मुझे बतायेंगे कि चालाक आदमी बेवकूफ इंसान
से कद्दुओं का बोरा हमेशा मुफ्त ढुलवा सकता है।'
मुल्ला अचम्भे में आ गया और थम गया। ख्वाजा
नसरुद्दीन का कयास ठीक था।

''अब जनाब मुल्ला साहब! आप दानिशमन्दी की
मेरी भी एक बात सुनिये। यह अकेली बात आपकी
सभी बातों के बराबर है।' ख्वाजा नसरुद्दीन कहता गया।
'मैं पाक पैगम्बर की कसम खाकर कहता हूं कि मेरी
दानाई की बात इतनी गहरी और ऐसी चकाचौंध
कर देने वाली है कि इसमें कुरआन, शरिअत, तरी-
कत व सब दूसरी किताबों के पूरा इस्लाम, बौद्ध फल-
सफा, ईसाई और यहूदी मजहबों की तमाम बातें
शामिल हैं। ऐ मुल्ला साहब! मुझे सच्चा ईमान
बताने वाले मेरे उस्ताद! इस बात से, जो मैं आपको
बताने जा रहा हूं, ज्यादा दानिशमन्दी की बात कोई
हुई ही नहीं। लेकिन, इसे सुनने के लिए आप
अपने को तैयार कर लीजिए। क्योंकि यह
बात हैरत, अजीमुश्शान और अचम्भे में डाल देने

वाली है कि इससे आसानी से किसी इंसान का दिमाग फिर सकता है। मुल्ला साहब! अपने दिमाग को फौलाद की तरह कड़ा कर लीजिए और सुनिए: अगर आपसे कोई कहे कि ये कद्दू फूटे नहीं हैं, तो उसके मुंह पर थूक दीजिएगा, उसे झूठा करार दे दीजिएगा और उसे अपने घर से निकाल बाहर कीजिएगा।'

"यह कहकर ख्वाजा नसरुद्दीन ने बोरा उठाया और पास वाले गहरे खड्ड में फेंक दिया। कद्दू बोरे से निकल पड़े और पत्थरों से टकराते, आवाज करते हुए नीचे गिरकर चकनाचूर हो गये। मुल्ला 'हाय, हाय!' कहता, अफसोस करता हुआ रोने-धोने लगा। 'हाय कितना नुकसान हो गया! कैसी बरबादी हो गयी!' कहता हुआ वह चीखता-चिल्लाता रोता, अपना मुंह नोचता, पागलों जैसा चल पड़ा।

"उसके चलते-चलते नसरुद्दीन ने कहा: 'देखा न आपने। मैंने आपको खबरदार कर दिया था। मैंने आपको पहले ही बताया था कि दानाई की मेरी बात से आप पागल हो सकते हैं।'"

सुनने वाले हंसी से लोट हो गये।

धूल और खटमल भरे नमदे पर एक कोने में पड़ा ख्वाजा नसरुद्दीन सोचने लगा:

"तो उन्होंने इस वाकये की भी खबर पा ली! लेकिन कैसे? उस सड़क पर उस वक्त सिर्फ दो ही शख्स थे—मुल्ला और मैं। और मैंने किसी से इस बारे में कभी कुछ कहा नहीं। शायद मुल्ला को जब पता लगा है कि उसके कद्दू कौन ले रहा था, तो उसने यह किस्सा खुद सुनाया हो।"

तभी तीसरे शख्स ने अपना किस्सा शुरू कर दिया:

"एक दिन मु...

चुका हूं। चाहे कब्र में लेटूं, चाहे नदी की गोद में, मेरे लिए कोई फर्क पड़ता नहीं। लेकिन इन मुसाफिरों को आगाह कर देना चाहिए, नहीं तो मेरे ऊपर मेहरबानी करते-करते कहीं ये लोग अपनी जान से हाथ न धो बैठें। उन्हें आगाह न करना, मेरा नाशुक्रापन होगा।'

"चारपाई पर वह थोड़ा सा उठा और नदी की तरफ इशारा करता हुआ कमजोर आवाज में बोला: 'मुसाफिरो! मैं जब जिन्दा था, तो हमेशा इस नदी को चनार के उन दरख्तों के पास से पार किया करता था।' इतना कहकर उसने फिर आंखें बन्द कर लीं। मुसाफिरों ने ख्वाजा नसरुद्दीन का शुक्रिया अदा किया और जोर-जोर से उसकी रूह के लिए दुआ मांगते हुए, चारपाई लेकर आगे बढ़ चले।"

कहानी कहनेवाला और कहानी सुननेवाले एक-दूसरे को कोहनी मारकर हंस रहे थे। ख्वाजा नसरुद्दीन कहा:

"पूरा वाकया ही उन्होंने गलत सुना। पहली बात तो यह कि मैंने ख्वाब देखा ही नहीं कि मैं मर चुका हूं। मैं इतना बेवकूफ नहीं कि अपनी मौत और जिन्दगी में फर्क न कर सकूं। अरे, मुझे तो यह भी याद है कि उसी वक्त मुझे पिस्सू काट रहे थे और मुझे बड़ी ख्वाहिश हो रही थी कि अपना बदन खुजा लूं। जिन्दा होने का यह सबसे साफ सबूत था। मैं जिन्दा न होता तो पिस्सू काटने की खुजली हर्गिज महसूस न करता। हां, थका हुआ मैं बहुत था और चलना नहीं चाहता था। मुसाफिर तगड़े थे और उन्हें जरा-सा रास्ता बदलकर गांव तक मुझे पहुंचा देने में कोई तकलीफ न होती। लेकिन नदी को जब वे उस जगह पार करने की बात सोचने लगे जहां पानी की गहराई तीन आदमियों के बराबर थी तो मैंने उन्हें रोका—हालांकि तब भी मैं सोच रहा था सिर्फ लोगों के ही खानदान की बात, अपनी नहीं क्योंकि

रोशनी! ऐ इस सूबे के चांद-सूरज! ऐ हमारे सूबे के हर बाशिन्दे को खुशी और मसर्रत बख्शनेवाले! अपने इस नाचीज गुलाम की बात सुनिए जो आपके महल के दरवाजे को अपनी दाढ़ी से साफ करने के काबिल भी नहीं। ऐ मेहरबानों के मेहरबान! अपना एक हाथी हमारे गांव में भेजकर आपने बड़ी मेहरबानी की है और उसको खिलाने-पिलाने और उसकी देख-भाल करने का गांववालों को मौका दिया है। हम लोगों को इससे कुछ फिक्र हो गयी है...'

"हाकिम की त्यौरियां चढ़ गयीं। ख्वाजा नसरुद्दीन उनके सामने बिल्कुल वैसे ही झुक गया जैसे आंधी में पतवार झुक जाती है। हाकिम ने पूछा—'किस बात की फिक्र? बोलता क्यों नहीं? क्या तेरी नापाक, गंदी जुबान सूख कर तालू से चिपक गयी है?' ख्वाजा नसरुद्दीन डर का दिखावा करता हुआ मिमियाया 'मैं...ऐ...हम... ऐ... आका हमें फिक्र है कि हाथी को अकेलापन महसूस होता है। बेचारा जानवर बहुत गमगीन है। उसकी तकलीफ देखकर गांववाले गमगीन हो गये हैं और अफसोस मना रहे हैं। ऐ काबिले अजीम! अपनी रोशनी से इस दुनिया को रोशन करनेवाले ऐ हुजूर! गांववालों ने मुझे आपके पास भेजा है। उन्होंने मुझसे यह इल्तिजा करने को कहा है कि हाथी के साथ रहने के लिए आप एक हथिनी भी भेज दीजिए।' इस दरख्वास्त पर हाकिम बहुत खुश हुआ और उसे फौरन पूरा करने का हुक्म जारी कर दिया। खुशी जाहिर करते हुए उसने ख्वाजा नसरुद्दीन को अपना जूता चूमने की इजाजत दी। ख्वाजा नसरुद्दीन ने यह काम ऐसी लगन और मेहनत से किया कि हाकिम के जूते का रंग उड़ गया और ख्वाजा नसरुद्दीन के होंठ काले पड़ गये..."

ख्वाजा नसरुद्दीन की बुलन्द आवाज ने किस्सा सुनानेवाले की बात बीच ही में काट दी।

"तू झूठ बोलता है!" ख्वाजा नसरुद्दीन चिल्लाया।

"गन्दे! मरियल कुत्ते! यह तेरे होंठ, तेरी जुबान और तेरा पेट हैं जो बड़े लोगों के जूते चाटने से काले पड़ गये हैं। ख्वाजा नसरुद्दीन कभी किसी बड़े आदमी के सामने नहीं झुका। तू ख्वाजा नसरुद्दीन को बदनाम करता है? ऐ मुसलमानो! तुम इसकी बात न सुनो और इसे यहां से मार भगाओ।"

बदनाम करनेवाले उस शख्स से निपटने के लिए वह आगे झपटा ही था कि चपटे, चेचकरू चेहरेवाले आदमी की पीली काइयां आंखों को पहचानकर वह एकदम रुक गया। यह वही नौकर था जिसने उससे बहिश्त के पुल पर बाड़ लगाने के सिलसिले में गली में झगड़ा किया था।

ख्वाजा नसरुद्दीन चिल्लाया: "आहा! मैं तुझे जानता हूं ये जासूस! बता, खुफियागिरी से खबर देने का तुझे क्या मिलता है? जिनके साथ तू दगा करता है, फांसी दिलवाता है, उन पर फी कस कितनी रकम मिलती है? अबे अमीर के जासूस और खुफिया! मैं तुझे अच्छी तरह पहचानता हूं!"

जासूस ने, जो अब तक बिलकुल खामोश खड़ा था, एकाएक ताली बजायी और ऊंची आवाज में चिल्लाया: "सिपाही! सिपाही!

ख्वाजा नसरुद्दीन ने सिपाही के दौड़ते कदमों की आहट, भालों की खनखनाहट और ढालों की खटाखट सुनी। एक भी लमहा खोये बिना वह एक तरफ को उछला और रास्ता रोकने वाले चेचकरू जासूस को गिरा दिया।

अब उसे चौराहे की दूसरी तरफ से पहरेदारों के कदमों की आवाज सुनायी पड़ी। जिस तरफ भी वह जाता, सामने सिपाही ही पड़ते। एक लमहे तक तो उसे लगा कि अब बच निकलना नामुमकिन है।

वह जोर से बोला: "लानत है मुझ पर! मैं फंस गया। ऐ मेरे वफादार गधे! कहां है तू? अलविदा!"

उसी वक्त अंधेरे में भी एक ऐसा वाकया हुआ जिसकी कोई उम्मीद न थी और जिसे आज भी लोग बुखारा में याद करते हैं। ऐसा वाकया जो कभी न भुलाया जा सकेगा। बड़ा नुकसान और हो-हल्ला हुआ था उस बात से।

अपने मालिक की उदास आवाज सुन कर गधा उसकी तरफ बढ़ा। उसके साथ ही बरसाती से टकराता हुआ एक बहुत बड़ा ढोल भी साथ-साथ आने लगा। अंधेरे में बिना जाने हुए ही ख्वाजा नसरुद्दीन ने अपने गधे को उस बड़े ढोल के कुंडे से बांध दिया था जिसे बजा कर चायखाने का मालिक बड़े त्योहारों पर ग्राहकों को अपनी दुकान की तरफ बुलाता था। ढोल एक पत्थर से जा टकराया। बड़े जोर की धमक हुई। गधे ने पीछे मुड़कर देखा। ढोल फिर बजा। यह समझकर कि उसके मालिक से निपटकर शैतान अब उसके पीछे आ पड़ा है, यह समझकर कि अब उसकी भूरी खाल की खैरियत नहीं, डर के मारे गधा अपनी दुम उठाकर जोरों से रेंकता हुआ बाजार की तरफ भागा।

तभी एक काफिले के पचास ऊंट चीनी के बरतन और तांबे की चादरें लादे बाजार की तरफ आ रहे थे। इस तरह जोरों से रेंकने और धमकने-बमकने वाले जानवर को अपनी तरफ बढ़ता देख ऊंट घबराकर इधर-उधर भागे। उन पर लदे चीनी मिट्टी के बरतन व तांबे की चादरें खनखनाती हुई जमीन पर गिरने लगीं।

जरा सी देर में पूरे बाजार और आसपास की गलियों में खौफ और घबड़ाहट फैल गयी। टिनटिना-हट, रेंक, भोंक, खनखनाहट, बरतनों के गिरने की खनन-खनन आवाज, गरज, चीख-पुकार—बिलकुल दोजख जैसा शोरगुल। हर आदमी भौंचक्का और हड़बड़ाया हुआ। सैंकड़ों ऊंट, घोड़े, गधे, रौंसया तुड़ा-तुड़ा कर अंधेरे में भागने लगे। तांबे की चादरें

से लड़-लड़कर ज़ोर की गरज पैदा करने लगे। जानवरों के मालिक मशालें हाथ में लिये इधर-उधर दौड़ते भागते चिल्लाने लगे।

इस दोज़ख़ी शोरगुल को सुनकर सोने वाले जाग गये और अधनंगे ही इधर-उधर भागने लगे। कभी वे एक-दूसरे से जा भिड़ते। कभी अफ़सोस व तकलीफ़ के साथ चीख़-पुकार मचाते। वे तो समझे थे कि हश्र का दिन आ गया है। पर फड़फड़ा-फड़फड़ा कर मुर्गे बाग देने लगे। हुल्लड़ और भी बढ़ा और शहर के बाहर की आबादी तक फैल गया। फिर तो शहर की चहारदिवारी पर लगी तोपें दगने लगीं। शहर के पहरेदारों ने समझा कि दुश्मन बुख़ारा में घुस आया है। और तो और, शाही महल की तोपें भी गरज उठीं—वहां के पहरेदारों ने समझा कि इन्क़लाब हो गया है। शहर की अनगिनत मीनारों से सहमी और ग़मगीन आवाज़ों में मुअज़्ज़िन दुआ मांगने लगे। अंधेरे में मारी गड़बड़ मची हुई थी; कोई नहीं समझ पाता था कि क्या करें और कहां भागकर जायें।

इसी हो-हुल्लड़ के बीच ख़्वाजा नसरुद्दीन पगलाये हुए ऊंटों और घोड़ों से फ़ुर्ती से बचता हुआ, ढोल की आवाज़ का सहारा लिए, अपने गधे का पीछा करता, दौड़ रहा था। गधे को वह तब तक न पकड़ पाया जब तक गधे और ढोल को एक दूसरे से जोड़ने वाली दरम्यानी रस्सी टूट न गयी और ढोल लुढ़क कर ऊंटों के पांवों तले न आ गया, जो उससे बचने की हड़बड़ी में शामियाने, चबूतरे, छप्पर, सायबान और ख़ोंचों को तड़ातड़ गिराने लगे।

सचमुच, गधे को ढूंढने में ख़्वाजा नसरुद्दीन को न जाने कितना वक्त लग जाता, अगर एकाएक दोनों एक-दूसरे के सामने न आ पड़ते। फेन से लथपथ गधा ऊपर से नीचे तक कांप रहा था।

"चल, इधर आ! यहां ज़रूरत से ज़्यादा शोरगुल

हो रहा है।" गधे को अपने पीछे खींचता हुआ ख़ोजा नसरुद्दीन बोला। "यह देखकर ताज्जुब होता है कि गधे के पीछे ढोल बांध दिया जाय तो यह छोटा-सा जानवर किस कदर बरबादी बरपा कर सकता है। अबे, देखा तूने क्या कर डाला है? सच है कि तूने मुझे पहरेदारों से बचाया। फिर भी बुखारा के गरीब बाशिन्दों के लिए मुझे अफसोस है। सारा घपला साफ करने में उन्हें सवेरा हो जायेगा। अब हमें कोई ऐसी जगह कहां मिल सकती है, जहां कोई खलल न डाले।"

ख़ोजा नसरुद्दीन ने तय किया कि वह कब्रिस्तान में रात गुजारेगा। वह सोच भी ठीक ही रहा था क्योंकि चाहे जितनी गड़बड़ क्यों न हो, मुर्दे तो उठकर हाथों में मशाल लेकर चीखते-चिल्लाते दौड़ नहीं सकते थे।

इस तरह, अमन में खलल डालने वाले और फूट के बीज बोनेवाले ख़ोजा नसरुद्दीन ने अपने वतन में वापसी का पहला दिन अपनी शोहरत के मुताबिक ही गुजारा। एक कब्र के पत्थर से उसने गधा बांधा और दूसरी कब्र पर आराम से लेटकर सो गया। इस बीच शहर में काफी देर तक शोरगुल, चीख-पुकार, घंटियों की टनटनाहट और तोपों की गरज के साथ गड़बड़ जारी रही।

: ९ :

तड़का होते ही—जब तारे मद्धिम पड़ने लगे, अंधेरे से चीजों के खाके उभरने लगे—चौड़ी सड़कें, बढ़ई, कुम्हार और सफाई करनेवाले बाजार में जमे और मन लगाकर काम करने लगे। गिरे हुए खम्भे खड़े करने को उन्होंने सीधा किया, दुकानों की मरम्मत की, कन्दरों के सुराखों को भरा और टूटे बानकों और

लकड़ी के टुकड़ों को साफ किया । और, सूरज की
पहली किरन जब धरती पर उतरी तो मुसाफ़िरों में रात
की गड़बड़ी का कोई निशान बाकी नहीं था ।

बाजार खुला ।

रात भर आराम से कब्र पर सोने के बाद खोजा
नसरुद्दीन अपने गधे पर सवार हुआ और बाजा
की तरफ चल पड़ा । अभी ही वहां चहल-पहल औ
लोगों की आने-जाने और तरह-तरह की बोलियों व
भनभनाहट होने लगी थी । अलग-अलग नस्ल
के लोगों की रंग-बिरंगी लिबासवाली भीड़ हो गय
थी । सौदागरों, भिश्तियों, नाइयों, दरवेशों, फकीरों
आवाज और बाजार में बैठे जग लगे डरावने औजार
को हिलाते हुए दांत निकालनेवालों के शोरगुल
बीच अपनी ही आवाज मुश्किल से सुनायी देती थी
खोजा नसरुद्दीन जोर-जोर से चिल्लाता जा रहा था
"हटो, बचो। रास्ता करो। हटो!" रंग-बिरं
खलअतें, साफे, घोड़ों के कम्बल, कालीन, चीनी
अरबी, मंगोलियाई व बहुत सी दूसरी जुबानें
धक्कमधक्का करती, भनभनाती भीड़ में शामिल थीं
गर्द उड़कर आसमान पर छा रही थी । आदमि
का कभी खत्म न होनेवाला तांता लगा हुआ था
अपना-अपना सामान फैलाकर ये लोग भी आम
गुल में आवाजें मिला रहे थे । पतली छड़ियों
कुम्हार अपने बरतन बजा रहे थे और उधर से गु
रनेवालों की खलअतें पकड़-पकड़कर उनसे साफ़ ख
खनाहट सुनने को कह रहे थे ताकि वे उन्हें खरीद
को राजी हो जायें । तांबेवालों की कतार में तांबे
बरतनों की चमक चकाचौंध पैदा कर रही थी
हवा छोटे-छोटे हथौड़ों की आवाज से गूंज रही थ
कारीगर सुराहियों और किश्तियों पर डिजाइन
रहे थे । जोर-जोर से वे अपनी दस्तकारी की ता
कर रहे थे; आसपासवाले के काम की बुराई

में क्यों नहीं रहते ? महल के फाटक पर किस इन्तजार में पड़े हैं ?"

"हम अपने आकाएइनामदार, बादशाह, जिसकी रोशनी सूरज को भी ढंक लेती है, ऐसे अमीर के यहाँ और नेक इंसाफ का इन्तजार कर रहे हैं ।"

ताने भरी आवाज में ख्वाजा नसरुद्दीन बोला : "अच्छा ? आप अपने आकाए बालाजाह, जिसकी रोशनी सूरज को भी ढक लेती है, उस अमीर के यहाँ और नेक इंसाफ का इन्तजार काफी वक्त से कर रहे हैं !"

गंजे आदमी ने जवाब दिया, "ऐ मुसाफिर! हम पांच हफ्ते से ज्यादा से इन्तजार कर रहे हैं । यह दोगल झगड़ालू शख्स—अल्लाह इसे सजा दे, शैतान अपनी दुम इसके बिस्तर पर फैलाये—यह दुश्मन मेरा बड़ा भाई है । हमारे वालिद का इन्तकाल हुआ और वह हम लोगों के लिए कुछ जायदाद छोड़ गये । इस बकरे को छोड़कर बाकी सब कुछ हमने बांट-चूंट लिया है । अब अमीर फैसला करें कि यह बकरा किसे मिलना चाहिए ।"

"लेकिन वह बाकी जायदाद कहां है जो आप लोगों को विरासत में मिली थी ?"

"हर चीज बेचकर हमने उसकी नकद कीमत इकट्ठी कर ली है । अर्जी लिखनेवाले मुहर्रिरों, अर्जियां लेनेवाले अहलकारों, पहरेदारों व दूसरे बहुत से लोगों को भी तो पैसा देना होता है न ।"

गंजा आदमी यकायक उछल पड़ा और दौड़कर गंदगी व गर्दगी भरे एक दरवेश को पकड़ लिया, जो एक नुकीली टोपी पहने था और बगल में [illegible] लटकाये था ।

"ऐ पाकबाज इन्सान! मेरे लिए दुआ करो! दुआ करो कि फैसला मेरे माफिक हो!"

दरवेश ने रकम ले ली और दुआ करनी शुरू की । [illegible] से ही इमारत के [illegible] [illegible] आने लगी, [illegible]

ने उसकी तूंबी में एक सिक्का और डाल दिया ताकि वह फिर से दुआ मांगे।

दाढ़ीवाला ख़स्ता परेशान होकर उठा और भीड़ पर नज़र दौड़ाने लगा। काफ़ी ढूंढ़ने के बाद उसे एक दरवेश दिखायी दिया जो पहलेवाले से भी ज़्यादा गंदा और फटेहाल था और इसीलिए ज़्यादा पाक था। इस दरवेश ने बहुत बड़ी रकम मांगी। दाढ़ीवाला उससे मोल-भाव करना चाहता था। लेकिन, दरवेश ने अपनी टोपी के नीचे से टटोलकर मुट्ठीभर बड़े-बड़े जुएं निकाल दिये। अब दाढ़ीवाला उसकी पाकीज़गी का कायल हो गया और मांगी हुई रकम मंज़ूर कर ली। जीत की नज़र से अपने छोटे भाई की तरफ़ देखते हुए उसने रकम गिन दी।

दरवेश दोज़ानू बैठकर ज़ोर-ज़ोर से दुआ मांगने लगा और उसकी ऊंची आवाज़ में पहले दरवेश की आवाज़ डूब गयी। गंजा परेशान होने लगा और उसने अपने दरवेश को कुछ सिक्के और दिये। दढ़ियल ने भी यही किया। दोनों दरवेश एक-दूसरे से बाज़ी मारने के लिए इतना हल्ला मचाने लगे कि ज़रूर अल्लाह ने फ़रिश्तों से बहिश्त की खिड़कियां बन्द कर लेने को कहा होगा ताकि इस शोरगुल से बहरे न हो जायें।

लकड़ी के खूंटे को कुतरता हुआ बकरा लगातार दर्द भरी आवाज़ में अब भी मिमिया रहा था।

गंजे ने उसके सामने तिपतिया घास का आधा गट्ठर डाल दिया। दाढ़ीवाला चीखा :

"मेरे बकरे के सामने से हटा अपनी बदबूदार घास!"

लात से उसने घास हटा दी और भूसी का एक बरतन उसके सामने रख दिया।

गंजा गुस्से में चिल्लाया : "नहीं-नहीं! मेरा बकरा तुम्हारी भूसी नहीं खायेगा!"

भूसी का बरतन भी घास के पास जा पड़ा। बर-

सन गिरकर फूट गया। भूसी सड़क की धूल में मिल गयी। दोनों भाई गुस्से में एक-दूसरे से गुँथे हुए थे। एक-दूसरे पर वे गालियों व घूंसों की बौछार कर रहे थे और जमीन पर लोट रहे थे।

ख्वाजा नसरुद्दीन ने सिर हिलाते हुए कहा : "दो बेवकूफ लड़ रहे हैं। दो ठग दुआ मांग रहे हैं। इ बीच बकरा भूख से मर चुका है! ए नेक और आपसी मुहब्बतवाले भाइयों! जरा इधर तो देखो! अल्लाह ने तुमसे बकरा छीनकर अपने तरीके से तुम्हारा झगड़ा निपटा दिया है।"

भाइयों को अक्ल आयी। एक-दूसरे से अलग हुए। खून से लथपथ चेहरों से देर तक वे मरे बकरे को ताकते रहे। आखिर गंजा भाई बोला :

"इसका चमड़ा निकाल लेना चाहिए।"

दाढ़ीवाला फौरन बोला : "खाल मैं निकालूंगा!"

दूसरे ने कहा : "तुम क्यों निकालोगे?" गुस्से से उसकी गंजी खोपड़ी लाल पड़ गयी थी।

"बकरा मेरा है और खाल भी मेरी है।"

"तेरी नहीं, मेरी है!"

इससे पहले कि ख्वाजा नसरुद्दीन कुछ कह पाये, दोनों भाई फिर फुफकारते हुए एक-दूसरे से गुंथकर जमीन पर लोटने लगे। एक लमहे तक एक भाई की मुट्ठी में काले बालों का एक गुच्छा दिखायी दिया। ख्वाजा नसरुद्दीन ने अन्दाज लगाया कि बड़े भाई की दाढ़ी का अच्छा खासा हिस्सा नुच गया है।

नाउम्मीदी से सिर हिलाकर वह आगे बढ़ गया है।

अपनी पेटी में एक चिमटा खोंसे और एक लुहार आता दिखायी दिया। यह वही लुहार था जिसने एक दिन पहले तालाब के किनारे ख्वाजा नसरुद्दीन से बातचीत की थी।

खुशी से ख्वाजा नसरुद्दीन चिल्लाया : "लुहार भाई! लुहार भाई! सलाम! हम फिर मिल गये,

हालांकि मैं अब तक अपना कौल पूरा नहीं कर पाया हूं। तुम यहां क्या कर रहे हो? क्या तुम भी अमीर से इंसाफ मांगने आये हो?"

गमगीन आवाज में लुहार बोला : "ऐसे इन्साफ से क्या फायदा? मैं लुहारों की कतार से एक शिकायत लेकर आया हूं। हमें पन्द्रह सिपाही मिले हैं, जिन्हें तीन महीने तक खिलाने की जिम्मेदारी हम पर थी। एक साल गुजर चुका है। वे अब भी हमारे सिर पर सवार हैं। इससे हमें बड़ा नुकसान हो रहा है।"

"और मैं रंगरेजों की गली से आया हूं," एक दूसरा आदमी बोल उठा। उसके हाथों पर रंगों के दाग थे। हर रोज सवेरे से शाम तक जहरीला धुआं सूंघते-सूंघते उसका चेहरा हरे रंग का हो गया था। "मैं भी ऐसी ही शिकायत लेकर आया हूं। हमें पच्चीस सिपाही खिलाने को मिले हैं। हमारा कारोबार चौपट हो गया और मुनाफा घट गया है। शायद अमीर हमारे ऊपर रहम करें। शायद हमें इस बोझ से छुटकारा दिला दें।"

ख्वाजा नसरुद्दीन बोला : "तुम लोगों को बेचारे सिपाही इतने नापसन्द क्यों हैं? वे बुखारा के सबसे ज्यादा खराब और लालची बाशिन्दे तो हैं नहीं। तुम अमीर, वजीर और अफसरों को पालते हो। दो हजार मुल्लाओं और छः हजार दरवेशों को खिलाते-पिलाते हो। फिर बेचारे सिपाही ही क्यों भूखे रहें? क्या तुमने यह कहावत नहीं सुनी : जहां एक सियार को खाना मिलता है, वहीं फौरन दस सियार आ जमा होते हैं। ऐ लुहार और रंगरेज भाई! तुम्हारी नाराजी मेरी समझ में नहीं आयी।"

"इतने जोर से न बोलो!" चारों तरफ देखते हुए लुहार बोला।

रंगरेज खोजा नसरुद्दीन की तरफ तम्बीह की नजर से देखते हुए बोला :

"ऐ मुसाफिर! तुम खतरनाक आदमी हो और तुम्हारी बात में नेकी नहीं है। हमारे अमीर तो बड़े दानिशमन्द और फैयाज . . ."

उसने बात अधूरी ही छोड़ दी, क्योंकि तभी ढोल और तुरही बजने की आवाजें आने लगीं। महल के पीतल जड़े फाटक धीरे-धीरे खुलने लगे और पूरे खीमे में एकदम चहल-पहल मच गयी।

हर तरफ से "अमीर! अमीर!" की आवाजें आने लगीं। महल की तरफ बढ़कर लोग भीड़ लगाने लगे ताकि अपने शाह की शक्ल देख सकें। खोजा नसरुद्दीन ने आगे की कतार में एक सहूलियत की जगह तलाश कर ली।

फाटक से सबसे पहले नकीब दौड़ते हुए निकले। वे चिल्ला रहे थे : "अमीर के लिए रास्ता खाली करो। आला हजरत अमीर के लिए रास्ता खाली करो! अमीरुल मोमनीन मुसलमानों के रहबर के लिए जगह खाली करो!" इनके पीछे सिपाही निकले जो अपनी लाठियों से दाहिने-बायें उन लोगों के सिरों व पीठों पर चोट कर रहे थे जो बदकिस्मती से फाटक के बिलकुल पास आकर जमा हो गये थे। भीड़ में एक चौड़ा रास्ता बन गया। ढोल, बांसुरी, तंबूरे और करने लिये मीरासी निकले। उनके पीछे कीमती जवाहरात जड़ी मखमली म्यानों में तलवारें लटकाये, सुनहरे काम के रेशमी कपड़े पहने, नौकर-चाकर आये। फिर ऊंची कलंगियों से सजे दो हाथी निकले। सबसे आखीर में बहुत सजावटदार एक गाड़ी आयी। इसमें जरी के चंदोवे के भीतर खुद अजीम अमीर आराम से लेटे हुए थे।

यह नजारा देखते ही भीड़ में एक दबी-दबी सी फुसफुसाहट उठी, मानो बाजार में हवा का एक झोंका आ गया हो, और अमीर के हुक्म के मुताबिक सब लोग

जमीन पर लेट गये। अमीर का हुक्म था : सब वफादार रियाया आजिजी से पेश आये और कभी ऊंची नजर करके न देखे। दौड़-दौड़कर नौकर सवारी के सामने कालीन बिछा रहे थे। गाड़ी के एक तरफ महल का पंखा झलनेवाला अपने कंधे पर घोड़े की दुम के बालों का चवर रखे चल रहा था। दूसरी तरफ अमीर का हुक्के वाला था जो बहुत संजीदगी और अहमियत से सोने का तुर्की हुक्का लिए साथ-साथ चल रहा था।

जुलूस में सबसे पीछे पीतल की टोपियां पहने, ढाल, भाले, कमानें और नंगी तलवारें लिए सिपाही चल रहे थे। सबसे पीछे थीं दो छोटी तोपें। दोपहर का सूरज इस पूरे तमाशे पर चमक रहा था। जवाहरात दमक रहे थे। सोने और चांदी के जेवर चमचमा रहे थे। पीतल के टोप और ढालें चमचम कर रही थीं। नंगी तलवारों के सफेद हिस्से चकाचौंध फैला रहे थे; लेकिन जमीन पर लेटी भीड़ में न जवाहरात दमक रहे थे, न चांदी, न सोना—तांबा तक नहीं। सूरज की रोशनी में चमककर दिल खुश करने के लिए वहां कुछ भी नहीं था। वहां थी बस भूख, गरीबी और फटे चीथड़े। और अमीर का शानदार जुलूस जब गन्दे, जाहिल, दबे-पिसे और फटेहाल लोगों के समन्दर के बीच से गुजरा, तो ऐसा लग रहा था मानो किसी गन्दे चीथड़े में सोने का पतला डोरा डाल दिया गया हो।

ऊंचे कालीनदार तख्त के चारों तरफ—जहां बैठकर अमीर अपने वफादार लोगों पर मेहरबानियां करने वाले थे—पहले से ही पहरेदार तैनात थे। सजा देने वाले जल्लाद सामने की जगह अमीर का हुक्म तामील करने की तैयारियां कर रहे थे। बेंतों की लचक और डंडों की मजबूती आजमायी जा रही थी। [illegible] हब्शी खास के दमवाले [illegible] रहे थे। [illegible] खड़ी कर रहे थे, कुल्हाड़ियां [illegible]

इंगरेज ख़ोजा नसरुद्दीन की तरफ तम्बीह की न
से देखते हुए बोला :

"ऐ मुसाफिर! तुम ख़तरनाक आदमी हो
तुम्हारी बात में नेकी नहीं है। हमारे अमीर
बड़े दानिशमन्द और फ़ैयाज . . ."

उसने बात अधूरी ही छोड़ दी, क्योंकि तभी ढो
और तुरही बजने की आवाजें आने लगीं। महल
पीतल जड़े फाटक धीरे-धीरे खुलने लगे और
स्क्वैयर में एकदम चहल-पहल मच गयी।

हर तरफ से "अमीर! अमीर!" की आवाजें आ
लगीं। महल की तरफ बढ़कर लोग भीड़ लगाने ल
ताकि अपने शाह की शकल देख सकें। ख़ोजा नस
रुद्दीन ने आगे की कतार में एक सहूलियत की जग
तलाश कर ली।

फाटक से सबसे पहले नकीब दौड़ते हुए निकले
वे चिल्ला रहे थे : "अमीर के लिए रास्ता खाली करो
आला हजरत अमीर के लिए रास्ता खाली करो! अमी
रुल मोमनीन मुसलमानों के रहबर के लिए जगह खाली
करो!" इनके पीछे सिपाही निकले जो अपनी लाठिया
से दाहिने-बायें उन लोगों के सिरों व पीठों पर चोट
कर रहे थे जो बदकिस्मती से फाटक के बिलकुल पास
आकर जमा हो गये थे। भीड़ में एक चौड़ा रास्ता
बन गया। ढोल, बांसुरी, तम्बूरे और करनें लिये
मीरासी निकले। उनके पीछे कीमती जवाहरात जड़ी मख़-
मली म्यानों में तलवारें लटकाये, सुनहरे काम के रेशमी
कपड़े पहने, नौकर-चाकर आये। फिर ऊंची कलंगियों
से सजे दो हाथी निकले। सबसे आख़ीर में बहुत
सजावटदार एक गाड़ी आयी। इसमें जाली के चंदोवे
के भीतर ख़ुद अजीम अमीर आराम से लेटे हुए थे।

यह नजारा देखते ही भीड़ में एक दबी-दबी सी
फुसफुसाहट उठी, मानो बाजार में हवा का एक झोंका आ
गया हो, और अमीर के हुक्म के मुताबिक सब लोग

जमीन पर लेट गये। अमीर का हुक्म था : सब वफा-
दार रियाया आजिजी से पेश आये और कभी ऊंची
नजर करके न देखे। दौड़-दौड़कर नौकर सवारी के
सामने कालीन बिछा रहे थे। गाड़ी के एक तरफ
महल का पंखा झलनेवाला अपने कंधे पर घोड़े की
दुम के बालों का चंवर रखे चल रहा था। दूसरी तरफ
अमीर का हुक्के वाला था जो बहुत संजीदगी और
अहमियत से सोने का तुर्की हुक्का लिए साथ-साथ
चल रहा था।

जुलूस में सबसे पीछे पीतल की टोपियां पहने, ढाल,
भाले, कमानें और नंगी तलवारें लिए सिपाही चल रहे
थे। सबसे पीछे थीं दो छोटी तोपें। दोपहर का सूरज
इस पूरे तमाशे पर चमक रहा था। जवाहरात दमक
रहे थे। सोने और चांदी के जेवर चमचमा रहे थे। पीतल
के टोप और ढालें चमचम कर रही थीं। नंगी तलवारों
के सफेद हिस्से चकाचौंध फैला रहे थे...लेकिन जमीन
पर लेटी भीड़ में न जवाहरात दमक रहे थे, न चांदी, न
सोना—तांबा तक नहीं। सूरज की रोशनी में चमककर
दिल खुश करने के लिए वहां कुछ भी नहीं था। वहां
थी बस भूख, गरीबी और फटे चीथड़े। और अमीर का
शानदार जुलूस जब गन्दे, जाहिल, दबे-पिसे और फटे-
हाल लोगों के समन्दर के बीच से गुजरा, तो ऐसा लग
रहा था मानो किसी गन्दे चीथड़े में सोने का पतला
डोरा डाल दिया गया हो।

ऊंचे कालीनदार तख्त के चारों तरफ—जहां बैठकर
अमीर अपने वफादार लोगों पर मेहरबानियां करने वाले
थे—पहले से ही पहरेदार तैनात थे। सजा देने वाले
जल्लाद सामने की जगह अमीर का हुक्म तामील करने
की तैयारियां कर रहे थे। बेंतों की [illegible]
मजबूती आजमायी जा रही थी [illegible]
कच्ची खाल के दुमवाले [illegible] रहे थे, [illegible]
खड़ी कर रहे थे, कुल्हाड़ियां [illegible] जमीन [illegible]

में सूलियां गाड़ रहे थे। जल्लादों का अफसर महल
पहरेदारों का अफसर था। इसका नाम था अर्सल
बेग। अपनी बेरहमी के लिए वह बुखारा से बाहर द
तक बदनाम था। वह काले बालों और मोटे जिस्मवाल
खूबसूरत शख्स था। उसकी दाढ़ी उसका सीना ढके ह
थी और उसके पेट तक पहुंच रही थी। उसकी आवा
ऊंट की बलबलाहट जैसी थी।

दिल खोलकर लोगों पर लात घूसों की बौछार कर
के बाद वह एकाएक झुक गया और आजिजी से उसक
बदन कांपने लगा।

धीरे-धीरे हिलती-डुलती सवारी तख्त पर चढ़ी औ
अमीर ने चंदोवे के पर्दे हटाकर अपनी सूरत लोगों क
दिखायी।

: १० :

आखिर अमीर उतने खूबसूरत साबित न हुए, जितने
कि शोहरत थी। उनका चेहरा, दरबार के शायर जिसक
मिसाल हमेशा पूरे चांद की चमक से देते थे, ज़्यादा
से ज़्यादा पके, फदफदे, खरबूजे से मिलता था। वजीर
के सहारे वह सवारी से उतरे और सोने से मढ़े सिंहासन
पर जा बैठे। ख्वाजा नसरुद्दीन ने देखा कि दरबार
शायरों के कहने के माफिक उनका जिस्म नाजुक दरख
की पतली शाखा की तरह हरगिज नहीं था। उनक
बदन मोटा और भारी था। बांहें छोटी थीं। पैर इतन
टेढ़े थे कि खलअत भी उनके बदनुमापन को नहीं छिप
पाती थी।

वजीर उनकी दाहिनी तरफ खड़े हुए और मुल्ला
अफसर बायीं तरफ। मुहर्रिर अपनी बहियां और दवात
लिए नीचे की ओर बैठे। तख्त के पीछे आधा दायर
बनाकर दरबारी शायर खड़े हो गये और अमीर क
गरदन पर बड़ी चाकीतगी से ताकने लगे। चंवर डुला

वाला चंवर डुलाने लगा। हुक्केवाले ने सोने की निगाली अपने मालिक के होंठों के बीच रख दी। तख्त के चारों तरफ की भीड़ सांस रोके खड़ी थी। ख़ोजा नसरुद्दीन रकाबों पर ऊंचा उठ गया, गरदन आगे बढ़ायी और कान लगाकर सुनने लगा।

नींद में मस्त अमीर ने सिर हिलाया। पहरेदारों ने बीच में जगह की और गंजे व दढ़ियल भाई, जो आखिरकार मौका पा ही गये थे, आगे बढ़े। वे घुटनों के बल घिसटकर तख्त तक पहुंचे और जमीन पर लेटते हुए कालीन को उन्होंने चूमा।

वजीरआजम बख्तियार ने हुक्म दिया : "उठो!"

दोनों भाई उठ खड़े हुए। अपनी खलअतों से धूल झाड़ने की उनकी हिम्मत नहीं हो रही थी। डर के मारे उनकी जुबान बन्द थी और उनकी आवाज मिमिया रही थी। उनकी बोली समझ में नहीं आ रही थी। तजरबे-कार वजीर बख्तियार ने एक नजर में ही सारी बात समझ ली।

बेचैनी से उन दोनों भाइयों को टोककर उसने पूछा : "तुम्हारा बकरा कहां है?"

गंजे भाई ने जवाब दिया :

"ऐ खानदानी वजीर! वह मर गया। अल्लाह ने उसे अपने पास बुला लिया। लेकिन उसका चमड़ा हम में से किसे मिलेगा?"

बख्तियार अमीर की तरफ मुड़ा।

"ऐ शाहों में सबसे अक्लमन्द अमीर! क्या फैसला होगा?"

अमीर ने जम्हाई ली और बिलकुल लापरवाही से आंखें बन्द कर लीं। बख्तियार ने बड़ी आजिजी से सफेद साफे के साथ अपना सिर झुकाया।

"मेरे मालिक! फैसला आपके चेहरे से जाहिर है।" भाइयों की तरफ मुड़कर वह बोला : "सुनो!"

दोनों भाई घुटनों के बल बैठ गये। वे अमीर के

रहम, इंसाफ और दानिशमन्दी के लिए उनका शुक्रिया अदा करने को तैयार थे। बाख्तियार ने फैसला सुनाया और मुहर्रिर बड़े-बड़े रजिस्टरों में उसे लिखते हुए कलमें घसीटने लगे।

"अमीरुल मोमनीन और आफताबे आलम हमारे अमीरेआजम ने—अल्लाह का करम उन पर रहे—फैसला करने की मेहरबानी की है कि अगर बकरा अल्लाह के पास चला गया है तो इंसाफ कहता है कि उसका चमड़ा इस दुनिया में अल्लाह के जानशीन खलीफा यानी हमारे अमीरेआजम के पास जाय। इसलिए बकरे की खाल निकाली जायगी, उसे सुखाया और कमाया जायगा और महल में लाकर शाही खजाने में जमा कर दिया जायगा।"

भाइयों ने घबड़ाकर एक-दूसरे की तरफ देखा। वहाँ मौजूद भीड़ में हलकी सनसनाहट छा गयी। बाख्तियार साफ और ऊँची आवाज में कहता गया

"इसके अलावा फरियादियों को दो सौ तके कानूनी कौंसल, डेढ़ सौ तके महल टैक्स और पचास तके मुहर्रिरों के खर्च की मदों में देने होंगे और मस्जिदों की मरम्मत के लिए औलिया अदा करना होगा। यह सब नकद, कपड़े या दूसरी जायदाद की शक्ल में वसूल किया जाय।"

उसने बोलना खत्म ही किया था कि अर्दलियों के इशारे पर सिपाही उन दोनों भाइयों पर टूट पड़े, उनके कपड़े खींच डाले, उनकी जेबें खाली कर और तलवारें छीन लीं, जूते उतार लिए और उन्हें अधनंगा करके सड़क पर खदेड़ दिया।

दूसरे मामले में मुश्किल से एक मिनट लगा होगा। फैसला सुनाते वक्त ही दरबारी आलिमों और शायरों ने तारीफ में कसीदे पढ़ने शुरू कर दिये :

"वाह, दानिशमन्द अमीर! ऐ शासकों के शासक!

दानाओं की दानाई से दाना अमीर। ऐ दानाओं में सबसे बड़े दाना अमीर!"

बड़ी देर तक वे इसी तरह गाते रहे—अपनी गरदनें तख्त की ओर बढ़ाये हुए। हर एक इस कोशिश में था कि उसकी आवाज़ अमीर सुन ले और दूसरों की आवाज़ न सुने। इस बीच तख्त के चारों तरफ जमा भीड़, चुपचाप दोनों भाइयों पर रहम की निगाह डाले देखती खड़ी रही।

उन दोनों भाइयों से, जो एक-दूसरे के गले में बाँहें डाले ज़ोर-ज़ोर से रो रहे थे, ख्वाजा नसरुद्दीन बड़ी नेक आवाज़ में बोला: "कोई फ़िक्र नहीं दोस्तो। आखिर बाज़ार में छ हफ्ते बैठकर तुम लोगों ने बेकार इंतज़ार नहीं किया। तुम लोगों को ठीक और वाजिब फ़ैसला मिला है—क्योंकि हर एक जानता है कि सारी दुनिया में हमारे अमीर से ज़्यादा मेहरबान और दानिशमन्द दूसरा कोई शख्स नहीं है। अगर कोई इस बात में शक करता है..." इतना कहकर उसने अपने पड़ोस में खड़े लोगों की ओर देखा, 'तो सिपाही बुलाने में देर न लगेगी। और वे! अरे, वे उस नापाक दहरिये को जल्लादों के सुपुर्द कर देंगे और जल्लाद बहुत आसानी से उसकी गलती उसे समझा देंगे। ऐ दोनों भाइयो! अमन के साथ घर जाओ। अगर आगे कभी किसी मुर्ग के बारे में तुम्हारा झगड़ा हो तो फिर अमीर की अदालत में आना। लेकिन आने से पहले इस बार अपने खेत, मकान और अंगूर के बागीचे बेचना न भूलना, वरना तुम लोग टैक्स अदा न कर पाओगे। और इसका मतलब होगा अमीर के खज़ाने को टोटा, जिसका ख्याल भी वफ़ादार रियाया की बरदाश्त के बाहर होना चाहिए।"

आठ-आठ आँसू रोते हुए दोनों भाई बोले: "इससे तो बेहतर होता कि बकरे के साथ हम लोग भी मर जाते।"

रोजा नसरुद्दीन ने पूछा : "क्या तुम समझते हो कि बहिश्त में काफी बेवकूफ लोग नहीं हैं? मातबर आदमियों ने मुझे बताया है कि आजकल जन्नत और दोजख, दोनों जगह, बेवकूफ भरे पड़े हैं और वहां और ज्यादा बेवकूफों के लिए गुंजाइश नहीं है। भाइयो, मुझे साफ नजर आता है कि तुम लोगों के लिए मौत लिखी ही नहीं है...और अब यहां से रफूचक्कर होने में देर न करो, क्योंकि सिपाही इधर ही देखने लगे हैं और तुम्हारी तरह अमर होने का दावा मैं अपने लिए नहीं कर सकता।"

जोर-जोर से रोते, अपना मुंह नोचते, अपने सिरों पर सड़क की पीली धूल मलते, दोनों भाई वहां से चल दिये।

अब लुहार अमीर के सामने आया। उसने चिड़चिड़ी और भर्रायी आवाज में अपनी शिकायत सुनायी। वजीरेआजम बख्तियार अमीर की तरफ मुड़ा :

"मालिक। आपका क्या फैसला है?"

अमीर सो रहे थे और अपने खुले मुंह से हल्के खर्राटे ले रहे थे। बख्तियार शरमाया नहीं।

"मालिक। फैसला मैं आपके पुरजलाल चेहरे से पढ़ रहा हूं।"

संजीदगी से उसने ऐलान किया :

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानुर्रहीम ! रहम दिल और मेहरबान अल्लाह के नाम पर, मुसलमानों के रहनुमा और हमारे मालिक ने अपनी रियाया की लगातार फिक्र करने में, अपनी खिदमत में लगे वफादार सिपाहियों को रखने और खिलाने-पिलाने की इज्जत बख्शकर रियाया पर बड़ी मेहरबानी की है। बुखारा शरीफ के बाशिन्दों को यह रियायत देकर उन्होंने हर दिन और हर घंटे उन्हें अपने अमीर का अहसान मानने का शानदार मौका दिया है। ऐसी इज्जत हमारे पड़ोस के और मुल्कों के बाशिन्दों को नहीं बख्शी गयी है। इस सब के

बावजूद लुहारों ने भलमनसाहत व पाकीजगी में कोई नाम नहीं कमाया। इसके बदले यूसुफ लुहार ने गुनाह करने वालों के लिए बालों का बना पुल व दूसरी दुनिया की तकलीफें भूलकर अहसान फरामोशी में जुबान खोलने की गुस्ताखी की है। इसके अलावा उसने हमारे मालिक और रहनुमा आका अमीर बालाजाह, जिनकी रोशनी सूरज को भी ढक लेती है, उनके कदमों में यह शिकायत पेश करने की गुस्ताखी की है।

"इसलिए हमारे अमीर बालाजाह ने बहुत मेहरबानी करके इस फैसले का ऐलान किया है : यूसुफ लुहार को दो-सौ कोड़े लगाये जायें। बेशक इससे उसे पछतावा होगा जिसके बिना जन्नत के फाटक खुलने के लिए वह बेकार इन्तजार करता। जहां तक लुहार टोले का ताल्लुक है, अमीर बालाजाह उन पर फिर से सिपाही रखने और खिलाने-पिलाने की जिम्मेदारी डालने की मेहरबानी करते हैं और हुक्म देते हैं कि बीस सिपाही वहां और भेज दिये जायें। अब वे हर घंटे और हर दिन अपने अमीर के करम और दानिशमन्दी की तारीफ करने के बढ़िया मौके से महरूम न रहेंगे। यही उनका फैसला है। अल्लाह उन्हें लम्बी जिन्दगी दें, ताकि उनकी वफादार रियाया की भलाई हो सके।"

दरबारी चापलूसों का गीत एकदम फिर शुरू हो गया और अमीर की तारीफें गायी जाने लगीं। इस बीच सिपाहियों ने यूसुफ लुहार को पकड़ लिया और जल्लादों के पास ले गये। डरावने ढंग से हंसते हुए जल्लाद वह पहले से ही अपने भारी कोड़े का वजन आजमा रहे थे।

लुहार पेट के बल चटाई पर लेट गया। हवा में कोड़ा सनसनाया और नीचे को गिरा। लुहार की पीठ खून से रंग गयी।

जल्लाद उसे बेरहमी से पीटते रहे। उसकी खाल के उन्होंने चीथड़े उड़ा दिये। गोश्त और हड्डी तक को

काट डाला। लेकिन लुहार न तो कराहा, न चीखा। वह जब उठा तो उसके होंठों पर काला फेन बह रहा था। सजा पाते वक्त अपने दांत उसने जमीन में गड़ा दिये थे, ताकि चीखें-चिल्लायें नहीं।

ख्वाजा नसरुद्दीन बोला : "नहीं! लुहार यह आसानी से नहीं भूलेगा। मरते वक्त तक वह अमीर की मेहरबानियां याद रखेगा। रंगसाज! तुम किस बात का इन्तजार कर रहे हो? जाओ, जाओ, अब तुम्हारी बारी है।"

रंगरेज ने एक बार थूका। फिर, बिना पीछे देखे, भीड़ चीरकर निकल भागा।

वजीरेआजम ने दूसरे मामले भी निपटाये और हर मामले में अमीर के खजाने के लिए मुनाफा कमाना न भूला। इसी सिफत की वजह से वह दूसरे अफसरों से ज्यादा कामयाब था।

जल्लाद बिना दम लिये बराबर काम कर रहे थे। उनकी तरफ से चीखें और चिल्लाहट आ रही थी। वजीरेआजम ने जल्लादों के पास कई नये गुनहगारों को भेजा। एक लम्बी कतार वहां इन्तजार कर रही थी। इसमें बूढ़े आदमी थे, औरतें थीं और दस साल का एक बच्चा था जिसे अमीर के महल के सामने की जमीन को बगावतन गीली कर देने के जुर्म में सजा मिली थी। वह रो रहा था और कांप रहा था और चेहरे पर आंसू बह रहा था। उसे देखकर ख्वाजा नसरुद्दीन का दिल गुस्से और रहम से भर उठा।

वह जोर से बोला : "वाकई यह लड़का बड़ा खतरनाक मुजरिम है। ऐसे दुश्मनों से अपने तख्त की हिफाजत करने में अमीर की दूरंदेशी की जितनी तारीफ की जाय थोड़ी है। ऐसे लोग ज्यादा खतरनाक हैं क्योंकि वे खतरनाक साजिश होने वाले मकानों की बुनियादें छिपाये रहते हैं। आज ही मैंने एक और मुजरिम देखा इससे भी ज्यादा बुरा और खतरनाक था। यह इमार

मुर्दाखोर—आप यकीन नहीं मानेंगे—पहले से भी ज्यादा गलत काम कर रहा था और वह भी महल की दीवाल के ठीक नीचे। ऐसी गुस्ताखी के लिए जो भी सजा दी जाती कम थी। उसे तो सूली पर चढ़ा देना चाहिए था हालांकि मुझे डर है कि सूली उसके आर-पार वैसे ही गुजर जाती जैसे सींगचा मुर्ग में होकर गुजर जाता है क्योंकि यह लड़का सिर्फ चार साल का था। खैर जैसा कि मैंने कहा उसकी उम्र कोई मायना नहीं है। हमारे बुखारे में खतरनाक बुराइयों ने जिस कदर अपने घोंसले बना लिये हैं, यह देखकर ही मेरा दिल उदासी से भर उठता है। तब भी हमें यकीन है कि अमीर के सिपाहियों और जल्लादों की मदद से सब बुराइयां जल्दी ही दूर की जा सकेंगी और उनकी जगह नेकी ले लेगी।

ख्वाजा नसरुद्दीन वैसे ही बोल रहा था जैसे मुल्ला नसीहत देता है। उसकी आवाज और अन्दाज दोनों ही ऊपर से ठीक मालूम होते थे। पर, जिनके कान थे वे सुन और समझ रहे थे और अपनी दाढ़ियों में कड़वाहट भरी मुस्कान छिपा रहे थे।

: ११ :

यकायक ख्वाजा नसरुद्दीन ने देखा कि भीड़ छंट गयी है। बहुत-से लोग जल्दी से खिसक गये हैं और कुछ तो भाग भी रहे हैं।

बेचैनी से उसने सोचा "कहीं सिपाही मेरे लिए ही तो नहीं बढ़े आ रहे ?"

जब उसने पास आते सूदखोर को देखा तो वह फौरन समझ गया। उसके पीछे सिपाहियों से घिरा, मिट्टी से सनी खलअत पहने, एक दुबला-पतला सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा आ रहा था और उसके साथ ही बुरका ओढ़े एक औरत—या जैसा कि ख्वाजा नसरुद्दीन की

तजर्बेकार आंखों ने उसकी चाल से भांप लिया, एक जवान लड़की।

अपनी एक आंख से लोगों को ताकते हुए सूदखोर टर्राया : "जाकिर, जुरा, सईद और सादिक कहां हैं?" उसकी दूसरी आंख बन्द थी। वह हिल-डुल भी नहीं रही थी। उस पर सफेद जाला छाया हुआ था। "अभी तो वे यहीं थे। मैंने दूर से उन्हें देखा भी था। उनके कर्ज अदा करने का वक्त आ रहा है। उनका भागकर छिपना बेकार है।"

अपने कूबड़ के बोझ से लंगड़ाता हुआ वह आगे बढ़ा।

लोग आपस में बातें करने लगे।

"देखो तो यह बूढ़ा मकड़ा नियाज कुम्हार और उसकी बेटी को अमीर के सामने खींच लाया है।"

"बेचारे कुम्हार को उसने एक दिन की भी मोहलत न दी।"

"खुदा उसे गारत करे! मुझे भी एक पखवारे बाद अपना कर्ज अदा करना है।"

"मेरा तो एक हफ्ते बाद ही अदा होना है।"

"देखा न तुमने? जब वह आता है तो लोग कैसे भागकर छिप जाते हैं—मानो वह हैजा या कोई संका आ रहा हो।"

"सूदखोर तो कोढ़ी से भी बदतर है।"

ख्वाजा नासरुद्दीन का दिल अफसोस से मसोस उठा। उसने अपनी कसम दोहरायी :

"मैं इसको उसी तालाब में डुबो कर दम लूंगा!"

अर्सलान बेग ने सूदखोर को अपनी बारी से पहले ही आ जाने दिया। उसके पीछे कुम्हार और उसकी बेटी आयी। वे घुटनों के बल गिर पड़े और कालीन के कोने को चूमने लगे।

वज़ीरेआज़म ने न्यायाधीशजी से कहा : "ऐ दानिश-

मन्द जाफर! अस्सलामालेकुम! कहो, किस काम
आये हो ? अमीरेआजम से अब अपनी बात करो।
जाफर ने अमीर की तरफ मुखातिब होकर कहना
किया। लेकिन, अमीर एक बार सिर हिलाकर
खर्राटे भरने लगा। "ऐ शाहंशाहेआजम ! ऐ
आका ! मैं आपसे इन्साफ मांगने आया हूं। यह दा
जिसका नाम नमाज है और जिसका पेशा कुम्हारी
है, मेरे सौ तके चाहता है और उन पर तीन सौ त
का सूद है। कर्ज आज सवेरे अदा होना था। लेकि
कुम्हार ने अभी तक मुझे कुछ नहीं दिया। ऐ दानि
के सूरज ! ऐ दानिशमन्द अमीर ! मुझे इन्सा
चाहिए !"

मुहर्रिर ने सूदखोर की शिकायत खाते में दर्ज
वजीर कुम्हार की तरफ मुड़ा : "कुम्हार ! अमीरेआ
को जवाब दो ! तुम यह कर्ज कुबूल करते हो ? या
दिन और घंटों पर तुम्हें ऐतराज हो ?"

कुम्हार ने दबी आवाज में जवाब दिया : "न
नहीं। ऐ सबसे ज्यादा इन्साफपसन्द और अक्लम
वजीर ! मैं किसी बात पर एतराज नहीं करता—न
पर, न दिन पर, न घंटों पर। मैं सिर्फ एक महीने
मोहल्लत चाहता हूं। अपने अमीर के रहम
फैयाजी की मैं भीख मांगता हूं।"

बख्तियार बोला : "मालिक मुझे यह फैसला सुन
की इजाजत दें, जो मैंने आपके चेहरे पर पढ़ा
मेहरबान और रहमदिल अल्लाह के नाम पर फैसल
कानून के मुताबिक जो वक्त पर अपना कर्ज अदा न
करता वह अपने खानदान के समेत कर्ज देने वाले
गुलाम हो जाता है और तब तक गुलामी में रहता
जब तक वह पूरे वक्त के, गुलामी के वक्त के भी,
के साथ कर्ज नहीं चुका देता।"

कुम्हार का सिर नीचे झुक गया और वह कां
लगा। भीड़ में बहुत-से लोगों ने गहरी सांसे भरी

छिपाने के लिए उन्होंने अपने मुंह मोड़ लिये। लड़कों के कन्धे कांपने लगे। वह मुश्के के भीतर सिसकियां भर रही थीं। ख्वाजा नसरुद्दीन ने मन ही मन कसम को दोहराया :

"गरीबों को सताने वाला यह बेरहम शख्स डूबकर ही मरेगा।"

बख्तियार अपनी आवाज ऊंची करता हुआ बोला : "लेकिन हमारे मालिक की फैयाजी और रहमदिली की कोई हद नहीं है।"

भीड़ में सन्नाटा छा गया। बूढ़े कुम्हार ने सिर उठाया और उम्मीद से उसका चेहरा चमक उठा।

"हालांकि कर्ज अभी अदा होना है, लेकिन नयाज कुम्हार को मोहल्लत दी जाती है—एक घंटे की मोहल्लत। अगर इस एक घंटे के खत्म होने तक नयाज कुम्हार सूद के साथ कर्ज अदा न कर दे और इस तरह इस्लाम के उसूलों की तौहीन करे तो, जैसा कि कहा जा चुका है, कानून लागू होगा। कुम्हार अब जा सकता है। अमीर की रहमत उस पर बरकरार रहे।"

बख्तियार चुप हुआ और चापलूस तख्त के पीछे इकट्ठे होकर मक्खियों की तरह भनभनाने लगे : "ऐ इन्साफपसंद अमीर! ऐ दानिशमन्द और मेहरबान अमीर! ऐ फैयाज अमीर! ऐ इस दुनिया की जीनत और आसमान की अजमत हाकिम आदिल अमीर!"

इस बार चापलूसों ने इतने जोर से और एक-दूसरे से बढ़चढ़कर अमीर की तारीफ गायी कि अमीर की नींद खुल गयी और उन्होंने नाराज होकर इन लोगों से मुंह बन्द करने को कहा। वे खामोश हो गये। मैदान में इकट्ठे लोग भी खामोश थे। यकायक कान के पर्दे फाड़ने वाली रेंक ने सन्नाटा तोड़ दिया।

यह गधा ख्वाजा नसरुद्दीन का ही था। या तो वह एक जगह खड़ा-खड़ा थक गया था या उसे लम्बे कानों वाला अपना कोई भाई-बन्द दिखायी पड़ गया था

जिसका वह इस्तेमाल कर रहा था। असलियत यह है कि वह दुम उठाकर, थूथनी आगे बढ़ाकर, अपने पीले दांत दिखाता हुआ बड़े जोर से रेंका। बहरा बना देने वाली ऐसी आवाज में रेंका, जिस पर कोई काबू न था। अगर वह एक लमहे के लिए चुप भी होता तो सिर्फ सांस लेने के लिए। फौरन बाद ही वह फिर अपने जबड़े और ज्यादा खोलता और, और भी ज्यादा जोर से रेंकने लगता।

अमीर ने अपने कान बन्द कर लिये। सिपाही भीड़ पर टूट पड़े। लेकिन तब तक ख्वाजा नसरुद्दीन दूर निकल चुका था। वह अपने अड़ियल गधे को घसीटता जाता और जोर-जोर से उसे बुरा-भला कहता जाता :

"अबे गधे! लानत है तुझ पर! तू इतना खुश किस बात पर है? क्या तू अमीर की रहमत और फैयाजी की तारीफ इतना शोरगुल मचाये बिना नहीं कर सकता? शायद तू इन शाहियों से दरबार का खास चापलूस बनने की उम्मीद कर रहा है!"

उसकी बातों पर भीड़ ठहाका मारकर हंस पड़ती और उसके लिए जगह कर देती। उसके जाते ही जगह फिर भर जाती और सिपाही उसके पास न पहुंच पाते। अगर वे ख्वाजा नसरुद्दीन को पकड़ लेते तो इस गुस्ताखी से अमन में खलल डालने के लिए उसके कोड़े लगाते और उसका गधा जब्त कर लेते।

: १२ :

जहां इन्साफ हो रहा था वह जगह छोड़कर सूदखोर जाफर, नियाज कुम्हार और उसकी बेटी गुलजान जब आगे बढ़े तो जाफर कहने लगा : "ऐ मेरी हसीना! फैसला हो चुका है और अब तुम पूरी तरह मेरे कब्जे में हो। जब से घोखे से एक बार तुम्हें देख लिया है,

मेरे दिल और दिमाग को चैन नहीं है। मैं सो नहीं सकता। मुझे जल्दी अपना मुखड़ा दिखा दो। आज ठीक एक घंटे बाद तुम मेरे घर में दाखिल होगी। अगर तुम मुझ से नरमी से बर्ताव करोगी तो मैं तुम्हारे वालिद को हल्का काम और बढ़िया खाना दूंगा; या अगर तुमने जिद की तो मैं अपनी आंखों की रोशनी की कसम खाकर कहता हूं कि उसे कच्ची फलियां खाने को दूंगा, उससे पत्थर ढुलवाऊंगा और उसे खीवा में बेच दूंगा और तुम तो जानती ही हो कि खीवा के लोग अपने गुलामों के साथ बहुत बेरहमी का बर्ताव करते हैं। तुम जिद न करो, प्यारी गुलजान ! मुझे अपना चेहरा दिखा दो।''

उसकी टेढ़ी-मेढ़ी पुरदाग उंगलियों ने गुलजान का नकाब थोड़ा-सा उठाया। गुस्से से लड़की ने जाफर का हाथ झटक दिया। गुलजान का चेहरा सिर्फ एक लमहे के लिए ही खुला था। लेकिन ख्वाजा नसरुद्दीन के लिए, जो उधर से अपने गधे पर गुजर रहा था, इतना ही काफी था। लड़की इतनी खूबसूरत थी कि ख्वाजा नसरुद्दीन सुध-बुध खो बैठा। उसकी आंखों के सामने दुनिया धुंधली पड़ गयी। उसका दिल थम गया। वह पीला पड़ गया। वह जीन में लड़खड़ा गया और घबराहट में हाथों से आंखें बन्द कर लीं।

मुहब्बत ने उस पर बिजली की मार की थी।

उसे समझने में कुछ वक्त लगा।

वह अपने आप गुस्से से सोचने लगा : "ओफ यह लंगड़ा, कुबड़ा, काना बन्दर। यह इस हसीना को चाहने की गुस्ताखी करता है ? ऐसी गुस्ताखी आज तक दुनिया में कभी देखी नहीं गयी। हाय हाय ! मैंने कल उसे पानी से निकाला ही क्यों ? अब मेरी यह हरकत मेरे ही खिलाफ पड़ गयी। लेकिन देखा जायेगा। अबे गन्दे मुर्दाखोर ! तू अभी कुम्हार और उसकी बेटी का मालिक नहीं बना है। उन्हें अभी एक घंटे की मोहलत

मिली है और ख्वाजा नसरुद्दीन एक घंटे में वह कर दिखायेगा जो औरों से साल भर में भी न हो सके।"

तभी सूदखोर ने जेब से लकड़ी की एक धूप-घड़ी निकाल कर वक्त देखा : "ऐ कुम्हार ! मेरे लिए इसी पेड़ तले इन्तजार करना । मैं एक घंटे में वापस लौट आऊंगा । और हां, छिपने की कोशिश न करना क्योंकि मैं तुम्हें समन्दर की तह से भी खोज निकालूंगा और तुम्हारे साथ भगोड़े गुलाम जैसा बर्ताव करूंगा । और तुम हसीन गुलजान ! मेरी बात पर गौर करना । तुम्हारे बाप की तकदीर इस बात पर मुनहसर है कि तुम मुझ से कैसा बर्ताव करती हो।"

अपने बदनुमा चेहरे पर तस्कीन की मुस्कान बिखेरते हुए वह अपनी नयी रखैल के लिए जेवर खरीदने के लिए सर्राफों के टोले की ओर चल पड़ा।

गम का मारा कुम्हार अपनी बेटी के साथ सड़क के किनारे पेड़ के साये में रुक गया।

ख्वाजा नसरुद्दीन उनके पास पहुंचा।

"कुम्हार भाई ! मैंने फैसला सुन लिया है ; तुम बहुत मुसीबत में हो । लेकिन, शायद मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूं।"

कुम्हार ने नाउम्मीदी से कहा : "नहीं, मेहरबान ! मैं तुम्हारे पैबन्द लगे कपड़ों से देख रहा हूं कि तुम रईस नहीं हो । मुझे तो चार सौ तंके चाहिए । कोई रईस मेरा दोस्त नहीं । मेरे सभी दोस्त गरीब हैं और टैक्सों व वसूलियों से बर्बाद हो चुके हैं।"

ख्वाजा नसरुद्दीन बोला : "बुखारा में मेरा भी कोई रईस दोस्त नहीं है । तो भी मैं यह रकम इकट्ठी करने की कोशिश करूंगा।"

सिर हिलाकर मायूसी से मुस्कराते हुए बूढ़ा बोला : "एक घंटे में चार सौ तंके इकट्ठे करोगे? ऐ अजनबी ! तुम वाकई मेरा मजाक उड़ा रहे हो । इसमें

तो सिर्फ ख्वाजा नसरुद्दीन ही कामयाब हो सकता था।"

अपनी बाहें अपने आप के गले में डालकर रोती हुई गुलजान बोली : "ऐ अजनबी ! हमें बचा लो, हमें बचा लो।"

ख्वाजा नसरुद्दीन ने उसकी ओर देखा। उसने देखा कि उसके हाथ बड़े सुडौल हैं। लड़की ने भी ख्वाजा नसरुद्दीन की ओर देखा और उसके नकाब के भीतर से उसकी आंखों की पानीदार चमक उसे दिखायी दी। इस एक नजर में दुआ और उम्मीद भरी हुई थी। ख्वाजा नसरुद्दीन का खून तेजी से दौड़ने लगा। उसकी नसों में आग सी लग गयी। उसकी मुहब्बत हजार गुनी बढ़ गयी। उसने कुम्हार से कहा :

"बुजुर्गवार ! आप यहीं ठहरें और मेरा इन्तजार करें। मैं इन्सानों में सबसे नाचीज और हकीर हूंगा अगर सूदखोर की वापसी तक चार सौ तंके न इकट्ठे कर सका।"

वह कूदकर अपने गधे पर सवार हुआ और बाजार की भीड़ में गायब हो गया।

: १३ :

सवेरे के मुकाबले बाजार में इस वक्त भीड़ भी कम थी और शोरगुल भी कम था। खरीद-फरोख्त जिस वक्त सबसे तेजी पर थी उस वक्त हर कोई दौड़ रहा था, चिल्ला रहा था और मौका हाथ से निकल जाने के अंदेशे में हड़बड़ी मचा रहा था। अब दोपहर होने वाली थी। गरमी से बचने के लिए, और अपने नुकसान का चुपचाप हिसाब लगाने के लिए लोग चायखानों में जा रहे थे। सूरज की गर्म रोशनी बाजार पर फैली थी। साये छोटे और साफ हो रहे

थे—मानो सख्त जमीन पर खोद दिये गये ह
खामोशी भरे कोनों में फकीर इकट्ठे थे । गौरै
चिड़िया खुशी से चहचहाती हुई आसपास बिख
रोटी के टुकड़े ढूंढ़ रही थीं ।

अपने फोड़ों और बदन के बेढंगेपन को ख्वा
नसरुद्दीन को दिखाते हुए भिखमंगों ने स
लगायी : "ऐ नेक इंसान! अल्लाह के नाम पर ह
भी कुछ मिल जाय ।"

ख्वाजा नसरुद्दीन ने चिढ़कर जवाब दिया :

"अलग हटाओ अपने हाथ । मैं भी उतना
गरीब हूं, जितने तुम । मैं खुद किसी ऐसे धन
की तलाश में हूं जो मुझे चार सौ तके दे सके ।"

यह समझकर कि वह उन्हें ताने दे रहा है, भिख
रियों ने ख्वाजा नसरुद्दीन पर गालियों की बौछ
शुरू कर दी । लेकिन ख्वाजा नसरुद्दीन अप
खयालों में डूबा हुआ था । उसने जवाब नह
दिया ।

चायखानों की कतार में उसने वह चायखाना चु
जो सबसे बड़ा और भरा हुआ था, लेकिन ज
रेशमी गद्दे व कालीन नहीं थे । वह वहां पहुंचा
गधे को खूंटे से बांधने के बजाय वह अपने पी
पीछे सीढ़ियों पर चढ़ा ले गया ।

अचम्भे और खामोशी से उसका स्वागत हुआ ।
कोई परेशानी नहीं हुई । जीन में लगे झोले
उसने कुरआन निकाली, जो पिछले दिन उसे बूढ़े
दी थी । कुरआन खोलकर उसने गधे के सामने
दी ।

यह काम उसने बिना किसी हड़बड़ी या हं
मुस्कराहट के किया मानो यह दुनिया का सबसे ज्या
कुदरती काम था ।

चायखाने में इकट्ठे लोग एक-दूसरे को ता
लगे ।

लकड़ी के फर्श पर गधे ने ज़ोर से खुर पटका।
"अच्छा! इतनी जल्दी!" पन्ना पलटते हुए ख़ोजा नसरुद्दीन ने कहा, "तू तो काबिले-तारीफ़ तरक्क़ी कर रहा है।"
अब चायख़ाने का तुंदियल और मसखरा मालिक उठा और ख़ोजा नसरुद्दीन के पास आया।
"सुन मलेमानस! क्या यह गधे लाने की जगह है? यह मुकद्दस किताब तूने इसके सामने क्यों खोल रखी है?"
"मैं इस गधे को दीनियत सिखा रहा हूं", ख़ोजा नसरुद्दीन ने बड़े इतमीनान से कहा, "हम क़ुरआन ख़त्म कर रहे हैं और बहुत जल्द शरिअत शुरू होगी।"
चायख़ाने भर में फुसफुसाहट और भनभनाहट होने लगी। बहुत से लोग तमाशा ठीक से देखने के लिए खड़े हो गये। मालिक की आंखें फटी की फटी और मुंह खुला का खुला रह गया। अपनी ज़िन्दगी में ऐसा अजूबा उसने कभी नहीं देखा था। तभी गधे ने खुर पटका।
पन्ना पलटते हुए ख़ोजा नसरुद्दीन ने कहा: "अच्छा! ठीक है। बहुत ठीक। बस ज़रा सी कसर है बेटे! तू मीरे-अरब मदरसे में उस्तादों की जगह लेने के क़ाबिल हो जायगा। बस, यह किताब के पन्ने अपने आप नहीं उलट सकता। किसी को इसकी मदद करनी पड़ती है। अल्लाह ने इसे बहुत ज़हीन बनाया है। बड़ी अच्छी याददाश्त दी है इसे। बस, यह इसे उंगलियां देना भूल गया," यह बात उसने चायख़ाने के मालिक के लिए कही।
लोग-बाग चाय के प्याले छोड़ क़रीब आ गये। कुछ ही देर में ख़ोजा नसरुद्दीन के आसपास एक भीड़-सी इकट्ठी हो गयी।
उसने समझाना शुरू किया: "यह कोई मामूली गधा नहीं है, भाइयो। यह अमीर का गधा है।

एक दिन अमीर ने मुझे बुलाया और कहा : 'क्या तू मेरे प्यारे गधे को दीनियात सिखा सकते हो, ताकि वह भी उतना ही सीख जाय जितना कि मैं जानता हूं' उन्होंने मुझे गधा दिखाया और मैंने उसकी अक्ल जांची मैंने जवाब दिया - 'ऐ अमीर मुअज्जम! यह काबिल जिक्र गधा उतना ही जहीन है जितने कि आप कोई वजीर या खुद आप। मैं इसे दीनियात सिखाने की जिम्मेदारी लेता हूं। यह उतना ही सीख जायगा जितना कि आप जानते हैं या शायद ज्यादा भी। लेकिन इस काम में बीस साल लगेंगे।' अमीर ने खजाने से सोने के पांच हजार सिक्के मुझे दिलवाये और कहा : 'गधे को ले जाओ और पढ़ाओ। लेकिन मैं अल्लाह की कसम खाता हूं कि अगर बीस साल के बाद यह दीनियात न सीखा और इसे कुरआन हिफ्ज न हुई तो मैं तुम्हारा सिर कलम करवा दूंगा!' "

चायखाने के मालिक ने कहा . "तो तुम अपने सिर से अलविदा कह लो। गधे को दीनियात पढ़ते-सीखते और कुरआन सुनाते किसने देखा-सुना है?"

ख्वोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया - "बुखारा में पैसे बहुत से गधे हैं। मुझे सोने के पांच हजार सिक्के चाहिए और ऐसे अच्छे गधे रोज-रोज तो मिलते नहीं। मेरे सिर के कलम होने की फिक्र न करो दोस्त, बीस साल में हम में से एक न एक जरूर मर जायगा— या तो मैं, या अमीर या यह गधा। और तब यह पता लगाने में बहुत देर हो चुकेगी कि दीनियात का सबसे बड़ा आलिम कौन है।"

चायखाना जोर से कहकहों से गूंज उठा। मालिक नमदे पर गिर पड़ा, हंसते-हंसते उसके पेट में बल पड़ गये और उसका चेहरा आंसुओं से भीग गया। चाय-खाने का मालिक बहुत खुशमिजाज और हंसोड़ था।

हंसी से घुटी और घरघराती आवाज में वह बोला : "सुना तुमने? हा-हा-हा-हा . . . 'तब तक यह जानने

के लिए बहुत देर हो चुकेगी कि सबसे बड़ा आतिम कौन है !' हा-हा-हा-हा . . . ।" वह हंसी से सब मुच ही फट गया होता अगर यकायक उसे कोई खयाल न आ गया होता ।

हाथ हिला-हिलाकर सबको मुख़ातिब करते हुए व चिल्लाया : "ठहरो! ठहरो! तुम हो कौन! तुम आ कहां से! ऐ दौलियात पटाने वाले। कहीं तुम ख़ ख़ोजा नसरुद्दीन तो नहीं हो!"

"यह क्या कोई ज़िक्र के काबिल बात है ! तुम ठीक ही अन्दाज लगाया है । मैं ख़ोजा नसरुद्दी ही हूं । बुख़ारा शरीफ़ के बाशिन्दों! आप लोगों सलाम!"

काफ़ी देर तक सब लोग ख़ामोश रहे, मानो पर जादू कर दिया गया हो । एकाएक किसी ख़ुशी की आवाज में कहा :

"ख़ोजा नसरुद्दीन!"

एक-एक करके दूसरों ने भी चिल्लाना शुरू दिया—"ख़ोजा नसरुद्दीन! ख़ोजा नसरुद्दीन यह आवाज दूसरे चायख़ानों तक पहुंची और से सारे बाजार में फैल गयी । हर जगह आ गूंजने लगी और शोर मच गया :

"ख़ोजा नसरुद्दीन! ख़ोजा नसरुद्दीन!"

हर तरफ़ से लोग दौड़-दौड़कर आने लगे—उज़ ताजिक, ईरानी, तुर्कमानी तुर्क, आर्मीनियाई, ता जार्जियाई । पास आ-आकर वे ज़ोर-ज़ोर से चिल्ल अपने प्यारे ख़ोजा नसरुद्दीन, ख़ुशमिज़ाज, और होशियार ख़ोजा नसरुद्दीन का स्वागत कर करने लगे ।

भीड़ बढ़ती गयी ।

कहीं से एक बोरा जई, एक गट्ठर गिजनिया और एक बाल्टी साफ़ पानी आया और गधे के सा रख दिया गया ।

भीड़ में से आवाजें आने लगीं : "ख़ोजा नसरुद्दीन ख़ुश आये! तुम अब तक कहाँ भटक रहे थे? आ ख़ोजा नसरुद्दीन, हमें बताओ !"

वह बरसाती के किनारे तक बढ़ आया और झ झुककर भीड़ को सलाम किया।

"बुख़ारा के बाशिन्दो! मैं आपका ख़ैर मक़द करता हूँ! दस साल तक मैं आपसे दूर रहा अ अब फिर आपसे मिलकर मेरा दिल ख़ुशी से ना रहा है। आपने मुझ से कुछ पूछा है। मैं चाहत हूँ कि यह दास्तान मैं गाकर सुनाऊँ।"

मिट्टी का एक बड़ा बरतन उसने उठा लिया औ उसमें भरा पानी फेंक दिया। हाथ से उसे बजाते हु उसने ज़ोर से गाना शुरू किया :

बज-बज रे माटी के बरतन, गा-गा रे माटी के
बरतन,

सुन रा अमीर के, बजा कसीदा-गाई कर
ज़ाहिर कर दुनिया के करीब, हम रैयत कैसी
ख़ुशनसीब

ऐसा दरियादिल सख़ी अमीर बशर पाकर।
सुन-सुन करता खाली बरतन,
टन-टन करता ख़ाली बरतन,

गुस्से से कंपती आवाजों में गाता है:
आवाज लगाता है करख़्त, रंजीदा, गुस्सा-भरा, सख़्त,
हर तरफ हर किसी को अहवाल सुनाता है।
सुनते भी तो जाओ भैया, कहना है उसको क्या
किस्सा :

"बूढ़ा नियाज कुम्हार यहीं पर रहता है,
मिट्टी गूंधा करता है वह, ढेरों बरतन
गढ़ता है वह,

फिर भी न मजूरी से दिल कभी निकलता है।
पाता जो उन्हें बंध जाएं, जिससे भूखड़ भी
मर न सके;
जैसे-तैसे गुरबत की मारें सहता है।

''लेकिन कुम्हड़खाना आया, तो भी न कभी पाना
जी भर
जाता है सोने से लबरेज़ ख़ज़ानों पर
सोना अमीर के भी घर है, लबरेज़ ख़ज़ाने
छलक रहे,
कितना सोना है वहां, कहेगा कौन भला ?
दरबान महल के बेचारे, कब तो पाते डर
के मारे !
उन छलक रहे मटकों से जीना है दूभर।

''बूढ़े नबाब पर, हा किस्मत, चोरी-चुपके
आयी आफ़त,
प्यादे अदालती उसके घर पर आ धमके!
करके बूढ़े को गिरफ़्तार ले गये कचहरी मार-मार,
मुनवाने को फ़ैसले अमीरे-आज़म के!
पीछे-पीछे आया जाफ़र, कुम्हड़ घसीटता सड़कों पर
सूरत-शोहरत जिसकी अजाब है आलम को।''

कह-कह रे माटी के बरतन, हर गोयादार से
कह कौन,
हम कब तक सहते आये बेइन्साफ़ी यह ?
मिट्टी की है तेरी ज़बान, सच कहने की है इसे बान,
बूढ़े कुलाल का क्या कसूर है, यह तो कह !
माटी का बरतन बजता है, बजता है नहीं,
गरजता है;
देता है सोलह-आने सच-ही-सच जवाब :
''बूढ़े कुलाल का क्या कुसूर !—
इतना भी उसे न था शऊर,

मकड़ी के जाले से बचकर रहता, जनाब !
अब तो मकड़ी के जाले ने फांसा है उसे,
छुड़ा लेने
की राह न कोई, सहे गुलामी का अजाब।"
हाजिर हुजूर में हैं नयाज, बूढ़ा कुलाल बदानबाज़,
आंखों में आंसू, पैरों लिपटा हाकिम के
कहता हैं : "यह जग जाहिर हैं,
हाकिम रहमत में नादिर हैं,
दिलख्वाह अमीरे-आजम है इस खादिम के,
होकर गरीब पर करम-सार, दिल को जरूर
देंगे करार।"
बोला अमीर : "रो मत गरीब, ले करम किया,
ले पूरे घंटे की मुहलत। नेकी करना मेरी खसलत,
जानता जमाना हैं, दिल हैं कैसा दरिया।"

कह-कह रे माटी के बरतन, हर ओहदेदार से
कह फौरन,
कब तक हम सहते जायें बेइन्साफी यह !

माटी का बरतन बजता हैं, बजता हैं नहीं,
गाजता हैं,
देता हैं सोलह-आने सच-ही-सच जवाब !
"जो इस अमीर से अद्ली-मिहर की करता हैं
उम्मीद बदार
वह तो सचमुच पागल हैं, पागल हैं, जनाब !
यह तो न किसी से छिपी बात, कमजर्फ,
कमीना, कमीबसरत
हैं यह अमीर, दो-दो कौड़ी इसकी कीमत !
कूड़े की ढेरी हैं अमीर, सड़ियल-सी हैं
उसकी ज़मीर,
सिर के बदले कंधों पर हंड़िया हैं साबित।"
कह-कह रे माटी के बरतन, कब तक सहना
हमको जबरन

इस बद अमीर की बदतरीन सल्तनत बता !
हैं उम चुके सारे अवाम, कब उन्हें मिलेगा इन्तकाम,
सुख के दिन कब लौटेंगे, हैं कुछ अता-पता !

गुन-गुन करता खाकी बरतन,
टन-टन बजता खाकी बरतन,
सच-सच जवाब देता है चिल्ला-चिल्ला कर :
"माना, अमीर है ताकतवर, कायम है अभी
निहंग-सिपर,
लेकिन ढह जायेगा वह, ज्यों महलसे-ताश,
कट जायेगा यह दौरे-सितम, आता है वह दिन
जब ज़ालिम
मिट्टी के इस बरतन सा होगा पाश-पाश !"

बरतन को अपने सिर से ऊंचा उठाकर खोजा नसरुद्दीन ने उसे जमीन पर पटक दिया जहां वह सैंकड़ों टुकड़ों में बिखर गया । भीड़ की आवाज़ को अपनी आवाज़ में डुबाने की कोशिश करता हुआ खोजा नसरुद्दीन चिल्लाया :

"नियाज कुम्हार को सूदखोर और अमीर की रहमदिली से बचाने के लिए हम सब मदद करें। आप खोजा नसरुद्दीन से वाकिफ हैं । कर्ज लेकर वह हमेशा चुकाता रहा है । कुछ वक्त के लिए मुझे चार सौ तंके कौन देगा ?"

एक भिश्ती नंगे पैर आगे बढ़ा ।

"खोजा नसरुद्दीन! हमारे पास रुपया कहां से आया ? हमें भारी टैक्स अदा करने पड़ते हैं। लेकिन मेरा यह पटका है। यह करीब-करीब नया ही है। इससे शायद तुम्हें कुछ मिल जाय।"

... उसने वह पटका खोजा नसरुद्दीन के ... दिया। भीड़ में कानाफूसी होने लगी। ... मच गयी। कुलाह, जूतियां, पटके,

खिलअतें तक उड़-उड़कर उसके कदमों के पास आने लगीं। हरेक शख्स ख्वाजा नसरुद्दीन की मदद करने में फख्र समझने लगा। चायखाने का मोटा मालिक अपनी दो सबसे बढ़िया चायदानियां और तांबे की कश्तियां ले आया और अकड़कर दूसरों को देखने लगा क्योंकि वह दिल खोलकर दे रहा था। भेंट में दी गयी चीजों का ढेर बढ़ रहा था। ख्वाजा नसरुद्दीन चीखकर बोला :

"बस! बहुत काफी है, बुखारा के फ़ैयाज शहरियों! बहुत काफी हो गया। आप मुझे सुन रहे हैं न? जीन-साज तुम अपनी जीन उठा लो—काफी हो गया, मैं कह जो रहा हूं। क्या? अरे क्या आप अपने ख्वाजा नसरुद्दीन को गुदड़ बेचनेवाला बनाना चाहते हैं? अब मैं नीलाम शुरू करता हूं। यह रहा भिश्ती का मटका। जो इसे खरीदेगा उसे कभी प्यास नहीं सतायेगी। चलो, मैं इसे सस्ते ही बेच रहा हूं। ये रहे कुछ मरम्मत किये हुए पुराने जूते। ये जूते जरूर दो दफा मक्का हो आये हैं। जो इन्हें पहनेगा उसे लगेगा कि वह जियारत कर रहा है। ये हैं चाकू, जूते, खिलअतें। आओ, बोलो! मैं इन्हें बिना मोलभाव किये, सस्ते में ही बेचे रहा हूं! वक्त बहुत कीमती है। जल्दी करो!"

लेकिन वजीर बख्तियार ने वफादार रियाया की फिक्र में बड़ी मेहनत से बुखारा में ऐसा इन्तजाम किया था कि तांबे का एक फूटा सिक्का भी बाशिन्दों की जेब में न टिकता था और फौरन अमीर के खजाने में जा पहुंचता था। अपने सामान की ख्वाजा नसरुद्दीन फिजूल ही जोर-जोर से तारीफ कर रहा था—वहां कोई खरीददार नहीं था।

: १४ :

तभी उधर से सूदखोर जाफर गुजरा। उसका थैला सोने-चांदी के छोटे-मोटे जेवरों से फूल रहा था। ये जेवर उसने सर्राफ टोले से गुलजान के लिए खरीदे थे।

वसमती तक तरह-तरह उनके कदमों के पास आने लगीं। हरेक शख्स ख्वाजा नसरुद्दीन की मदद करने में फ़ख्र समझने लगा। चायखाने का मोटा मालिक अपनी ही सबसे बढ़िया चायदानियाँ और तांबे की रक़ाबियाँ ले आया और झगड़कर दूसरों को टोकने लगा क्योंकि वह दिल खोलकर दे रहा था। पैर में ही नयी चीज़ों का ढेर बढ़ रहा था। ख्वाजा नसरुद्दीन चीखकर बोला :

"बस! बहुत काफ़ी है बुखारा के फ़ैयाज़ बाशिन्दो! बहुत काफ़ी हो गया। आप मुझे सुन रहे हैं न? जीन-साज़ तुम अपनी जीन उठा लो—काफ़ी हो गया, मैं कह तो रहा हूं। क्या? अरे क्या आप अपने ख्वाजा नसरुद्दीन को गुदड़ बेचनेवाला बनाना चाहते हैं? अब मैं नीलाम शुरू करता हूं। यह रहा भिश्ती का पटका। जो इसे खरीदेगा उसे कभी प्यास नहीं सतायेगी। चलो, मैं इसे सस्ते ही बेच रहा हूं। ये रहे कुछ मरम्मत किये हुए पुराने जूते। ये जूते ज़रूर दो दफ़ा मक्का हो आये हैं। जो इन्हें पहनेगा उसे लगेगा कि वह ज़ियारत कर रहा है। ये हैं चाकू, जूते, खसखसें! आओ, बोलो! मैं इन्हें बिना मोलभाव किये, सस्ते में ही बेचे रहा हूं। वक्त बहुत कीमती है। जल्दी करो।"

लेकिन वज़ीर बख्तियार ने वफ़ादार रियाया की फ़िक्र में बड़ी मेहनत से बुखारा में ऐसा इन्तज़ाम किया था कि तांबे का एक फूटा सिक्का भी बाशिन्दों की जेब में न टिकता था और फ़ौरन अमीर के खज़ाने में जा पहुंचता था। अपने सामान की ख्वाजा नसरुद्दीन फ़िज़ूल ही ज़ोर-ज़ोर से तारीफ़ कर रहा था—वहां कोई खरीददार नहीं था।

: १४ :

तभी उधर से सूदखोर जाफ़र गुज़रा। उसका थैला सोने-चांदी के छोटे-मोटे जेवरों से फूल रहा था। ये जेवर उसने सर्राफ़ टोले से गुलजान के लिए खरीदे थे।

न यह अमीर का बदतरीन सल्तनत था।
उब चुके सारे अवाम, कब उन्हें मिलेगा इनआम,
...र के दिन कब लौटेंगे, है कुछ अता-पता!

गुन-गुन करता खाली बरतन,
टन-टन बजता खाली बरतन,
सच-सच जवाब देता है चिल्ला-चिल्ला कर :
"माना, अमीर है ताकतवर, कायम है अभी
निहंग-सिपर,
लेकिन ढह जायेगा वह, ज्यों महबसे-ताब,
कट जायेगा यह दौरे-सितम, आता है वह दिन
जब ज़ालिम
मिट्टी के इस बरतन सा होगा पाश-पाश!"

...तन को अपने सिर से ऊंचा उठाकर ख्वोजा
...द्दीन ने उसे जमीन पर पटक दिया जहां वह
... टुकड़ों में बिखर गया। भीड़ की आवाज को
... आवाज में डुबाने की कोशिश करता हुआ ख्वोजा
...द्दीन चिल्लाया :

...आज कुम्हार को सूदखोर और अमीर की रहम-दिली से बचाने के लिए हम सब मदद करें। आप ख्वोजा नसरुद्दीन से वाकिफ हैं। कर्ज लेकर वह हमेशा चुकाता रहा हूं। कुछ वक्त के लिए मुझे चार सौ तंके कौन देगा?"

एक भिश्ती नंगे पैर आगे बढ़ा।

"ख्वोजा नसरुद्दीन! हमारे पास रुपया कहां से आया? हमें भारी टैक्स अदा करने पड़ते हैं, लेकिन मेरा यह पटका है। यह करीब-करीब नया ही है, इससे शायद तुम्हें कुछ मिल जाय।"

और उसने वह पटका ख्वोजा नसरुद्दीन के कदमों पर डाल दिया। भीड़ में कानाफूसी होने लगी। खल-बलाहट मच गयी। कुलाह, खोपड़ियां, पटके, ...

खरखने तक उड़-उड़कर आये कदमों के पास आने लगीं। हरेक शख्स खोजा नसरुद्दीन की मदद करने में फ़ख्र समझने लगा। चायखाने का मोटा मालिक अपनी दो सबसे बढ़िया चायदानियाँ और चाय की कटोरियाँ ले आया और अकड़कर दूसरों को घूरने लगा क्योंकि वह दिल खोलकर दे रहा था। पल में ही गर्म चीज़ों का ढेर बढ़ रहा था। खोजा नसरुद्दीन चीखकर बोला :

"बस! बहुत काफ़ी है, बुखारा के फ़य्याज शहरियो! बहुत काफ़ी हो गया! आप मुझे सुन रहे हैं न! जीन-साज तुम अपनी जीन उठा लो—काफ़ी हो गया, मैं कह रहा हूँ। क्या! अरे क्या आप अपने खोजा नसरुद्दीन को गुदड़ बेचनेवाला बनाना चाहते हैं? अब मैं नीलाम शुरू करता हूँ। यह रहा मिट्टी का घड़ा। जो इसे खरीदेगा उसे कभी प्यास नहीं सतायेगी। चलो, मैं इसे सस्ते ही बेच रहा हूँ। ये रहे कुछ मरम्मत किये हुए पुराने जूते। ये जूते ज़रूर दो दफ़ा मक्का हो आये हैं। जो इन्हें पहनेगा उसे लगेगा कि वह ज़ियारत कर रहा है। ये हैं चाकू, जूते, खलअतें। आओ, बोलो! मैं इन्हें बिना मोलभाव किये, सस्ते में ही बेचे रहा हूँ! वक्त बहुत कीमती है! जल्दी करो!"

लेकिन वज़ीर बख़्तियार ने वफ़ादार रियाया की फ़िक्र में बड़ी मेहनत से बुखारा में ऐसा इन्तज़ाम किया था कि तांबे का एक फूटा सिक्का भी बाशिन्दों की जेब में न टिकता था और फ़ौरन अमीर के खज़ाने में जा पहुँचता था। अपने सामान की खोजा नसरुद्दीन फ़िज़ूल ही ज़ोर-ज़ोर से तारीफ़ कर रहा था—वहाँ कोई खरीददार नहीं था।

: १५ :

तभी उधर से सूदखोर जाफ़र गुज़रा। उसका थैला सोने-चांदी के छोटे-मोटे जेवरों से फूल रहा था। ये जेवर उसने सर्राफ़ टोले से गुलजान के लिए खरीदे थे।

वह गुलजान को देखने के लिए बेताब हो रहा था और जल्दी-जल्दी आगे बढ़ रहा था। अपने लंगड़ेपन से मजबूर सूदखोर पीछे-पीछे चल रहा था।

"तुम इतनी जल्दी में कहां जा रहे हो?" आस्तीन से पसीना पोंछते हुए सूदखोर ने पूछा।

अपनी काली आंखों में शरारत-भरी चमक लाकर ख्वाजा नसरुद्दीन बोला : "उसी जगह, जहां आप जा रहे हैं। हम और आप जाफर साहब, एक ही जगह और एक ही काम से जा रहे हैं।"

सूदखोर ने कहा : "पर तुम्हें मेरे काम की क्या खबर? अगर तुम समझ पाते तो तुम्हें रश्क होने लगता।"

इस बात के मानी ख्वाजा नसरुद्दीन से छिपे नहीं रहे और खुशी से हंसता हुआ वह बोला : "ऐ सूदखोर! अगर तुम्हें मेरे काम की खबर होती तो तुम मुझ से दस गुना ज्यादा रश्क करने लगते।"

जवाब की गुस्ताखी समझकर जाफर ने नाराजी से भवें तानी : "तू बहुत जुबान चलाता है। तेरे जैसों को तो मेरे जैसों से बात करते वक्त डर से कांपना चाहिए। बुखारा में ऐसे कुछ ही लोग हैं जो मुझसे बड़े हैं और जिनसे मैं हसद करता हूं। मैं रईस हूं और मेरी मन-चाही बात होने में कोई रुकावट नहीं पड़ती। मैंने बुखारा की सबसे हसीन लड़की चाही थी और आज वह मेरी हो जायगी।"

उसी वक्त एक डलिया में चेरी के फल बेचता हुआ एक शख्स उधर से गुजरा। ख्वाजा नसरुद्दीन ने उसकी डलिया में से लम्बे डंठलवाली एक चेरी निकाल ली और सूदखोर को दिखाता हुआ बोला :

"जाफर साहब! मेरी बात पूरी सुन लीजिए। लोग कहते हैं कि एक दिन एक सियार ने दरख्त में बहुत ऊंचे एक चेरी टंगी। उसने अपने मन में सोचा : 'मैं न रुकूंगा जब तक वह चेरी मुझे न मिल

और वह पेड़ पर चढ़ने लगा। टहनियों से मुर्गी
लता हुआ वह दो घंटे तक चढ़ता रहा। जब
ी के पास पहुंचा और अपना मुंह फाड़कर उसे
ी तैयारी कर रहा था तभी यकायक एक बाज
और चेरी लेकर उड़ गया। इसके बाद सियार फिर
तक पेड़ से उतरता रहा और उतरने में और भी
छिल गया। वह बुरी तरह रो-रोकर कहता रहा :
चेरी लेने के लिए दरख्त पर चढ़ा ही क्यों! यह
जानते हैं कि दरख्तों पर चेरी सियारों के लिए
ा जाती।' "

ोर ने नफरत से कहा : "तू बेवकूफ है। इस
मुझे तो कोई मतलब की बात दिखायी नहीं

नसरुद्दीन ने जवाब दिया : "गहरे मतलब
हीं दिखायी देते।"

का डंठल उसके कुलाह में दबा था और चेरी
ान के पीछे लटक रही थी।

मुड़ी। मोड़ के सामने कुम्हार अपनी बेटी के
क पत्थर पर बैठा था।

र उठ खड़ा हुआ। उसकी आखें, जिनमें उम्मीद
चमक अब तक बाकी थी बुझ सी गयी, क्योंकि
कि अजनबी रुपया इकट्ठा करने में [illegible]
ा है। गुलजान ने एक आह भरी [illegible]
लिया। वह ऐसी दर्द-भरी आवाज [illegible]
कर पत्थर के भी [illegible] हम
हो गये।" लेकिन सूदखोर का [illegible] पत्थर से
ा था। उसके चेहरे पर बेरहम [illegible] और [illegible]
दे रही थी। वह बोला [illegible]
हार। मियाद खत्म हुई। [illegible] मेरे [illegible]
तुम्हारी बेटी मेरी गुलाम और रखैल है।"
नसरुद्दीन को चोट पहुंचाने और अपना
लिए उसने मालिकाना ढंग से गुलजान का

कुम्हार और गुलजान ने प्यार-भरी आवाज में कहा : "अजनबी! हमें अपना नाम बता दो ताकि हमें मालूम हो जाय कि हम किसके लिए दुआ करें।"

सूदखोर गुनगुनाया : "हां, मुझे अपना नाम बता दो, ताकि मुझे मालूम हो जाय कि किसके लिए बददुआ करूं।"

ख्वाजा नसरुद्दीन का चेहरा चमक रहा था। उसने साफ और ऊंची आवाज में कहा : "बगदाद और तेहरान में, इस्ताम्बूल और बुखारा में, हर जगह मैं एक ही नाम से जाना जाता हूं और वह नाम है—ख्वाजा नसरुद्दीन।"

सूदखोर डर के मारे सफेद पड़ गया और पीछे को हटता हुआ बोला : "ख्वाजा नसरुद्दीन!" और अपने कुली को आगे खदेड़ता हुआ वह डर के मारे भागने लगा।

जहां तक और लोगों का ताल्लुक था वे उसका इस्तकबाल करते हुए चिल्लाये—"ख्वाजा नसरुद्दीन! ख्वाजा नसरुद्दीन!" नकाब के नीचे गुलजान की आंखें चमक उठीं। बूढ़ा कुम्हार अभी तक अपने होश दुरुस्त नहीं कर पाया था। वह हवा में हाथ हिलाता रहा और कुछ भिनभिनाता रहा।

· १५ ·

अमीर के इंसाफ के लिए लगी अदालत अब भी जारी थी। जल्लाद कई बार बदले जा चुके थे। मौत खाने के इन्तजार में खड़े लोगों की तादाद बढ़ती जा रही थी।

दो शख्स सूली पर लटक रहे थे। तीसरे का सिर धड़ से जुदा पड़ा था और खून से जमीन तर थी। लेकिन कराह और चीखें नींद में मारे अमीर के कानों तक नहीं पहुंच रही थीं क्योंकि दरबारी चापलूस अमीर के कानों पर कसीदों की बौछार कर रहे थे और अपनी इस कोशिश में उनके गले पड़ गये थे। तारीफें

[ज़र्द] सा हो गया, "यह सच नहीं है। कुछ ही दिन पहले बगदाद के खलीफा ने मुझे लिखा था कि उन्होंने उसका सर कलम करवा दिया है। तुर्की के सुलतान ने लिखा था कि उन्होंने उसे सूली पर लटकवा दिया है। ईरान के शाह ने खुद अपने हाथ से मुझे लिखा था कि उन्होंने उसे फांसी दे दी है। खीवा के खान ने पिछले साल आम ऐलान किया था कि उन्होंने उसकी जिन्दा खाल खिंचवा दी है। यह ख्वाजा नसरुद्दीन—उस पर लानत बरसे—चार बादशाहों के हाथों से कैसे बेदाग बचकर निकल सकता है?"

वज़ीर और रईस व अफसर ख्वाजा नसरुद्दीन का नाम सुनकर पीले पड़ गये। चमर डुलानेवाला चौंका और चंवर उसके हाथ से गिर पड़ा, हुक्केवाले के गले में धुआं फंस गया और वह ज़ोर-ज़ोर से खांसने लगा। चापलूसों की जुबानें डर के मारे सूखकर तालू से चिपक गयीं।

अर्सलां बेग ने दोहराया : "वह यहीं है।"

अमीर चिल्लाये · "तू झूठ बोलता है।"

और शाही हाथ ने उसके गालों पर ज़ोर से तमाचा जड़ दिया : "तू झूठा है। अगर वह वाकई यहां है, तो बुखारा में वह घुस ही कैसे पाया? पहरेदारों और तेरे रहने से फायदा ही क्या? कल रात बाजार में जो हुल्लड़ हुआ, यह उसी की शरारत थी? जब तू सो रहा था, उसने रियाया को मेरे खिलाफ उभारने की कोशिश की और तू ने कुछ नहीं सुना?"

और अमीर ने फिर अर्सलां बेग को मारा। वह झुक गया और अमीर का हाथ जैसे ही नीचे गिरा उसे चूम लिया।

"अरे मालिक। वह यहीं है, बुखारा में ही। क्या आप सुन नहीं रहे?"

दूर पर जो शोर हो रहा था वह जलजले की तरह फैलने लगा। जो भीड़ अदालत में खड़ी थी, वह भी

गुस्सा हो गया, "यह सच नहीं है। कुछ ही दिन पहले बगदाद के खलीफा ने मुझे लिखा था कि उन्होंने उसका सिर कलम करवा दिया है। तुर्की के सुलतान ने लिखा था कि उन्होंने उसे सूली पर लटकवा दिया है। ईरान के शाह ने खुद अपने हाथ से मुझे लिखा था कि उन्होंने उसे फांसी दे दी है। खीवा के खान ने पिछले साल आम ऐलान किया था कि उन्होंने उसकी जिन्दा खाल खिंचवा ली है। यह खोजा नसरुद्दीन—उस पर लानत बरसे—चार बादशाहों के हाथों से कैसे बेदाग बचकर निकल सकता है?"

वजीर और रईस व अफसर खोजा नसरुद्दीन का नाम सुनकर पीले पड़ गये। चंवर डुलानेवाला चौंका और चंवर उसके हाथ से गिर पड़ा, हुक्केवाले के गले में धुआं फंस गया और वह जोर-जोर से खांसने लगा। चापलूसों की जुबानें डर के मारे सूखकर तालू से चिपक गयीं।

अर्सलां बेग ने दोहराया : "वह यहीं है।"

अमीर चिल्लाये : "तू झूठ बोलता है।"

और शाही हाथ ने उसके गालों पर जोर से तमाचा जड़ दिया : "तू झूठा है! अगर वह वाकई यहां है, तो बुखारा में वह घुस ही कैसे पाया? पहरेदारों और तेरे रहने से फायदा ही क्या? कल रात बाजार में जो हुल्लड़ हुआ, वह उसी की शरारत थी? जब तू सो रहा था, उसने रियाया को मेरे खिलाफ उभारने की कोशिश की और तू ने कुछ नहीं सुना?"

और अमीर ने फिर अर्सलां बेग को मारा। वह झुक गया और अमीर का हाथ जैसे ही नीचे गिरा उसे चूम लिया।

"अरे मालिक! वह यहीं है, बुखारा में ही! क्या आप सुन नहीं रहे?"

दूर पर जो शोर हो रहा था वह जलजले की तरह फैलने लगा। जो भीड़ अदालत में खड़ी थी, वह भी

जोश में आ गयी । भनभनाहट होने लगी । पहले यह भनभनाहट धीमी थी और साफ सुनायी नहीं पड़ती थी । फिर वह ऊंची और बुलंद होने लगी, यहां तक कि अमीर को अपना तख्त और सिंहासन अपने नीचे हिलता लगा । यकायक इस भनभनाहट और आवाज़ों के शोरगुल में एक नाम उठा और एक सिरे से दूसरे सिरे तक कई बार दोहराया गया : "ख्वाजा नसरुद्दीन !! ख्वाजा नसरुद्दीन !!"

इस नाम से अदालत गूंज उठी ।

जलती हुई मशालें लेकर पहरेदार तीरों की तरह दौड़ पड़े । अमीर का चेहरा घबराहट से बिगड़ गया था । वह चिल्लाये : "ख़त्म करो इजलास । वापस चलो महल को !"

और डरपोकपन की अपनी ज़िल्लत का दामन थामे हुए वह महल को वापस भाग लिये । उनके पीछे नौकर-चाकर गिरते-पड़ते दौड़े और उनकी सवारी लायी ही महल को वापस खींच भेजी गयी । डर से कांपते हुए, सबसे पहले महल पहुंच जाने की हड़बड़ी में एक-दूसरे को धक्का देते हुए वज़ीर, सिपाही, मौलवी, जल्लाद, हुक्केवाला चवर डुलानेवाला आदि भी भाग लेकर भागे । जल्दी से उनके जूते नीचे छूट गये और उन्हें उठाने की भी फिक्र उन्हें न रही । सिर्फ़ हाथी ही अपनी पुरानी शान-शौकत से वापस लौटे, क्योंकि अमीर के जुलूस का हिस्सा होते हुए भी उन्हें सियार

"ये अजीब वाकयात हैं, इनमें से कुछ तो मेरी मौजूदगी में हुए और कुछ मुझे मातबर लोगों ने सुनाये।"
अस्मा इब्न मुन्किज "किताबुल्ऐतबार"

हुत पुराने जमाने से बुखारा के कुम्हार शहर के पूरब
की तरफ से फाटकों के पास मिट्टी के बड़े ढूह के
पास बसे हुए थे। इससे बढ़िया जगह वह अपने
तलाश भी नहीं सकते थे। मिट्टी पास में ही मिल
ी और शहरपनाह की दीवाल के नीचे बहने वाली
र्द की नहर से पानी मिल जाता था। कुम्हारों के
, परदादों, और लकड़दादों ने मिट्टी लेते-लेते दूर
ग्राधा कर दिया था। वे अपने घर मिट्टी से बनाते,
ी से बरतन बनाते और इसी मिट्टी में उनके रिश्ते-
क दिन रोते-धोते उन्हें दफना आते। अक्सर कुम्हार
घड़ा या सुराही बनाकर उसे धूप में सुखाकर और
में पका कर उसकी साफ तेज ठनक पर अचम्भा
होगा। लेकिन उसे इसका शक भी न होगा कि
किसी परदादा ने अपने खानदान के अजीजों की
ं और उनके बरतनों की बिक्री के खयाल से, अपनी
के जरों से इस मिट्टी को बढ़िया बनाया होगा,
उसमें से खालिस चांदी जैसी खनक पैदा हो।

ों, नहर के बिलकुल किनारे कदीमी सायेदार दरख्तों
ये में नयाज कुम्हार का घर था। पत्तियां हवा में

गया—उसका कारीगर देखने। लेकिन जैसे ही मैं बागीचे के फाटक से दाखिल हुआ, कारीगर उठा और वहां से रवाना हो गया और फिर पलट कर नहीं आया।"

"भाई, बूढ़ा अपने कारीगर को छिपाकर रखता है। जरूर उसे डर होगा कि हम लोगों में से कोई उसके कारीगर को लालच देकर फुसला न ले जाये। अजब इन्सान है वह भी। जैसे कि हम कुम्हारों के जमीर ही नहीं। मानो हम लोग इस बूढ़े की किस्मत, जिसे अब जिन्दगी में खुशी मिली है, बिगाड़ने की कोशिश करेंगे।"

इस तरह पड़ोसियों ने मसले को निपटाया। उनमें से किसी को शुबहा तक न हुआ कि बूढ़े नयाज का कारीगर कोई और नहीं, खुद ख्वाजा नसरुद्दीन है। सबको पक्का यकीन था कि ख्वाजा नसरुद्दीन बहुत पहले ही बुखारा छोड़कर चला गया है। यह अफवाह खुद उसने फैलायी थी, ताकि जासूसों को परेशानी हो और उसकी तलाश में जो जोश दिखाया जा रहा था वह ठंडा पड़ जाय। अपने मकसद में उसे कामयाबी भी मिली। यह कोशिश दस दिन बाद साबित हो गया। शहर के सभी फाटकों पर से दोहरी पहरेदारी हटा ली गयी और हथियार खड़खड़ाते और रात में मशालों से चकाचौंध फैलाते सिपाहियों के गश्तों से बुखारा के बाशिन्दों को नजात मिली।

एक दिन बहुत देर तक खांसने-खखारने के बाद बूढ़े नयाज ने ख्वाजा नसरुद्दीन को देखते हुए कहा :

"ख्वाजा नसरुद्दीन तुमने मुझको गुलामी से और मेरी बेटी को बेइज्जती से बचाया। तुम मेरे साथ काम करते हो और मुझसे दस गुने ज्यादा घड़े तैयार कर डालते हो। जब से तुमने मेरी मदद शुरू की, तब से अब तक मैं खालिस नफे के तीन सौ पचास तंके कमा चुका हूं, जो ये हैं। इस रकम पर तुम्हारा हक है, तुम इसे लो।"

ख्वाजा नसरुद्दीन ने कुम्हारी का चाक रोक लिया और ताज्जुब से बूढ़े को देखने लगा।

"ऐ नेक रहम नवाज साहब ! जरूर तुम्हारी तबियत कुछ खराब है। तभी तुम ऐसी अजीब-अजीब बातें कर रहे हो। यहां तुम मालिक हो और मैं तुम्हारा नौकर। अगर तुम मुनाफे का एक छोटा-सा हिस्सा भी, यही कोई पैंतीस तंके मुझे दे दो तो मुझे जरूरत से ज्यादा तस्कीन हो जायेगी।"

नवाज की फटी-पुरानी थैली से उसने पैंतीस तंके निकाले और अपने पटके में रख लिये; बाकी वापस कर दिये। लेकिन बूढ़े ने रकम वापस न लेने की जिद-सी पकड़ ली।

"ऐसा करना ठीक नहीं है, ख्वाजा नसरुद्दीन। यह रकम तुम्हारी है। अगर तुम पूरी रकम नहीं लेते, तो कम से कम आधी तो लो ही।"

ख्वाजा नसरुद्दीन को ताव आ गया।

"ऐ भले नवाज। अपनी थैली मेरे सामने से हटाओ। मेहरबानी करके दुनिया का ढंग न बिगाड़ो। अगर सभी मालिक अपने-अपने कारीगरों को मुनाफे का आधा हिस्सा देने लगें तो क्या होगा? तब तो इस दुनिया में न मालिक रह जायेंगे, न नौकर, न रईस, न गरीब, न पहरेदार, न अमीर, वज़ीर, मोल्वी, शो.*. अल्लाह, ऐसी, बेइंसाफी, कौन, बर्दाश्त करेगा। वह फौरन तूफाने-नूह (दूसरा बड़ा सैलाब) भेजेगा। अपनी थैली लो और अच्छी तरह छिपाकर रखो, नहीं तो कहीं तुम्हारे पागल ख्यालात अल्लाह का कहर न बरपा करें और इंसानों की पूरी नस्ल ही नेस्तनाबूद कर दें।"*

इतना कहकर ख्वाजा नसरुद्दीन फिर अपना चाक चलाने लगा।

"यह घड़ा बड़ा बांका बनेगा।" गीली मिट्टी को हाथों से थपथपाता हुआ वह बोला: "यह हमारे अमीर के सिर की तरह बोलता है। यह घड़ा मूर्ख
पड़ेगा, ताकि वहीं अमीर का सिर।
— आ गई।"

"ख़ोजा नसरुद्दीन! होशियार! ऐसी बातें करने क
नतीजा एक दिन कहीं तुम ख़ुद अपना सिर न खो बैठो।"

"आहा! ख़ोजा नसरुद्दीन का सिर उड़ा देना कोई हंसी
ठट्ठा नहीं है।"

मैं ख़ोजा नसरुद्दीन, मियां!
आज़ाद हमेशा रहा किया!
यह झूठ न कोई बकता है,
मैं कभी नहीं मर सकता हूं।
कह दो अमीर से, धारदार
बनवा रक्खे कोई कटार,
ऐलान करे, मैं हूं रहज़न
मुझ से ख़तरे में पड़ा अमन!
मैं ख़ोजा नसरुद्दीन, मियां!
आज़ाद हमेशा रहा किया।
यह झूठ न कोई बकता है,
मैं कभी नहीं मर सकता हूं।
जीऊंगा—गाऊंगा, चाहूंगा,
मैं लम्बी तान सराहूंगा।
डंके की चोट सुनाऊंगा,
मन की मुराद बतलाऊंगा—
"यह बद अमीर मर जाये रे,
मरकर दोज़ख़ में जाये रे।"
हां, सुलतानी फ़रमान है यूं—
मेरा सिर क़लम किया जाये।
यह शाह के लिए फांसी है,
गीदा मैं इस पर राज़ी हूं।
मैं ख़ोजा नसरुद्दीन, मियां!
आज़ाद हमेशा रहा किया।
यह झूठ न कोई बकता है,
मैं कभी नहीं मर सकता हूं।

भूखा कंगला हूं, नंगा हूं,
परवाह नहीं है, चंगा हूं!
मैं इन्सानों का प्यारा हूं,
किस्मत का बड़ा दुलारा हूं,
डर नहीं किसी सुलतां का है,
डर नहीं अमीर कि खां का है!
मैं खोजा नसरुद्दीन, मियां!
आजाद हमेशा रहा किया।
यह झूठ न कोई बकता हूं,
मैं कभी नहीं मर सकता हूं!

नयाज की पीठ तरफ अंगूर की बेल के पीछे से गुलजान का हंसता हुआ चेहरा एक लमहे को दिखायी दिया। खोजा नसरुद्दीन ने अपना गीत बीच में ही रोक दिया और गुलजान से खुशगवार और राज भरे इशारे करने लगा।

"उधर क्या देख रहे हो?" नयाज ने पूछा "क्या चीज है उधर?"

"बहिश्त की चिड़िया, जो दुनिया में सबसे ज्यादा खूबसूरत है!"

बूढ़ा बड़ी मेहनत से पीछे को घूमा, लेकिन तब तक गुलजान फूल-पत्तों में गायब हो चुकी थी और दूर से सिर्फ उसकी रुपहली हंसी सुनायी दे रही थी। धूप की चकाचौंध से बचने के लिए अपने हाथ की आड़ बनाये बूढ़ा बड़ी देर तक अपनी कमजोर आंखें उधर गड़ाये रहा लेकिन उसे एक डाल से दूसरी डाल पर फुदकती एक गौरेया के सिवा और कुछ दिखायी न दिया।

"जरा समझ से काम लो, खोजा नसरुद्दीन! यह बहिश्त की चिड़िया कैसे हो गयी? यह तो मामूली गौरेया है।"

खोजा नसरुद्दीन ठहाका मारकर हंस पड़ा। बेचारा

नयाज इस रुद्दी की कोई तुक न समझकर मायूसी से सिर हिलाता रह गया।

रात के खाने के बाद, ख्वाजा नसरुद्दीन चला गया तो नयाज ऊपर छत पर पहुंचा और हल्की गर्म हवा के झोंकों में सोने की तैयारियां करने लगा। थोड़ी ही देर में वह खर्राटे भरने लगा। तभी छोटे जंगले के पीछे से हल्की खांसी सुनायी दी। ख्वाजा नसरुद्दीन वापस आ पहुंचा था।

"मां गयीं हैं।" गुलजान ने फुसफुसाकर कहा।

एक ही छलांग में ख्वाजा नसरुद्दीन ने जंगला पार कर लिया।

दोनों चनार के दरख्तों के साये में आ गये। लम्बे हरे लिबास में लिपटे दरख्त हौले-हौले ऊंघते लग रहे थे। साफ नीले आसमान में चांद चमक रहा था। इसकी रोशनी हर चीज पर धुंधले नीले रंग की कूंची फेर रही थी। नहर का पानी ठहर-ठहर कर बह रहा था। यहां-वहां रोशनी में पानी चमकता और फिर परछाइयों में खो जाता।

चांद की पूरी रोशनी में गुलजान ख्वाजा नसरुद्दीन के सामने खड़ी थी। खुद भी वह पूरे चांद की तरह चमक रही थी। यह नाजुक और लचकीली हसीना लम्बी-लम्बी चोटियों में बड़ी खूबसूरत लग रही थी। ख्वाजा नसरुद्दीन ने बहुत धीमे से कहा :

"ऐ मेरी रूह की मलिका! मैं तुझ पर जान देता हूं। जिन्दगी में मैंने यह पहली और आखिरी बार मुहब्बत की है। मैं तेरा गुलाम हूं, तेरे छोटे से छोटे इशारे पर सब कुछ करने को तैयार हूं। मेरी पूरी जिन्दगी तेरा ही इन्तजार कर रही थी। अब मैंने तुझे पा लिया है और तुझे कभी न भूल सकूंगा। तेरे बिना मैं जिन्दा नहीं रह सकता।"

"मुझे पूरा यकीन है कि बात तुम पहली बार नहीं कह रहे हो!" हसद से गुलजान बोली।

"मैं ?" नाराजगी से बौखलाकर खोजा नसरुद्दीन बोला। "आह, गुलजान! तेरे मुंह से ऐसी बात निकली ही क्यों कर?"

इस बात में ऐसी सच्चाई झलक रही थी कि गुलजान ने उसका यकीन कर लिया। अपने कहे पर अफसोस-सी करती हुई, उसके पास मिट्टी की टीले पर आ बैठी। उसका बोसा लेता हुआ खोजा नसरुद्दीन अपने होंठ इतनी देर तक उसके होंठों से सटाये रहा कि बेचारी का दम घुटने लगा।

"सुनो," जरा मुस्काकर वह बोली। "हमारे यहां का रिवाज है कि जिस लड़की का बोसा लेते हैं उसे कोई न कोई तोहफा भेंट करते हैं। एक तुम हो कि एक हफ्ते से ज्यादा हो गया, रोज रात को तुम मेरा बोसा लेते हो लेकिन अभी तक तार का एक टूटा टुकड़ा

आ गर्म गुदगुदा सीन ... गया। एक लमहे के लिए
सकी सांस रुक गयी। उस पर जादू सा छा गया।
भी यकायक उसे चिनगारियां उड़ती दिखायी दीं
र एक गाल झनझना उठा। वह पीछे को हटा और
हनी से अपना बचाव किया। झनझनाती हुई गुलजान
ड़ खड़ी हुई।

"मुझे ऐसा लगा कि मैंने कहीं चोटें की आवाज
ी है।" आहिस्ते से ख्वाजा नसरुद्दीन बोला।
ातचीत का वक्त क्या लड़ने-झगड़ने में खोना
हिए?"

"बातचीत?" उसे टोककर गुलजान बोली। "यह
 कम हुआ है कि हया-शरम छोड़कर मैं तुम्हारे
ने बिना बुर्का डाले आ जाती हूं। तुम अपने लम्बे
 उधर क्यों बढ़ाते हो जिधर तुम्हें नहीं बढ़ाने
हिए?"

"मेहरबानी करके यह भी बता दो कि किसने तय
ा है कि हाथ कहां बढ़ाने चाहिए कहां नहीं?"
ा नसरुद्दीन ने जवाब दिया। "लो, अगर तुमने
ं बड़े आलिम इब्न तुफैल की किताबें पढ़ी होतीं..."
ुदा का शुक्र है कि ऐसी गन्दी किताबें मैंने नहीं
!" गर्म होती हुई वह फिर बीच में बोल पड़ी।
 अपनी इज्जत की हिफाजत करती हूं, जैसा हर
क लड़की को करना चाहिए।"

व उसके पास से उठी और चली गयी। जीने की
ियां उसके हलके कदमों से चरमरायीं और चीन
 पारचे की झिलमिलीदार खिड़की से रोशनी दिखायी
 लगी।

मैंने उसके जज्बात को ठेस पहुंचायी है," ख्वाजा
ुद्दीन ने सोचा, "मैं बड़ा बेवकूफ हूं। कोई पर-
 नहीं। कल ... जब पता तो लगा कि उसका मिजाज
र है ...
मेरी समाचा जड़ सकती है तो

इसका मतलब है कि वह किसी और से भी तमाचा
सकती है, जिसका मतलब यह है कि वह बड़ी
बीवी साबित होगी। शादी से पहले अगर वह
बार दस-दस चांटे मार लेती है, लेकिन शादी के
गैरों से भी चांटों में ऐसी ही सखी बनी रहे, तो
पूरी तस्कीन होगी।"

पंजों के बल चलकर वह दरवाजे तक पहुंचा
हल्के से आवाज दी।

"गुलजान!"

कोई जवाब नहीं।

"गुलजान!"

खुशबू, अंधेरा, खामोशी। ख्वाजा नसरुद्दीन
हो गया। धीमी आवाज में ताकि बुरा न माना
जाय, उसने गाना शुरू किया:

तेरी चितवन ने मेरी जां, मेरे दिल की चोरी की है
भले तेरी जबां मुझको करे रुसवा, मेरी लानत
मगर दिल को चुराने की तेरी नजरों की है
चुराने की मांगे कीमत, यह हद सीनाजोरी की है
गजब की हैरानी है, यह कहां देखा है दुनिया में
शिकारे-दुज्दी चोरों को चुराने का हरजाना दें!
नजर दो-चार बोसों की मुझे दे, क्या भली सी है!
अह, दो-चार बोसों की नजर काफी नहीं होगी
ये आधे गलत हैं, जितना दिया तसल्ली नहीं होती!
सितमगर, बंद करके आस्तां, यह क्या सजा दी है!
कहीं इससे तो अच्छा था, हुआ होता हमारा सर
जुदा तो, अब कहां तड़पूं, कहां जाके गिरां पाऊं?
सिपाहे नाज के जिस तीर ने मुझ को किया बिस्मिल
उसी कातिल को फिर से ढूंढता फिरता है मेरा दिल
कहां से पूरब-ए गोश, कहां मंजिल यह दी है!

इस तरह वह गाता रहा और हालांकि गुलजान ने
न तो उसे जवाब ही दिया और न उसे दिखाई दी —

ों उसे यकीन था कि वह कान लगाकर सुन रही है।
से भरोसा था कि कोई भी लड़की ऐसे गीत को सुन-
र बैठी नहीं रह सकती। उसका अन्दाजा सही था।
खिलमिली थोड़ी सी खुली।

"आओ!" गुलजान ने फुसफुसाकर कहा। "लेकिन
आहिस्ते से आना। अब्बाजान कहीं जाग न जाय।"

वह जीना चढ़कर ऊपर पहुंचा और उसके बगल
गया। भेड़ की चर्बीवाले चिराग में बत्ती बिल्कुल
रे तक जलती रही। वे बातें करते रहे, बातें करते
; तब भी पूरी बातें न कर पाये। मुख्तसिर में सब
ठीक चलता रहा, गोया वैसे ही चलता रहा जैसे
चलना चाहिए था, यानी जैसा कि दानिशमन्द
लिम अबू मुहम्मद अली इब्नहज्म ने अपनी किताब
तरव का हार" में मामलाते इश्कवाले सबक में
ता है: "मुहब्बत—अल्लाह उसमें बरकत दे—एक
लवाड़ की शक्ल में पैदा होती है और सबसे अहम
बन जाती है। इसकी खूबियां इतनी आला है कि
का बयान नहीं हो सकता और इसकी हकीकत
कल से ही समझ में आती है। इस बात की वजह
सानी से समझ में आ जाती है कि ज्यादातर हसीन
से ही क्यों मुहब्बत होती है। चूंकि इंसान की रूह
सूरत है, वह हर खूबसूरत चीज की तरफ, खास तौर से
मल हुस्न की तरफ झुकती है। ऐसी शक्ल देखकर
उसे जांचती है, और अगर सतह से नीचे अपनी तरह
कोई चीज पाती है, तो उनमें मेल हो जाता है और
ी मुहब्बत पैदा हो जाती है सच ही, बाहरी शक्ल
ह के जर्रे बड़े ताज्जुबखेज ढंग से गुथे रहते है।"

: ९ :

पर बूढा नयाज खांसता, खरखर सांस लेता हुआ कुन-

लकवा मार गया है और दस साल से यह बिना हिले-डुले
ऐसे ही लेटा है। इसके बदन के हिस्से ठंडे और बेजान
हो गये हैं। देखो, यह अपनी आंखें भी नहीं खोल पाता।
बहुत दूर से यह हमारे शहर में आया है। मेहरबान
दोस्त और रिश्तेदार इसे यहां इसलिए ले आये कि अब
जो सिर्फ एक इलाज बचा है, उसे भी आजमा लें। आज
से एक हफ्ते बाद लासानी बहाउद्दीन पाक-वली के उर्स
के दिन इसे कब्र की सीढ़ियों पर लिटा दिया जायगा।
ऐसे ही अंधे, लंगड़े, बिस्तर से न उठ सकनेवाले मरीज
अच्छे हुए हैं, हर बार अच्छे हुए हैं। इसलिए हम लोग
दुआ करें, ऐ सच्चे मुसलमानो, कि पाक शेख हम पर
करम करें और इस बदकिस्मत शख्स को चंगा कर दें।"

यहां इकट्ठे लोगों ने दुआ की और इसके बाद फिर वही
तीखी आवाज सुनायी दी :

"ऐ मोमिनो! अपनी आंखों से देख लो! यह शख्स
बिना हिले-डुले ऐसे ही दस साल से पड़ा हुआ है।"

खोजा नसरुद्दीन धक्का देता भीड़ में आगे बढ़ गया
और पंजों के बल खड़े होकर एक लम्बे दुबले मुल्ला को
देखा जिसकी आंखें छोटी और शरारत भरी थीं और जिसकी
दाढ़ी कच्ची थी। वह चिल्ला-चिल्लाकर अपनी उंगली से
अपने पैरों के पास पड़ी एक खाट की तरफ इशारा कर रहा
था जिस पर लकवामारा शख्स लेटा हुआ था।

"ऐ मुसलमानो! देखो, किस कदर बदकिस्मत, किस
कदर काबिले रहम है यह शख्स! लेकिन एक हफ्ते में
बहाउद्दीन वली इसे चंगा कर देंगे और यह फिर अपनी
जिन्दगी पा जायगा।"

बीमार आदमी वहीं लेटा हुआ था—आंखें बन्द किये
चेहरे पर उदास, पसमुर्दा, रहम मांगता भाव लिये हुए।
खोजा नसरुद्दीन ने ताज्जुब से सांस खींची। यह चेचकरू
चेहरा और चपटी नाक वह हजारों के बीच पहचान सकता
— — —— शायद बहुत दिनों से लकवे का शिकार

-पुकारा। मीठी मधुर आवाज में गुलजान को पुकारकर उसने ताली बजाई। ख्वाजा नसरुद्दीन की गुलजान ने इशारे को तरह पढ़ लिया। वह जीने से इतने धम से उतरी, मानो उसके पाँव सीढ़ियों पर पड़ ही नहीं रहे थे और जंगल कबूतर पार हो गया। थोड़ी ही देर बाद, वहाँ से मुस्कराता चेहरा और अपनी सलवार के दामन से बदन पोंछकर, वह फिर लौट आया और मकड़ी का फाटक खटखटाने लगा।

"अस्सलामअलैकुम ख्वाजा नसरुद्दीन!" बूढ़े ने छत से ही उसका इस्तक़बाल किया। "पिछले कई दिनों से तुम बड़े तड़के उठने लगे हो! सोने का वक्त तुम्हें कब मिलता है? चलो काम शुरू करने से पहले हम लोग चाय पी लें।"

दोपहर में ख्वाजा नसरुद्दीन बूढ़े नयाज को छोड़ गुलजान के लिए सौगात खरीदने बाजार के लिए रवाना हुआ। इसमें रंगीन बदरंग साफा और नकली दाढ़ी लगाने की होशियारी बरती, जो वह आम तौर से किया करता था। इस तरह भेस बदलने से वह पहचाना नहीं जाता था और हिफाजत के साथ, जासूसों के डर के बिना, दुकानों और चायखानों में चला जाता था।

उसने मूँगे की एक माला पसन्द की जिसका रंग उसे अपनी माशूका के होंठों की याद दिलाता था। जौहरी ज्यादा सख्त और झगड़ालू साबित नहीं हुआ। सिर्फ़ घंटे भर के भाव-तोल और ज़ोर-ज़ोर की चखचख-झिकझिक के बाद ही तीस तंके में हार ख्वाजा नसरुद्दीन का हो गया।

वापस लौटते हुए ख्वाजा नसरुद्दीन ने बाजार की मसजिद के पास एक भीड़ देखी। लोग ठसाठस, खिचाखिच खड़े, गरदनें उठाये, एक-दूसरे के कन्धों के पार कुछ देख रहे थे। पास आने पर ख्वाजा नसरुद्दीन को एक खिड़खिड़ी और ऊँची आवाज सुनायी दी:

"ऐ मोमिनो! तुम अपनी आँखों से देख लो! इसे

क्वा मार गया है और दस साल से यह बिना हिले-डुले
से ही लेटा है। इसके बदन के हिस्से ठंडे और बेजान
गये हैं। देखो, यह अपनी आंखें भी नहीं खोल पाता।
दूर दूर से यह हमारे शहर में आया है। मेहरबान
स्त और रिश्तेदार इसे यहां इसलिए ले आये कि अब
सिर्फ एक इलाज बचा है, उसे भी आजमा लें। आज
एक हफ्ते बाद लासानी बहाउद्दीन पाक-वली के उस
दिन इसे कब्र की सीढ़ियों पर लिटा दिया जायगा।
से ही अंधे, लंगड़े, बिस्तर से न उठ सकनेवाले मरीज
छे हुए हैं, हर बार अच्छे हुए हैं। इसलिए हम लोग
आ करें, ऐ सच्चे मुसलमानों, कि पाक शेख हम पर
म करें और इस बदकिस्मत शख्स को चंगा कर दें।"
वहां इकट्ठे लोगों ने दुआ की और इसके बाद फिर वही
र आवाज सुनायी दी :
"ऐ मोमिनो! अपनी आंखों से देख लो! यह शख्स
ना हिले-डुले ऐसे ही दस साल से पड़ा हुआ है।"
खोजा नसरुद्दीन धक्का देता भीड़ में आगे बढ़ गया
पंजों के बल खड़े होकर एक लम्बे दुबले मुल्ला को
ा जिसकी आंखें छोटी और शरारत भरी थीं और जिसकी
ी कच्ची थी। वह चिल्ला-चिल्लाकर अपनी उंगली से
ने पैरों के पास पड़ी एक खाट की तरफ इशारा कर रहा
जिस पर लकवामारा शख्स लेटा हुआ था।
"ऐ मुसलमानो! देखो, किस कदर बदकिस्मत, किस
र काबिले रहम है यह शख्स! लेकिन एक हफ्ते में
उद्दीन वली इसे चंगा कर देंगे और यह फिर अपनी
दगी पा जायगा।"
बीमार आदमी वहीं लेटा हुआ था—आंखें बन्द किये,
रे पर उदास, पसमुर्दा रहम मांगता भाव लिये हुए।
जा नसरुद्दीन ने ताज्जुब से सांस खींची। यह चेचक
रा और चपटी नाक वह हजारों के बीच पहचान सकता
। यह शख्स शायद बहुत दिनों से सफर का शिकार

था। सूरज की झुलसानेवाली गरमी में ठसाठस भीड़ थी। लोगों को बैठने की हिम्मत नहीं हो रही थी। उनकी आंखों से लालच और प्यार भरी लपटसी निकल रही थी। इस दुनिया में, सुख पाने की उम्मीद से महरूम वे आज किसी करिश्मे के इन्तजार में थे। जोर से कहा कोई भी लफ्ज सुनने ही वे चौंक पड़ते थे। उम्मीद का दबा हुआ जज्बा अब बरदाश्त से बाहर होता जा रहा था। दो दरवेशों का हाल आ चुका था। जमीन में मुंह गाड़े वे मिट्टी खा रहे थे और इनके मुंह से फेन बह रहा था। भीड़ उफन रही थी। हर तरफ औरतें चीख रही थीं।

यकायक हजारों गलों से दबी हुई आवाज फूट पड़ी

"अमीर! अमीर!"

महल के पहरेदारों ने लाठियां घुमा-घुमाकर भीड़ में रास्ता बनाया और इस चौड़े रास्ते पर अमीर जियारत के लिए बढ़े। नंगे पांव, सिर झुका हुआ, आसपास के शोर-गुल से बेखबर, पाक खयालों में डूबे हुए। नौकर-चाकरों की फौज चुपचाप पीछे चल रही थी। मौका कालीन बिछाने और अमीर के चल चुकने पर उसे लपेटकर आगे ले जाने के लिए इधर-उधर दौड़ रहे थे।

ऐसे पुरअसर जोश को देखकर बहुतों की आंखों में आंसू आ गये।

अमीर चलकर मिट्टी के उस ढेर तक पहुंचे जो मजार के सामने था। सामने जानमाज बिछाया गया। दोनों तरफ खड़े वजीरों ने सहारा दिया और अमीर घुटनों के बल बैठ गये। सफेद लिबास में ढके मुल्ला आधा दायरा बनाकर पीछे आ खड़े हुए और गर्म धूप भरे आसमान की तरफ हाथ उठाकर जोर-जोर से आयतें पढ़ने लगे।

इबादत का न खत्म होनेवाला सिलसिला जारी रहा। बीच-बीच में नसीहत की तकरीरें होती जातीं। ख्वाजा नसरुद्दीन आस-पास खड़े लोगों की नजरें बचाता एक वीरान कोने में उस कोठरी के पास जा पहुंचा जहां अंधे,

मुल्ला अंधेरे और हब्सवाले छप्पर में घुस गये और मि
मगों जैसे फटे चीथडोंवाले अन्धे आदमी को निका
लाये। हाथों को आगे बढाये वह टटोलता हुआ पत्थरों
लडखडाता गिरता-पडता आगे बढ रहा था।

अन्धा बड़े मुल्ला के पास पहुंचा। उसके कदमों
मुंह के बल गिर पडा और मजार की सीढ़ियों पर अप
होठ चिपका दिये। बड़े मुल्ला ने उसके सिर पर हा
फेरा और वह फौरन चंगा हो गया।

"मेरी नजर लौट आयी! मैं देख सकता हूं! वाह वाह
मैं देख सकता हूं!" कांपती हुई ऊंची आवाज में व
चिल्ला रहा था। "ऐ बहाउद्दीन वली! मुझे दिखाय
देने लगा! मैं देख सकता हूं! वाह वाह! कैसा शानदा
और ताज्जुबखेज करिश्मा हुआ है! वाह वाह!"

इबादतवालों की भीड उसके पास घिर आयी और तरह
तरह की आवाजों का शोर होने लगा। बहुत से लोग
उसके पास आये और पूछने लगे:

"बताओ तो, कौन सा हाथ उठाया है मैंने—दाहिना
या बांया!"

उसने ठीक जवाब दिये और सबको यकीन हो गया
कि उसकी नजर सचमुच लौट आयी है। तभी मुल्लाओं
की एक फौज की फौज तांबे के थाल लिये हुए भीड़ में घुसी
और चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगी:

"ऐ सच्चे मुसलमानो! अपनी आंखों से तुमने अभी
एक मोजेजा देखा है। ऐ मोमिनो! मसजिदों की आरा-
इश के लिए कुछ खैरात दो।"

थाल में मुट्ठी भर अशर्फियां डालने में अमीर ने
पहलकदमी की। उनके बाद वजीरों और अफसरों ने
खैरात दी और थाल में एक-एक अशरफी डाली और
तब भीड भी फैयाजी से चांदी और तांबे के सिक्के थालों
में डालने लगी। थाल जल्दी-जल्दी भर रहे थे। मुल्लाओं
को तीन बार उन्हें बदलना पड़ा।

जैसे ही खैरात में कुछ सुस्ती आयी, एक लंगड़े आदमी को छप्पर से निकालकर लाया गया। और जैसे ही उसने कब्र की सीढ़ियों को छुआ वह चंगा हो गया और बैसाखियां फेंक टांगें उछल-उछलकर नाचने लगा। तभी फिर खाली थाल लिए मुल्ला लोग भीड़ में आ पहुंचे और चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे :

"ऐ नेक इंसानो! ऐ सच्चे ईमानवालो! खैरात करो! खैरात करो!"

सफेद दाढ़ी वाला एक मुल्ला खोजा नसरुद्दीन के पास आया। खोजा नसरुद्दीन खयालों में डूबा हुआ था और टकटकी लगाये कोठरी की दीवालें देख रहा था।

"ऐ मोमिन! तुमने अभी-अभी एक करिश्मा देखा है। खैरात करो और तुम्हारी खैरात का अल्लाह फल देगा।"

खोजा नसरुद्दीन ने काफी जोर से, ताकि पास खड़े लोग सुन सकें, जवाब दिया :

"तुम इसे करिश्मा कहते हो और मुझ से खैरात मांगते हो? पहली बात तो यह कि मेरे पास खैरात के लिए पैसा नहीं है। दूसरी बात यह कि ऐ मुल्ला, क्या तुम्हें नहीं मालूम है कि मैं खुद एक पहुंचा हुआ फकीर हूं और इससे भी बड़ा करिश्मा दिखा सकता हूं?"

"तू फकीर है?" मुल्ला जोर से चिल्लाया। "ऐ मुसलमानो! इसकी बात पर यकीन न लाओ! इसकी जुबान से शैतान बोल रहा है!"

खोजा नसरुद्दीन भीड़ की तरफ मुड़ा।

"मुल्ला को यकीन नहीं कि मैं करिश्मे दिखा सकता हूं। मैंने जो कहा है मैं उसका सबूत दूंगा। इस छप्पर में अन्धे, लंगड़े, बीमार और बिस्तर पर पड़े लोग इकट्ठे हैं। मैं इन्हें बिना हाथ लगाये अच्छा कर दूंगा [illegible] करता हूं। मैं सिर्फ कुछ अल्फाज कहूंगा और

। लोग अपने-अपने रोगों से नजात पा जायेंगे, उनका इधर-उधर बिखर जायेंगे और इतनी तेजी से भागेंगे कि तेज अरबी घोड़े भी इनको न पकड़ पायेंगे।"

कोठरी की मिट्टी की दीवालें पतली थीं और जगह-जगह चटख रही थीं। ख्वाजा नसरुद्दीन ने एक ऐसी जगह तलाश की जहां बहुत सी दरारें थीं और वहीं अपने कन्धे से अन्दर को धक्का दिया। कुछ मिट्टी गिरी। मिट्टी के गिरने की हल्कीसी मनहूस सरसराहट हुई। ख्वाजा नसरुद्दीन ने जोर का धक्का दिया। इस बार मिट्टी का एक बड़ा-सा गोंदा जोर की आवाज करता हुआ भीतर को गिरा। दीवाल के इस बड़े छेद से अंधेरे की तरफ से गर्द उड़ती दिखायी दी।

ख्वाजा नसरुद्दीन पागलों की तरह चिल्लाया :

"जलजला! जलजला! भागो! दौड़ो! बचाओ! बचाओ!" दीवाल में उसने एक और धक्का मारा। भरभराती हुई मिट्टी गिरी।

एक लहमे के लिए तो कोठरी के भीतर सन्नाटा रहा। लेकिन, फौरन बाद हंगामा मच गया। चेचकरू लकवे का मरीज सबसे पहले दरवाजे की तरफ लपका। लेकिन उसकी खाट दरवाजे से अड़ गयी और पीछेवालों का रास्ता रुक गया। अन्धे, लंगड़े, लूले, बीमार, अपाहिज, एक-दूसरे को धक्के देते चीखते-चिल्लाते रहे थे। और ख्वाजा नसरुद्दीन ने जब दीवाल में एक और धक्का मारकर तीसरा लोंदा गिराया, तो एक जोर के धक्के के साथ सब मरीज चेचकरू नौकर, दरवाजे व चूल-चौखट को बाहर ठेलकर, अपनी-अपनी बीमारियां भूल, इधर-उधर निकल भागे।

भीड़ में हंसी पड़ गयी। लोग ताने कस रहे थे, सीटियां बजा रहे थे। शोर मचाकर धू-धू कर रहे थे। इस शोरगुल को भी दबाने वाली ऊंची आवाज में ख्वाजा नसरुद्दीन चिल्लाया : "देखा तुमने मुसलमानो!

का हुक्म दिया। महल के उस बाग में, जो दुनिया के सबसे खूबसूरत बागों में से था, दरबार लगा। यहां, सायादार दरख्तों में खूबसूरत और नायाब फल-फूल लगे थे: कई तरह के आड़ू, अंजीर, खट्टी नारंगियां, प्लम और बहुत सी दूसरी किस्मों के फल, जिनको यहां गिना सकना नामुमकिन है। गुलाब, बनफ़्शा, सोसन गुच्छों में लगे थे और हवा में बीहदाना जैसी खुशबू बिखेर रहे थे। नरगिस रीझी हुई सी गुलबहार से ताक-झांक कर रही थी। फव्वारे नाच रहे थे। संगमरमर के हौजों में सुनहरी मछलियों के झुंड तैर रहे थे। जगह-जगह चांदी के पिंजरे लटक रहे थे। इनमें दूर-दूर से लायी गयी चिड़िया गा रही थीं, चहक रही थीं और सीटी बजा रही थीं।

लेकिन वज़ीर, रईस और आलिम जादू जैसी इस खूबसूरती की तरफ से आंख-कान बन्द किये, बहरे और अन्धे बने, बेखबर से चले जा रहे थे, क्योंकि उनके खयाल उनके ज़ाती फायदों पर, दुश्मनों के हमलों से बचने और उन पर अपने दांव चलाने में, लगे हुए थे और इसलिए उनके सूखे और सख्त दिलों में और चीज की गुंजाइश नहीं थी। अगर सारी दुनिया के फूल यकायक मुरझा जाते, अगर पूरे खल्क की चिड़ियां यकायक गाना बन्द कर देतीं, तो भी वे इस सबसे बेखबर रहते, क्योंकि उनके दिमाग लालच और हवस की सोज़िशों से भरपूर थे।

वे आये तो उनकी आंखें बुझी हुई थीं, होंठ सफेद थे। रेतीले रास्ते पर चमड़े के उनके सलीपर घिसटते चल रहे थे। वे खुशबूदार तुलसी की घनी पत्तियों के झुरमुट के पीछे ठंडे बंगले में घुस गये। यहां फ़ीरोज़ा का मूठवाली अपनी छड़ियां उन्होंने दीवाल से टिकायीं और रेशमी गद्दों पर बैठ गये। भारी-भरकम सफेद साफ़ों के बोझ से दबे अपने सिर झुकाये वे अमीर के आने का इंतज़ार करने लगे।

फिर कहना शुरू किया। "दारुल सल्तनत के अमन में इसने खलल डाला है। हमारा आराम और हमारी नींद इसने हराम कर दी है और हमारे खजाने की जायज आमदनी उड़ा ली है। खुले आम यह अवाम को बगावत और गदर के लिए ललकार रहा है। इस बदनाम से कैसे निपटा जाय। बोलो, मैं जवाब मांगता हूं!"

वजीर, रईस, अफसर, आलिम एक साथ एक सुर में बोल उठे: "ऐ खलकत के मरकज! ऐ अमन के पासबां! बेशक इसको सख्त से सख्त सजा मिलनी चाहिए!"

"तो फिर अभी तक वह जिन्दा क्यों है?" अमीर ने पूछा। "या कि यह हमारा—तुम्हारे आका, जिनका नाम भी तुम्हें इज्जत और खौफ के साथ लेना चाहिए, और जमीन पर लेटे बिना न लेना चाहिए और मैं यहां यह कह दूं कि काहिली, गुस्ताखी और लापरवाही की वजह से तुम लोग यह नहीं करते—मैं फिर कहता हूं, क्या यह हमारा काम है कि खुद बाजार में जाकर उसे पकड़ें और तुम लोग अपने-अपने हरम में अपनी हवस और भूख पूरी करने में मशगूल रहो, और सिर्फ तनख्वाह मिलने के दिन ही अपने फर्ज याद किया करो? बख्तियार! क्या जवाब है तुम्हारा?"

बख्तियार का नाम सुनते ही दूसरों ने आराम की सांस ली और अर्सलां बेग के होठों पर डाह-भरी मुस्कान खेल गयी। बख्तियार से उसका बहुत पुराना झगड़ा चल रहा था। बख्तियार अपने पेट पर हाथ बांधकर अमीर के सामने जमीन पर झुक गया। उसने कहना शुरू किया:

"मुसीबतों और परेशानियों से अल्लाह हमारे अजीज अमीर की हिफाजत करे! इस नाचीज गुलाम की वफादारी और खिदमतें अमीर को खुद मालूम हैं—इस गुलाम की वफादारी, जो अमीर की अजमत के सामने जर्रे के मानिन्द है। मेरे वजीरे-आजम के रुतबे पर मुकर्रर होने से पहले सल्तनत का खजाना करीब-करीब खाली था। लेकिन मैंने कई टैक्स जारी किये, मैंने नौकरी पाने पर टैक्स

लगाया, मैंने हर उस चीज पर टैक्स लगाया जिस पर लगाया जा सकता था और अब खजाने में रकम जमा किये बगैर कोई छींकने तक की जुरअत नहीं कर सकता।

"इसके अलावा मैंने सरकार के छोटे नौकरों और सिपाहियों की तनख्वाहें आधी कर दीं, दुबारा के लोगों से उनके खाने-कपड़े का खर्च दिलवाना शुरू किया। और इस तरह, ऐ मेरे मालिक, शाही खजाने की काफी बड़ी रकम बचने लगी। लेकिन मैंने अब तक अपनी सारी खिदमतें बयान नहीं की हैं। मेरी ही कोशिशों से बहाउद्दीन वली के मजार पर फिर से करिश्मे होने लगे हैं और मजार पर हजारों लोग जियारत के लिए आने लगे हैं। इस तरह हमारे शाहंशाह के खजाने में, जिनके मुकाबले दुनिया के और शाह धूल के मानिन्द हैं, हर साल इतना चन्दा आने लगा है कि खजाना लबालब भर जाता है और शाही आमदनी कई गुनी बढ़ गयी है ।"

अमीर ने टोका :

"कहां है वह आमदनी? ख्वाजा नसरुद्दीन की वजह से वह हम से छिन गयी। हम तुम से तुम्हारी खिदमतों के बारे में नहीं पूछ रहे। उन्हें तो हम एक से ज्यादा बार सुन चुके हैं। बेहतर यह हो कि तुम बताओ कि ख्वाजा नसरुद्दीन पकड़ा कैसे जाय।"

बख्तियार ने जवाब दिया: "मालिक! वजीरे-आजम के फर्ज में मुजरिमों को पकड़ना शामिल नहीं है। हमारी सल्तनत में यह काम अर्सला बेग साहब के सुपुर्द है जो फौज और महल के पहरेदारों के आला हाकिम हैं।"

बोलने के बाद बख्तियार ने अमीर के सामने कोर्निश की और अर्सला बेग पर जीत और बैर भरी निगाह डाली।

अमीर ने अर्सला बेग को हुक्म दिया "बोलो!"

अर्सला बेग, बख्तियार को गुस्से से देखता उठ खड़ा हुआ। उसने लम्बी सांस ली और उसकी काली दाढ़ी तोंद पर उठी और गिरी।

"अल्लाह हमारे सूरज के मानिन्द जहांपनाह को हर आफ़त से बचाये! बीमारी और गम में उनकी हिफ़ाज़त करे! मेरी खिदमतें अमीर को बख़ूबी मालूम हैं। जब खीवा के ख़ान ने बुखारा के खिलाफ़ जंग छेड़ी, समरकन्द के मारूफ़ ज़िल्लिल्लाह अमीर ने मुझे बुखारा की फौज की कमान देने की मेहरबानी फ़रमायी। मैं दुश्मन को, बिना खून खराबे, खदेड़ने में कामयाब हुआ और पूरा मामला हमारे हक़ और फ़ायदे में रहा।

"मैंने किया यह कि खीवा की सरहद से कई दिन के रास्ते तक अपनी सल्तनत के सभी गांवों और कस्बों को, फ़सलों, बागों सड़कों और पुलों को बरबाद करने का हुक्म जारी किया। जब खीवा के लोग हमारे इलाके में आये और उन्होंने वीरान रेगिस्तान ही देखा, जहां बाग-बगीचे नहीं थे, तो वे कहने लगे - हम बुखारा नहीं जायेंगे क्योंकि वहां न तो लूटने को कुछ मिलेगा और न खाने को ही। वे लौट पड़े। मेरी चाल में फंसकर बेइज्जत हो वापस लौट गये। हमारे शाहंशाह अमीर ने तसलीम फ़रमाया कि अपनी फौज से ही मुल्क बरबाद करवाना बहुत कारगर और दूरंदेशी का काम था। उन्होंने हुक्म दिया कि जो कुछ उजाड़ दिया गया था वह फिर हरगिज़ न बसाया जाय: शहर, गांव, खेत, सड़कें सभी बरबाद हालत में छोड़ दी जायें ताकि आइन्दा मुखालिफ़ कबीले हमारी सरज़मीन पर कदम रखने की हिम्मत न करें। इसके अलावा मैंने बुखारा में हज़ारों जासूसों को ट्रेनिंग दी...

–"खामोश जबांदराज!" अमीर चिल्लाये। "तुम्हारे इन जासूसों ने ख्वाजा नसरुद्दीन को पकड़ा क्यों नहीं?"

परेशानी और घबराहट में अर्सला बेग बहुत देर तक खामोश रहा। आखिर उसे कबूल करना पड़ा: "मालिक! मैंने हर तरीका आजमा लिया है, लेकिन

इस बदमाश काफिर के मुकाबले मेरा दिमाग काम नहीं करता। ऐ मेरे आका! मैं समझता हूं कि आलिमों की राय लेनी चाहिए।"

गुस्से से अमीर भड़क उठे: "बुजुर्गों की कसम, तुम लोगों को तो शहरपनाह पर फांसी दे देनी चाहिए।" गुस्से और खीज में उन्होंने हुक्कावरदार के जोर का थप्पड़ मार दिया; गलत मौके पर उसने शाही हाथ के नजदीक होने की कमअक्ली की थी। "बोलो!" उन्होंने सबसे बुजुर्ग आलिम को हुक्म दिया, जो अपनी उस लम्बी दाढ़ी की वजह से मशहूर था, जिसे वह दो बार अपनी कमर में लपेट सकता था।

आलिम उठा, दुआ की और धीरे-धीरे बायें हाथ की उंगलियों में लेकर दाहिने हाथ में मशहूर दाढ़ी खींचने लगा। वह बोला : "रिआया की बहबूदी और खुशी के लिए परवरदिगार हमारे बादशाह सैयान के जमाने को दराज करे! चूंकि जिस बदकार बागी ख्वाजा नसरुद्दीन का अभी जिक्र हुआ है, वह इन्सान ही है, इसलिए यह नतीजा निकाला जा सकता है कि उसका जिस्म भी इन्सानों की तरह का ही बना हुआ है यानी उसके जिस्म में भी दो सौ चालीस हड्डियां और तीन सौ साठ मांसपेशियां हैं जो फेफड़े, जिगर दिल तिल्ली वगैरह पर काबू रखती हैं। जैसा कि आला हकीमों ने बताया है, बुनियादी पेशी दिल की होती है [illegible] सारी पेशियां निकलती हैं और यह [illegible] की बात है और इसलिये अब इस [illegible] के खिलाफ है जो यह कहे [illegible] कि इन्सान की जिन्दगी की बुनियाद फेफड़े की पेशी है।

"हकीम आला अबूअली सीना, यूनानी हकीम हिप्पो[illegible] परात और कातबे के अमूरात (इब्न [illegible]) के कौल के मुताबिक जिनकी खोजों का [illegible] आज भी फायदा उठाते हैं और अलीकिन्दी, अल फाराबी और पवराजी

की हिदायतों के मुताबिक मैं कहता हूं और ताईद करता हूं कि अल्लाह ने आदम को चार अनासिर—पानी, मिट्टी, आग और हवा—को मिलाकर बनाया और तरकीब यह रखी कि पीले पित्ते में आग की तासीर हो जो हम देखते भी हैं क्योंकि यह गर्म और खुश्क होता है; काली तिल्ली में मिट्टी की तासीर हो क्योंकि वह ठंडी और खुश्क होती है, थूक की तासीर पानी की होती है क्योंकि वह नम और ठण्डा होता है; और खून की तासीर हवा की होती है क्योंकि वह गर्म और नम होता है। अगर किसी इन्सान के जिस्म में से इनमें से एक भी रस निकाल दिया जाय तो वह आखिरकार मर जायगा। इससे, ऐ मेरे आका मैंने यह नतीजा निकाला है कि अमन में खलल डालने वाले इस नापाक ख्वाजा नसरुद्दीन को इसके खून से महरूम कर दिया जाय और बेहतर हो कि यह काम उसका सिर उसके जिस्म से जुदा करके किया जाय, क्योंकि जिस्म से बहने वाले खून के साथ इन्सान की जिन्दगी भी बह जाती है और फिर कभी वापस लौटकर नहीं आती। ऐ शाहशाह अजीम! ऐ जहांपनाह! मेरी

की भी जरूरत है और अगर किसी का गला रस्से से दबा दिया जाय और इस तरह हवा को उसके फेफड़ों तक पहुंचने से रोक दिया जाय तो वह शख्स मर जायगा और फिर उसे जिन्दा नहीं किया जा सकता..."

"अच्छा!" अमीर ने खतरे-भरी धीमी आवाज में कहा। "ऐ दानाओं में दाना हजरात! आप बजा फरमाते हैं और आपकी राय हमारे लिए बड़ी बेशकीमत है। वाकई, अगर आपने हमें यह बेशकीमत राय न दी होती तो हम ख्वाजा नसरुद्दीन से पीछा कैसे छुड़ा पाते?"

गुस्से और खफगी पर काबू पाने में मजबूर अमीर खामोश हो गये। उनके गाल फड़कने लगे, नथुने फूल उठे, आंखों से चिनगारियां बरसने लगीं। लेकिन दरबारी मुसाहबों, शायरों, चापलूसों और फलसफियों वगैरह, जो अमीर के पीछे आधे चांद की गोलाई में खड़े थे, अपने आका का चेहरा न दिखायी दिया और इसलिए उस गजबनाक तंज (व्यंग्य) को वे न भांप सके जो अमीर ने आलिमों के लिए इस्तेमाल किया था। उनके जुमलों को सच मानकर उन्होंने सोचा कि आलिमों ने वाकई अमीर की रजा व फैयाजी हासिल कर ली है और बखूबी काम अंजाम दिया है, इसलिए इन आलिमों की मेहरबानी फौरन हासिल करनी चाहिए ताकि उससे फायदा उठाया जा सके।

उन्होंने गाना शुरू किया : "ऐ दानाओं में दाना! हमारे शानदार शहंशाह के ताज की सजावट के मोती! ऐ दानाई में खुद दानाई को मात करने वाले दानिशमन्द! ऐ दानाओं के इल्म से रोशन दाना!"

इसी तरह के कसीदे कहते गये और उमग व शेरों की सफाई में एक-दूसरे को मात देते गये। उन्हें मालूम तक न हुआ कि अमीर घूमकर पीछे देख रहे थे और गुस्से से बल खाते हुए उन्हें घूर रहे थे। एक भयानक खामोशी छा गयी थी।

"ऐ हुस्न के तारो! अक्ल के खजानो!" इन्तशारी की उम्मीद में आंखें बन्द किये वे गाते रहे।

यकायक शायरे-आज़म को अमीर की निगाह दिखायी पड़ी और वह ऐसे चौंक पड़ा मानो छिपकली भरी आगी जुबान ही निगल गया हो। अपनी उमंग में ज्यादती की गलती महसूस करते हुए बाकी शायर भी उसके बाद चुप हो गये और डर के मारे कांपने लगे।

"जाहिलो! बदमाशो!!" गुस्से से अमीर चिल्लाये। "क्या तुम समझते हो कि हमें यह भी नहीं मालूम कि किसी छलिया का सिर काट लेने या उसकी नापाक उसका गला घोंट देने से वह जिन्दा नहीं बच सकता। लेकिन ऐसा करने के लिए उस आदमी को पकड़ लाना तो जरूरी है। और तुम बदमाशो, बेवकूफो, जाहिलो और काहिलो में एक शख्स भी इस काबिल नहीं बचा कि उसे पकड़ा कैसे जाय। यह जाहिर सभी वजीरों, अफसरों, शायरों को तब तक तनख्वाह नहीं मिलेगी, जब तक खोजा नसरुद्दीन का पता नहीं लगता। यह ऐलान जारी किया जाय कि उसे पकड़ने वाले को तीन हजार

तक घसीट लाये और वहां से सीढ़ियों पर धकेल दिया। सीढ़ियों के नीचे दूसरे सिपाही थे। उन्होंने दरबारियों को मारा-पीटा और लतियाकर खदेड़ दिया। दरबारी एक-दूसरे से पहले निकल जाने की हड़बड़ी में भागे। सफ़ेद बालों वाला आलिम अपनी दाढ़ी में उलझकर गिर पड़ा। दूसरा आलिम पहले वाले से टकराया, वह भी गिरा। उसका सिर गुलाब की क्यारी में लगा। गिरने की चोट से वह वहीं सुन्न पड़ गया। उसकी टेढ़ी गरदन से अब भी ऐसा लगता था कि वह किसी पतली दराज से ऊपर को घूर रहा है।

: ४ :

अमीर दिन भर गुस्से में भरे बैठे रहे। दूसरे दिन सवेरे भी ख़ौफ़ज़दा दरबारियों ने उनके चेहरे पर गुस्से की काली छाया देखी।

उनकी दिलबस्तगी और मनबहलाव की सारी कोशिशें बेकार गयीं। तबले लिये, इत्र की खुशबू के बादल उड़ातीं, पतली कमर लचकातीं, मोती से दांत चमकातीं और इत्तिफ़ाकन ही अपने उभरे हुए मलाई जैसे सीने दिखातीं रक्कासाएं अमीर को खुश करने की नाकाम कोशिश कर रही थीं। अमीर ने उनकी तरफ़ आंख उठाकर देखा भी नहीं। उनका चेहरा गुस्से से चढ़ा रहा जिससे दरबारियों को हौल-दिल होता रहा। दरबार के मसखरे कलाबाज़ों, जादूगरों और हिन्दुस्तानी फ़कीरों के, जो महुअर बजाकर सांपों को बस में करते थे, खेल-तमाशे बेकार साबित हुए।

दरबारी आपस में फुसफुसा रहे थे: "ओफ यह कमबख़्त ख़ोजा नसरुद्दीन! यह हरामज़ादा! हमारे ऊपर इसने कैसी-कैसी आफ़तें ढायी हैं!" और वे उम्मीद भरी निगाहों से अर्सलां बेग को ताकने लगे।

"मेरे पास उनका गम दूर करने का इलाज मौजूद है," सूदखोर ने फौरन जवाब दिया। "अमीरे बेग साहब! सुतूने-सल्तनत! दुश्मनों को पस्त करने वाले! मेरे काम में देर नहीं की जा सकती। जाकर अमीर से फरमायें कि मैं उनका गम दूर करने के लिए आया हूँ।"

अमीर ने उसे बुलाया तो, लेकिन नाराजगी से: "बोलो, जाफर! अगर तुम्हारी खबर से मेरे दिल को खुशी न हुई, तो तुम्हें दो सौ बेतों की सजा मिलेगी।"

सूदखोर ने कहना शुरू किया: "ऐ शाहशाहे अजीम! जिसकी चमक से सभी शाहों, सभी पहले के, आज के व आने वाले सुल्तानों की रोशनी फीकी पड़ जाती है। आपके इस नाचीज गुलाम को मालूम है कि हमारे इस शहर में एक ऐसी नाजनीन है जिसे

नाम लेने की भी मैं जुर्रत नहीं कर सकता कि कहीं मेरे शाहंशाह के कानों की बेइज्जती न हो जाय। मैं बता सकता हूं कि वह रहती कहां है। लेकिन अमीर के इस वफादार गुलाम को क्या कोई इनाम मिलेगा ?"

अमीर ने बख्तियार को इशारा किया। सूदखोर के पैरों के पास एक थैली आ गिरी। जाफर ने लालच भरी फुर्ती से उसे लपक लिया।

अमीर ने कहा : "अगर वह वैसी ही साबित हुई जैसी कि तुम तारीफ कर रहे हो, तो तुम को इतनी ही रकम और मिलेगी।"

सूदखोर जल्दी से बोला : "हमारे आका हजरत की फैयाजी की तारीफ हो। लेकिन हुजूर जरा जल्दी फरमाये क्योंकि मुझे मालूम है कि इस नाजुक हिरनी का पीछा किया जा रहा है।"

अमीर की भवें मिल गयीं। नाक के ऊपर गहरी सिलवटें पड़ गयीं। पूछा : "कौन कर रहा है पीछा ?

सूदखोर ने जवाब दिया : "खोजा नसरुद्दीन।"

"फिर खोजा नसरुद्दीन ? . . . इसमें भी खोजा नसरुद्दीन ? हर जगह खोजा नसरुद्दीन ? जब कि तुम . . . " इतना कहकर अमीर इस तेजी से वजीरों की तरफ मुड़े कि तख्त हिल उठा, "तुम लोग मामदौलत की बेइज्जती के सिवा कुछ नहीं करते। ऐ अर्सलां बेग ! तुम जाकर देखो। वह लड़की फौरन महल में आ जानी चाहिए। अगर तुम नाकामयाब हुए तो वापसी में तुम्हें जल्लाद मिलेगा।"

कुछ ही मिनटों में सिपाहियों का एक बड़ा दस्ता महल के फाटक से रवाना हुआ। उनके हथियार खड़क रहे थे। ढलते सूरज की रोशनी में चमक रही थीं। आगे-आगे अर्सलां बेग चल रहा था। जरबफ्त की खलअत पर, उसके ऊंचे ओहदे की पहचान के बतौर, सोने का तमगा लगा था। सिपाहियों के साथ-साथ भद्दनुमा ढंग से लंगड़ाता-घिसटता सूदखोर

पर अल्लाह का साया, इस खलकत के मरकज हमारे आका और मालिक, खुदा उनकी उम्र दराज करे अमीरे-आजम ने तुम्हारा नाचीज नाम याद करने की इज्जत तुम पर बख्शी है। उन्हें पता चला है कि तुम्हारे बागीचे में एक हसीन गुलाब खिला है। इस गुलाब से वह अपने महल को सजाना चाहते हैं। तुम्हारी बेटी कहां है?"

सफेद बालों से भरा बूढ़े का सिर हिला और उस की आंखों के सामने अंधेरा छा गया। सिपाही उसकी बेटी को मकान से खींचकर सहन में लाने लगे, तो उसकी चीख बूढ़े के कानों ने सुनी। उसकी टांगें लड़खड़ायीं। मुंह के बल जमीन पर गिर पड़ा। इसके आगे उसने न कुछ देखा, न सुना।

सार्जेंट मेंग ने सिपाहियों से कहा : "बेचारा, खुशी की इन्तहा से बेहोश हो गया है। इसे छोड़ दो। जब इसे होश आयेगा, महल आकर अमीर की मेहरबानियों का शुक्रिया अदा करेगा। चलो, वापस चलो।"

इस बीच ख्वाजा नसरुद्दीन पीछे की गलियों से चक्कर काटता हुआ सड़क के दूसरे सिरे पर आ पहुंचा। कुछ झाड़ियों के पीछे से उसे नमाज का फाटक, दो सिपाही और एक शख्स दिखायी पड़ रहे थे। यह तीसरा शख्स था सूदखोर जाफर और उसे ख्वाजा नसरुद्दीन ने पहचान लिया।

"अच्छा ! लंगड़े कुत्ते ! तू लाया है इन सिपाहियों को ! मुझे गिरफ्तार कराने के लिए !" असली मामला भांप न पाकर, ख्वाजा नसरुद्दीन सोचने लगा। "बहुत अच्छा ! खूब होशियारी से तलाशी ले। लेकिन तुझे खाली हाथ लौटना होगा।"

लेकिन सिपाही खाली हाथ नहीं लौटे। ख्वाजा नसरुद्दीन ने उन्हें फाटक से अपनी माशूका को ले जाते देखा। खौफ से उसका खून जम गया। गुलजान छूटने के लिए लड़ रही थी और इस कदर

फट-फटकर रो रही थी कि सुनने वालों का दिल दहल रहा था। लेकिन, सिपाही उसे कसकर पकड़े हुए थे और दासों की दोहरी कतार से घेरे हुए थे।

जून के गर्म महीने का दिन था; लेकिन ख्वाजा नसरुद्दीन के बदन में ठंडी लहर सी दौड़ गयी। जहां वह छिपा था, उधर से ही गुजरने के लिए सिपाही करीब आ रहे थे। उसके दिमाग पर पागलपन छा गया था। उसने एक बड़ा-सा खंजर म्यान से निकाला और जमीन से सटकर दुबक गया। अर्सला बेग अपना चमकता हुआ सोने का तमगा लटकाये उस गिरोह में आगे-आगे चल रहा था। खंजर उसकी दाढ़ी के नीचे उसकी मोटी गरदन में गहरा धंस गया होता, लेकिन तभी एकाएक एक भारी हाथ ख्वाजा नसरुद्दीन के कन्धे पर गिरा और उसे जमीन पर दबा दिया। ख्वाजा नसरुद्दीन चौंका। घूमकर हमला करने के लिए उसने हाथ उठाया, लेकिन बूढ़े लुहार का कालिख भरा चेहरा पहचानकर हाथ रोक लिया।

"चुपचाप लेटे रहो!" लुहार ने धीमे से कहा। "चुपचाप लेटे रहो। तुम पागल हो। वे तीन हैं और हथियारों से लैस हैं। तुम अकेले हो और निहत्थे हो। उस बेचारी की मदद तो तुम कर नहीं पाओगे, हां, खुद गिरफ्तार हो जाओगे। मैं तुमसे कहता हूं, चुपचाप लेटे रहो!"

जब तक सड़क के मोड़ पर गिरोह ओझल नहीं हो गया वह ख्वाजा नसरुद्दीन को दबाये रहा।

"तुमने मुझे रोका क्यों?" ख्वाजा नसरुद्दीन चिल्लाया। "बेहतर होता कि मैं मर गया होता!"

"शेर के मुकाबले हाथ उठाना या तलवार के मुकाबले मुक्का उठाना बेवकूफी का काम नहीं?" लुहार ने नरमी से जवाब दिया। "मैं बाजार से ही सिपाहियों का पीछा कर रहा था। तुम्हारी बेवकूफी रोकने के लिए मैं वक्त पर आ पहुंचा। मुझे अपने

लिए मरना नहीं है, बल्कि लड़ना और उसे बचाना है। यह ज्यादा मुश्किल है; लेकिन ज्यादा बेहतर भी है। गमगीन होकर सोच-विचार करने में वक्त जाया न करो। जाओ और काम में लगो। उनके पास तलवारें हैं, ढालें हैं, भाले हैं। लेकिन अल्लाह ने तुम्हें भी ताकतवर हथियार दिये हैं। तुम जहीन हो और चालबाज भी और इन दोनों में तुम्हारा कोई मुकाबला नहीं कर सकता।"

लुहार इस तरह बोला। उसकी बातें मर्दों जैसी और उस लोहे की तरह सख्त थीं, जिसे वह जिन्दगी भर ढालता रहा था। उसकी बातें सुनते-सुनते ख्वाजा नसरुद्दीन का डगमगाता हुआ दिल लोहे की तरह सख्त हो गया।

"शुक्रिया, लुहार भाई!" वह बोला। "इससे ज्यादा नाउम्मीदी की घड़ियां मेरी जिन्दगी में कभी नहीं आयीं। लेकिन नाउम्मीद हो जाना ठीक नहीं। मैं जाता हूं और जाने से पहले तुम्हें यकीन दिलाता हूं कि अपने हथियारों का ठीक इस्तेमाल करूंगा।"

झाड़ियों से निकलकर वह सड़क पर आया। तभी नजदीक के एक मकान से सूदखोर निकला। एक कुम्हार को कर्ज की याद दिलाने के लिए वह ठहर गया था, जिसके अदा करने की तारीख आने वाली थी। ख्वाजा नसरुद्दीन और उसका आमना-सामना हो गया। सूदखोर पीला पड़ गया। पीछे भागा, भड़ से दरवाजा बन्द किया और सांकल चढ़ा ली।

ख्वाजा नसरुद्दीन चिल्लाया: "होशियार! ए सांप के बच्चे जाफर! मैंने सब कुछ देख-सुन लिया है और मैं सब-कुछ जानता हूं।"

एक लमहे की खामोशी के बाद सूदखोर बोला: "ऐ मेरे दोस्त! चोरी न सियार को मिली और न बाज को। चोरी तो शेर के मुंह में पहुंच गयी।"

में था कि काफी रुपया इकट्ठा कर लूं जिससे आपको अच्छा सा दहेज दे सकूं।"

बूढ़ा रोता हुआ बोला : "मुझे दहेज की क्या परवाह ! क्या मैं अपनी बच्ची की मरजी के खिलाफ कोई काम करता ? अफसोस ! अब ये बातें बेवक्त और बेसूद हैं । वह चली गयी, खो गयी । अब तक वह हरम में जा चुकी होगी . . . हाय, लानत है ! तुफ है ! मैं खुद महल जाऊंगा । हां, मैं अमीर के पैरों पर गिर पड़ूंगा और रो-रोकर उससे भीख मांगूंगा । और, अगर उनका दिल पत्थर का बना न हुआ तो . . ."

वह उठकर डगमगाता हुआ फाटक की तरफ चल दिया ।

"ठहरिये !" ख्वाजा नसरुद्दीन बोला । "आप यह भूल जाते हैं कि अमीर और इंसानों की तरह नहीं होते । उनके दिल नहीं होता । उनसे इल्तजा करना बेकार है । उनसे तो सिर्फ छीना जा सकता है । और मैं, ख्वाजा नसरुद्दीन, अमीर से गुलजान को छीन लाऊंगा ।"

"वह बहुत ताकतवर है । उसके पास हजारों सिपाही, हजारों पहरेदार, हजारों जासूस हैं । तुम उसके खिलाफ कर क्या सकोगे ?"

"मैं क्या करूंगा यह मैं अभी नहीं सोच पाया हूं । लेकिन मैं जानता हूं कि अमीर गुलजान पर काबू नहीं पा सकेगा । आज नहीं, कल नहीं, परसों नहीं—वह कभी उसे अपना न सकेगा और कभी अपनी न बना सकेगा । इस बात में जरा भी शक नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे कि इसमें शक नहीं कि बुखारा से बगदाद तक मेरा नाम ख्वाजा नसरुद्दीन है । इसलिए ऐ बुजुर्गवार ! आप अपने आंसू पोंछें और मेरे कानों तक आपका रोना न पहुंचने पाये । आप मेरे सोचने में खलल न डालिए ।"

ख्वाजा नसरुद्दीन थोड़ी देर तक सोचता रहा। फिर बोला : "जरा बताइए बुजुर्गवार! आपने अपनी बीवी के पुराने कपड़े कहां रखे हैं। आपकी बेगम का इन्तकाल हो गया है। उनकी पोशाकें कहां हैं?"

"वहां, उस बक्स में।"

ख्वाजा नसरुद्दीन ने ताली ली और घर में घुस-कर गायब हो गया और थोड़ी ही देर बाद औरतों के लिबास में बाहर निकला। घोड़े के बालों से बुने नकाब में उसका चेहरा ढंका हुआ था।

"मेरा इन्तजार कीजियेगा बुजुर्गवार, और अकेले कोई काम करने की कोशिश न कीजियेगा।"

अनाज-गोदाम से उसने अपना गधा निकाला, उस पर जीन कसी और नियाज के घर से रवाना हो गया।

: ६ :

गुलजान को महल के बाग में ले जाकर अमीर के सामने पेश करने से पहले अर्सलां बेग ने हरम की बूढ़ी औरतों को बुलाया और उन्हें हुक्म दिया कि गुलजान को इस तरह खूबसूरती से सजाया जाय और ऐसी पोशाक पहिनायी जाय कि अमीर उसके मुकम्मल हुस्न के ख्याल में खुशी हासिल करें।

बूढ़ी औरतों ने फौरन अपना जाना-पहिचाना काम शुरू कर दिया। उन्होंने गर्म पानी से गुलजान का आंसू-भरा चेहरा धोया। उसे महीन भीने रेशम के कपड़े पहिनाये, सुर्मा लगाया, भवें काली कीं, गालों पर सुर्खी मली, बालों में गुलाब का इत्र डाला और नाखून लाल रंग से रंगे। तब उन्होंने हरम के असमत मआब ख्वाजा सरा को बुलाया। एक जमाने में यह शख्स अपनी बदकारियों के लिए सारे बुखारा में बद-नाम था। इस ऊंचे ओहदे पर उसके मुकर्रर किये [illegible] की वजह ऐसे मामलों में उसका तजरबा और

मालूमात थीं। दरबार के हकीम ने उसे इस काम के लिए तैयार किया था। उसका काम था अमीर की एक सौ साठ दाश्ताओं पर बराबर नजर रखना और उन्हें इतना हसीन बनाये रखना कि वे अमीर की हवस जगा सकें।

जैसे-जैसे साल गुजरते जाते, उसका काम मुश्किल होता जाता क्योंकि अमीर की हवस कम हो रही थी और उम्र चढ़ रही थी। कई बार ख्वाजा सरा का सरेर का इनाम एक दर्जन कोड़े हो चुका था। लेकिन, उसके लिए यह सजा मामूली थी। बड़ी सजा तो उसे तब मिलती जब वह हसीन दाश्ताओं को अमीर से मिलने के लिए तैयार करता था—क्योंकि तब उसे *बहुत ज्यादा तकलीफ होती थी, वैसी तकलीफ जैसी ऐयाशों को दोजख में होती है।* सभी जानते हैं कि दोजख में ऐयाशों को खम्भों से हमेशा के लिए बंधे रहना पड़ता है और उनके आसपास नंगी हूरों की जमात घूमा करती है।

ख्वाजा सरा ने गुलजान का हुस्न देखा तो चौंक पड़ा।

"वाकई यह खूबसूरत है!" पिपयाती हुई पतली आवाज में वह बोला। "इसे अमीर के पास ले जाओ। ले जाओ इसे यहां से। मेरी नजरों के सामने से जल्दी हटा लो इसे!"

और वह दीवाल से अपना सिर टकराता दांत किटकिटाता हुआ बिलखबिलखकर "हाय कम्बख्ती! ओफ नाउम्मीदी!" कहता हुआ जल्दी से वहां से टल गया।

बूढ़ी औरतों ने कहा: "यह नेक शुगुन है। इसका मतलब है कि हमारे आका खुश होंगे।"

खामोश और पीली पड़ी गुलजान महल के बागीचे में ले जायी गयी।

चांद अपने को नाचीज पा, शर्म से बादल के पीछे
छिप गया,
सारी चिड़ियां हो गयीं खामोश, हवा भी थम गयी,
हम खड़े थे, अजीमुश्शान, मग़रूर,
सूरज की तरह ताकतवर।"

सभी शायर घुटनों के बल गिरकर चिल्लाने लगे : "वाह वाह! क्या शायरी है। क्या अजमत है। वाह वाह! रूदकी को मात कर दिया!"

कुछ ने तो तारीफ करते-करते कालीन पर सिर रख दिया, मानो बेहोश हो गये हों।

रक्कासाएं आयीं। उनके पीछे मसखरे, बाजीगर, फकीर आये। और अमीर ने उन सबको फैयाजी से इनाम दिये।

वह बराबर कह रहे थे : "मेरा एक ग़म यह है कि सूरज पर मेरा हुक्म नहीं, वर्ना मैं आज उससे जल्दी गुरूब (अस्त) होने को कहता।"

और दरबारी इस मजाक पर फर्ज की हंसी हंसते रहे।

: ७ :

बाजार में खूब चहल-पहल थी। खरीद-फरोख्त का यह सबसे अहम वक्त था। जैसे-जैसे सूरज आसमान पर चढ़ता जाता, खरीद, बिक्री और तबादले का व्यापार बढ़ता जाता। गर्मी की वजह से लोग छप्परदार कतारों की घनी, महकती छांह में जा रहे थे। नरकुल के छप्परों के बीच सूराखों से सूरज की चमकीली किरणें छनतीं और ऐसा लगता कि धुएंदार चमकीले खम्भे गड़े हैं। अपनी हल्की चमक में जामफत चमचमाती, चिकना रेशम चमकता और मखमल से जैसे कोई हलकी रोशनी छिपकर उसे रोशनी करती। हर तरफ साफे, खलअतें और रंगी हुई दाढ़ियां चमकतीं। पालिशदार ताबा

कौंधता-सा लगता और यह कौंध सर्राफों के चमड़े के कालीनों पर पड़े असली सोने की दमक के सामने फीकी पड़ जाती।

ख़्वाजा नसरुद्दीन ने उसी चायख़ाने के सामने गधा रोका जिसकी बरसाती में खड़े होकर महीने भर पहले उसने बुख़ारा के बाशिन्दों से नयाज़ कुम्हार को अमीर से बचाने के लिए मदद की अपील की थी। इसी थोड़े अर्से में ख़्वाजा नसरुद्दीन ने इस ख़ुशमिज़ाज, तुंदैल, सीधे और भरोसेलायक ईमानदार अली से गहरी दोस्ती कर ली थी।

ठीक मौक़ा तलाशकर ख़्वाजा नसरुद्दीन ने पुकारा :

"अली!"

चायख़ाने के मालिक ने चारों तरफ़ देखा। वह चकराया हुआ था। उसे पुकारा था मरदानी आवाज़ में, लेकिन दिखायी दे रही थी एक औरत।

अपनी नक़ाब हटाये बिना ख़्वाजा नसरुद्दीन बोला : "मैं हूं, अली। तुम मुझे पहचान रहे हो न! अल्लाह के वास्ते, इस तरह घूरो मत। क्या तुम जासूसों की मौजूदगी भूल गये हो!"

चारों तरफ़ होशियारी से नज़र दौड़ाकर अली उसे पिछवाड़े के एक कमरे में ले गया, जहां वह ईंधन और फ़ालतू केतलियां व बरतन इकट्ठे करता था। यहां ठंडक और सीलन थी और बाज़ार का शोरगुल बहुत हल्का-हल्का सुनायी पड़ता था।

ख़्वाजा नसरुद्दीन ने कहा : "अली! मेरा गधा ले लो। इसे खिलाओ-पिलाओ और तैयार रखो, क्योंकि किसी वक़्त भी मुझे इसकी ज़रूरत पड़ सकती है। किसी से भी एक लफ़्ज़ मेरे बारे में न बताना।"

"लेकिन ख़्वाजा नसरुद्दीन, तुम औरतों की पोशाक में क्यों हो?" बहुत होशियारी से दरवाज़ा बन्द करते हुए अली ने पूछा।

"मैं महल को जा रहा हूं।"

"पागल हो गये हो क्या?" चायखाने का मालिक चिल्लाया। "अपना सिर शेर के मुंह में देने जा रहे हो!"

"अली, यह तो करना ही होगा। तुम्हें जल्द ही पता लग जायगा कि यह क्यों जरूरी है। मैं बहुत खतरनाक मुहिम पर जा रहा हूं। आओ हम तुम गले मिल लें क्योंकि अगर मैं..."

वे एक-दूसरे से गले मिले। चायखाने के मालिक के आंसू आ गये और उसके गोल, लाल-लाल गालों पर ढुलकने लगे। उसने खोजा नसरुद्दीन को विदा किया। फिर लम्बी सांसों को रोकता हुआ—जिनकी वजह से उसकी तोंद ऊपर नीचे हिलती थी—वह अपने गाहकों के पास चला गया।

उसका दिल भारी था और डर से वह परेशान था। वह खोया-खोया सा और उदास था। उसके गाहकों को अपनी प्यास की याद दिलाने के लिए केतली के ढक्कन को दुबारा, तिबारा बजाना पड़ता था। उसकी रूह अपने बेधड़क दोस्त के साथ महल में थी।

पहरेदारों ने खोजा नसरुद्दीन को रोका। होशियारी से अपनी आवाज छिपा व औरतों की आवाज में बोलता हुआ, खोजा नसरुद्दीन बार-बार कहता :

"मैं बहुत बुढ़िया, बहुत लासानी अम्बर, मुश्क गुलाब का इत्र लायी हूं। मुझे हरम में जाने दो न बहादुर सिपाहियो। मैं माल बेचने के बाद मुनाफे में तुम्हें भी हिस्सा दूंगी।"

"भाग बुढ़िया! जा और बाजार में अपना माल बेच!" पहरेदारों ने भारी आवाज में उसे जवाब दिया।

अपने मकसद में इस तरह नाकामयाब हो, खोजा नसरुद्दीन बहुत गमगीन और संजीदा हो गया। उसके पास वक्त कम था, क्योंकि सूरज दोपहर के बाद ढलने लगा था। उसने महल की चहारदीवारी के चारों तरफ चक्कर लगाया। चीनी-चूने से दीवार के पत्थर इस

"तुम कहती हो कि तुम्हारे खाविंद ने तुमसे मुहब्बत करना छोड़ दिया है और तुम्हारे साथ सोता तक नहीं? तुम्हारी इस मुसीबत का एक इलाज है। लेकिन उसके लिए मुझे ख्वोजा नसरुद्दीन से मशविरा करना पड़ेगा। इसमें शक नहीं कि तुमने सुना होगा कि ख्वोजा नसरुद्दीन यहीं है? तुम पता लगाओ कि वह कहां है और मुझे खबर दो। हम और वह मिलकर तुम्हारे खाविंद को तुम्हारे पास वापस ले आयेंगे।"

ख्वोजा नसरुद्दीन और नजदीक पहुंचा तो उसे नजूमी जासूस का चेचकरू चेहरा दिखायी दिया। चांदी का एक सिक्का लिये एक औरत उसके सामने खड़ी थी। नजूमी नमदे पर मनके फैलाये एक बहुत पुरानी किताब के पन्ने पलट रहा था।

"लेकिन, अगर तू ख्वोजा नसरुद्दीन की तलाश करने में कामयाब न हुई," वह कह रहा था, "तो ऐ औरत! तुझ पर लानत बरसेगी, क्योंकि तेरा शौहर तुझे हमेशा के लिए छोड़ देगा।"

ख्वोजा नसरुद्दीन ने तय कर लिया कि इस नजूमी को थोड़ा सबक सिखाना बुरा न होगा। वह नमदे के सामने बैठ गया।

"दूसरों की तकदीर देखने वाले ऐ दानिशमंद! मुझे मेरा मुकद्दर बताओ।"

जासूस ने मनके बिखेर दिये। फिर एकाएक बोला, मानो एकदम खौफजदा हो गया हो, "ऐ है! तुझ पर खुदा की मार है औरत! मौत अपना काला हाथ तेरे सिर पर उठा चुकी है!"

आसपास खड़े कई तमाशबीन नजदीक आ गये।

"हां, मौत का वार बचाने में मैं तेरी मदद कर सकता हूं," वह बोला, "लेकिन यह काम अकेले नहीं हो सकता। मुझे ख्वोजा नसरुद्दीन से मशविरा करना होगा। तू अगर उसकी तलाश करे और मुझे बता सके कि वह कहां है, तो तेरी जान बच जायेगी।"

"अच्छी बात है। मैं ख्वाजा नसरुद्दीन को तुम्हारे पास ले आऊंगी।"

खुशी से चौंकते हुए वह चिल्ला उठा : "तू उसे मेरे पास ले आयेगी? कब?"

"मैं उसे अभी ला सकती हूं। फौरन। बहुत नजदीक है वह।"

"कहां, कहां?"

"यहीं, एकदम नजदीक।"

"लेकिन कहां, मैं तो उसे देख नहीं रहा!"

"और तुम अपने को नजूमी कहते हो? क्या तुम हिसाब नहीं लगा सकते? सोच नहीं सकते? लो, यह रहा वह।"

नजूमी के सामने बैठी औरत ने झटके से नकाब उतार दिया। ख्वाजा नसरुद्दीन का चेहरा देखते ही नजूमी घबराकर पीछे हट गया।

ख्वाजा नसरुद्दीन ने फिर दोहराया .

"यह रहा वह। बोल, मुझसे किस बारे में मशविरा करना चाहता था? तू झूठा है। तू नजूमी नहीं। तू अमीर के जासूसों में से एक है। ऐ मुसलमानो! इसका यकीन न करो! यह शख्स तुम लोगों को धोखा दे रहा है। यहां बैठा हुआ यह सिर्फ ख्वाजा नसरुद्दीन का पता लगाने की कोशिश कर रहा है।"

जासूस ने इधर-उधर निगाहें दौड़ायीं, लेकिन कोई सिपाही नजर नहीं आया। नाउम्मीदी से रोआंसा होकर वह ख्वाजा नसरुद्दीन को जाते देखता रहा। उधर आसपास खड़ी भीड़ गुस्से से भर उठी और पास सिमट आयी। हर तरफ से आवाजें उठने लगीं : "जासूस! जासूस! अमीर का जासूस! गन्दा कुत्ता!!"

नजूमी उठा और अपना सामान समेटने लगा। उसके हाथ कांप रहे थे। फिर, वह जितनी तेजी से दौड़ सकता था, दौड़ता हुआ महल की तरफ भाग गया।

मरे, धुंआ भरे, बदबूदार, गन्दे सिपाही-घर में
रेदार एक घिसे हुए नमदे पर बैठे थे जो पिस्सुओं
अखाड़ा बना हुआ था। अपने जिस्मों को खुजलाते
वे खोजा नसरुद्दीन को पकड़ने के इमकानों पर
विचार कर रहे थे।

"तीन हजार तके!" वे कह रहे थे। "जरा सोचो तो!
न हजार तके और जासूस-खास का ओहदा!"

"कोई न कोई तो किस्मतवर होगा ही।"

"काश, मैं ही वह 'कोई' होता!" एक मोटा काहिल
रेदार बोला। यह पहरेदार सबसे ज्यादा बेवकूफ
। बरखास्तगी से वह सिर्फ इसीलिए बच
पा था कि उसने बिना छिलका उतारे, पूरे
च्चे अंडे निगल जाने का हुनर सीख लिया था।
कसर यह हुनर दिखाकर वह अमीर का मन बहलाया
रता था और उनसे बख्शीश पा जाता था—हालांकि,
द में उसे सख्त मिचली के दर्द का शिकार होना
ड़ता था।

चकर जासूस तूफान की तरह सिपाही-घर में घुसा।

"खोजा नसरुद्दीन! खोजा नसरुद्दीन! यहीं है!
ाजार में है! बाजार में! औरत की पोशाक पहने है!
हीं है यहीं! बाजार में!"

सिपाही फाटक की तरफ लपके और रास्ते में अपने
थियार उठाते हुए बाहर निकल गये। वे कहते जा
रहे थे :

"इनाम मेरा है! सुन रहे हो
देगा। इनाम मुझे मिलना

सिपाहियों को देखते ही
इस हड़बड़ी में
गयी।

औरत को पकड़ा और उसका नकाब फाड़ डाला। औरत का चेहरा भीड़ में खुल गया।

औरत जोर से चीखी। दूसरी तरफ से एक और चीख सुनायी दी। फिर एक तीसरी औरत की चीख सुनायी पड़ी जो सिपाहियों से जूझ रही थी। और तब चौथी... पांचवीं...! पूरा बाजार औरतों की चीखों, सुबकियों, रोने-चिल्लाने की आवाजों से भर उठा।

हक्की-बक्की भीड़ चुपचाप खड़ी देखती रह गयी। पुरबारा में पहले कभी ऐसी बहशियाना हरकत देखी-सुनी नहीं गयी थी। कुछ लोग तो डर से पीछे हट गये। कुछ गुस्से से लाल हो उठे। हरेक के दिल में खलबला था। सिपाही औरतें पकड़ने, उन्हें इधर-उधर धकेलने, मारने-पीटने और उनके कपड़े फाड़ने की जालिम हरकतें करते रहे।

"बचाओ! बचाओ!!" औरतें चिल्ला रही थीं।

यूसुफ लुहार ने भीड़ पर काबू पाकर ऊंची आवाज में कहा :

"मुसलमानो! तुम झिझक क्यों रहे हो? क्या यही काफी नहीं कि सिपाही हमें लूटते रहें। क्या दिन दहाड़े अब हम अपनी औरतों की बेइज्जती भी बर्दाश्त करें!"

"बचाओ! बचाओ!!" औरतें चिल्लाती रहीं।

अब तो भीड़ में गुर्राहट सुनायी पड़ने लगी। एक बेचैनी-सी भर गयी। एक मिस्त्री ने अपनी बीवी की आवाज पहिचानी। उसे बचाने दौड़ा। सिपाहियों ने उसको धकेल दिया। लेकिन दो जुलाहे और तीन तांगा-वाले उसकी मदद के लिए दौड़ पड़े और सिपाहियों को खदेड़ दिया। झगड़ा छिड़ गया।

धीरे-धीरे हर आदमी इसमें शामिल हो गया। इधर सिपाही तलवारें भांज रहे थे, उधर हर तरफ से उन पर बरतनों, ईंटों, पत्थरों, डंडों, लकड़ी के टुकड़ों और लातों की मार हो रही थी। बेचारे इस हमले से बच नहीं पा रहे थे। लड़ाई पूरे बाजार में फैल गयी।

अमीर सुकून के साथ महल में ऊंघ रहे थे। यकायक वह उछले और खिड़की की तरफ दौड़े। उसे खोला। फिर खौफजदा हो फटाक से उसे बन्द कर दिया।

बख्तियार दौड़ता हुआ आया। वह पीला पड़ रहा था। उसके होंठ कांप रहे थे।

अमीर ने मिनमिनाकर पूछा : "क्या है ? क्या हो रहा है यहां ? तोपें कहां हैं ? अर्सलां बेग कहां है ?"

अर्सलां बेग दौड़ता हुआ आया और मुंह के बल गिर पड़ा। "आका। ऐ मेरे आका। मेरा सिर धड़ से जुदा करने का हुक्म दें।"

"क्या है ? क्या है यह ! हुआ क्या ?"

जमीन से बिना उठे ही अर्सलां बेग ने जवाब दिया : "ऐ सूरज के मानिन्द आका। ऐ मेरे..."

गुस्से में भरे अमीर बेताबी से पैर पटककर बोले : "खामोश ! यह 'ऐ मेरे, ऐ मेरे...' तू फिर कर लेना। बता कि वहां हो क्या रहा है... !"

"ख्वाजा नसरुद्दीन ! ऐ मेरे आका, ख्वाजा नसरुद्दीन !!...वह औरत का भेस रखकर आया है। सारी बदनामी उसी की है। यह सब उसी की वजह से है ! मेरा सिर कलम करवा दीजिए।"

लेकिन अमीर की दूसरी परेशानियां थीं।

: ९ :

उस दिन ख्वाजा नसरुद्दीन अपने वक्त की, मिनट-मिनट की, परवाह कर रहा था। बाजार में चहलकदमी में वक्त खराब करना उसने ठीक न समझा। सो एक सिपाही का जबड़ा, दूसरे के दांत और तीसरे की नाक तोड़ता हुआ वह भरोसेमन्द अली के चायखाने में जा पहुंचा। वहां, पीछे वाले कमरे में उसने औरतों का लिबास उतारा। रंगीन मखमली साफा और नकली दाढ़ी पहनी और इस तरह भेस

बदलकर एक ऊंची जगह पर बैठ गया और लड़ाई के मैदान का नज़ारा देखने लगा।

हर तरफ से भीड़ में घिरे और भीड़ के हमले से हर तरह दबे सिपाहियों ने डटकर मुकाबला करना शुरू किया। ख़ोजा नसरुद्दीन के कदमों के पास ही एक गुत्थमगुत्थी हो रही थी। एक सिपाही के ऊपर अपनी चाय उंडेलने के लालच को वह न रोक सका और यह काम उसने इतनी होशियारी से किया कि उबलती चाय अंडे निगलनेवाले सिपाही की गर्दन पर ही गिरी। ज़ोर से चिल्लाकर सिपाही पीठ के बल गिर पड़ा और हाथ-पैर हवा में फेंकने लगा। उसकी तरफ देखने तक की परवाह किये बग़ैर ख़ोजा नसरुद्दीन अपने ख़यालों में मशगूल हो गया। यकायक उसे एक मुड़ी, कांपती हुई, आवाज सुनायी दी।

"मुझे जाने दो! मुझे आगे बढ़ने दो! अल्लाह के नाम पर! यहां हो क्या रहा है?"

चायख़ाने के पास ही, लड़ाई के बीचोबीच, झुकी पतली नाक और सफ़ेद दाढ़ीवाला एक शख़्स ऊंट पर बैठा दिखायी दिया। शक्ल से वह अरब लगता था। उसकी पगड़ी का शमला टंका हुआ था, जिससे साबित था कि वह शख़्स आलिम है। डर के मारे वह ऊंट के कूबड़ से चिपका हुआ था। उसके चारों तरफ मारपीट जारी थी। एक शख़्स उसका पैर पकड़कर उसे ऊंट से उतारने की कोशिश कर रहा था। बूढ़ा बुरी तरह छटपटा रहा था। चीख़-पुकार और शोर-गुल से कान के पर्दे फटे जा रहे थे।

हिफ़ाज़त की जगह पहुंचने की जी-तोड़ कोशिश के बाद बूढ़ा चायख़ाने तक पहुंचने में कामयाब हुआ। पीछे मुड़-मुड़कर देखते हुए और लड़खड़ाते हुए उसने अपना ऊंट ख़ोजा नसरुद्दीन के गधे के पास बांध दिया और बरसाती में चढ़ आया।

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानुर्रहीम । इस शहर में हो क्या रहा है ?"

"बाजार !" ख्वाजा नसरुद्दीन ने मुख्तसर-सा जवाब दिया ।

"क्या बुखारा में हमेशा ऐसा ही बाजार लगता है ? इस भीड़ में होकर मैं महल तक कैसे पहुंच सकता हूं ?"

'महल' लफ्ज सुनते ही ख्वाजा नसरुद्दीन समझ गया कि बस इस बुजुर्ग शख्स की मुलाकात में ही वह मौका छिपा हुआ है, जिसका इतनी देर से वह इन्तजार कर रहा था और जिससे वह अमीर के हरम में घुसकर गुलजान को बचा ला सकता है ।

लेकिन, जैसा सभी जानते हैं, जल्दबाजी शैतान का काम होता है । शीराज के सबसे बड़े आलिम शेख सादी ने कहीं कहा है : "सब्र से ही काम बनता है, बेसब्री से नाकामी ।" इसलिए ख्वाजा नसरुद्दीन ने बेताबी का कालीन लपेट लिया और उसे उम्मीद के बक्स में बन्द कर दिया ।

बुजुर्ग कराहे और लम्बी सांसें लेकर बोला : "ऐ पाक परवरदिगार ! मोमिनों के सहारे ! मैं महल तक पहुंचूंगा कैसे ?"

"कल तक इन्तजार कीजिए ।" ख्वाजा नसरुद्दीन बोला ।

"मैं ठहर नहीं सकता ।" बुजुर्ग जोर से बोले । "महल में मेरा इन्तजार हो रहा है ।"

ख्वाजा नसरुद्दीन जोर से हंसकर बोला : "ऐ बाइज्जत, आला-हजरत शेख ! मैं न आपका काम जानता हूं न पेशा । लेकिन क्या आपको यकीन है कि महल में लोग कल तक आपका इन्तजार नहीं कर सकते ? बुखारा में बहुत से लोग महल में दाखिल होने के लिए हफ्तों इन्तजार करते हैं । आप यह

क्यों समझते हैं कि आपके लिए इस तरीके में फर्क किया जायगा।"

ख्वाजा नसरुद्दीन की बात से तपकर, तेवर चढ़ाकर, बुजुर्ग बोला : "तुम्हें मालूम होना चाहिए कि मैं बहुत मशहूर आलिम, नजूमी और हकीम हूं। अमीर की दावत पर मैं बगदाद से आया हूं—सल्तनत का काम चलाने में उनकी मदद करने और उनकी खिदमत करने।"

बहुत इज्जत दिखाते हुए, झुककर अदब से ख्वाजा नसरुद्दीन बोला : "ओह! खुशामदीद, ऐ आलिम शेख! एक बार मैं बगदाद गया था और वहां के आलिमों को जानता हूं। आपका इस्मे-गरामी (शुभ नाम)?"

"अगर तुम कभी बगदाद गये हो तो तुम्हें मेरी वे खिदमतें जरूर मालूम होंगी जो मैंने वहां के खलीफा के लिए अंजाम दी थीं। मैंने उनके प्यारे बेटे की जान बचायी थी और इस बात का सारे मुल्क में ऐलान भी किया गया था। मेरा नाम मौलाना हुसैन है!"

"मौलाना हुसैन?" ताज्जुब भरे लहजे में ख्वाजा नसरुद्दीन बोला। "क्या आप खुद मौलाना हुसैन हैं?"

अपने वतन बगदाद से बाहर इतनी दूर तक अपनी शोहरत फैली देखकर तस्कीन और खुशी की मुस्कान छिपाने में नाकामयाब बुजुर्ग बोला : "तुम्हें ताज्जुब क्यों होता है? हां, दानाई में सासानी, इलाज करने और सितारों को पढ़ने के हुनर में माहिर, मशहूर आलिम मौलाना हुसैन मैं ही हूं। लेकिन मुझे गुरूर और घमंड छू तक नहीं गया। देखो मैं तुम जैसे नाचीज इंसान से भी कितनी मिलनसारी से बातें कर रहा हूं।"

बुजुर्ग ने हाथ बढ़ाकर मसनद उठायी और उस पर

कोहनी टेक ली । वह अपने इस साथी को अपनी दानाई का हवाला देने की तैयारी कर रहे थे । उन्हें पूरी उम्मीद थी कि दोनों में यह खास मशहूर आलिम मौलाना हुसैन से अपनी मुलाकात का ज़िक्र हरेक से करेगा और अपने मुल्क के लोगों में इस आलिम के लिए इज्जत का जज़्बा पैदा करने के लिए हर बात बढ़ा-चढ़ाकर कहेगा । इसी तरह का बरताव तो वे लोग करते हैं, जिनकी बड़े आदमियों से मुलाकात होती है ।

मौलाना हुसैन सोच रहे थे 'इस बार लोगों में मेरी शोहरत बढ़ाने में यह खास मदद देगा । शोहरत नफ़रत करने की चीज़ तो है नहीं । आम लोगों में होनेवाला चर्चा मुरीदों और ज़ायरों के ज़रिए अमीर के कानों तक पहुंचेगा और मेरी दानाई का सिक्का जम जायेगा । बाहर हुई ताईद बेशक सबसे बेहतर ताईद होती है और इस तरह आखिर में मेरा ही फायदा होगा ।'

अपने साथी पर अपने इल्म का सिक्का जमाने के लिए बुज़ुर्ग ने पुराने आलिमों के बहुत सारे जुमले दोहराये और सितारों के कोरान (योग) और उनके असली रिश्ते बताने शुरू किये ।

ख्वाजा नसरुद्दीन बहुत गौर से सुनता रहा और लफ्ज याद करने की कोशिश करता रहा । आखिर वह बोला "नहीं। मुझे अब भी यकीन नहीं आ रहा । आप क्या सचमुच ही मौलाना हुसैन हैं ?"

बुज़ुर्ग बोले 'हां, हां बेशक । इसमें ताज्जुब क्या है?'

ख्वाजा नसरुद्दीन मानो सोच में पड़ गया । वह चुप रहा । फिर यकायक डर और तरस भरी आवाज़ में बोला "ऐ बदनसीब। अब तुम बरबाद हुए !"

बुज़ुर्ग के हाथ से चाय का गिलास छूट पड़ा और उनका गला फंस गया । सारी शेखी और अहमियत गायब हो गयी ।

"कैसे? क्यों? क्या बात हुई?" उसने परेशानी से पूछा।

बाजार की तरफ इशारा करते हुए, जहां मारपीट अब भी पूरी तरह खत्म नहीं हुई थी, ख्वाजा नसरुद्दीन ने कहा :

"क्या आपको मालूम नहीं कि यह सारी गड़बड़ी आप की वजह से हो रही है? हमारे अमीर के कानों तक यह बात पहुंच गयी है कि बगदाद से रवाना होने से पेश्तर आपने खुले आम यह ऐलान किया था कि आप अमीर के हरम में पहुंच जायेंगे और उनकी बेगमों को फंसा लेंगे। लानत है आप पर, मौलाना हुसैन साहब!"

बूढ़े का मुंह खुला का खुला रह गया। उसकी आंखें फटी-सी गयीं। डर के मारे उसे हिचकियां आने लगीं। हकलाकर बोला : "मैं . . . ? . . . मैं . . . हरम में? मैं . . . ?"

"आपने काबे की कसम खायी थी कि ऐसा करेंगे। यही तो आज नकीब ऐलान करते रहे थे। अमीर ने हुक्म जारी किया है कि जैसे ही आप बुखारा की सरजमीन पर कदम रखें आपको पकड़ लिया जाय और फौरन आपका सिर कलम कर दिया जाय।"

बूढ़ा घबड़ाकर कराहने लगा। वह सोच नहीं पा रहा था कि उसकी बरबादी की यह चाल किस दुश्मन ने चली थी। उसे इस किस्से की सच्चाई पर शुबहा तक नहीं था। खुद उसने कई बार दरबार की साजिशों में अपने दुश्मनों को खत्म करने के लिए ऐसे ही तरीकों पर अमल किया था और अपने दुश्मनों को सूली पर चढ़ते वक्त बहुत इतमीनान और चैन की सांस ली थी।

ख्वाजा नसरुद्दीन कहता गया : "इसलिए जासूसों ने आज अमीर को खबर दी कि आप बगदाद से आये हैं। उन्होंने हुक्म दिया कि आपको गिरफ्तार कर

लिया जाय। सिपाही दौड़कर बाजार आये और हर जगह आपको तलाश करने लगे। दुकानों के पीछे भी उन्होंने आपको ढूंढा। खरीद-फरोख्त बन्द हो गयी। अमन में खलल पड़ गया। सिपाहियों ने गलती से एक शख्स को पकड़ लिया जिसकी शक्ल-सूरत आपसे मिलती-जुलती थी और जल्दी में उसका सिर धड़ से जुदा कर दिया। लेकिन वह शख्स था एक मुल्ला जो अपनी पाकीज़गी और काबलियत के लिए मशहूर था। सो उसकी मसजिद के लोग नाराज हो गये। अब देखिए कि यह जो कुछ हो रहा है, सब आपकी बदौलत।"

खौफ और नाउम्मीदी से बूढ़ा कहने लगा "तुफ है। लानत है मुझ पर।" इसी तरह वह रोता, चिल्लाता कराहता रहा और यह साबित करता रहा कि ख्वाजा नसरुद्दीन की चाल काम कर गयी।

इस बीच लड़ाई महल के फाटकों की तरफ बढ़ चुकी थी। बुरी तरह पिटे और घायल सिपाही महल में घुस रहे थे। अब तक उनके हथियार छिन चुके थे। बाजार में भी शोरगुल और बेचैनी थी। पर अब मामला ठंडा पड़ रहा था।

"मुझे बगदाद लौट जाना चाहिए।" आलिम रो रहा था। "मैं बगदाद लौट जाऊंगा।"

"आप शहर के फाटक पर धर लिये जायेंगे!" ख्वाजा नसरुद्दीन ने आलिम को खबरदार किया।

"हाय कम्बख्ती। यह कहर मुझ पर क्यों गिरा। अल्लाह जानता है कि मैं बेकसूर हूं। ऐसी गुस्ताख और नापाक कसम मैंने कभी खायी ही नहीं थी। मेरे दुश्मनों ने मुझे अमीर के सामने बदनाम किया। ऐ मेहरबान मुसलमान! मेरी मदद कर।"

ख्वाजा नसरुद्दीन तो इस बात के इन्तजार में था ही। खुद मदद करने की तजवीज पेश करके वह आलिम में शुबहा की गुंजाइश नहीं पैदा करना चाहता था।

"मदद करूं?" ख्वाजा नसरुद्दीन बोला। "मैं कैसे मदद कर सकता हूं? मुझे तो चाहिए कि अपने आका का वफादार और सच्चा गुलाम होने के नाते आपको पकड़कर फौरन सिपाहियों के हवाले कर दूं ताकि मुझ पर आपके साथ सांठ-गांठ करने का इल्जाम न लगे।"

हिचकियां भरते और कांपते हुए आलिम ने ख्वाजा नसरुद्दीन की तरफ आजिजी से देखा।

बूढ़े को तस्कीन दिलाने के लिए ख्वाजा नसरुद्दीन ने जल्दी से कहा : "तब भी, आप कहते हैं कि आप बेगुनाह हैं और लोगों ने झूठी अफवाह उड़ाई है। मुझे आपकी बात पर यकीन आ रहा है, क्योंकि मैं सोचता हूं कि इस बुजुर्गी में भला आपका हरम से क्या सरोकार !"

"बिल्कुल सही बात है," बूढ़ा जल्दी से बोला, "लेकिन मेरे लिए नजात का रास्ता क्या है?"

"है। जरूर एक रास्ता है।" ख्वाजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया। वह बूढ़े को पीछे वाले अंधेरे कमरे में ले गया और औरतों की पोशाक का बंडल देकर बोला :

"मैंने अपनी बीवी के लिए आज ही ये कपड़े खरीदे थे। अगर आप चाहें तो आपकी पोशाक और साफे से मैं इन्हें बदल सकता हूं। औरत का नकाब डालकर आप सिपाहियों और जासूसों से बच सकते हैं।"

अहसानमंदी और खुशी से बूढ़े ने ये कपड़े पहन लिए। ख्वाजा नसरुद्दीन ने उसकी पोशाक पहनी, चमकी टंका साफा सिर पर रखा, सितारे जड़ा चौड़ा पटका कमर में बांधा। फिर, बूढ़े को ऊंट पर बैठाते हुए बोला : "खुदा हाफिज! ऐ आलिम, औरतों की तरह ऊंची पतली आवाज में बोलना न भूलना।"

बूढ़ा अपनी सवारी पर भाग निकला।

ख्वाजा नसरुद्दीन की आंखें चमकने लगीं। महल ... उसके लिए साफ था।

संजीदा अमीर को जब एक बार तस्कीन हो गयी और उन्होंने अपने को यकीन दिला लिया कि बाजा की जग छूटी पड़ गयी है, तो उन्होंने दरबारे-आम आकर मुसाहिबों से मिलना तय किया। अपने चेहरे पर वह ऐसा भाव लाने की कोशिश कर रहे थे जिससे सुकून और साथ ही कुछ तकलीफ भी जाहिर हो और जिससे दरबारियों को यह सोचने की मजाल न हो कि शाही दिल में खौफ भी आ सकता है।

जैसे ही अमीर पहुंचे, सभी दरबारी खामोश हो गये। उन्हें डर था कि उनकी आंखों या चेहरों से कहीं यह बात जाहिर न हो जाय कि वे अमीर के जज्बों की सही हालत जानते हैं।

अमीर खामोश थे। दरबारी भी खामोश थे। आखिर कार, यह डरावनी खामोशी खुद अमीर ने खत्म की और कहा : "तुम लोगों को हमसे क्या कहना है? तुम्हारी क्या सलाह है? यह पहला मौका नहीं, जब हम तुमसे ये सवाल कर रहे हैं।"

किसी ने जवाब नहीं दिया, सिर भी नहीं उठाया। यकायक बिजली की तरह आयी एक ऐंठन से अमीर का चेहरा बिगड़ गया। इस वक्त कितने ही सिर जल्लाद के काठ पर रखे होते। चापलूसी करने वाली कितनी ही जुबानें हमेशा के लिए खामोश हो चुकी होतीं—फूली और पूरी न होने वाली उम्मीदें, हवसों और कोशिशों, धोखे की रियासतों की उनकी जिन्दगी की याद दिलाने वाली जुबानें—जो सफेद पड़े होंठों से मौत की तकलीफ में बाहर निकल आयी होतीं! लेकिन कंधों पर सिर बदस्तूर कायम रहे और फौरन चापलूसी करने के लिए जुबानें तैयार रहीं, क्योंकि उसी वक्त महल के गुमाश्ते ने आकर इत्तिला दी : "अलहम-दौलिल्लाह! सलतनत के मरकज की खुदा खैर करे। एक

अजनबी महल के फाटक पर आया हुआ है और अपने को बगदाद का आलिम मौलाना हुसैन बताता है। वह कहता है कि उसे बहुत जरूरी काम है और जहांपनाह की रौशन नजर के सामने उसे फौरन पेश किया जाय।"

उतावली में अमीर चिल्ला पड़े : "मौलाना हुसैन! उन्हें आने दो। आने दो। उन्हें यहां ले आओ!"

आलिम आये नहीं, बल्कि दौड़ते हुए एकदम घुस पड़े और अपने धूल भरे जूते भी उतारना भूल गये। तख्त के सामने उन्होंने झुककर कोर्निश की।

"मशहूर आलिम! इस जहान के चांद और सूरज! दुनिया के जमाल और जलाल! अमीरे-आजम! यह गुलाम आपके लिए दुआ करता है। मैं दिन और रात लगातार चलकर अमीर को एक बड़े खतरे से आगाह करने के लिए भागता आ रहा हूं। अमीर मुझे बतायें कि आज वह किसी औरत से तो नहीं मिले? मेरे आका अमीर, इस नाचीज गुलाम को जवाब देने की मेहरबानी करें...मेरी इल्तिजा है..."

अमीर ने परेशानी भरी आवाज में पूछा : "औरत? ...आज? नहीं। हमारा इरादा जरूर था, पर हमने ऐसा किया नहीं..."

आलिम उठ खड़े हुए। उनका चेहरा पीला पड़ रहा था। उन्होंने इस जवाब का इन्तजार बहुत बेताबी से किया था। एक लम्बी सांस उनके होंठों से निकल गयी। धीरे-धीरे उनके गालों पर रंग आ गया। वह जोर से बोले : "अलहम्दुलिल्लाह! अल्लाह ने दानाई और पेशीदगी के सितारे को डूबने से बचा लिया! अमीरे-आजम को मालूम हो कि कल रात सितारों और सैयारों का ऐसा जमाव था जो उनके लिए बहुत नुकसानदेह साबित होता। और मैं, नाचीज गुलाम, जो अमीर के कदमों की खाक चूमने काबिल भी नहीं सैयारों का हिसाब लगाता हूं और जानता हूं कि जब तक सितारे

मुबारक घरों में न पहुंचें अमीर को किसी औरत से न मिलना चाहिए, नहीं तो उनकी बरबादी बिलकुल यकीनी है। अल्लाह का शुक्र है कि मैं उन्हें वक्त पर आगाह कर सका।"

अमीर ने टोका : "खामोश, मौलाना हुसैन। तुम समझ में न आने वाली बातें कह रहे हो.."

लेकिन आलिम कहते रहे : "अलहमदुलिल्लाह। मैं वक्त पर आ पहुंचा। ताउम्र मुझे इस बात का फख्र रहेगा कि आज के दिन मैंने अमीर को औरत छूने से रोक लिया। इस तरह मैंने सारी खल्कत को गमजदा होने से बचा लिया है।"

वह इस खुशी और जोश से बोल रहे थे कि अमीर को उनका यकीन करना पड़ा।

"जब मुझ हकीर और नाचीज पर इस आलम के परवरदिगार का यह पयाम जाहिर हुआ कि मैं बुखारा आऊं और अमीर की खिदमत में हाजिर होकर उन्हें आगाह करूं, तो मुझे लगा कि मैं खुशी के समन्दर में गोते लगा रहा हूं। कहना फिजूल है कि मैंने फौरन पाक परवरदिगार के इस हुक्म की तामील की और सफर पर रवाना हो गया।

"लेकिन चलने के पेश्तर मैंने कई दिन अमीर का जायचा (जन्मपत्र) तैयार करने में सर्फ किये। इस तरह मैंने उन सितारों और सैयारों की चाल जो [illegible] उसी वक्त से अमीर की [illegible] शुरू होती [illegible] जिनका उनकी तकदीर पर असर [illegible]। कल रात आसमान की तरफ [illegible] मुझे [illegible] सितारे और सैयारे दोनों अमीर के [illegible] वाले बुर्ज में हैं। सितारे [illegible] मत है, सितारा अल-बल्द, [illegible] करता है, के मुकाबले मुसीबत के चक्कर में है। आगे मैंने तीन सितारे-अलगफ जो औरत के मकान की अलामत है, दो सितारे अल-इकलील जो ताज की अलामत है

और दो सितारे अस्-शरतान जो सींग की अलामत हैं, देखे।

"यह मैंने मंगल को देखा जो मिर्रीख सैयारे का दिन है और यह दिन जुमेरात (गुरुवार) के मुताल्लिक बड़े लोगों व अजीम शख्सियतों की मौत का है और अमीरों के लिए बहुत बदशगुनी का है। यह सब बुर्ज और रास देखकर मैं, नाचीज नजूमी, समझ गया कि ताज पहनने वाले को मौत के डंक का खतरा है—अगर वह किसी औरत के नकाब को छूता है। इसीलिए मैं ताज पहननेवाले को आगाह करने के लिए जल्दी में भागा आया। मैं दिन और रात लगातार चला। मैंने दो ऊंट दौड़ाकर मार डाले और बुखारा शरीफ पैदल पहुंचा।"

अमीर पर इस बात का बड़ा असर हुआ। वह बोले: "अल्ला हो अकबर! क्या यह मुमकिन है कि मामदौलत पर इतना बड़ा खतरा आया हुआ है? मौलाना हुसैन, तुम्हें ठीक मालूम है कि तुम गलती नहीं कर रहे हो?"

"गलती? मैं?" आलिम जोर से बोले। "अमीर पर बाजे हो कि बुखारा से बगदाद तक कोई भी ऐसा शख्स नहीं है जो सितारों का अन्दाज समझने, इलाज करने या इल्म में मेरी बराबरी कर सकता हो। मैं गलती कर ही नहीं सकता। आफताबे-जहां, ऐ मेरे आका, ऐ अमीरे-आजम, खुद अपने आलिमों से आप दरियाफ्त कर लें कि मैंने जायचे में सितारों को ठीक बताया है या नहीं उनकी कैफियत ठीक तजवीज की है या नहीं।"

अमीर के इशारे पर टेढ़ी गरदनवाला आलिम आगे बढ़ा:

"इल्म में मेरे लासानी साथी मौलाना हुसैन ने सितारों के सही नाम बताये हैं जिससे साबित होता है कि उनके इल्म पर शुबहा नहीं किया जा सकता। लेकिन," आलिम ने ऐसी आवाज में कहना जारी रखा

से ख़्वाजा नसरुद्दीन को जलन और बदनीयती
झलक मिली. "दानाई में अव्वल, मौलाना हुसैन ने
रे-आजम को चांद की सोलहवीं मंजिल के बारे
उन बुर्जों के बारे में क्यों नहीं बताया जिनमें यह
ल आती है, क्योंकि इन कैफियतों के बिना यह
ा बेबुनियाद होगा कि मिर्रिख (मंगल) का दिन
म शख्सियतों की मौत का दिन है और इनमें
दार भी शामिल है। सैयारे-मिर्रिख की मंजिल एक
में है, उरूज दूसरे में, ठहराव एक तीसरे में और
चौथे में। इस हिसाब से सैयारे-मिर्रिख के एक
चार अन्दाज है। लेकिन दाना अव्वल हजरत
ना हुसैन ने एक ही बताया है।"
इयापन से मुस्कराता हुआ आलिम ख़ामोश हो
दरबारियों ने तस्कीन और ख़ुशी के साथ आपस
नाफूसी शुरू की। वे समझे थे कि नया आलिम
नी में पड़ गया है। अपने रुतबे और आमदनी
याल रखते हुए हर बाहरी शख़्स को वे बाहर
ने की कोशिश करते थे। हर नये आने वाले को
रनाक हरीफ़ समझते थे।
न, ख़्वाजा नसरुद्दीन जब भी किसी मामले में
था तो उसे बीच में नहीं छोड़ता था। अब तक
अमीर, आलिमों और दरबारियों की इल्मी गह-
ी भाप लिया था। वह बिना झिझक या परेशानी
. बहुत ही नरमी से बोला : "मेरे दाना और
र साथी इल्म के किसी दूसरे शोबे (शाखा)
ही मुझसे ज्यादा जानते हो, लेकिन जहां तक
का ताल्लुक है, उनके लफ्जों से जाहिर है कि
दारीन इब्न बज्जा की तालीम से वह बिलकुल
है। इब्न बज्जा का दावा है कि सैयारे-
की मंजिल हमल और अकरब (मेष और
के बुर्ज (राशि) में है, उसका उतार सरतान
उरूज जद्दी (मकर) और ठहराव जान

(तुला) के बुर्ज में हैं। लेकिन बदकिस्मती से, यह मकान का ही है और उस पर उसकी नजर टेढ़ी होने से नाजदारों के लिए कारी (घातक) है।"

यह जवाब देते वक्त ख़्वाजा नसरुद्दीन को जहालत के इल्जाम का बिलकुल अन्देशा नहीं था, क्योंकि वह जानता था कि ऐसी बहसों में जीत उसी की होती है जो सबसे ज्यादा बातूनी हो। जाहिर है, इसमें बहुत कम लोग उसका मुकाबला कर सकते थे।

वह आलिम के एतराज के इन्तजार में इस तैयारी में खड़ा था कि उसको मुनासिब जवाब दे। लेकिन, आलिम ने चुनौती नहीं ली और खामोश खड़ा रहा। बहस जारी रखने की उसकी हिम्मत नहीं थी, क्योंकि वह अपनी ला-इल्मी बखूबी जानता था, हालांकि, उसे पूरा यकीन था कि ख़्वाजा नसरुद्दीन भी जाहिल और काइयां है। इस तरह नये आलिम को नीचा दिखाने की कोशिश का उलटा असर हुआ। दरबारी उस पर फुफकारने लगे!

अपनी निगाह से उसने उन्हें समझा दिया कि इस तरह खुले आम बहस करने में हर्गिज बहुत खतरनाक साबित होगा।

ये इशारे भी ख़्वाजा नसरुद्दीन की निगाह से नहीं बचे।

"जरा ठहरो," उसने मन ही मन कहा, "मैं अभी बताता हूं।"

अमीर गहरे खयाल में डूब गये। हर शख्स चुप-चाप, कोई हरकत किये बगैर, खड़ा रहा ताकि अमीर के खयालात में खलल न पड़े।

आखिरकार अमीर बोले : "तुमने अगर सभी सितारों का सही नाम और अन्दाज बताया है, मौलाना हुसैन, तब वाकई तुम्हारे मानी ठीक हैं। लेकिन जो बात हमारी समझ में नहीं आती वह यह है कि हमारे आसमां में सितारे अब-तलक कहां से आ गये जो

मांगों की अलामत है। बाबई, मौलाना हुसैन, तुम ठीक वक्त पर आ गये, क्योंकि आज ही सुबह एक जवान लड़की हमारे हरम में शामिल गयी है और हम तैयारी..."

ख्वाजा नसरुद्दीन ने खौफजदा होते हुए हाथ हिलाया और कहा : "ऐ संजीदा अमीर! उसे अपने ख्यालों से निकाल दीजिए उसके बारे में सोचिए भी मत।"

वह चिल्लाकर बोला, मानो इस वक्त वह यह भी भूल गया हो कि अमीर से सिर्फ जमा गायब (अन्य पुरुष) में ही बात की जाती है। वह सोच रहा था कि इस तरह बोलना दरबारी तहजीब के खिलाफ तो जरूर है लेकिन इसे अमीर के लिए वफादारी और उनकी जिन्दगी को बचाने का जज्बा समझा जायगा और यह न सिर्फ उसके खिलाफ नहीं पड़ेगा बल्कि, उलटे इससे वह अमीर के करीब आ जायगा और अमीर की नजरों में ऊंचा उठ जायगा।

उसने अमीर से उस लड़की को न छूने की पुर जोश से आरजू-मिन्नत की, इल्तिजा की, और कहा कि "मुझ हुसैन को आसुओं का दरिया न बहाना पड़े और गम का काला लिबास न पहिनना पड़े!" अमीर पर इसका बहुत गहरा असर हुआ। वह बोले :

"घबराओ नहीं! परेशान न हो! तस्कीन रखो, मौलाना हुसैन! हम रियाया के दुश्मन नहीं हैं जो उसे गम और अफसोस में डालें। हम वादा करते हैं कि अपनी बेशकीमत जिन्दगी की परवाह करेंगे और इस लड़की से नहीं मिलेंगे। आमतौर पर हम हरम में तब तक नहीं जायेंगे, जब तक सितारे मुबारक न हों— और यह तुम मुझे ठीक वक्त पर बता देना। इधर आओ।"

यह कहकर उन्होंने हुक्कावरदार को इशारा किया, जोर का कश लिया और अपने हाथ से सोने की मुंह-

नाल नये आलिम की तरफ बढ़ा दी। यह उसके लिए बहुत बड़ी इज्जत और मेहरबानी की बात थी। नीची नजर किये, झुककर, नये आलिम ने अमीर की इस मेहरबानी को कुबूल किया। इस ख्याल से उसके बदन में खुशी की लहर दौड़ गयी कि दरबारी बदनीयती और जलन से मरे जा रहे हैं।

अमीर ने कहा : "मामदौलत आलिम मौलाना हुसैन को अपनी सल्तनत का सदर-उल-उलेमा मुकर्रर करने की मेहरबानी फरमाते हैं। उनकी दानाई व इल्म और साथ ही मामदौलत के लिए वफादारी औरों के लिए नजीर है।"

दरबार के मुहर्रिर ने, अमीर के हर काम और लफ्ज का तारीफनामा बयान लिखना जिसका फर्ज था, ताकि आगे आने वाली नस्लों के लिए उनका बड़प्पन छिपा न रह जाय—और इसकी अमीर को बहुत फिक्र थी—अपनी कलम घसीटनी शुरू कर दी।

दरबारियों की तरफ मुखातिब होकर अमीर कहने लगे : "जहां तक तुम लोगों का ताल्लुक है, मामदौलत अपनी नाराजगी जाहिर करते हैं, क्योंकि ख्वाजा नसरुद्दीन की पैदा की हुई तमाम परेशानियों के अलावा तुम्हारे आका पर खुद मौत का साया मंडरा रहा था और तुम में से किसी ने इसके खिलाफ अपनी उंगली तक न उठायी। मौलाना हुसैन! इन लोगों को देखो। बेवकूफी से भरे इन नालायकों के चेहरे देखो। क्या ये बिलकुल गधों से नहीं मिलते हैं? वाकई किसी भी बादशाह ने ऐसे बेवकूफ और लापरवाह वजीर न रखे होंगे।"

खामोश दरबारियों को ताकते हुए, मानो उन पर पहले हमले के लिए निशाना ले रहा हो, ख्वाजा नसरुद्दीन बोला : "हुजूर अमीर बजा फरमाते हैं, जैसा मुझे दिखायी पड़ रहा है, इन लोगों के चेहरों पर अक्ल की छाप नहीं है।"

बहुत खुश होकर अमीर बोले : "बिलकुल सही। बिलकुल ठीक। इनके चेहरों पर दानाई की मुहर नहीं है। सुन रहे हो कुन्दज़हनो ?"

ख्वाजा नसरुद्दीन ने आगे कहा : "मैं यह भी कहना चाहता हूं कि इन चेहरों पर ईमानदारी और नेकी की छाप भी नहीं है।"

पूरे यकीन से अमीर बोले : "ये लोग चोर हैं। सब-के-सब चोर हैं। ये दिन-रात हमें लूटते हैं। हमें महल की हर चीज की हिफ़ाजत करने को मजबूर होना पड़ता है। हर बार जब हम चीजों का शुमार करते हैं, कोई न कोई चीज गायब मिलती है। आज ही सवेरे हम अपना रूमाल बाग में छोड़ आये और आधे घंटे बाद वह गायब। . . . इनमें से भला कौन ... तुम समझ रहे हो न, मौलाना हुसैन ?"

जब अमीर बोल रहे थे, तभी टेढ़ी गरदन वाले आलिम ने एक अजब ऐय्यारी से आंखें नीची कीं। किसी और वक्त यह छोटी-सी हरकत शायद दिखायी न पड़ती, पर इस वक्त ख्वाजा नसरुद्दीन चौकन्ना था। वह फौरन भांप गया कि माजरा क्या है।

बहुत इत्मीनान से ख्वाजा नसरुद्दीन आलिम के पास पहुंचा, उसकी खलअत के अन्दर हाथ डाला और बहुत खूबसूरती से कढ़ा एक रूमाल बाहर निकाल लिया।

"अमीरे-आज़म क्या इसी रूमाल के खोने पर अफ़सोस कर रहे हैं ?"

अचम्भे और डर से सभी दरबारी जैसे सकते में आ गये हों। नया आलिम सचमुच ही खतरनाक हरीफ़ साबित हो रहा था, क्योंकि उनमें जिस एक ने इसकी मुखालफ़त की थी, उसका भांडा-फोड़ हो गया था और वह बर्बाद हो गया था। बहुत-से आलिमों, शायरों, अफ़सरों, और वजीरों के दिल डर से बैठने लगे।

अमीर चिल्लाये : "अल्लाह गवाह है। यही मेरा

रूमाल है !! वाकई, मौलाना हुसैन ! तुम्हारी दानाई लासानी है ! आहा !" और वह तसल्ली और कामरानी के दरबारियों की तरफ मुड़े । "आहा ! आखिरकार रंगे हाथों पकड़े गये ! अब तुम हमारा एक धागा भी चुराने की कोशिश नहीं कर सकोगे । तुम्हारी लूट हम बहुत काफी भुगत चुके हैं । और जहां तक इस हकीर चोर का ताल्लुक है जिसने ऐसी गुस्ताखी से हमारा रूमाल चुराया, इसके सिर, बदन, मुंह से सारे बाल नोच लिये जायें, इसके तलवों में सौ कोड़े लगाये जायें, इसे नंगा करके उल्टा गधे पर बैठाया जाय, और सरे आम इसे चोर बताकर लानत करते हुए शहर में घुमाया जाय।"

अर्सला बेग के इशारे पर जल्लादों ने आलिम को पकड़ लिया और उसे बाहर घसीट ले गये, जहां वे उस पर टूट पड़े । कुछ ही देर बाद वह फिर दरबार में वापस घसीट दिया गया । वह नंगा था, उसके बाल गायब थे । वह बेहद बदनुमा और गन्दा लग रहा था । जाहिर था कि अब तक उसकी दाढ़ी और बेडौल साफा उसके चेहरे की बदकारी व कमअक्ली छिपाये हुए थे और ऐसी शक्लवाला शख्स नम्बरी चोर और बदमाश ही हो सकता था ।

हिकारत से मुंह बिगाड़कर अमीर ने हुक्म दिया : "ले जाओ इसे ।"

जल्लाद उसे खींच ले गये। फौरन बाद खिड़की के बाहर से चीखें और डंडों की फटाफट सुनायी पड़ने लगी । आखिरकार उसे गधे पर दुम की तरफ मुंह करके बैठा दिया गया और तुरही और ढोल की आवाजों के साथ बाजार को रवाना कर दिया गया ।

अमीर देर तक आलिम से बातें करते रहे । दरबारी बिना हिले-डुले खामोश खड़े रहे—जो बजात खुद एक बड़ी तकलीफदेह चीज थी । गर्मी बढ़ रही

थीं और खलअतों के नीचे उनके बदन लुजला थे।

वजीरे-आजम बख्तियार इस वक्त नये आलिम सबसे ज्यादा डर रहा था और दरबारियों मशविरा कर नये हरीफ को बरबाद करने की कोई चा निकालने की कोशिश में था। दूसरी तरफ, दरबा यह सोच रहे थे कि इस मोर्चे में किसकी फतह होगी और आसार देखकर ऐन मौके पर अपने फायदे लिए बख्तियार को दगा देने की तैयारी कर रहे थे ताकि आलिम की दोस्ती हासिल कर सकें।

अमीर ख्वाजा नसरुद्दीन से खलीफा की सेहत बगदाद की खबरों, सफर में गुजरे वाक्यात के बारे में सवाल कर रहे थे और वह जितने अच्छे और सही जवाब बन पड़ रहे थे, दे रहा था। सब कुछ ठीक चल रहा था, और बातचीत से थकान महसूसकर अमीर ने आराम करने के लिए अपना बिस्तर तैयार करने का हुक्म जारी कर दिया था, तभी यकायक बाहर से चीख-पुकार और शोरगुल सुनाई दिया। महल का गुमाश्ता दौड़कर दरबार में दाखिल हुआ। उसका चेहरा दमक रहा था। उसने ऐलान किया: 'अमीरे-आजम को मालूम हो कि अमन में खलल डालनेवाला काफिर ख्वाजा नसरुद्दीन पकड़ लिया गया है और महल में ले आया गया है।"

उसने यह ऐलान किया ही था कि अखरोट की लकड़ी का नक्काशीदार दरवाजा खुला और हथियारों की खड़खड़ाहट के बीच पहरेदार लम्बी फकी नाकवाले और सफेद दाढ़ीवाले बूढ़े को भीतर ले आये, जो औरतों के लिबास में था। उन्होंने उसे तख्त के सामने कालीन पर पटक दिया।

ख्वाजा नसरुद्दीन जैसे जम गया हो। उसे लग रहा था कि उसकी आंखों के सामने दरबार की दीवारें

गिरती पड़ रही है और दरबारियों के चेहरे हरे मुंह में तैर रहे हैं...

: ११ :

बगदाद का आलिम मौलाना हुसैन शहर के फाटक पर पकड़ गया था, जहां वह अपने नकाब के भीतर से चारों तरफ जानेवाली सड़कें देख रहा था। उसे हर सड़क कमबख्ती से नजात दिलाने वाली दिखाई पड़ रही थी।

लेकिन, फाटक पर सन्तरी का काम करनेवाले सिपाही ने पुकार कर उसे टोका था "ऐ औरत! तू कहां जा रही है?"

आलिम ने ऐसी आवाज में जवाब दिया जो उस मुर्गे की बांग लग रही थी जिसका गला पड़ गया हो—"मैं जल्दी में अपने शौहर से मिलने जा रही हूं। ऐ बहादुर सिपाहियो! मुझे जाने दो।"

सिपाहियों ने आवाज पर शुबहा किया और एक दूसरे को ताका। एक ने ऊंट की नकेल थामकर उससे पूछा : "तुम रहती कहां हो?"

आलिम ने आवाज और ऊंचीकर जवाब दिया : "यहीं बिलकुल पास।" आवाज ऊंची करने से उसे खांसी आ गयी और सांस घबराने लगी। सिपाहियों ने आकर नकाब फाड़ डाला। उन्हें हैरत हुई। वे चिल्लाने लगे—"यही है! यही शख्स है यह! पकड़ लो! बांध लो इसे! गिरफ्तार कर लो!"

इसके बाद वे बूढ़े को महल ले आये। रास्ते में वे कहते जाते थे कि उसको पेश किया जायगा तो [illegible] और तीन हजार तके का इनाम, जिसे पाने का उन्हें पूरा भरोसा था, कैसे मिलेगा। उनका हर लफ्ज बूढ़े के दिल पर जलते हुए अंगारे की तरह लग रहा था।

इस वक्त तख्त के सहारे सामने खड़ा वह बूढ़ा कांप रहा था और रहम की भीख मांग रहा था।

अमीर ने हुक्म दिया : "इसे खड़ा करो।"

सिपाहियों ने उसे खड़ा कर दिया। दरबारियों की भीड़ में से असीला बेग आगे बढ़ा : "अमीर इस वफादार गुलाम की बात सुनने की मेहरबानी अता फरमाये। यह शख्स ख्वाजा नसरुद्दीन नहीं है। ख्वाजा नसरुद्दीन जवान हैं। उसकी उम्र तीस से कुछ ही ऊपर है, जबकि यह शख्स बूढ़ा है।"

सिपाही नाउम्मीद हो गये। इनाम उनके हाथ से निकला जा रहा था। हर शख्स चक्कर में था और सामोश खड़ा था।

कांपता हुआ बूढ़ा बोला : "मैं मेहरबान अमीरे-आजम के महल के लिए रवाना हुआ और यहीं आ रहा था। पर मेरी मुलाकात एक बिलकुल अजनबी शख्स से हुई जिसने मुझ से कहा कि मेरे यहां पहुंचने से पहले ही अमीर ने मेरा सिर काट लेने का हुक्म जारी कर दिया है। डर के मारे मैंने भेस बदलकर निकल भागने का फैसला कर लिया।"

अमीर हंसे, मानो सब कुछ समझ रहे हों। "तुम्हारी एक शख्स से मुलाकात हुई . . . जो अजनबी था ? . . . और तब भी तुमने उसका यकीन कर लिया ? . . यह किस्सा तो अजीब है। और तुम तुम्हारा सिर क्यों कलम करवा रहे थे ?"

"क्योंकि कहा गया था कि मैंने खुले आम ऐलान किया है कि मैं अमीरे-आजम के हरम में घुस जाऊंगा . पर खुदा गवाह है, मेरे दिमाग में ऐसा खयाल कभी भी नहीं आया। मैं बूढ़ा और कमजोर हूं और बहुत दिन पहले ही मैंने औरतों से अपने ताल्लुक खत्म कर दिये थे।"

होंठ भींचते हुए अमीर बोले : 'हमारे हरम में घुस जाओगे ?" उनके चेहरे से जाहिर था कि इस बूढ़े शख्स पर उनका शुबहा बढ़ता जा रहा था "तुम हो कौन और आये कहां से हो ?"

"मैं आलिम, हकीम, बगदाद का मौलाना हुसैन हुसैन हूं। अमीरे-आजम के फरमान पर मैं बुलाया आया हूं।"

"मौलाना हुसैन ?" अमीर ने दोहराया। "तुम मौलाना हुसैन हो ? तुम्हारा नाम मौलाना हुसैन है ! ऐ हकीर बुड्ढे, यह सफेद झूठ ?" वह इतने जोर से से गरजकर बोले कि गलत मौके पर शायरे-आजम फूटी के बल गिर पड़े। "तुम झूठ बोलते हो ! यह तो मौलाना हुसैन !"

अमीर के इशारे पर खोजा नसरुद्दीन हिम्मत के साथ आगे बढ़ आया और बुड्ढे के सामने खड़ा होकर बेधड़क और खुले खजाने उसको घूरने लगा।

बूढ़ा अचम्भे से पीछे हट गया। लेकिन फौरन ही उसने अपने को सम्हाला और चिल्लाया : "आहा! अरे, यही तो है वह शख्स जो मुझे बाजार में मिला था और जिसने कहा था कि अमीर ने मुझे मरवा डालने का हुक्म जारी किया है!"

अमीर ने परेशानी से पूछा : "मौलाना हुसैन! यह कह क्या रहा है?"

बूढ़ा चिल्लाया "मौलाना हुसैन यह नहीं, मैं हूं! यह जालिया है! उसने मेरा नाम चुरा लिया है!"

खोजा नसरुद्दीन ने अमीर के सामने झुककर कहा : "शहंशाहे-आजम मेरी गुस्ताखी माफ हो। लेकिन इसकी बेशर्मी वाकई हद से गुजर गयी है। यह कहता है कि मैंने इसका नाम चुरा लिया है। शायद यह कहेगा कि मैंने इसकी पोशाक भी चुरा ली है!"

बूढ़ा चिल्लाया "हां, हां! यह मेरी पोशाक है!"

चिढ़ाने के ढंग से खोजा नसरुद्दीन ने कहा : "और शायद यह साफा भी तुम्हारा है?"

"अरे हां! यह मेरा ही साफा है। तुमने मुझे आंखों में धूल झोंककर यह पोशाक और साफा ले लिया था।"

और ज्यादा [illegible] (खास) [illegible] मौके में खोजा

नसरुद्दीन बोला : "तो यह पटका भी तुम्हारा है? यह कमरबन्द भी?"

बूढ़े ने गुस्से में आकर कहा : "हां यह भी मेरा है।"

ख़ोजा नसरुद्दीन तख़्त की तरफ़ मुड़ा : "जहांपनाह, अमीरे-आज़म ने ख़ुद गौर फ़रमाया है कि यह शख़्स किस क़िस्म का है। आज यह झूठा और क़ाबिले-नफ़रत झूठा कहता है कि मैंने इसका नाम छीन लिया है। कहता है कि यह पोशाक, यह साफ़ा, यह पटका उसका है। कल यह कहेगा कि यह महल और यह सारी सल्तनत इसकी है और बुख़ारा का असली अमीर हमारे सूरज के मानिंद चमकनेवाले शहंशाहे-आज़म नहीं—जो इस वक़्त हमारे सामने तख़्त की शान बढ़ा रहे हैं—बल्कि, यह ज़लील बूढ़ा है। ऐसे शख़्स से तो हर बात की उम्मीद की जा सकती है। यह बुख़ारा क्यों आया है? अमीर के हरम में घुसने के लिए तो नहीं, मानो यह हरम उसी का हो?"

अमीर बोले : "तुम सही कहते हो, मौलाना हुसैन। हां, हमें यक़ीन है कि यह बूढ़ा ख़तरनाक है और मुझे इस पर शक है कि इसकी नीयत बद है और इसके दिल में कोई ख़राब चाल है। हमारी राय है कि इसका सिर फ़ौरन धड़ से अलग कर दिया जाय।"

बूढ़ा कराहा और अपने हाथों से मुंह ढककर घुटनों के बल गिर पड़ा।

लेकिन ख़ोजा नसरुद्दीन ऐसे शख़्स को नहीं मरने दे सकता था जिस पर झूठा इल्ज़ाम लगा हो—भले ही वह दरबारी आलिम हो और भले ही उसने फ़रेब से बहुतों को बरबाद किया हो। इसलिए वह अमीर के सामने अदब से झुककर बोला :

"अमीरे-आज़म मेरी बात सुनने की मेहरबानी फ़रमाएं। इसका सिर काटने में कभी देर न लगेगी। यह तो कभी भी किया जा सकता है। लेकिन इसका सिर काटने से पेश्तर क्या यह जान लेना मुनासिब न होगा

कि इसका असली नाम और यहां आने का मकसद क्या है? इस तरह यह भी पता चल जायगा कि इसके और भी कोई साथी है या नहीं। हो सकता है कि यह कोई बदमाश जादूगर हो, जो सितारों के नामुनासिब अंदाज का फायदा उठाना चाहता हो। अगर ऐसा है तो यह अमीरे-आजम के कदमों की धूल लेकर उसमें चमगादड़ का दिमाग मिलाकर हुजूर के हुक्के में डाल देगा और इससे हुजूर की सेहत को बहुत खतरा पैदा हो जायगा। फिलहाल, अमीर इसकी जिन्दगी बख्श दें और इसे मेरे सिपुर्द कर दें। मामूली सिपाहियों पर तो यह जादू के जोर से काबू पा सकता है, लेकिन मेरे सामने यह बिलकुल बेकार साबित होगा क्योंकि मैं इल्म से जादूगरों की सारी चालें जानता हूं और उनका जादू तोड़ देने की तरकीब भी जानता हूं। मैं इसे तालें में बन्द कर दूंगा और फिर तालों पर ऐसी दुआ फूंकूंगा जो सिर्फ मुझको मालूम है। इस तरह यह अपने जादू के जोर से ताला खोलने में नाकामयाब रहेगा। इसके बाद इसे तकलीफें दे-देकर मैं पूरा बयान ले लूंगा।"

"अच्छा," अमीर बोले "जो कुछ तुम कह रहे हो बजा है मौलाना हुसैन। इसे ले जाओ और जो मर्जी हो करो। लेकिन इतना ख्याल रखना कि यह भागने न पाए।"

"यह जिम्मेदारी मैं अपनी जान देकर भी पूरी करूंगा।"

आधे घंटे बाद अमीर के "[illegible]" ख्वाजा नसरुद्दीन अपने नये मकान में पहुंचे। यह मकान की दीवार पर बने ऊंचे मीनार पर उनके लिए तैयार किया गया था। ख्वाजा नसरुद्दीन के दौड़-धूप सिपाहियों से घिरे, फिर [illegible] यानी अमीर [illegible] मौलाना हुसैन, का रहा था।

मीनार में पहुंचकर नसरुद्दीन के मकान में [illegible] ... [illegible] था। इसके [illegible] लिखा [illegible]।

ख्वाजा नसरुद्दीन ने एक बड़ी ताली से पीतल के पुराने ताले को खोला। लोहा-जड़ा दरवाजा खुला। सिपाहियों ने बूढ़े को उसी में धकेल दिया, एक मुट्ठा पुआल भी उसे बिछाने को न दिया। बन्द दरवाजे पर ख्वाजा नसरुद्दीन बड़ी देर तक पीतल के ताले पर ऊंची आवाज में, जो साफ सुनायी न पड़ती थी, बहुत तेजी से कुछ पढ़ा। सिपाही उसमें सिर्फ अल्लाह का नाम सुन-समझ पाते थे।

ख्वाजा नसरुद्दीन अपने मकान से बहुत खुश था। अमीर ने उसे एक दर्जन गद्दे, आठ मसनदें, बहुत से प्याले-तश्तरियां, एक टोकरी सफेद सोंटमा, मर्तबान भरकर शहद और अपने दस्तरख्वान से बहुत से बढ़िया खाने भेज दिये थे। ख्वाजा नसरुद्दीन बहुत भूखा और थका हुआ था। लेकिन पेश्तर इसके कि खाने पर बैठे वह छ गद्दे और चार मसनदें लेकर कैदी के पास पहुंचा।

बूढ़ा एक कोने में सिकुड़ा बैठा था। उसकी आंखें बौरायी बिल्ली की आंखों की तरह चमक रही थीं।

"कहिए, मौलाना हुसैन!" बहुत नरमी से ख्वाजा नसरुद्दीन बोला। "इस मीनार में हम लोग बहुत आराम से रहेंगे—मैं नीचे, आप ऊपर, यानी, जैसा कि आपकी उम्र और इल्म के लिए मुनासिब है। ओफ! यहां कितनी धूल है। मैं जरा सफाई कर दूं।"

नीचे से वह एक झाड़ू और एक घड़ा पानी लाकर, फिर बड़ी एहतियात से उसने पत्थर के फर्श को धोया, उस पर गद्दे बिछाये और मसनदें सजायीं। फिर नीचे गया और और कुछ हलवा, पिस्ते, बादाम और सोंटी-पूर्ण से आया और अपने कैदी के सामने ईमानदारी से सारे खाने को दो बराबर हिस्सों में बांटा।

"मौलाना हुसैन!" वह बोला। "यहां आप पूरे आराम से रहेंगे। हम लोग यहां खाने-पीने का अच्छा इन्तजाम कर लेंगे। यह रहा हुक्का और तम्बाकू।"

उस छोटे कमरे में हर चीज इस तरह सजाकर कि वह कमरा खुद उसके अपने कमरे से बेहतर लगने लगा, ख्वाजा नसरुद्दीन दरवाजे में ताला जड़कर वापस लौट आया।

बूढ़ा अकेला रह गया। वह बिलकुल भौंचक्का था। बहुत देर तक वह सोच और परेशानी में डूबा रहा। लेकिन उसकी समझ में कुछ न आया कि यह सब क्या हो रहा है। गद्दे नर्म थे, मसनदें आरामदेह थीं। अभी तक न तो रोटी-पुये में, न शहद और तम्बाकू में ही जहर मिलाया गया था...दिन भर के थकावटदेह नजारों से चूर, अपनी किस्मत अल्लाह के हाथ सिपुर्द कर वह सोने की तैयारी करने लगा।

इस बीच, वह शख्स जो इस बूढ़े की मुसीबतों और परेशानियों के लिए जिम्मेदार था, नीचे के कमरे में दरीचे में बैठा शफक को आहिस्ता-आहिस्ता गहरी रात में बदलते देख रहा था और अपनी गैर-मामूली, तूफानी जिन्दगी पर गौर करता, अपनी माशूका के बारे में सोच रहा था। वहीं, बिलकुल करीब थी उसकी माशूका। लेकिन अभी तक उसे उसकी मौजूदगी की खबर तक न थी। ठण्डी हवा खिड़की के रास्ते चुपके चुपके भीतर आ रही थी। मुअज्जिनों की उदास, रतन-कर्ता-सी अजानें, शहर पर रुपहले धागों की तरह फैल रही थीं। गहरे काले आसमान में सितारे फैले हुए थे। वे चमक रहे थे और कहीं दूर, खामोश, ठंडी आग की तरह टिमटिमा रहे थे। उनमें सितारा अल-कल्ब भी था जो दिल की अलामत है, तीन सितारे अल-गफ थे, जो कुंआरी लड़की के नकाब की अलामत हैं, और दो सितारे अश्-शरतान थे जो सींगों की अलामत हैं।

अकेला मनहूस अश-शूला, जो मौत के डंक की अलामत है, आसमान की गहरी नीली ऊंचाइयों में गायब था।

"पाक है वह जो जीता है अ
मरता नहीं ।"

औलिफ सैल

अमीर ख़ोजा नसरुद्दीन पर भरोसा करने लगे थे और उस
रर मेहरबान थे। वह इन मामले में उनका सबसे नज़दीकी
सलाहकार बन गया था। ख़ोजा नसरुद्दीन फ़ैसले
रता, अमीर उन पर दस्तख़त करते और वज़ीर बीज़िलवार
रके उन पर पीतल की मुहर लगाता।
सड़कों व पुलों पर से गुज़रने के टैक्स को ख़त्म करने
रि बाज़ार लगाने पर टैक्स कम करने का हुक्म पढ़ते
। बीज़िलवार ताज्जुब में सोचने लगा "ऐ रहीम! ऐ
ल्लाह! वाक़ई सारी सल्तनत में इन्क़िलाब हो रहा है।
जल्द ही ख़ज़ाना ख़ाली हो जायगा। इस नये आलिम ने—
ख़ुदा करे इसके पेट में कीड़े पड़ें—एक हफ़्ते में वह सब
ख़त्म कर दिया, जो मैंने दस बरसों में बनाया था।"
एक दिन उसने अपना शुबहा अमीर पर ज़ाहिर करने
की हिम्मत की।
उन्होंने जवाब दिया "ऐ नाकारा इन्सान! तू जानता
क्या है? तू समझता ही क्या है? इन हुक्मों से, जिनसे
ख़ज़ाना ख़ाली हो जायगा, हम कम नाराज़ नहीं हैं।
लेकिन अगर सितारों का यही हुक्म है, तो हम कर ही
क्या सकते हैं? सब्र कर, बीज़िलवार। यह थोड़े ही दिनों
की बात है। सितारों को नेक होने दो। मौलाना हुसैन।
ज़रा इसे समझाओ तो।"
ख़ोजा नसरुद्दीन वज़ीरे-आज़म को एक तरफ़ ले

[illegible] ज्योतिष में उन्हें [illegible] कि [illegible] और [illegible] पर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जाती हैं।

फिलहाल [illegible] कन्या [illegible] (कन्या) के घर में है और मिथुन [illegible] के घर में हैं। ये तीनों सितारे [illegible] (धनु) के घर में और ये सितारे आपस में [illegible] हैं। [illegible] साहब ? ये सितारे मुसाफिर हैं और [illegible] (धनु) में नहीं हैं।"

"यह बहुत हुआ!" [illegible] ने [illegible] दिया। "बहुत [illegible] से मुसाफिर हैं। पहले भी ये मुसाफिर थे, लेकिन इससे सालाना टैक्स वसूल करने में भी कोई रुकावट नहीं पड़ी।"

ख्वाजा नसरुद्दीन ने कहा, "लेकिन अब शनि (?) की तरह ये तीनों सितारे आसमान को घूम रहे हैं, ऐ वजीर, जरा आसमान की तरफ नजर उठाओ। तुम्हें यह खुद दिखायी दे जायगा।"

वजीर चिढ़ के बोलता रहा, "मैं आसमान को क्यों देखूं? मेरा काम तो खजाने की देखभाल है। उसे इकट्ठा करना और उसकी हिफाजत करना है और मैं देख रहा हूं कि जबसे तुम महल में आये हो, खजाने की आमदनी कम हो गयी है। टैक्सों की वसूली भी कम हो गयी है। यही कारीगरों से टैक्स वसूल करने का सही वक्त है। मुझे बताओ कि हम टैक्स क्यों न वसूल करें?"

ख्वाजा नसरुद्दीन चिल्लाया, "क्यों...? अरे पिछले एक घंटे से मैं तुम्हें क्या बता रहा हूं? क्या अब भी तुम्हारी समझ में नहीं आता कि हर रात के लिए चांद के दो अन्दाज होते हैं और एक तिहाई...."

"लेकिन मुझे तो टैक्स वसूल करना है।" वजीर ने टोका। "टैक्स! क्या तुम समझ नहीं पा रहे हो मौलाना साहब?"

ख़्वोजा नसरुद्दीन ने कहा : "सब से काम लो भाई, सब से। मैंने अभी तुम्हें सितारे अस्-सुरैया और आठ सितारे अन्-नाएम..."

ख़्वोजा नसरुद्दीन ने इतनी पेचीदा और लम्बी बात शुरू कर दी कि वजीर के कान बजने लगे और नजर धुंधली पड़ने लगी। वह उठा और लड़खड़ाता हुआ बाहर निकल गया। ख़्वोजा नसरुद्दीन अमीर की तरफ मुख़ातिब हुआ और बोला : 'ऐ मेरे आका! उम्र ने भले ही उसके सिर पर चांदी बिखेर दी है, लेकिन यह सजावट सिर्फ बाहरी है; उसके सिर के भीतर जो कुछ है उम्र ने उसे नहीं बदला। वह मेरे इल्म को समझ ही नहीं पाया। ऐ मेरे आका! वह कुछ नहीं समझा। काश, उसे अमीर की जहानत और अक्ल का—जो ख़ुद लुकमान को भी मात करते हैं—हजारवां हिस्सा भी मिला होता।"

इतमीनान और मेहरबानी से अमीर मुस्करा दिये। कई दिन से लगातार ख़्वोजा नसरुद्दीन अमीर को समझा रहा था कि उनकी दानाई की कोई मिसाल नहीं। इसमें वह पूरी कामयाबी भी हासिल कर चुका था। इसलिए अब जब भी वह कोई बात अमीर को समझाता तो वह बहुत गौर से सारी बात सुनते और इस डर से बहस न करते कि कहीं उनके इल्म की गहराई का पता न लग जाय।

...अगले दिन बख़्तियार ने कई दरबारियों के सामने अपने दिल का बोझ हलका किया : "यह नया आलिम तो हम लोगों को बरबाद करके छोड़ेगा। जिस दिन टैक्सों की वसूली होती है उसी दिन हम लोगों को अमीर के खजाने में आनेवाले रुपयों के सैलाब का कुछ फायदा उठाने और दौलत इकट्ठी करने का मौका मिलता है। लेकिन अब, जब इस सैलाब से कुछ फायदा उठाने का मौका आया है, तब यह मौलाना हुसैन रास्ते में हायल हो गया है। यह कौरन सितारों की कैफियत बताने लगता है। क्या कभी किसी ने यह भी सुना है कि अल्लाह के

हुक्म से चलनेवाले सितारे आला शख्सियतों और आम लोगों के लिए तो बदशगुनी के हों, लेकिन कुछ गुमनाम कारीगरों के लिए, जो मुझे यकीन है कि इस वक्त उनकी कमाई हड़प किये जा रहे हैं और हमें नहीं दे रहे, मुबारक हों ! सितारों की ऐसी कैफियत भला सुनी है किसी ने ! यह बात किसी किताब में तो लिखी हो नहीं सकती, क्योंकि ऐसी किताब फौरन जला दी गयी होती और उसे लिखने वाले को लानत देकर, काफिर व मुजरिम बनाकर मार डाला जाता।"

दरबारी कुछ बोले नहीं, क्योंकि वे समझ नहीं पा रहे थे कि किसका साथ देने में फायदा है—बख्तियार का या नये आलिम का ।

बख्तियार कहता गया : "टैक्सों की वसूली दिनोंदिन गिरती जा रही है । अब क्या होगा ? इस मौलाना हसीम ने अमीर को यह समझाकर भटका दिया है कि टैक्स वसूली सिर्फ थोड़े से दिनों के लिए टाली गयी है; बाद में ये टैक्स लगायें, बल्कि बढ़ाये भी जा सकते हैं। अमीर उसकी बात का यकीन करते हैं । हम जानते हैं कि टैक्स मंसूख करना आसान है, लेकिन नया टैक्स लगाना बड़ा मुश्किल है । किसी शख्स को कोई रकम जब दूसरे को समझने की आदत पड़ जाती है, तो आसानी से वह अपनी कमाई उसे दे देता है । लेकिन एक मर्तबा वह खुद उस को अपने ऊपर खर्च करने लगे, तो वह नहीं चाहेगा कि दुबारा-तिबारा भी यह रकम अपने ऊपर ही खर्च करे।

"खजाना खाली हो जायगा और अमीर के हम दरबारी बरबाद हो जायेंगे। जरी की पोशाक पहनने के बजाय हमें सादा मोटा कपड़ा पहनना पड़ेगा। चार बीवियां रखने के बजाय दो बीवियों पर ही गुजर करनी पड़ेगी। चांदी के बरतनों की जगह, मिट्टी की रकाबियों में खाना खाना पड़ेगा। मुलायम गोश्त की जगह पुलाव में गाय का सख्त गोश्त खाना पड़ेगा, जो सिर्फ कुत्तों और

रों के लायक होता है। ये ही वे बातें हैं जो नया
म हमारी किस्मत में लिखता रहा है। जो शरमा
न देखें—समझें, वह अन्धा है, उस पर खुदा की
"

रे आलिम के खिलाफ दरबारियों को उभारने के
बदस्तूर इसी तरह बोलता रहा। लेकिन उसकी
द नाकाम रही। अपने नये ओहदे पर मौलाना
एक के बाद एक कामयाबी हासिल करता गया।
रीफ के दिन' तो वह खास तौर पर चमक गया।
पुरानी रस्म के मुताबिक हर महीने अमीर के सामने
दिन सभी वजीर, ओहदेदार, आलिम व शायर
े होते थे और उनकी तारीफ करने में होड़ करते
समें जो अव्वल आता, उसे इनाम मिलता।
दिन हरेक ने अपना-अपना कसीदा पढ़ा, लेकिन
को तसल्ली नहीं हुई। वह बोले:
छली दफा भी तुम लोगों ने ये ही बातें कहीं
म देखते हैं कि तारीफ करने में तुम लोग माहिर
कमल नहीं हो। तुम लोग अपने दिमागों पर
लने को तैयार नहीं हो। लेकिन आज हम तुम
लेकर मानेंगे। हम सवाल करेंगे और तुम्हें इस
जवाब देना होगा कि हमारी तारीफ भी हो और
ें सचाई का पुट भी रहे।
से सुनो। हमारा पहला सवाल यह है: अगर
के अमीरेआजम, मालदौलत, बहुत ताकतवर,
र कि तुम लोगों का दावा है, नाकाबिले-फतह
भी तक पड़ोस के मुस्लिम देशों के सुल्तानों ने
शहंशाहियत को मानकर अपनी उम्दा सौगातें
ें भेजीं? हम तुम्हारे जवाबों का इन्तजार कर

ी परेशानी में डूब गये। सीधा जवाब न देकर
बनाने लगे। अकेला ख्वाजा नसरुद्दीन बिना

जरा भी घबड़ाये बैठा रहा। उसकी बारी आयी तो वह बोला :

"अमीरे-आजम मेरे हकीर लफ्जों को सुनने की मेहरबानी अता फरमाएं। हमारे शहंशाह के सवाल का जवाब आसान है। पड़ोस के सभी मुल्कों के सुल्तान हमारे आका की ताकत के डर से हमेशा कांपते रहते हैं। वे सोचते हैं कि 'अगर हम बढ़िया सौगात भेजेंगे तो बुखारा के ताकतवर, अजीमुश्शान अमीर समझेंगे कि हमारा मुल्क रईस है, जिससे उन्हें फौज लेकर यहां आने और हमारे मुल्क पर कब्जा करने का लालच होगा। लेकिन अगर हम उन्हें मामूली सौगात भेजें तो वह नाराज होकर अपनी फौजें भेज देंगे। बुखारा के अमीर बड़े ही ताकतवर हैं, अजीमुश्शान हैं। सो, हिफाजत इसी में है कि अपनी नाचीज हस्ती की उन्हें याद ही न दिलायी जाय।'

"दूसरे सुलतानों के दिमागों में इसी तरह के ख्याल आते हैं। बढ़िया सौगात लेकर अपने सफीर बुखारा न भेजने की वजह उन लोगों के लगातार डर और अन्देशे की हालत में ढूंढनी होगी जो हमारे शहंशाह की ताकत ने पैदा कर दी है।"

ख्वाजा नसरुद्दीन के जवाब में जो तारीफ थी, उससे खुश होकर अमीर चिल्ला उठे: "वाह! अमीर के सवालों का इसी तरह जवाब दिया जाना चाहिए। सुना तुम लोगों ने? ओ बेवकूफों और कमअक्लो! हमारे वजीरो! वाकई, इल्म में मौलाना तुम सबसे दस गुने बढ़े हैं, माबदौलत तुम्हारा शाही तौर पर शुक्रिया अदा करते हैं, मौलाना हुसैन।"

ड्योढ़ीदार मीर बकावल ख्वाजा नसरुद्दीन के पास पहुंचा और उसके मुंह में मिठाइयां और हलवा ठूंस दिया। ख्वाजा नसरुद्दीन के गाल फूल गये। उसका दम घुटने लगा। गहरी चाशनी उसकी ठुड्डी तक बहने लगी।

मीर ने उलझन भरे कई और सवाल किये। हर ख्वाजा नसरुद्दीन का जवाब सबसे बेहतर साबित ।

दरबारी का सबसे पहला फर्ज क्या है?" अमीर छा।

वाजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया : "ऐ अजीमुश्शान शाह ! दरबारी का पहला फर्ज रोजाना अपनी रीढ़ सरत कराना है जिससे उसमें जरूरी लोच रहे, के बिना वह वफादारी और आदाब का इजहार कर हीं सकता। दरबारी की रीढ़ को आसानी से हर तरफ और घूम सकना चाहिए। मामूली इन्सान की अकड़ी ढ़ की तरह उसे नहीं होना चाहिए, जो ठीक से र सलाम करना भी नहीं जानता।"

त खुश होकर अमीर बोले : "बहुत खूब। बिलकुल रीढ़ की रोजाना कसरत। वाह, वाह। हम दूसरी लाना हुसैन के शाही ज्योतिषी का एलान करते हैं।"

क बार फिर ख्वाजा नसरुद्दीन के मुंह में गर्म मिठा- और हलवा ठूंस दिया गया।

दिन से बहुत से दरबारियों ने बख्तियार की ख्वाजा नसरुद्दीन की वफादारी शुरू कर दी।

ि दिन बख्तियार ने अर्सला बेग को अपने घर दी। नया आलिम दोनों के लिए एक-सा खतर- ा और उसे बरबाद करने के लिए दोनों ने कुछ के लिए आपसी अदावत ताक पर रख दी थी।

सके पुलाव में कुछ मिला देना ठीक रहेगा," बेग ने कहा। वह इस फन में माहिर था।

तयार बोला "लेकिन अमीर हमारे सिर कलम देंगे। नहीं अर्सला बेग साहब, हमें कोई दूसरा सोचना होगा। हमें हर तरह मौलाना हुसैन और अक्ल की तारीफ करके उसे आसमान पर ना चाहिए, ताकि अमीर के दिल में शुबहा पैदा

जरा भी घबड़ाये बैठा रहा। उसकी बारी आयी तो इस... पाया।

"अमीरे-आजम मेरे हकीर लफ्जों को सुनने की मेहरबानी अता फरमाएं। हमारे शहंशाह के सवाल का जवाब आसान है। पड़ोस के सभी मुल्कों के सुल्तान हमारे आका की ताकत के डर से हमेशा कांपते रहते हैं। वे सोचते हैं कि 'अगर हम बढ़िया सौगात भेजेंगे तो बुखारा के ताकतवर, अजीमुश्शान अमीर समझेंगे कि हमारा मुल्क रईस है, जिससे उन्हें फौज लेकर यहां आने और हमारे मुल्क पर कब्जा करने का लालच होगा। लेकिन अगर हम उन्हें मामूली सौगात भेजें तो वह नाराज होकर अपनी फौजें भेज देंगे। बुखारा के अमीर बड़े ही ताकतवर हैं, अजीमुश्शान हैं। सो, हिफाजत इसी में है कि अपनी नाचीज हस्ती की उन्हें याद ही न दिलाई जाय।'

"दूसरे सुलतानों के दिमागों में इसी तरह के खयाल आते हैं। बढ़िया सौगात लेकर अपने सफीर बुखारा न भेजने की वजह उन लोगों के लगातार डर और अन्देशे की हालत में ढूंढनी होगी जो हमारे शहंशाह की ताकत ने पैदा कर दी है।"

ख्वाजा नसरुद्दीन के जवाब में जो तारीफ थी, उससे खुश होकर अमीर चिल्ला उठे: "वाह! अमीर के सवालों का इसी तरह जवाब दिया जाना चाहिए। सुना तुम लोगों ने? ओ बेवकूफो और कुन्दजहनो! इनसे ... । वाकई, इल्म में मौलाना तुम सबसे दस गुने ... । मावदौलत तुम्हारा शाही तौर पर शुक्रिया अदा ... है, मौलाना हुसैन।"

... फौरन ख्वाजा नसरुद्दीन के पास पहुंचा ... मिठाइयां और हलवा ठूंस दिया। ... गाल फूल गये। उसका दम घुटने ... । उसकी ठुड्डी तक बहने लगी।

अमीर ने उलझन भरे कई और सवाल किये। हर बार ख्वाजा नसरुद्दीन का जवाब सबसे बेहतर साबित हुआ।

"दरबारी का सबसे पहला फर्ज क्या है?" अमीर ने पूछा।

ख्वाजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया : "ऐ अजीमुश्शान बादशाह! दरबारी का पहला फर्ज रोजाना अपनी रीढ़ की कसरत करना है जिससे उसमें जरूरी लोच रहे, जिसके बिना वह वफ़ादारी और आदाब का इजहार कर ही नहीं सकता। दरबारी की रीढ़ को आसानी से हर तरफ मुड़ और घूम सकना चाहिए। मामूली इन्सान की अकड़ी हुई रीढ़ की तरह उसे नहीं होना चाहिए, जो ठीक से मुनासिब सलाम करना भी नहीं जानता।"

बहुत खुश होकर अमीर बोले : "बहुत खूब! बिलकुल सही! रीढ़ की रोजाना कसरत! वाह, वाह! हम दूसरी बार मौलाना हुसैन के शाही शुक्रिये का ऐलान करते हैं।"

एक बार फिर ख्वाजा नसरुद्दीन के मुंह में गर्म मिठाइयां और हलवा ठूंस दिया गया।

उस दिन से महल के दरबारियों ने बख्तियार की जगह ख्वाजा नसरुद्दीन की वफ़ादारी शुरू कर दी।

उसी दिन बख्तियार ने अर्सला बेग को अपने घर दावत दी। नया आलिम दोनों के लिए एक-सा खतरनाक था और उसे बरबाद करने के लिए दोनों ने कुछ दिनों के लिए आपसी अदावत ताक पर रख दी थी।

"उसके पुलाव में कुछ मिला देना ठीक रहेगा," अर्सला बेग ने कहा। वह इस फन में माहिर था।

बख्तियार बोला : "लेकिन अमीर हमारे सिर कलम करा देंगे। नहीं अर्सला बेग साहब, हमें कोई दूसरा तरीका सोचना होगा। हमें हर तरह मौलाना हुसैन के इल्म और अक्ल की तारीफ करके उसे आसमान पर चढ़ा देना चाहिए, ताकि अमीर के दिल में शुबहा पैदा

हो जाय कि कहीं दरबारी लोग मौलाना हुसैन की अक्ल को अमीर की अक्ल से भी बढ़कर तो नहीं समझने लगे। हमें लगातार मौलाना हुसैन की तारीफ के पुल बांधने चाहिए। तब जल्द ही वह दिन आयगा, जब अमीर को उससे जलन होने लगेगी। वह दिन मौलाना हुसैन की बड़ाई का आखिरी और गिरावट का पहला दिन होगा।"

लेकिन तकदीर ख्वाजा नसरुद्दीन के साथ थी और उसकी बड़ी से बड़ी गलती का नतीजा भी उसी के हक में होता।

अर्सलां बेग और बख्तियार जब मौलाना हुसैन की तारीफें करके अपनी तिकड़म में कामयाब हो रहे थे और दिल में हसद की पहली चिनगारी जला रहे थे—गो यह चिनगारी अभी छिपी हुई थी—तभी हुआ यह कि ख्वाजा नसरुद्दीन एक भारी भूल कर बैठा।

एक दिन अमीर के साथ वह बाग में फूलों की महक लेता और चिड़ियों के गाने सुनता टहल रहा था। अमीर खामोश थे। इस खामोशी में ख्वाजा नसरुद्दीन को अदावत की छिपी झलक महसूस हुई। लेकिन वह इस अदावत की वजह नहीं समझ पा रहा था।

अमीर ने पूछा : "उस बुड्ढे—तुम्हारे कैदी—का क्या हाल है? क्या तुमने उसका असली नाम और खतरनाक होने का सबब जान लिया?"

ख्वाजा नसरुद्दीन के ख्यालों में इस वक्त छाई हुई थी गुलजान। सो उसने अनमने ढंग से जवाब दिया: "ऐ बादशाह सलामत! इस नाचीज गुलाम को माफ फरमाएं। अभी तक मैं उस बुड्ढे से एक लफ्ज भी नहीं कबुलवा पाया हूं। वह तो मछली की तरह गूंगा है।"

"[illegible] इसे तकलीफें देने की कोशिश की?"

"[illegible]—नामदार। [illegible]

गाठों को उमेठा। कल दिन भर गर्म चिमटे से मैं उसके दांत हिलाता रहा।"

अमीर ने ताईद करते हुए कहा : "दांत ढीले करना तो अच्छी सजा है। ताज्जुब है कि वह तब भी खामोश रहा। तुम्हारी मदद के लिए किसी तजुर्बेकार, होशियार जल्लाद को भेजूं।"

"नहीं, हुजूर! आप अपने आपको ऐसी फिक्रों से परेशान न करें। कल मैं उसे एक नये ढंग की सजा दूंगा। बूढ़े की जुबान और मसूड़ों में मैं जलता हुआ सूआ घुसेड़ूंगा।"

"ठहरो! ठहरो!" अमीर चिल्लाये। उनका चेहरा खुशी से दमक रहा था। "अगर तुम उसकी जुबान जलते हुए सूए से छेद दोगे, तो वह अपना नाम कैसे बतायेगा? मौलाना हुसैन! तुमने इस बात पर गौर किया ही नहीं, या किया था? देखो न, अमीरे-आजम, मालबदौलत, ने फौरन इस बात पर गौर किया और तुम्हें एक बहुत बड़ी गल्ती करने से रोक लिया। इससे साबित है कि हालांकि तुम एक सासानी आलिम हो, तो भी हमारी दानाई तुमसे बढ़-चढ़कर है। तुमने अभी-अभी यह बात देखी है न?"

बेहद खुश अमीर ने दमकते चेहरे से हुक्म दिया कि दरबारी फौरन बुलाये जायें। दरबार लग गया। अमीर ने पढ़कर ऐलान किया कि आज के दिन उन्होंने मौलाना हुसैन से ज्यादा दानाई दिखायी है और एक ऐसी गलती करने से रोक लिया है, जो वह करने ही वाले थे। दरबार के मुहर्रिर ने बड़ी मेहनत से अमीर के बयान का एक-एक लफ्ज दर्ज किया ताकि आगे आने वाली नस्लें उन्हें भूल न जायें।

उस दिन के बाद से अमीर के दिल में जलन पैदा नहीं हुई। इस तरह, इस इत्तिफाकिया गलती से ख्वाजा

नसरुद्दीन ने दुश्मनों की काइयां तिकड़में ...
कर दिया।

तब भी दुविधा में पड़े ख्वाजा नसरुद्दीन को, लम्बे, और परेशान करने वाले घंटों में रोज-ब-रोज ज्यादा तकलीफ होती। बुखारा शहर के आसमान पर पूरा चांद अपनी छटा बिखेर रहा था। अनगिनत मीनारों पा पालिशदार खपरैलें चमक रही थीं। बुनियादों के बड़े-बड़े पत्थर नीले कुहासे से ढके थे। हल्की हवा हौले-हौले चल रही थी। ऊपर छतों पर ठंडक थी। लेकिन नीचे, जहां जमीन और धूप से तपी दीवालों को रात की हवा में ठंडा होने का वक्त न मिला था, दम घोटने वाली गर्मी थी। महल, मसजिदों व झोंपड़ों में—हर तरफ—नींद छायी थी। महज उल्लू अपनी तीखी आवाजों से पाक शहर के गर्म आराम में खलल डाल रहे थे।

ख्वाजा नसरुद्दीन खुली खिड़की में बैठा था। उसके दिल को यकीन था कि गुलजान अभी सोयी नहीं है, कि वह जाग रही है और उसी के बारे में सोच रही है। शायद, इस घड़ी वे दोनों एक ही मीनार को ताक रहे हैं, मगर एक-दूसरे को न देख पा रहे हों, क्योंकि उनके बीच दीवालें, लोहे के सींखचोंवाली जालियां, जनाने पहरेदारों और बूढ़ी औरतों की रोकें थीं। ख्वाजा नसरुद्दीन को महल में घुसने का मौका तो मिल गया था, लेकिन हरम में पहुंचने का अब भी कोई रास्ता नहीं ...

और कान छू। उसे मेरा प्यार दो और मेरा संदेशा उससे कह। उससे कह कि मैं उसे भूला नहीं हूं। उससे कह कि मैं आऊंगा, जरूर आऊंगा और मुझे छुड़ा लूंगा।"

हवा तेजी से निकल गयी। गमजदा ख्वाजा नसरुद्दीन को वह जहां का तहां छोड़ गयी।

परेशानियों व मुसीबतों के दिन एक के पीछे एक इसी तरह गुजरते रहे। रोज ही ख्वाजा नसरुद्दीन को दरबार-आम में पहुंच कर अमीर का इन्तजार करना पड़ता, दरबारियों की चापलूसी सुननी पड़ती, बख्तियार की काइयां साजिशों की असलियत समझनी पड़ती। फिर, अमीर के सामने बन्दगी करनी पड़ती, उनकी तारीफें गानी पड़तीं और दिल में नफरत छिपाये घंटों उनका ऐंठा हुआ और थलथल चेहरा देखते रहना पड़ता, कान लगाकर उनकी बेवकूफी की बातचीत सुननी पड़ती और सितारों की कैफियत समझानी पड़ती। ख्वाजा नसरुद्दीन इस सबसे इतना ऊब गया था और इतना थक गया था कि अब उसने नयी वजहें ढूंढनी बन्द कर दी थीं। हर बात को—चाहे अमीर का सिरदर्द हो, चाहे गल्ले की महंगाई—उन्हीं लफ्जों और कोणों (योगों) के जरिये समझाना शुरू कर दिया था।

मक्खी की तरह भनभनाता हुआ वह कहता : "सितारे सादउज्जबीह दल्व (कुम्भ) के बुर्ज (राशि) के मुखालिफ हैं और सैयारा मुश्तरी अकरब (वृश्चिक) के बुर्ज के बायें पर हैं। कल रात अमीर को नींद न आने की यही वजह थी।"

अमीर दोहराते : "सितारे सादउज्जबीह ... के मुखालिफ हैं... मुझे यह ... ... नौ कहना, मौलाना हुसैन, ... चाहिए... फिर ...

अमीर की याददाश्त ... ...जोर ... ...

अगले दिन फिर वही बातचीत शुरू होती...

पर मर्दायियों की मौत का सबब यह है कि सितारे सादज्जबीह दल्व के बुर्ज में है और सैयारे मुश्तरी अकरब के बुर्ज के मुख़ालिफ़ हैं...।"

"तो सितारे सादज्जबीह...मुझे यह याद कर लेना चाहिए," अमीर फिर कहते।

थककर ख़ोजा नसरुद्दीन सोचने लगता : "या ख़ुदा यह कैसा बेवक़ूफ़ है। यह तो मेरे पिछले मालिक से भी बढ़-चढ़कर बेवक़ूफ़ निकला। मैं तो इससे ऊब उठा हूं, ऐ अल्लाह, कब मैं इस महल से छुटकारा पाऊंगा।"

इस बीच अमीर बातचीत का कोई दूसरा सिलसिला शुरू कर देते : "मौलाना हुसैन। हमारे राज में हर तरफ़ अमन-चैन है, रिआया ख़ुश है। अब बदमाश ख़ोजा नसरुद्दीन का ज़िक्र भी सुनाई नहीं पड़ता। कहां चला गया है वह ? वह ख़ामोश क्यों है ? हमें यह बताइये न सही।"

थकान से चूर ख़ोजा नसरुद्दीन वे ही बातें मनभनाना शुरू कर देता जो वह पहले कितनी बार दोहरा चुका था : "ऐ बादशाह सलामत ! ऐ क़ादिरे मुतलक़। सितारे सादज्जबीह ...और इसके अलावा, ऐ अमीरे-आज़म, बदमाश ख़ोजा नसरुद्दीन बग़दाद जा चुका है। मेरे इल्म के बारे में उसे ज़रूर जानकारी है। जब उसे पता चला कि मैं बुख़ारा आ गया हूं, तो वह डर और कंपकंपी के मारे छिप गया, क्योंकि वह जानता था कि मैं उसे कितनी आसानी से गिरफ़्तार कर सकता हूं।"

"गिरफ़्तार ? यह तो बहुत अच्छी बात होगी। लेकिन उसे गिरफ़्तार करोगे कैसे ?" अमीर पूछते।

"इसके लिए मैं सितारे सादज्जबीह और सैयारे मुश्तरी
बुर्ज में पहुंचने का इन्तज़ार करूंगा।"

दोहराते : "सैयारे मुश्तरी...मुझे याद रखना

मावर्दोलत को एक बहुत बढ़िया ख्याल आया। हमने सोचा कि बौलियार को निकालकर तुम्हें वज़ीरे-आज़म बना दिया जाय।"

इस पर ख़ोजा नसरुद्दीन को अमीर के सामने ज़मीन पर लेटकर कोर्निश करनी पड़ी, उनकी तारीफ़ें करनी पड़ीं, उनका शुक्रिया अदा करना पड़ा और उन्हें समझाना पड़ा कि सितारे साहबज़ादीह को कैफ़ियत इस वक्त वज़ीरों में तब्दीली के लिए बदशगुनी की हैं। उसने मन ही मन सोचा, अब जल्द यहां से भाग निकलने का वक्त आ गया है।

मौके की तलाश में ख़ोजा नसरुद्दीन नाउम्मीदी की घड़ियां काट रहा था।

उसका दिल बाज़ार, भीड़, चायख़ानों पुर-मस्ती मज़ारों के लिए ललक उठता। अमीर के बढ़िया से बढ़िया लज़ीज़ खाने को वह बाज़ार के सस्ते पुलाव की कड़ी बोटियों या प्याज़ व चरपरी काली मिर्चों वाले पापों के शोरबे से बदलने को तैयार था चापलूसी और तारीफ़ के बदले सादी बातचीत और ज़ोर की दिल-खोल हंसी के लिए वह अपने सोने के लिबास को फ़ौरन दे डालने को तैयार था।

लेकिन किस्मत ख़ोजा नसरुद्दीन का इम्तिहान ले रही थी, जिसका वह इतनी बेताबी से इन्तज़ार कर रहा था। इस बीच अमीर लगातार उससे पूछताछ करते रहते कि वह अपनी नयी दास्ता का नकाब उठाने का मौका कब पायेंगे, यानी सितारे कब मुबारक होंगे।

: २ :

अमीर ने ख़ोजा नसरुद्दीन को एक दिन बेवक्त बुला भेजा। अभी तड़का था। फव्वारे नाच रहे थे। फ़ाख़्ताएं गुटर-गूं-गुटर-गू करती हुई पर फड़फड़ा रही थीं।

शाही आरामगाह जाने वक्त लाल और सफेद ज्यादा पत्थर की सीढ़ियों पर चढ़ता हुआ ख्वाजा नसरुद्दीन सोचने लगा : "अमीर को मुझ से इस वक्त क्या काम हो सकता है?"

रास्ते में उसकी मुलाकात बख्तियार से हुई जो आरामगाह से चुपचाप साये की तरह निकला था। बिना रुके उनकी दुआ-सलाम हुई। ख्वाजा नसरुद्दीन को लगा कि कोई साजिश की गयी है और वह होशियार हो गया।

आरामगाह में उसे ख्वाजा सरा मिला अस्मत मआब ख्वाजा सरा शाही कोंच के सामने पड़ा जोर-जोर से कराह रहा था। उसके पास ही कालीन पर सोने की मूठ वाले बेंत के टुकड़े बिखरे पड़े थे।

भारी-भरकम मखमली पर्दे सुबह की ताजी हवा, सूरज की किरणों और चिड़ियों की चहचहाट को आरामगाह में घुसने से रोक रहे थे। लैम्प से हलकी रोशनी फैल रही थी। मामूली मिट्टी के दिये के लैम्प की तरह इससे भी बू और धुंआ निकल रहा था।

एक कोने में नक्काशीदार धूपदान से मीठी चरपरी महक आ रही थी। लेकिन लैम्प में जलती भेड़ की चर्बी की बू पर यह महक काबू न पा रही थी। आरामगाह की हवा इतनी घुटी हुई थी कि ख्वाजा नसरुद्दीन की नाक खुजलाने लगी और गले में खर-खराहट पैदा हो गयी।

अमीर रेशमी लिहाफ के बाहर बालों भरी टांगें लटकाये बैठे थे। ख्वाजा नसरुद्दीन ने देखा कि उनकी आंखें गहरी पीली हैं मानो उन्हें वह हिन्दु-न के ऊपर सेंकते रहे हों।

हुसैन !" अमीर बोले : "मामदौलत बहुत हमारा ख्वाजा सरा, जिसे तुम यहां हो, इस गम का सबब है।"

ख्वोजा नसरुद्दीन घबरा उठा : "ओह ! यह
क्या इसने कोई गुस्ताखी करने की मजाल की थी ?"

"अरे नहीं !" अमीर ने हाथ हिलाकर मुंह ब
हुए कहा । "अपनी अक्लमन्दी से हमने पहले
सब बातें सोच-समझकर होशियारी बरत रखी थ
भला इसकी मजाल ऐसी हो ही कैसे सकती थ
इसे ख्वाजा सरा बनाने से पहले ही पूरी होशिय
बरती गयी थी । नहीं, यह बात नहीं है । हमें
पता लगा है कि यह बदमाश हिजड़ा, सल्तनत
सबसे बड़े ओहदों में से एक पर मुकर्रर किये जाने
हमारी मेहरबानी भूलकर, अपना फर्ज पूरा करने
गफलत करता रहा है ।

"इस बात का फायदा उठाकर कि इधर हम अ
रखैलों के पास नहीं जा रहे हैं, इसने तीन
तक लगातार हरम न जाकर हशीश (गांजा)
की लत में मशगूल रहने की गुस्ताखी की है ।
हमारी दासताएं, अपने को अकेला पाकर, आपस
लड़ती-झगड़ती रहीं और एक-दूसरे के मुंह और
नोचती रहीं । जाहिर है, इससे बहुत नुकसान
है, क्योंकि नुचे हुए मुंह या गंजे सिरवाली अ
हमारी निगाह में मुकम्मल हुस्नवाली नहीं हो
अलावा इसके, एक दूसरी बात भी हुई, जिसका
बहुत अफसोस है । हमारी नयी दासता बीमार
गयी है । तीन दिन से उसने खाना नहीं खाया ।

ख्वोजा नसरुद्दीन चौंक उठा । अमीर ने ह
से उसे खामोश किया ।

"ठहरो ! अभी हमने बात खत्म नहीं की ।
बीमार है और शायद बचे नहीं । अगर हम उ
एक मर्तबा मिल चुके होते तो उसकी बीमारी या
से हमें ज्यादा तकलीफ न होती । लेकिन मौ
हुसैन ! तुम खुद समझ सकते हो कि जो हाल
उससे हम किस कदर नाराज हैं । इसलिए,"

ने यहा आवाज ऊंची की, "हमने तय किया है कि आइन्दा की परेशानियों और तकलीफों से बचने के लिए हम इस बदमाश गंजेड़िये को अपने ओहदे से बरखास्त कर दें और इसे दो सौ कोड़ों की सजा दें। जहां तक तुम्हारा ताल्लुक है, मौलाना हुसैन, हमने तुम्हें हरम के ख्वाजा सरा की खाली जगह पर मुकर्रर करने की मेहरबानी फरमायी है।"

ख्वाजा नसरुद्दीन को लगा कि उसकी सांस गले में फंसकर रह गया है। उसे अपने पेट में अजब ठंडापन महसूस हुआ। पैरों में कमजोरी हो रही थी।

भवें चढ़ाकर नाराजी से अमीर ने पूछा : "क्या तुम बहस करना चाहते हो, मौलाना हुसैन ? हमारी शाही शख्सियत की खिदमत करने की खुशी हासिल करने के बजाय क्या तुम नाकाम और चन्दरोजा हवस को पूरा करना चाहते हो?"

ख्वाजा नसरुद्दीन अब तक सम्भल चुका था और होश-हवास दुरुस्त कर चुका था। झुककर कोर्निश करता हुआ बोला :

"अल्लाह हमारे ताजदार का साया हमेशा हमारे सिर पर कायम रखे। मुझ नाचीज गुलाम पर अमीर की बेशुमार मेहरबानियां हैं। हमारे शहंशाहे-आजम को अपनी रिआया के दिल की पोशीदा ख्वाहिशें मालूम कर लेने का जादू जैसा हुनर हासिल है। इसी से वह अपनी रिआया को लगातार रहम और करम से लाद देते हैं। बहुत मर्तबा मुझ नाचीज गुलाम ने इस काहिल और बेवकूफ इंसान की जगह, जो इस वक्त बिलकुल मुनासिब सजा पाकर फर्श पर पड़ा रो रहा है, लेने की तमन्ना की है। न जाने कितनी बार यह तमन्ना मेरे दिल में उठी। लेकिन मैं अमीर से इसका जिक्र करने की हिम्मत नहीं कर पाया। अब चूंकि हुजूर ने खुद ही . . ."

खुश होकर अमीर ने मुलायमियत से कहा : "तो

फिर देर क्यों हो? मामदौलत अभी हकीम को
हैं। वह अपने चाकू ले आयेगा और तुम उस
कहीं तनहाई में चले जाना। इस बीच हम ब
को बुलाकर तुम्हें ख्वाजा सरा मुकर्रर करने का
जारी करते हैं।"

अमीर ने ताली बजायी।

दरवाजे की तरफ घबराहट से देखता हुआ
नसरुद्दीन जल्दी से बोला - "बादशाह सला
नाचीज के हकीर लफ्जों को सुनने की तकली
माएं। मैं बखुशी फौरन हकीम के साथ तन
जाने को तैयार हूं। सिर्फ बादशाह की खुशी
मुझे ऐसा करने से रोक रही है। हकीम से
के बाद मुझे कई दिन बिस्तरे पर गुजारने पड़
इस बीच नयी दाश्ता मर भी सकती है।
अमीर का दिल सदमे के धुन्ध से घिर जाये
इस बात का खयाल भी इस गुलाम को बादा
हो सकता। इसलिए मेरी सलाह तो यह है कि
उस दाश्ता की सेहत को ठीक कर दिया ज
फिर मैं अपने को हकीम के सिपुर्द करके ख्वा
के ओहदे के काबिल बनने की तैयारी मे
जाऊं "

"हूं!" शक की निगाह से नसरुद्दीन क
हुए अमीर ने कहा।

'ऐ आका! उसने तीन दिन से खा
खाया है।"

'हूं!" अमीर फिर बोले। फिर वह फर्द
हिजड़े की तरफ पलटे और बोले "अबे!
नाकिस औलाद। जवाब दे! क्या हमा
दाश्ता बहुत बीमार है और क्या हमें उ
का अंदेशा होना चाहिए?"

जवाब के इन्तजार में ख्वाजा सरा के
दश पसीना आ गया।

नहीं सकता। मुझे अपने पेशे का इतना ज्यादा इल्म है कि मैं मरीज़ों की रंगत देखकर ही बीमारी का पता लगा सकता हूं। इसलिए, मेरे लिए उसका हाथ देख लेना ही काफी होगा।"

"हाथ!" अमीर बोले। "यह तुमने पहले क्यों नहीं कहा, ताकि मुझे गुस्सा न आता? हाथ! हां, यह तो हो सकता है। तुम्हारे साथ हम हरम में चलेंगे। हमें उम्मीद है कि तुम हमारी दाश्ता का सिर्फ हाथ देखोगे तो हमें हसद न होगी।"

ख्वाजा नसरुद्दीन ने तसल्ली देते हुए कहा : "बादशाह सलामत को कतई हसद नहीं होगी।"

वह सोच रहा था कि गुलजान से अकेले में तो कभी मुलाकात हो नहीं सकेगी और किसी न किसी गवाह की मौजूदगी जरूरी है, इसलिए बेहतर है कि गवाह खुद अमीर हों, ताकि वह शक-शुबहा न कर सकें।

: १ :

आखिर हरम में पैर रखने का मौका ख्वाजा नसरुद्दीन को मौका मिल ही गया, जिसकी तलाश में वह इतने दिनों से बेचैन था।

अदब से झुककर पहरेदार एक तरफ को हट गये। दरवाज़े का चौखटा पार कर अमीर के पीछे-पीछे चलते ख्वाजा नसरुद्दीन ने लकड़ी का एक फाटक पार किया और एक खूबसूरत बागीचे में जा पहुंचा। जहां ढेरों गुलाब, गुलबहार व गुलमेहंदी के फूलों के बीच कासनी और सफेद संगमर्मर के हौजों में फव्वारे चल रहे थे और उन पर हलकी भाप छायी हुई थी। फूलों और घास पर शबनम की बूंदें चमक रही थीं।

ख्वाजा नसरुद्दीन पर एक रंग आता था, एक जाता था। हिजड़े ने अखरोट की लकड़ी का नक्काशीदार दरवाज़ा खोला। अन्दर के अंधेरे हिस्से में आकर,

गुलाब और लोबान के इत्र की गहरी सुगन्ध आयी। यहीं वह हरम था जहां अमीर की हसीन दाश्ताएं कैद थीं।
ख़ोजा नसरुद्दीन ने बड़ी होशियारी से कोनों, गलियारों, मोड़ों और सीढ़ियों का हिसाब लगाया ताकि फ़ैसलाकुन मौक़े पर वह रास्ता न भूल जाय और इस तरह अपने और गुलजान के ऊपर मुसीबत खड़ी करे। दिल ही दिल में वह याद करता जाता था : "दाहिने, फिर बायें, यहां रहा ज़ीना—जिस पर एक हिजड़े का पहरा है, अब फिर दाहिने ."
रंगीन चीनी शीशों से छनकर आने वाली नीली, हरी, गुलाबी रोशनी से रास्ता रौशन था। नीचे एक महराबी दरवाज़े के सामने हिजड़ा रुक गया।
"ऐ मेरे आक़ा, यहीं है वह।"
अमीर के पीछे-पीछे ख़ोजा नसरुद्दीन ने भी उस दरवाज़े को पार किया जिसके अन्दर उसकी किस्मत कैद थी।
कमरा छोटा था। उसका फ़र्श व दीवारें कालीनों से ढकी थीं। ताक़ों पर सीप की टोकरियों में बुन्दे, गुलूबन्द, बाज़ूबन्द रखे थे और चांदी का एक बड़ा आईना दीवाल से लटक रहा था। बेचारी गुलजान ने इतनी दौलत सपने में भी नहीं देखी थी। ख़ोजा नसरुद्दीन ने मोती-जड़ी उसकी जूतियां देखीं तो सिहर उठा। जूतियों की एड़ियां घिसने का वक़्त गुलजान ने यहीं गुज़ारा था।
कमरे के एक कोने में रेशम के पर्दों की तरफ़ इशारा करता हुआ हिजड़ा बोला : "वहां सो रही है वह।"
ख़ोजा नसरुद्दीन को फुरफुरी आ गयी। इतने क़रीब थी उसकी दिलरुबा। अपने को डांटकर उसने मन ही मन कहा : "ख़ोजा नसरुद्दीन! ख़बरदार! ज़ब्त कर! फ़ौलाद बन जा।"
वह पर्दे के पास पहुंचा तो नींद में ग़ाफ़िल गुलजान की सांसें सुनायी दीं। मसेहरी के ऊपर उसने रेशम का

उठते-गिरते देखा। उसका गला भर आया और आवाज फंस गयी—मानो लोहे में जकड़ दी गयी हो। आंखों से आंसू बहने लगे और सांस थम गयी।

"मौलाना हुसैन," अमीर ने कहा, "क्या बात है? इतनी सुस्ती क्यों दिखा रहे हो?"

"बादशाह सलामत! मैं इसकी सांसें सुन रहा हूं। पर्दे के पीछे से मैं नाजनीन के दिल की धड़कनों को सुनने की कोशिश कर रहा हूं। ऐ हुजूर, इसका नाम क्या है?"

"इसका नाम है—गुलजान।" अमीर ने जवाब दिया।

ख्वाजा नसरुद्दीन ने हौले से पुकारा : "गुलजान!"

मसहरी के ऊपरी हिस्से पर उठता-गिरता रेशम रुका। गुलजान जाग गयी थी। वह सांस रोके पड़ी थी। उसे यकीन नहीं आ रहा था कि सचमुच वह अपने प्यारे की ही आवाज सुन रही है। वह सोच रही थी—शायद यह सपना है।

ख्वाजा नसरुद्दीन ने फिर पुकारा : "गुलजान!"

इस बार गुलजान के मुंह से एक हल्की-सी चीख निकली।

ख्वाजा नसरुद्दीन जल्दी से बोला : "मेरा नाम मौलाना हुसैन है। मैं नया हकीम, नजूमी व आलिम हूं। अमीर की खिदमत के लिए मैं बगदाद से आया हूं। तुम समझ रही हो न, गुलजान! मैं नया हकीम, नजूमी व आलिम हूं। मेरा नाम मौलाना हुसैन है।"

अमीर की तरफ पलटकर वह बोला : "किसी सबब से मेरी आवाज सुनकर यह डर गयी है। मुमकिन है कि शहंशाह की गैर-मौजूदगी में हिजड़ा इससे बेरहमी से पेश आया हो।"

अमीर ने लाल-लाल आंखों से हिजड़े को ताका। कांप कर वह जमीन तक झुक गया। बोलने तक की उसकी हिम्मत न हुई।

ख्वाजा नसरुद्दीन बोला : "ऐ गुलजान, तुम्हारे सिर

पर खतरा मंडरा रहा है । लेकिन मैं तुम्हें बचा लूंगा । तुम्हें मुझ पर पूरा यकीन करना चाहिए । मैं हर मुश्किल और मुसीबत पर काबू पा सकता हूं।"

"बगदाद के आलिम, नामवर हकीम," गुलजान धीमी और बारीक आवाज में बोली, "मैं आपकी बातें सुन रही हूं मैं आपको जानती हूं और आपका यकीन करती हूं । मैं यह बात खुद शहंशाह की मौजूदगी में कहती हूं जिनके कदम मुझे पर्दे के पीछे की दराज से दीख रहे हैं ।"

इस बात का ख्याल रखते हुए कि अमीर की मौजूदगी में उसे आलिमाना और इज्जतदार लहजे में ही बातें करनी चाहिएं, ख्वाजा नसरुद्दीन जरा सख्ती से बोला : "जरा मुझे अपना हाथ दो गुलजान, ताकि तुम्हारे नाखूनों के रंग से मैं तुम्हारी बीमारी का सबब जान सकूं।"

रेशम का पर्दा कुछ हिला और एक तरफ सरका । ख्वाजा नसरुद्दीन ने आहिस्ते से गुलजान का नाजुक हाथ थाम लिया । सिर्फ उसका हाथ दबाकर ही वह अपने दिल की बात कह सकता था । गुलजान ने भी जवाब में उसका हाथ हौले से दबाया। ख्वाजा नसरुद्दीन देर तक उसकी हथेली देखता रहा ।

मन ही मन वह सोच रहा था : "कितनी दुबली हो गयी है बेचारी!"

उसके दिल में एक हूकसी उठी । अमीर उसके कन्धे पर से झांक रहा था । उसके कानों पर अमीर की गहरी सांस सुनायी पड़ रही थी । ख्वाजा नसरुद्दीन ने गुलजान की सबसे छोटी उंगली का नाखून अमीर को दिखाया और बदशगुनी के ढंग से सिर हिलाया। हालांकि यह नाखून भी बिलकुल दूसरे नाखूनों जैसा ही था, लेकिन अमीर ने उसमें कुछ अजब चीज भांप

ली, होंठ भींचे और जानकारी की निगाह से ख्वाजा नसरुद्दीन को देखा ।

"कहां दर्द होता है ?" ख्वाजा नसरुद्दीन ने पूछा ।

"दिल में ।" लम्बी सांस लेकर गुलजान बोली। "मेरा दिल गम और चाहत के दर्द से भरा है ।"

"तुम्हारे गम की वजह ?"

"वजह है यह कि जिससे मैं मुहब्बत करती हूं, वह मुझ से जुदा है ।"

"यह बीमार है" ख्वाजा नसरुद्दीन ने अमीर के कान में फुसफुसाया, "क्योंकि यह शहंशाह से जुदा है ।"

खुशी से अमीर का चेहरा खिल उठा । उनकी सांस जोर से चलने लगी ।

"मैं जिससे मुहब्बत करती हूं, वह मुझ से जुदा है," गुलजान बोली, "और अब मुझे लगता है कि मेरा प्यारा बिलकुल करीब है । लेकिन मैं न तो उसे गले लगा सकती हूं, न उससे प्यार कर सकती हूं । हाय ! वह दिन कब आयेगा जब वह मुझे दिल से लगायेगा और अपने नजदीक रखेगा ।"

"या अल्लाह !" बनावटी अचम्भे से ख्वाजा नसरुद्दीन बोला । "इतने थोड़े अरसे में ही बादशाह सलामत ने इसके दिल में किस कदर इश्क जगा दी है । वल्लाह ! वल्लाह !"

खुशी के मारे अमीर आपे से बाहर हो गये । वह एक जगह खड़े नहीं रह पा रहे थे । आस्तीन में मुंह छिपाये, बेवकूफी से 'ही-ही' करते हुए उछलकूद रहे थे ।

ख्वाजा नसरुद्दीन बोला : "ऐ गुलजान ! फिक्र न करो । जिससे तुम मुहब्बत करती हो, वह तुम्हारी बात सुन रहा है ।"

अपने पर काबू रखने से मजबूर अमीर बीच में ही बोल उठे "बेशक बेशक, गुलजान ! वह सुन रहा है ।"

पर्दे के पीछे से पानी की मुलायम कलकल जैसी हंसी उठी।

लेकिन ख्वाजा नसरुद्दीन ने कहना जारी रखा : "ऐ गुलजान ! खतरा तुम्हारे सिर पर मंडरा रहा है। लेकिन डरो मत ! मैं, मशहूर आलिम, नजूमी और हकीम मौलाना हुसैन, तुम्हें बचा लूंगा।"

अमीर ने भी ये ही लफ्ज दोहराये :

"हां, हां ! हम तुम्हें बचा लेंगे ! जरूर बचा लेंगे !"

ख्वाजा नसरुद्दीन कहता गया : "सुना तुमने, शहंशाह क्या फरमा रहे हैं ? सुन रही हो न ? तुम मुझ पर यकीन रखो। सितारों से मैं तुम्हें बचा लूंगा। तुम्हारी खुशी का दिन बहुत नजदीक है। फिलहाल, बादशाह सलामत तुम्हारे पास नहीं आ सकेंगे क्योंकि मैंने उन्हें आगाह कर दिया है कि सितारों का हुक्म है कि वह किसी औरत का नकाब न छुएं। लेकिन सितारे अपना अंदाज बदल रहे हैं। तुम समझ रही हो न, गुलजान ? सितारे अपना अन्दाज बदल रहे हैं ! जल्द ही सितारे मुबारक होंगे और तुम प्यारे की बाहों में होगी। जिस दिन मैं तुम्हें दवा भेजूंगा उसका अगला दिन तुम्हारी खुशी का दिन होगा। समझ रही हो न तुम मेरी बात ? हां, दवा पाने के अगले दिन तुम तैयार रहना।"

खुशी से हंसती और रोती हुई गुलजान बोली :

"शुक्रिया ! ऐ मौलाना हुसैन, लाख-लाख शुक्रिया। बीमारियों का लासानी इलाज करनेवाले दाना आलिम, आपका शुक्रिया ! मेरा प्यारा मेरे नजदीक है। मुझे लगता है कि मेरे और उसके दिल की धड़कन एक हो गयी है।"

अमीर और ख्वाजा नसरुद्दीन वापस लौटे। ख्वाजा सरा दौड़कर फाटक पर आया और घुटनों के बल गिरकर बोला :

"ऐ मेरे आका ! वाकई, ऐसा होशियार हकीम दुनिया में दूसरा नहीं। तीन दिन से वह बिना हिले-डुले पड़ी

थी। लेकिन अब यकायक पलंग छोड़कर वह उठ बैठी है। वह गा रही है, हंस-हंसकर नाच रही है। ऐ हुज़ूर, मैं उसके पास गया तो उसने मेरे कान पर घूंसा जड़ने की मेहरबानी की।"

"सचमुच वह मेरी ही गुलजान है।" ख़ोजा नसरुद्दीन ने सोचा। "अपने घूंसों का इस्तेमाल करने में गुलजान हमेशा फ़ुर्ती दिखाती है।"

सुबह के खाने के वक्त अमीर ने सभी दरबारियों को बख्शीश दी। ख़ोजा नसरुद्दीन को उन्होंने दो थैलियां दीं—चांदी के सिक्कों से भरी एक बड़ी थैली और सोने के सिक्कों से भरी एक छोटी थैली।

हंसते हुए अमीर बोले : "हा-हा-हा . . .! तुमने भी कैसी ज़ोर की हलचल जगा दी है उसमें! मानना पड़ेगा तुम्हें भी मौलाना हुसैन, ऐसी आग तुमने अक्सर नहीं देखी होगी। कैसी कांप रही थी उसकी आवाज़; कैसे एक साथ वह हंस और रो रही थी! लेकिन उस नज़ारे के मुकाबले यह कुछ भी नहीं है जो तुम ख़्वाजा सरा के ओहदे पर पहुंचकर देखोगे।"

दरबारियों की कतारों में फुसफुसाहट फैल गयी। बख्तियार कांइयापन से मुस्कराया। अब ख़ोजा नसरुद्दीन की समझ में आया कि उसे ख़्वाजा सरा बनाने की सलाह अमीर को किसने दी थी।

अमीर बोले : "अब उसकी तबीअत सम्भल गयी है और तुम्हें नया ओहदा संभालने में देर नहीं करनी चाहिए, मौलाना हुसैन। तुम अभी हकीम के साथ जाओ। अरे तुम," वह हकीम की तरफ मुख़ातिब हुए, "जाओ, और अपने चाकू ले आओ। बख्तियार, तुम यह हुक्म लिखकर मेरे पास लाओ।"

गर्म भाप से ख़ोजा नसरुद्दीन का हलक जल गया और वह खांसने लगा। लिखा हुआ हुक्म लेकर बख्तियार आगे बढ़ा। ख़ुशी और बदले की तमन्ना से उसका

किस भागों उठाकर लाया था। अमीर को कलम दिया गया। हुक्म पर उन्होंने दस्तखत किये और खुशनुमा बख्तियार को सौंप दिया।

इस पूरे कारवाई में एक मिनट से भी कम वक्त लगा होगा।

"ऐ दाना आलिम, मौलाना हुसैन साहब! खुशी की इंतिहा से शायद आप बोल भी नहीं पा रहे! तो भी, अदब की मांग है कि आप शुक्रिया अदा करें।" बख्तियार बोला।

ख्वाजा नसरुद्दीन तख्त के सामने झुक गया।

"आखिर मेरी तमन्ना बर आयी।" वह बोला। "अमीर की दाढ़ के लिए दवा तैयार करने में जो देर होगी, सिर्फ उसका मुझे गम है। उसके इलाज के बाबत पूरी तसल्ली होनी चाहिए, नहीं तो बीमारी फिर घर कर जायेगी।"

"क्या दवा बनने में इतनी देर लगेगी?" परेशानी से बख्तियार ने सवाल किया। "आध घंटे में तो दवा जरूर तैयार हो जायेगी..."

"बिलकुल ठीक! आधा घंटा काफी होगा।" अमीर ने भी हामी भरी।

अब अपना सबसे आखिरी, लेकिन सबसे कारगर, हरबा इस्तेमाल करता हुआ ख्वाजा नसरुद्दीन बोला:

"ऐ आका-ए-नामदार! यह तो सितारे सादुज्जबीह पर मुनहसर है। उसकी जगह के मुताबिक दवा तैयार करने में मुझे दो से पांच दिन तक लग सकते हैं।"

"पांच दिन?" बख्तियार चिल्ला उठा। "मौलाना हुसैन! दवा तैयार होने में पांच दिन लगते तो मैंने कभी नहीं सुने।"

अमीर को मुखातिब कर ख्वाजा नसरुद्दीन ने कहा "अमीरे-आजम शायद उस नयी दाढ़ का इलाज आइन्दा वजीर बख्तियार से कराना पसन्द करें। वह

कोशिश करूँ तो शायद उसे चंगा भी कर दें। लेकिन उस
हालत में उसकी जिन्दगी की जिम्मेदारी मैं नहीं
लूँगा।"

घबराकर अमीर बोले : "क्या कहा, मौलाना हुसैन !
तुम कह क्या रहे हो ? बख्तियार तो दवादारू के बारे
में कुछ भी नहीं जानता। न ही वह इतना होशियार
है। मायदौलत यह बात तुम्हें पहले भी बता चुके हैं—
जब तुम्हें वजीरे-आजम का ओहदा देने की बात कही
थी।"

वजीरे-आजम बख्तियार को कपकपी आ गयी।
हर भरी नजरों से उसने ख्वाजा नसरुद्दीन को देखा।
अमीर बोले "जाओ और दवा तैयार करो, मौलाना
सैन। लेकिन पांच दिन बहुत होते हैं। क्या तुम
ससे कम वक्त में दवा नहीं तैयार कर सकते ? हम
हते हैं कि अपने नये ओहदे को तुम जल्द से जल्द
भाल लो।"

"ऐ शहंशाहे-आजम ! मैं तो उस ओहदे के लिए
द आपका हूँ। मैं खुद ही जल्द से जल्द दवा तैयार
ने की कोशिश करूंगा।"

कोर्निश करता, उल्टे पैरों चलता, ख्वाजा नसरुद्दीन
बार से लौट चला। बख्तियार उसे देखता रहा।
की शक्ल से जाहिर था कि अपने दुश्मन और रकीब
कायमत लौट आने से वह कितना कुढ़ रहा है।
पर, गुस्से से दांत किटकिटाता हुआ ख्वाजा नसर
न कह रहा था : "बख्तियार ! सांप के बच्चे ! दगा-
र मक्कार ! तेरा दांव खाली गया। अब तू मुझे
तान नहीं पहुंचा सकेगा, क्योंकि मैं जो कुछ
ना चाहता था, जान गया हूँ। अमीर के हरम में
के रास्ते, दरवाजे और वापसी के रास्ते मुझे मालूम
गये हैं। और तू, मेरी दिलवर गुलजान ! कम्बख्त
[illegible] र में ख्वाजा नसरुद्दीन को बचाने
न बीमार पड़ी। सचमुच तू बहुत

[illegible] हूँ [illegible] इन्तजाम का [illegible] है कि
न, जिन्हें अपनी जवान रही थी।"

वह मीनार की तरफ चल पड़े। मीनार के नीचे [illegible] में [illegible] वाले [illegible] रहे थे। उनमें से एक [illegible] कुछ हद पहुँचा था। [illegible] के लिए अब [illegible] अपने [illegible] ऊपर रखा था।

छिप गये थे। लेकिन मीनार की मोटी दीवारों के भीतर नम और ठण्डी [illegible] थी। ख्वाजा नसरुद्दीन ने [illegible] सीढ़ियों को पार किया। अपने कमरे के दरवाजे तक पहुँचा, लेकिन वहाँ से आगे बढ़कर ऊपर [illegible] के कमरे में चला गया।

बूढ़े की दशा इस वक्त बड़ी [illegible] हो रही थी। कैद में रहते-रहते उसकी दाढ़ी और बाल बढ़ गये थे। घनी भवों के नीचे आँखें चमक रही थीं।

ख्वाजा नसरुद्दीन पर उसने गालियों की बौछार शुरू कर दी : "अबे हरामजादे ! तू यहाँ मुझे कब तक बन्द रखेगा ? खुदा करे तेरे सिर पर पत्थर गिरें और तलवे से निकलें ! बदमाश ! दगाबाज ! पाजी ! तूने मेरा नाम, मेरी पोशाक, मेरा साफा, मेरा पटका चुरा लिया ! तेरे बदन में कीड़े पड़ें ! तेरा जिगर और पेट सड़ जाय !"

ख्वाजा नसरुद्दीन ऐसी बौछार का आदी हो चुका था। उसने बुरा न माना।

"किबला मौलाना हुसैन ! आपके लिए आज मैंने एक नया सजा तजवीज की है। रस्सी के फन्दे में लकड़ी बांधकर आपका सिर दबाया जायेगा। पहरेदार नीचे बैठे हैं। आपको इतनी जोर से चीखना चाहिए कि वे सुन लें।"

बूढ़ा सींखचे वाली खिड़की के पास गया और वहां से एक सांस में चिल्लाने लगा :

"या अल्लाह ! मुझे कितनी तकलीफ है ! हाय, हाय !

मेरा सिर न दबाओ । रस्सी के फन्दे से सिर न
मर गया । ऐसी तकलीफ से तो मौत भली !'
खोजा नसरुद्दीन ने बीच में ही टोका :
मौलाना हुसैन ! रुकिए ! देखिए, आप चिल्ल
काहिली बरतते हैं । आपकी चीख से यकीन न
कि सचमुच आपका सिर बेरहमी से दबाया
है । याद रखिए, पहरेदार ऐसे मामलों में ब
कार हैं । अगर उन्हें शक हो गया कि आप
चीख-पुकार मचा रहे हैं तो अर्सलां बेग को
देंगे और तब आप किसी असली जल्लाद के
पड़ जायेंगे । चिल्लाने में जोर लगाना तो
फायदे की बात है । देखिए, मैं बताता हूं कै
चाहिए ?"

वह खिड़की के पास गया, सांस भरी औ
इतने जोर से चीखा कि बूढ़ा कान बन्द कर
हट गया ।

शिकायती लहजे में वह बोला : "अरे,
औलाद ! मैं ऐसा गला कहां से लाऊं ? अ
इस तरह कैसे चिल्लाऊं कि आवाज शहर
कोने तक पहुंच जाय ?"

"असली जल्लादों के हाथ नहीं पड़ना
यही एक सूरत है ।" खोजा नसरुद्दीन ने क

बूढ़े ने फिर कोशिश की और पूरा जोर ल
अब वह इतनी दर्दभरी आवाज में चिल्ला र
मीनार के नीचे बैठे पहरेदारों ने जुआ रोक
उसकी तकलीफ का मजा लेने लगे ।

चीखने की कोशिश में बूढ़े को खांसी आ
गला धपधपाने लगा । रिरियाता हुआ वह बो

"हाय, हाय ! हाय मेरा गला ! ओफ
कितना जोर पड़ा है इस पर ! अबे नाकिस
अब तो तू खुश है ? इजराईल (मौत का फ
[illegible] ?"

"हां, अब मुझे इतमीनान हुआ।" ख्वाजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया। "मौलाना हुसैन ! अपनी इस कोशिश के लिए यह इनाम लीजिए।"

अमीर से मिली थैलियां निकालकर उसने उन्हें एक दरी में उंडेला और दो बराबर-बराबर हिस्सों में बांट दिया। बूढ़ा बैठा कोसता और गाली देता रहा।

ख्वाजा नसरुद्दीन नरमी से बोला : "आप मुझे इस तरह गाली क्यों देते हैं ? मौलाना हुसैन के नाम से क्या मैंने किसी तरह का बट्टा लगाया है ? क्या मैंने उनके इल्म को बदनाम किया है ? आप यह रकम देख रहे हैं ? अमीर ने यह रकम मशहूर नजूमी और हकीम मौलाना हुसैन को अपने हरम की एक लड़की का इलाज करने के लिए दी है।"

"लड़की का इलाज किया था तूने ?" बूढ़े का गला रुंध गया। "जाहिल ! बदमाश ! ठग ! बीमारियों के बारे में तू जानता ही क्या है ?"

"मैं बीमारियों के बारे में तो कुछ नहीं जानता," ख्वाजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया, "लेकिन लड़कियों के बारे में जरूर बहुत-कुछ जानता हूं। सो, मुनासिब यही है कि अमीर से मिला यह इनाम दो हिस्सों में बांट दिया जाय—एक हिस्सा आपका हो, आपके इल्म का; एक हिस्सा मेरा हो, मेरे इल्म का। मैं आपको बता दूं मौलाना साहब, कि मैंने इस लड़की को यूं ही अच्छा नहीं कर दिया, बल्कि सितारों की कैफियत समझकर अच्छा किया है। कल रात मैंने देखा कि सितारे सादससऊद सितारे साद-अल अकबिया के कोनान (योग) में थे और अकरब (वृश्चिक) सरतान की तरफ मुखातिब था।"

गुस्से से बौखलाकर कमरे में इधर-उधर दौड़ता हुआ बूढ़ा चिल्लाया :

"क्या कहा, जाहिल ? तू सिर्फ गधे हांकने के

काहिल है । तू यह भी नहीं जानता कि सितारे साद् अल अर्काबिया के कैरान में आ ही नहीं सकते । वे एक ही कैरान के सितारे तो हैं । अकाब का बुर्ज तुझे इस महीने में दिखायी ही कैसे दे गया ? कल सारी रात मैंने आसमान देखने में गुजारी । सितारे साद्-बुला और अलिमक कैरान में थे और अल-जवह उतार पर । सुन रहा है न तू, काठ के उल्लू ! अकाब इस वक्त है ही नहीं । तू सब गड़बड़ कर देता है । देखो तो, इस गधे हांकने वाले ने उन मामलों में भी दखल देना शुरू कर दिया जिनका इसे कोई इल्म नहीं । सितारे अल्-मुर्दन को, जो अल्-हक के मुखालिफ हैं, तू अकाब समझ बैठा !"

खोजा नसरुद्दीन को जहालत को नुमाया करने के इरादे से बूढ़ा देर तक उसे सितारों की सही कैफियत समझाता रहा । खोजा नसरुद्दीन हर लफ्ज को जेहन में बैठाने लगा था, ताकि आलिमों के सामने अमीर से बात करते वक्त वह गलतियां न कर बैठे ।

"जाहिल ! जाहिल की औलाद ! तेरी सात पुश्तें जाहिल हैं !" बूढ़ा गाड़ी में बकता रहा, "तू यह भी नहीं जानता कि आज-कल, यानी याद की उन्नीसवीं मंजिल में, जो अल्-बुला कहलाती है, और जो कौस (धनु) के बुर्ज में है, इन्सान की किस्मत इसी बुर्ज के सितारों के मातहत होती है और किसी के नहीं । आला दानिशमन्द शहाबुद्दीन महमूद अलकराजी ने अपनी किताब में यह बात बहुत साफ-साफ लिख दी है . . ."

खोजा नसरुद्दीन याद करता गया : "शहाबुद्दीन महमूद अलकराजी . . . कल मैं अमीर की मौजूदगी में लम्बी दाढ़ी वाले आलिम का, इस किताब को बाबत न जानने पर, पर्दाफाश करूंगा । उसके दिल और दिमाग में मेरे इल्म के लिए बहुत इज्जत और खौफ छा जायेगा । यह बहुत मुनासिब बात होगी ।"

सूदखोर जाफर के मकान में सोने से भरे, मुहरबन्द माट मर्तबान थे। लेकिन उसकी हवस थी कि कम से कम बीस मर्तबान हों। तकदीर से उसे शक्ल ऐसी मिली थी कि उसकी बेईमानी और उसका लालच उसकी शक्ल पर साफ झलक आते थे। जो लोग गैर-तजुर्बेकार, सीधे-सादे और भलेमानस थे, वे भी उससे खबरदार रहते थे। उसके लिए नये शिकार फांसना बहुत मुश्किल था। इसीलिए, उसके मर्तबान बहुत धीमी रफ्तार से भर रहे थे।

लम्बी सांस लेकर वह सोचता : "काश ! मैं अपने जिस्म के बदनुमापन से नजात पा जाता। तब लोग मुझे देखकर भागने न लगते। मेरी चालबाजी भांपे बिना वे मेरा भरोसा कर लेते। ओह, तब उन्हें फंसाना कितना आसान होता ! कितनी जल्दी मेरी आमदनी बढ़ती !"

शहर में जब यह अफवाह फैली कि अमीर के नये आलिम मौलाना हुसैन ने इलाज में बड़े हुनर दिखाये हैं, तो सूदखोर जाफर ने बहुत उम्दा सौगातों से एक टोकरी भरी और महल जा पहुंचा।

टोकरी का सामान देखकर अर्सलां बेग ने मदद करने की पूरी रजामंदी जाहिर की।

"किबला जाफर साहब ! तुम बहुत ठीक मौके पर आये। हमारे आका शहंशाह का मिजाज आज बहुत अच्छा है। वह तुम्हारी दरख्वास्त जरूर मान लेंगे।"

अमीर ने सूदखोर की बात सुनी, सोने की हाथीदांत-जड़ी शतरंज में भेंट कबूल की और नये आलिम मौलाना हुसैन को बुला भेजा।

ख्वाजा नसरुद्दीन ने आकर कोर्निश की। अमीर बोले : "मौलाना हुसैन ! यह शख्स सूदखोर जाफर है। यह हमारा वफादार गुलाम है और इसने हमारी

कई खिदमतें की हैं। हम हुक्म देते हैं कि तुम फौरन इसका लगड़ापन, कुबड़पन, कानापन व दूसरे नुक्स को दूर कर दो . . .।"

यह हुक्म सुनाकर अमीर फौरन चल दिये—मानो यह दिखाने के लिए कि इस हुक्म के खिलाफ वह कोई बात सुनने को तैयार नहीं। सिर झुका कर खोजा नसरुद्दीन ने आदाब बजाया और वह भी चल दिया। उसके पीछे-पीछे अपना कूबड़ घसीटता हुआ सूदखोर भी कछुए की तरह चलने लगा।

"ऐ हजरत मौलाना हुसैन साहब! हम लोग जरा जल्दी चलें," नकली दाढ़ी वाले खोजा नसरुद्दीन को न पहचान कर सूदखोर बोला, "क्योंकि अभी सूरज नहीं ढला है और मैं रात होने से पहले ठीक हो जाऊंगा . . .। जैसा कि आपने सुना अमीर ने आपको हुक्म दिया है कि आप मुझे फौरन चंगा कर दें।"

दिल ही दिल में खोजा नसरुद्दीन अमीर को, सूदखोर को व अपने-आपको बुरा-भला कह रहा था कि क्यों उसके इल्म का इतना चर्चा हुआ और ऐसी शोहरत मिली। इस मुश्किल से कैसे छुटकारा मिलेगा? जल्दी चलने के लिए सूदखोर बार-बार आस्तीनें समेट रहा था।

सड़कें सुनसान थीं। खोजा नसरुद्दीन के पांव बार-बार गर्म रेत में धंस जाते थे। आगे बढ़ता हुआ वह सोच रहा था "ओफ, कैसे इस मुश्किल से छुटकारा पाऊं?"

एकाएक वह रुक गया "लगता है मेरी कराम पूरी होने का वक्त आगया है।"

फौरन उसने एक चाल सोची और हर पहलू से उसे ठोक-बजाकर देखा। मन ही मन उसने कहा : "हां, वक्त आ गया है। गरीबों को सताने वाले ऐ बेरहम सूदखोर! तू आज ही डूबकर मरेगा।"

वह दूसरी तरफ ताकने लगा ताकि सूदखोर क
काली आंखों की चमक न देख सके।

वे लोग अब एक गली में मुड़े जहां हवा तेज
बगूले उड़ा रही थी। सूदखोर ने अपने घर का
दरवाजा खोला। सहन के दूसरे सिरे पर एक
झाड़ के पीछे, जहां से जनानखाना शुरू होता
ख्वाजा नसरुद्दीन ने हरे पत्तों और डालों के
हल्की आवाज व हंसी सुनी और कुछ हिलते
देखा। सूदखोर की बीवियां और रखैलें नये अजन
की आमद का मजा ले रही थीं। वे खुशी की उमंग
थीं, क्योंकि अपनी कैद में मन बहलाने का
पास दूसरा तरीका था नहीं। सूदखोर रुक गया
उन लोगों की तरफ घूरकर देखा। खामोशी छा गई

ख्वाजा नसरुद्दीन ने मन ही मन कहा: "ऐ हसी
कैदियो! मैं आज तुम्हें नजात दिला दूंगा।"

जिस कमरे में सूदखोर ख्वाजा नसरुद्दीन को
गया, उसमें एक भी खिड़की नहीं थी और दरवाजे
तीन ताले और कई सांकलें लगी हुई थीं,
खोलने का राज सिर्फ सूदखोर को मालूम था।
काफी देर मेहनत करनी पड़ी, तब कहीं जाकर दरवा
खुला।

यहीं वह अपने सोने से अटे मर्तबान रखता था
तहखाने के दरवाजे पर लगे तख्तों पर ही वह सोता था

"कपड़े उतारो!" ख्वाजा नसरुद्दीन ने हु
दिया।

सूदखोर ने कपड़े उतार दिये। नंगा होकर
बेहद भद्दा और बदनुमा लगता था। ख्वाजा नस
रुद्दीन ने दरवाजा बन्द किया और दुआएं पढ़
शुरू कीं।

इसी बीच जाफर के बेशुमार रिश्तेदार आ-आक
सहन में इकट्ठे होने लगे। उनमें से कई पर जाफ
। वे उम्मीद कर रहे थे कि इस मुबार

हालांकि ऐसा करने में उसका दिल टूट रहा था तो
हर एक को मुदावीर में सोने का एक-एक सिक्का दि
रिश्तेदार पीछे-पीछे आ रहे थे । ख्वाजा नसरुद्दीन
जान-बूझकर उन लोगों को साथ ले लिया था, व
मुदावीर को झूठों देने की तोहमत उस पर न लगे
सूरज छतों के पीछे छिप रहा था । दरख्तों
साया तालाब पर पड़ रहा था । मच्छर हवा में मनम
रहे थे ।

जाकर ने कपड़े उतारे और पानी की तरफ बढ़ा ।
शिकायती लहजे में वह बोला : "पानी यहां बह
गहरा है, मौलाना हुसैन । आप भूले तो नहीं
मैं तैरना नहीं जानता ।"

रिश्तेदार खामोश खड़े देख रहे थे । शर्म से अप
हाथों से अपना जिस्म छिपाता हुआ, डर से दुबक
हुआ सूदखोर, तालाब के चारों तरफ कोई छिछ
जगह ढूंढ रहा था । एक जगह वह बैठ गया । ऊ
से लटकती टहनियों को थामकर, डरते-डरते, अप
एक पैर का पंजा उसने पानी में डाला ।

"बाप रे ! यह तो बहुत ठंडा है !" वह बु
बड़बड़ाया । घबराहट के मारे उसकी आंखें बाहर निक
रही थीं ।

नजर बचाते हुए ख्वाजा नसरुद्दीन बोला : "तु
वक्त खराब कर रहे हो, जाफर ।" वह अपना दिल
कड़ा कर रहा था ताकि गलत मौके पर रहम उस प
हावी न हो जाय । उसने उन सब लोगों की तक
लीफों के बारे में सोचना शुरू किया, जिन्हें जाफर ने
बर्बाद कर दिया था । बीमार बच्चों के सूखे होंठ . . .
बूढ़े नयाज के आंसू . . . ।"

उसका चेहरा गुस्से से तमतमा उठा ।

"तुम वक्त बरबाद कर रहे हो जी !" उसने डांट
लगाया । "अगर तुम्हें इलाज कराना है तो पानी में
उतरो ।"

सूदखोर पानी में बढ़ने लगा। वह इतने आहिस्ते-आहिस्ते बढ़ रहा था कि पानी जब उसके घुटनों तक पहुंचा तो उसका पेट किनारे पर ही था। घास और काकुल पानी में हिले। ठंडे पत्ते उसका बदन छूने लगे, जिससे उसे गुदगुदी महसूस हुई। ठंड से जाफर के कंधे कांपने लगे। उसने एक कदम और आगे बढ़ाया और मुड़कर पीछे देखा। उसकी आंखें, गूंगे जानवर की तरह, रहम मांग रही थीं। लेकिन, ख्वोजा नसरुद्दीन की आंखों में इसका जवाब नहीं था। सूदखोर पर रहम करने और उसे छोड़ देने का मतलब था, हजारों गरीब इंसानों पर ज्यादा मुसीबत।

पानी सूदखोर के कूबड़ तक आ पहुंचा। लेकिन ख्वोजा नसरुद्दीन आगे बढ़ने के लिए उसे बेरहमी से ललकारता रहा : "आगे बढ़ो . . . और आगे बढ़ो! पानी कानों तक पहुंचने दो भाई। मैं बताये देता हूं, आगे नहीं बढ़ोगे तो मैं तुम्हारे इलाज की जिम्मेदारी नहीं लूंगा। हां, हां, शाबाश! आगे बढ़ो! किबला जाफर साहब, जरा-सी हिम्मत दिखाओ! हिम्मत करो, हिम्मत! एक कदम और!"

सूदखोर के मुंह से गलगल की आवाज आयी और वह पानी की सतह से नीचे निकल गया।

रिश्तेदार चिल्लाने लगे : "डूब रहा है! अरे वह डूब रहा है!"

हड़बड़ी मच गयी। दरख्तों की शाखें और झाड़ियां डूबते हुए जाफर की तरफ बढ़ायी जाने लगीं। कुछ लोग सिर्फ रहमदिल होने की वजह से उसे बचाना चाहते थे; कुछ लोग बचाने का महज बहाना कर रहे थे। ख्वोजा नसरुद्दीन उन्हें देखकर ही आसानी से बता सकता था कि उनमें किस पर जाफर का कितना कर्ज है। वह सबसे ज्यादा दौड़-दौड़कर चिल्ला रहा था और शोर मचा रहा था : "यहां, इधर! जाफर साहब! अपना

हालांकि ऐसा करने में उसका दिल टूट रहा था।
हर एक को सूदखोर ने सोने का एक-एक सिक्का
रिश्तेदार पीछे-पीछे आ रहे थे। ख्वाजा नसरुद्दी
जान-बूझकर उन लोगों को साथ ले लिया था,
सूदखोर को डुबो देने की तोहमत उस पर न लग

सूरज छतों के पीछे छिप रहा था। दरख्त
साया तालाब पर पड़ रहा था। मच्छर हवा में मं
रहे थे।

जाफर ने कपड़े उतारे और पानी की तरफ बढ़ा
शिकायती लहजे में वह बोला : "पानी यहां
गहरा है, मौलाना हुसैन। आप भूले तो नह
मैं तैरना नहीं जानता।"

रिश्तेदार खामोश खड़े देख रहे थे। शर्म से
हाथों में अपना जिस्म छिपाता हुआ, डर से दुब
हुआ सूदखोर, तालाब के चारों तरफ कोई छि
जगह ढूंढ रहा था। एक जगह वह बैठ गया।
से लटकती टहनियों को थामकर, डरते-डरते,
एक पैर का पंजा उसने पानी में डाला।

"बाबा रे! यह तो बहुत ठंडा है!" वह
बड़बड़ाया। घबराहट के मारे उसकी आंखें बाहर नि

सूदखोर पानी में बढ़ने लगा। वह इतने आहिस्ते-आहिस्ते बढ़ रहा था कि पानी जब उसके घुटनों तक पहुंचा तो उसका पेट किनारे पर ही था। घास और काकुल पानी में हिले। ठंडे पत्ते उसका बदन छूने लगे, जिससे उसे गुदगुदी महसूस हुई। ठंड से जाफर के कंधे कांपने लगे। उसने एक कदम और आगे बढ़ाया और मुड़कर पीछे देखा। उसकी आंखें, गूंगे जानवर की तरह, रहम मांग रही थीं। लेकिन, ख्वाजा नसरुद्दीन की आंखों में इसका जवाब नहीं था। सूदखोर पर रहम करने और उसे छोड़ देने का मतलब था, हजारों गरीब इंसानों पर ज्यादा मुसीबत।
पानी सूदखोर के कूबड़ तक आ पहुंचा। लेकिन ख्वाजा नसरुद्दीन आगे बढ़ने के लिए उसे बेरहमी से ललकारता रहा : "आगे बढ़ो . . . और आगे बढ़ो! पानी कानों तक पहुंचने दो भाई! मैं बताये देता हूं, आगे नहीं बढ़ोगे तो मैं तुम्हारे इलाज की जिम्मेदारी नहीं लूंगा। हां, हां, शाबाश! आगे बढ़ो! किबला जाफर साहब, जरा-सी हिम्मत दिखाओ! हिम्मत करो, हिम्मत! एक कदम और!"
सूदखोर के मुंह से गलगल की आवाज आयी और वह पानी की सतह से नीचे निकल गया।
रिश्तेदार चिल्लाने लगे : "डूब रहा है! अरे वह डूब रहा है!"
हड़बड़ी मच गयी। दरख्तों की शाखें और झाड़ियां डूबते हुए जाफर की तरफ बढ़ायी जाने लगीं। कुछ लोग सिर्फ रहमदिल होने की वजह से उसे बचाना चाहते थे, कुछ लोग बचाने का महज बहाना कर रहे थे। ख्वाजा नसरुद्दीन उन्हें देखकर देखकर ही आसानी से बता सकता था कि उनमें किस पर जाफर का कितना कर्ज है। वह खुद औरों से ज्यादा दौड़-दौड़कर चिल्ला रहा था और शोर मचा रहा था : "यहां, इधर! जाफर साहब! अपने

हाथ हमें दीजिए । सुनिए न ! जरा

बढ़ाइए !"

उसे इस बात का पूरा यकीन था कि

अपना हाथ नहीं बढ़ायेगा । 'दीजिए' श

सुनकर ही उसे लकवा मार जाता था ।

सभी रिश्तेदार एक साथ चिल्लाए : "द

अपना हाथ इधर दीजिए !"

सूदखोर डूबता और फिर ऊपर आता;

ऊपर आने में उसे पहली बार से ज्यादा देर ल

सचमुच उस पाक तालाब में उसकी जिन्दग

हो गयी होती, अगर तभी खाली मशक पीठ प

नंगे पैर भागता हुआ एक भिश्ती वहां न

पहुंचता ।

डूबते हुए को देखकर वह चौंककर बोला :

यह तो सूदखोर जाफर है !"

बिना झिझक, पूरी पोशाक पहने हुए ही वह

में कूद पड़ा और हाथ बढ़ाकर चिल्लाया : "यह

मेरा हाथ पकड़ लो !"

सूदखोर ने हाथ थाम लिया और हिफाजत के

बाहर निकल आया ।

उधर सूदखोर किनारे पर पड़ा होश-हवास द

कर रहा था, इधर भिश्ती जोश के साथ उसके

दारों को बता रहा था :

"तुम लोग गलत तरीके से उसकी मदद कर

थे । बराबर 'लीजिए', 'लीजिए' की जगह 'दी

'दीजिए' चिल्ला रहे थे । क्या तुम्हें मालूम

कि एक मर्तबा पहले जाफर साहब इसी तालाब

करीब-करीब डूब चुके थे और एक अजनबी ने

बचाया था जो एक गधे पर सवार होकर गुजर

था ? उस अजनबी ने भी जाफर को बचाने की य

तरकीब की थी और यह तरकीब सूफी याद थी । अ

याद आ गयी ।"

ख्वाजा नसरुद्दीन ने सुना तो अपना होंठ काट लिया। तो उसने दो बार सूदखोर को बचाया था? एक बार खुद अपने हाथों से और अब भिश्ती के जरिये? वह सोचने लगा : "खैर कोई बात नहीं। यह डूबकर ही रहेगा, यह मेरा जिम्मा है—चाहे इसके लिए मुझे साल भर मुखारा में क्यों न रहना पड़े।"

अब तक सूदखोर के दम में दम आ गया था और वह शिकायत के लहजे में कराह-कराहकर कहने लगा : "अरे, मौलाना हुसैन। तुमने तो कहा था कि तुम मेरा इलाज करोगे। लेकिन तुमने तो मुझे डुबा ही दिया था। अल्लाह गवाह है। मैं कसम खाता हूं कि इस तालाब के सौ कदम करीब भी कभी नहीं आऊंगा। तुम हो किस तरह के आलिम जो डूबते हुए शख्स को कैसे बचाना चाहिए, यह भी नहीं जानते। यह बात तुम्हें एक मामूली भिश्ती से सीखनी पड़ी? लाओ मेरा साफा और खलअत। चलो मौलाना। अंधेरा हो रहा है और हमें वह काम पूरा करना है जो हमने शुरू किया था। और तुम, भिश्ती," खड़े होते हुए सूदखोर बोला, "हफ्ते भर बाद तुम्हें मेरा कर्ज चुकाना है, यह मत भूलना। लेकिन मैं तुम्हें कुछ इनाम देना चाहता हूं और इसलिए मैं तुम्हारा आधा . . . मेरा मतलब है चौथाई . . . यानी तुम्हारे कर्ज का दसवां हिस्सा माफ कर दूंगा। यह काफी है, हालांकि तुम्हारी मदद के बिना भी मैं आसानी से अपने को बचा सकता था।"

भिश्ती सहमकर बोला : "अरे ओ जाफर साहब! आप मेरी मदद के बिना नहीं बच सकते थे। क्या आप मेरे कर्ज का एक-चौथाई भी माफ नहीं कर सकते?"

"आ-हा! तो तू ने मुझे खुदगरजी से बचाया था?" सूदखोर चिल्लाया। "तू नेक मुसलमान के जज्बे से नहीं, बल्कि लालच से मुझे बचाने आया था?

... मिश्ती । मैं
की एक पाई भी माफ़ नहीं करूंगा ।"

झेंपा और सहमा हुआ भिश्ती आगे बढ़ च
ख्वोजा नसरुद्दीन रहम से उसको देखता रहा ।
वह घृणा और नफ़रत और हिकारत की नज़र से
को देखा और भिश्ती की तरफ़ बढ़ गया ।

जाफ़र ने जल्दबाज़ी मचायी : "चलो मौलाना ह
तुम्हें उस लालची भिश्ती के कान में फ़ुसफ़ुसा
क्या मिल गया ?"

ख्वोजा नसरुद्दीन ने कहा : "ठहरो ! तुम
भूल गये हो कि जिस किसी से भी तुम मिलो,
सोने का एक सिक्का दोगे । भिश्ती को तुमने
तक सिक्का क्यों नहीं दिया ?"

सूदख़ोर रिरियाने लगा : "लानत है मुझ प
ओफ़, मैं बिलकुल बरबाद हो जाऊंगा ! ज़रा स
तो, मुझे इस लालची और नाचीज़ भिश्ती तक
सोने का सिक्का देना पड़ेगा ?"

उसने थैली खोली और एक सिक्का फेंका : "य
यह आख़िरी मर्तबा है । अंधेरा हो गया और वाप
में रास्ते में हमें कोई नहीं मिलेगा ।"

लेकिन भिश्ती से फ़ुसफ़ुसाकर ख्वोजा नसरुद्द
ने बेकार ही बातें नहीं की थीं ।

वे वापस रवाना हुए । आगे-आगे सूदख़ोर, उस
पीछे ख्वोजा नसरुद्दीन था । सबसे पीछे रिकाबद
चल रहे थे । अभी वे लोग पचास कदम भी न च
होंगे कि एक गली से वही भिश्ती फिर निकला जिसे ह
लोगों ने अभी तालाब के किनारे छोड़ा था ।

उसे नज़रअन्दाज़ करने की गरज़ से सूदख़ोर मुड़
लेकिन ख्वोजा नसरुद्दीन ने डांटा : "जाफ़र साहब
याद रखो ! हरेक को, जो तुम्हें मिले !"

अंधेरे में तकलीफ़ भरी कराह सुनायी पड़ी । जाफ़

भिश्ती ने सिक्का लिया और रात के अंधेरे में गायब हो गया। वे लोग कोई पचास कदम चले होंगे कि वह फिर उनके सामने आ खड़ा हुआ। सूदखोर पीला पड़ गया और कांपने लगा। बहुत आजिजी से वह बोला :

"मौलाना, यह तो फिर वही . . ."

बेरहमी से ख्वाजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया : "जो भी मिले, हरेक को।"

एक बार फिर कराह रात की मन्द हवा में उभरी। जाफर थैली खोल रहा था।

यही हरकत सारे रास्ते में होती रही। हर पचास कदम बाद वही भिश्ती आ खड़ा होता। जाफर हांफ रहा था। पसीना उसके चेहरे से टपक रहा था। वह समझ ही नहीं पा रहा था कि यह क्या हो रहा है। सिक्का थामकर वह सीधा भागता कि आगे सड़क पर झाड़ियों के पीछे से न जाने कहां से निकलकर वही भिश्ती फिर सामने आ खड़ा होता।

अपनी रकम बचाने के लिए सूदखोर ने जल्दी-जल्दी चलना शुरू किया और फिर एकदम दौड़ने लगा। लेकिन वह लंगड़ा था और उस भिश्ती से कैसे टक्कर ले सकता था जो अपनी उमंग में हवा से बातें कर रहा था और बाड़ों व चहारदीवारियों को फांद रहा था। सूदखोर को वह रास्ते में कम से कम पन्द्रह बार मिला। सूदखोर के घर के बिलकुल नज़दीक आखिरी बार वह एक छत से कूदकर सामने आ गया और फाटक में घुसने का रास्ता रोक लिया। आखिरी सिक्का पाकर बेदम होकर वह वहीं ज़मीन पर गिर पड़ा।

सूदखोर घर के सहन में पहुंचा। ख्वाजा नसरुद्दीन उसके पीछे-पीछे था। जाफर ने अपनी खाली थैली नसरुद्दीन के कदमों में फेंक दी और गुस्से से चिल्लाया : "मौलाना हुसैन साहब! मेरा इलाज

तुम्हें तो सजा मिलनी चाहिए । अबे भिश्ती । मैं
की एक पाई भी माफ नहीं करूंगा ।"

झेंपा और सहमा हुआ भिश्ती आगे बढ़
ख्वाजा नसरुद्दीन रहम से उसको देखता रहा ।
वह घूमा और नफरत और हिकारत की नजर से
को देखा और भिश्ती की तरफ बढ़ गया ।

जाफर ने जल्दबाजी मचायी : "चलो मौलाना ह
तुम्हें उस लालची भिश्ती के कान में फुसफुसा
क्या मिल गया ?"

ख्वाजा नसरुद्दीन ने कहा : "ठहरो । तुम
भूल गये हो कि जिस किसी से भी तुम मिलो,
सोने का एक सिक्का दोगे । भिश्ती को तुमने
तक सिक्का क्यों नहीं दिया ?"

सूदखोर रिरियाने लगा : "जानते हैं तुम प
ओफ, मैं बिलकुल बरबाद हो जाऊंगा । जरा सो
तो, मुझे इस लालची और नाचीज भिश्ती तक
सोने का सिक्का देना पड़ेगा ?"

उसने थैली खोली और एक सिक्का फेंका : "ब
यह आखिरी मर्तबा है । अंधेरा हो गया और रा
में रास्ते में हमें कोई नहीं मिलेगा ।"

लेकिन भिश्ती से फुसफुसाकर ख्वाजा नसरुद्दी
ने बेकार ही बातें नहीं की थीं ।

वे वापस रवाना हुए । आगे-आगे सूदखोर, उस
पीछे ख्वाजा नसरुद्दीन था । सबसे पीछे [illegible]
[illegible] थे । अभी वे लोग पचास कदम भी न च
होंगे कि एक गली से वही भिश्ती फिर निकल आया
लोगों ने अभी तालाब के किनारे छोड़ा था ।

उसे नजरअन्दाज करने की गरज से सूदखोर मुड़
लेकिन ख्वाजा नसरुद्दीन ने [illegible] : "[illegible]
[illegible] ! [illegible], जो तुम्हें मिले ।"

अंधेरे में तकलीफ भरी कराह सुनायी पड़ी ;
[illegible] रहा था ।

भिश्ती ने सिक्का लिया और रात के अंधेरे में गायब हो गया। वे लोग कोई पचास कदम चले होंगे कि वह फिर उनके सामने आ खड़ा हुआ। सूदखोर पीला पड़ गया और कांपने लगा। बहुत आजिजी से वह बोला :

"मौलाना, यह तो फिर वही . . ."

बेरहमी से ख्वाजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया : "जो भी मिले, हरेक को।"

एक बार फिर कराह रात की मन्द हवा में उभरी। जाफर थैली खोल रहा था।

यही हरकत सारे रास्ते में होती रही। हर पचास कदम बाद वही भिश्ती आ खड़ा होता। जाफर हांफ रहा था। पसीना उसके चेहरे से टपक रहा था। वह समझ ही नहीं पा रहा था कि यह क्या हो रहा है। सिक्का थामकर वह सीधा भागता कि आगे सड़क पर झाड़ियों के पीछे से न जाने कहां से निकलकर वही भिश्ती फिर सामने आ खड़ा होता।

अपनी रकम बचाने के लिए सूदखोर ने जल्दी-जल्दी चलना शुरू किया और फिर एकदम दौड़ने लगा। लेकिन वह लंगड़ा था और उस भिश्ती से कैसे टक्कर ले सकता था जो अपनी उमंग में हवा से बातें कर रहा था और बाड़ों व चहारदीवारियों को फांद रहा था। सूदखोर को वह रास्ते में कम से कम पन्द्रह बार मिला। सूदखोर के घर के बिलकुल नज़दीक आखिरी बार वह एक छत से कूदकर सामने आ गया और फाटक में घुसने का रास्ता रोक लिया। आखिरी सिक्का पाकर बेदम होकर वह वहीं ज़मीन पर गिर पड़ा।

सूदखोर घर के सहन में पहुंचा। ख्वाजा नसरुद्दीन उसके पीछे-पीछे था। जाफर ने अपनी खाली थैली नसरुद्दीन के कदमों में फेंक दी और गुस्से से चिल्लाया : "मौलाना हुसैन साहब। मेरा इलाज

बहुत महंगा पड़ रहा है । मैं अब तक सौग
खैरात और मलऊन मिस्री पर तीन हजार तंके
ज्यादा खर्च कर चुका हूं ।"

ख्वाजा नसरुद्दीन ने कहा : "इतमीनान र
माई ! आधे घंटे के भीतर ही तुम इसका इ
पाओगे । सहन के बीच खूब बड़ी आग जलाने
कहो ।"

इधर नौकर ईंधन ला रहे थे और आग जला
थे, उधर ख्वाजा नसरुद्दीन तेजी से कोई ऐसी चा
खोज निकालने के लिए दिमाग दौड़ा रहा था जिस
सूदखोर मात खा जाय और इलाज न हो पाने
जिम्मेदारी उसी पर पड़े । उसने कई तरकीबें सोचीं
लेकिन हर एक को नामुनासिब समझकर तर्क क
दिया । इस बीच आग खूब भड़क उठी थी औ
हलकी हवा पाकर लपटें ऊंची उठ रही थीं जिस
पास के अंगूर के बागीचे की हरियाली पर लाल रोशनी
फैल रही थी ।

ख्वाजा नसरुद्दीन बोला : जाफर साहब! कपड़े
उतारिये और आग के तीन चक्कर लगाइए !"

कोई ठीक चाल उसकी समझ में अब तक नहीं
आयी थी और वह सिर्फ वक्त काट रहा था । व
खयाल में डूबा लग रहा था। रिश्तेदार खामोशी से
देख रहे थे । सूदखोर आग के चारों तरफ घूम रहा
था, मानो जंजीर से बंधा कोई बनमानुस हाथ हिलाता
नाच रहा हो; उसके हाथ करीब-करीब घुटनों तक
पहुंचते थे ।

ख्वाजा नसरुद्दीन का चेहरा खिल उठा । उसने
आराम की सांस ली और कंधे सिकोड़े । फिर वह
बोला : "मुझे एक कम्बल दो । जाफर और तुम सब
लोग यहां आओ ।"

रिश्तेदारों को उसने एक गोल घेरे में खड़ा किया
और बीच में जमीन पर सूदखोर को बैठाया । फिर

उसने उन सब लोगों को मुखातिब करके कहा : "मैं जाफर को इस कम्बल से ढक दूंगा और दुआ पढ़ूंगा। तुम सब लोग, और जाफर भी, आंखें बन्द करके मेरे साथ दुआ दोहराना। जब मैं कम्बल हटाऊंगा, तो जाफर का इलाज पूरा हो चुकेगा। लेकिन एक बहुत जरूरी शर्त है। अगर यह शर्त पूरी न हुई, तो जाफर का इलाज नहीं हो सकेगा। तुम लोग कान लगाकर सुनो कि मैं क्या कहता हूं।"

रिश्तेदार उसके हर लफ्ज को ध्यान से सुनने के लिए खामोश हो गये और पास आ खड़े हुए।

ख्वाजा नसरुद्दीन जोरदार और साफ आवाज में कहने लगा : "मेरे बाद जब तुम दुआ के लफ्ज दोहराओ, तो तुम में से कोई भी बन्दर के बारे में—कम से कम जाफर तो हरगिज ही—नहीं सोचे! अगर तुम में से किसी ने बन्दर के बारे में सोचा—या इससे भी बढ़कर, कोई अपने ख्याल में भी उसे लाया—उसकी दुम, लाल पिछाड़ी, बदनुमा चेहरा और पीले दांत देखे तो इलाज नहीं हो सकेगा। ऐसे में इलाज हो भी नहीं सकता क्योंकि किसी भी पाक काम में बन्दर जैसे गन्दे और नापाक जानवर का ख्याल ठीक नहीं। तुम लोग समझ रहे हो न?"

"हम लोग समझ रहे हैं।" उन्होंने जवाब दिया।

कम्बल से सूदखोर को ढकते हुए ख्वाजा नसरुद्दीन ने बड़ी संजीदा आवाज में कहा : "जाफर साहब! तैयार हो जाइए और अपनी आंखें बन्द कर लीजिए।" फिर रिश्तेदारों की तरफ पलटकर वह बोला : "अब तुम लोग भी अपनी आंखें बन्द करो और मेरी दुआ दोहराओ। खबरदार! बन्दर के बारे में न सोचना।"

फिर उसने दुआ पढ़नी शुरू की : "ऐ रहमान आलमीन व [illegible] अलिफ, लाम, मीम (कुरान की आयत के पहले लफ्ज) की [illegible] से इस आदमी [illegible] जाफर को [illegible] कर दे . . ."

बहुत बदनुमा, एक बन्दर अपनी लम्बी दुम और
दांत दिखाता उसके दिमाग के पर्दे पर आ
हुआ था और कभी जीभ दिखाकर और कभी अप
लाल गोल पिछाड़ी और बदन के वे हिस्से दिखा
चिढ़ाने लगा जो ऐसे वक्त किसी भी सच्चे मुसलम
के खयाल में आने के काबिल नहीं।

ख्वाजा नसरुद्दीन जोरदार आवाज में दुआ क
रहा। यकायक वह रुक गया, मानो कुछ सुन रहा ह
रिश्तेदार भी खामोश हो गये। कुछ तो पीठ के
गये।

कम्बल के नीचे जाफर दांत किटकिटा रहा
क्योंकि उसके खयालात में बन्दर बिलकुल खुले
पर गन्दी हरकतें करने लगा था।

"काफिरो! शरारत पसन्दो!" ख्वाजा नसरुद्दी
गरज उठा। "मैंने जो बात मना की थी, उसे कर
की मजाल! उस चीज का खयाल करते हुए तु
लोग दुआ कैसे कर सके जिसकी मैंने खास तौर प
मुमानियत की थी!"

कम्बल फुर्ती से हटाते हुए वह सूदखोर की तर
झपटा: "तू ने मेरी मदद क्यों मांगी थी! अब मैं
. . गया कि तू इलाज करवाना ही नहीं चाहता
. . तू तो सिर्फ मुझे जलील करना चाहता था।
. . दुश्मनों का साथ दे रहा था। ऐ जाफर, हाकि
. . कल अमीर को सारा माजरा मालूम हो सकेगा!

मैं उन्हें बताऊंगा कि किस तरह दूजा मांगते व
तू ने जानबूझकर—काफिराना इरादे से—बन्दर
बारे में सोचा ! और तुम सब लोग भी होशियार
जाओ ! तुम लोग आसानी से छुटकारा नह
पाओगे । कुफ्र की जो सजा होती है वह तुम लो
जानते होगे . . . "

चूंकि कुफ्र के लिए हमेशा बहुत सख्त सजा मिल
थी, इसलिए रिश्तेदार मिमियाने-घिघियाने लगे। वे ड
हुए थे। जाफर ने घिघियाकर न समझ में आने वा
लफ्जों में अपनी सफाई पेश करनी चाही। लेकिन उ
सुनने के लिए ख्वाजा नसरुद्दीन रुका नहीं। व
घूमा और खटाक से फाटक बन्द करता बाहर निकल
गया।

थोड़ी देर में चांद निकल आया। सारा शहर हलक
चांदनी में नहा गया। रात को देर तक सूदखोर व
घर शोरगुल होता रहा, तकरार होती रही। हर शख्स
जोर-जोर से बहस कर रहा था और यह जानने की
कोशिश कर रहा था कि बन्दर की बाबत सोचने वाला
पहला शख्स कौन था।

: ५ :

सूदखोर को बेवकूफ बनाकर ख्वाजा नसरुद्दीन
महल को वापस लौटा।

दिन भर की मेहनत के बाद बुखारा के बाशिन्दे
सोने की तैयारी कर रहे थे। गलियां ठण्डी और अंधेरी
थीं। पुलों के नीचे से पानी के बहने की आवाज आ
रही थी। हवा में नम धरती की सोंधी महक थी। कहीं-
कहीं कीचड़ में ऐसी जगह ख्वाजा नसरुद्दीन का पैर
फिसल जाता जहां किसी जोशीले भिश्ती ने सड़कों पर
जरूरत से ज्यादा छिड़काव कर दिया था, ताकि रात
में हवा का झोंका उन थके-मांदे लोगों की नींद में

रिश्तेदार भी बेमेल आवाज में दुआ दोहराने लगे "ऐ रब्बुल आलमीन ऐ दाना-ए-पाक . . ." यह ख्वाजा नसारुद्दीन के चेहरे पर परेशानी और बेचारगी छा गई । एक दूसरा रिश्तेदार खांसने लगा । तीसरा दुआ के लफ्ज़ों पर अटक गया । चौथे ने सिर हिलाया मानो आंखों के सामने से कोई नज़ारा हटा रहा हो ।

एक लमहे के बाद ही कम्बल के नीचे जाफर बड़ बेचैनी से हिलने लगा । बेहद नफरत पैदा करनेवाला, बहुत बदनुमा, एक बन्दर अपनी लम्बी दुम और पीले दांत दिखाता उसके दिमाग के पर्दे पर आ खड़ा हुआ था और कभी जीभ दिखाकर और कभी अपनी लाल गोल पिछाड़ी और बदन के वे हिस्से दिखाकर चिढ़ाने लगा जो ऐसे वक्त किसी भी सच्चे मुसलमान के खयाल में आने के काबिल नहीं ।

ख्वाजा नसरुद्दीन जोरदार आवाज में दुआ करता रहा । यकायक वह रुक गया, मानो कुछ सुन रहा हो । रिश्तेदार भी खामोश हो गये । कुछ तो पीछे को हट गये ।

कम्बल के नीचे जाफर दांत किटकिटा रहा था क्योंकि उसके खयालात में बन्दर बिलकुल खुले तौर पर गन्दी हरकतें करने लगा था ।

"काफिरो ! शरारत पसन्दो !" ख्वाजा नसरुद्दीन गरज उठा । "मैंने जो बात मना की थी, उसे करने की मजाल ! उस चीज का खयाल करते हुए तुम लोग दुआ कैसे कर सके जिसकी मैंने खास तौर पर मुमानियत की थी ?"

कम्बल फुर्ती से हटाते हुए वह सूदखोर की तरफ झपटा : "तू ने मेरी मदद क्यों मांगी थी ? अब मैं समझ गया कि तू इलाज करवाना ही नहीं चाहता था । तू तो सिर्फ मुझे जलील करना चाहता था । तू मेरे दुश्मनों का साथ दे रहा था ! ऐ जाफर, होशियार ! कल अमीर को सारा माजरा मालूम हो चुकेगा ।

मैं उन्हें बताऊंगा कि किस तरह दुआ मांगते वक्त तू ने जानबूझकर—काफिराना इरादे से—बन्दर के बारे में सोचा। और तुम सब लोग भी होशियार हो जाओ। तुम लोग आसानी से छुटकारा नहीं पाओगे। कुफ्र की जो सजा होती है वह तुम लोग जानते होगे . . ."

चूंकि कुफ्र के लिए हमेशा बहुत सख्त सजा मिलती थी, इसलिए रिश्तेदार मिमियाने-रिरियाने लगे। वे डरे हुए थे। जाफ़र ने घिघियाकर न समझ में आने वाले लफ्जों में अपनी सफाई पेश करनी चाही। लेकिन उसे सुनने के लिए ख्वाजा नसरुद्दीन रुका नहीं। वह घूमा और खटाक से फाटक बन्द करता बाहर निकल गया।

थोड़ी देर में चांद निकल आया। सारा शहर हलकी चांदनी में नहा गया। रात को देर तक सूदखोर के घर शोरगुल होता रहा, तकरार होती रही। हर शख्स जोर-जोर से बहस कर रहा था और यह जानने की कोशिश कर रहा था कि बन्दर की बाबत सोचने वाला पहला शख्स कौन था।

: ५ :

सूदखोर को बेवकूफ बनाकर ख्वाजा नसरुद्दीन महल को वापस लौटा।

दिन भर की मेहनत के बाद बुखारा के बाशिन्दे सोने की तैयारी कर रहे थे। गलियां ठण्डी और अंधेरी थीं। पुलों के नीचे से पानी के बहने की आवाज आ रही थी। हवा में नम धरती की सोंधी महक थी। कहीं-कहीं कीचड़ में ऐसी जगह ख्वाजा नसरुद्दीन का पैर फिसल जाता जहां किसी जोशीले भिश्ती ने सड़कों पर जरूरत से ज्यादा छिड़काव कर दिया था, ताकि रात में हवा का झोंका उन थके-मांदे लोगों की नींद में

हूँ बताऊँगा कि किस तरह दुआ मांगते वक्त
जानबूझकर—काफिराना इरादे से—बन्दर के
सोचा। और तुम सब लोग भी हथियार हो
। तुम लोग आसानी से छुटकारा नहीं
। कुफ्र की जो सजा होती है वह तुम लोग
होगी . . ."

कुफ्र के लिए हमेशा बहुत सख्त सजा मिलती
लिए रिश्तेदार मिमियाने-रिरियाने लगे। वे डर
जाफर ने घिघियाकर न समझ में आने वाले
रे अपनी सफाई पेश करनी चाही। लेकिन उसे
लिए खोजा नसरुद्दीन रुका नहीं। वह
र सटाक से फाटक बन्द करता बाहर निकल

देर में चांद निकल आया। सारा शहर हलकी
में नहा गया। रात को देर तक सुदखोर के
ल होता रहा, तकरार होती रही। हर शख्स
से बहस कर रहा था और यह जानने की
र रहा था कि बन्दर की बाबत सोचने वाला
रस कौन था।

: ९ :

को बेवकूफ बनाकर खोजा नसरुद्दीन
वापस लौटा।
र की मेहनत के बाद बुखारा के बाशिन्दे
मिठी कर रहे थे। गलियां ठण्डी और अंधेरी
के नीचे से पानी के बहने की आवाज आ
वा में नम धरती की सोंधी महक थी। कहीं-
में ऐसी जगह खोजा नसरुद्दीन का पैर
जहां किसी जोशीले भिश्ती ने सड़कों पर
ज्यादा छिड़काव कर दिया था, ताकि रात
झोंका उन थके-मांदे लोगों की नींद में

ख़ोजा नसरुद्दीन ने वह पोशाक पहनाते हुए कहा : "अगर तुम सिर्फ़ पैसा कमाते हो भाई ! ज़रूर तुम्हारा इरादा सिर्फ़ इमानदार बनने का है। लेकिन मेरे दोस्त, इसको पहनते ही वे तुम्हें चट कर जायेंगे !"

वह गली में चला गया। चायख़ाने का मालिक अपने गाहकों के पास लौट आया और अब होने वाले वाक़यात का इन्तज़ार करने लगा। उसे बहुत देर इन्तज़ार नहीं करना पड़ा। ख़ोजा नसरुद्दीन एक गली से आता हुआ दिखायी दिया। वह एक ऐसे आदमी की तरह पैर घसीट रहा था जिसने दिन भर सफ़र किया हो। उसने चायख़ाने की सीढ़ियां पार कीं, एक अंधेरे कोने में जाकर बैठ गया और चाय मांगी। किसी ने उसकी तरफ़ ध्यान न दिया। बुख़ारा की सड़कों पर सभी तरह के मुसाफ़िर आते-जाते थे।

चोचक सूफ़िया कह रहा था : "मेरी गलतियां बेशुमार थीं। लेकिन मैं, ख़ोजा नसरुद्दीन, अब उन गलतियों पर शर्मिन्दा हूं। मैंने हमेशा नेक रहने, इस्लाम पर चलने और अमीर, उनके वज़ीर, हाकिमों और सिपाहियों का हुक्म मानने का फ़ैसला किया है। जब से मैंने यह फ़ैसला किया, मुझे चैन और ख़ुशी हासिल हुई है और मेरी दुनियावी दौलत बढ़ गयी है। पहले मैं एक ऐसा आवारा था, जिससे लोग नफ़रत करते थे। लेकिन अब मैं एक दीनदार मुसलमान की हैसियत से जिन्दगी बसर करता हूं।"

एक गाड़ीवान ने, जो कमर में चाबुक खोंसे था, बहुत इज़्ज़त से उसके सामने चाय का एक प्याला पेश किया और कहा : "ऐ बेमिसाल ख़ोजा नसरुद्दीन! मैं कोकन्द से बुख़ारा आया हूं। मैंने आपके इल्म की बहुत तारीफ़ सुनी है। लेकिन मैंने यह कभी न सोचा था कि मुलाक़ात तो दरकिनार, एक दिन मुझे आपसे बातचीत का मौक़ा भी मिलेगा। अब मैं हरेक से इस

मुलाकात का ज़िक्र करूंगा और आपकी नसीहत को दोहराऊंगा।"

चेचकरू ख़ुफ़िया ने कहा : "बिलकुल ठीक। हरेक को बताओ कि ख़्वाजा नसरुद्दीन सुधर गया है, तौबा करके दीनदार मुसलमान और अमीरे-आज़म का वफ़ादार गुलाम बन गया है। जिससे भी मिलो, उसे यही खुशख़बरी सुनाओ।"

गाड़ीवान ने कहा : "ऐ लासानी ख़्वाजा नसरुद्दीन! मुझे आपसे एक सवाल पूछना है। मैं एक दीनदार मुसलमान हूं और कम-अक्ली की वजह से कोई हरकत नहीं कर बैठना चाहता जो मज़हब के खिलाफ साबित हो। मैं यह जानना चाहता हूं कि अगर मैं नहा रहा होऊं और मुअज्ज़िन की अज़ान सुन लूं तो किस तरफ मुड़ूं?"

चेचकरू ख़ुफ़िया ने मेहरबानी से मुस्कराते हुए कहा : "बेशक, मक्का की तरफ।"

"अपने कपड़ों की तरफ।" अंधेरे कोने से एक आवाज सुनायी दी। "घर तक नंगे जाने से बचने का यही सबसे अच्छा तरीका है।"

चेचकरू ख़ुफ़िया के बनावटी इज्जत के माहौल के बावजूद लोगों ने मुस्कराहट छिपाने के लिए अपने मुंह फेर लिये।

"कौन बड़बड़ा रहा है उस कोने से? ऐ भिखमंगे," गुस्से में उसने पूछा, "क्या तू ख़्वाजा नसरुद्दीन की काबलियत से टक्कर लेने की कोशिश कर रहा है?"

ख़्वाजा नसरुद्दीन ने चाय पीते हुए जवाब दिया : "उसके मुकाबले मैं बहुत नाचीज हूं।"

इसके बाद किसान ने पूछा : "ऐ पाक ख़्वाजा नसरुद्दीन! मुझे बताओ कि इस्लाम के मुताबिक मैयत के दफ़न होते वक्त सबसे अच्छी जगह कौन-सी है—ताबूत के पीछे या आगे?"

ख़ुफ़िया ने जवाब देने के लिए ख़ास अन्दाज में

उंगली उठायी ही थी कि कोने वाली आवाज आसे
पहले ही बोल उठी :
"अगर तुम खुद तम्बू के अन्दर नहीं हो तो इससे
कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम आगे हो या पीछे।"
जरा सी बात में ही हंस पड़ने वाला चायखाने का
मालिक दोनों हाथों से अपनी तोंद सम्हाले हुए कह-
कहा लगाने लगा। दूसरे लोग भी हंसी न रोक सके।
कोने वाला आदमी हाजिरजवाब था और मजे से ख्वाजा
नसरुद्दीन का मुकाबला कर रहा था।
खुफिया ने, जिसका गुस्सा बराबर बढ़ रहा था, धीरे
से अपना सिर घुमाया : "अबे, तेरा नाम क्या है ?
मैं तेरी जबांदराजी देख रहा हूं। याद रख कि कहीं
तुझे अपनी जबान से बिलकुल ही हाथ न धोने पड़ें।"
लोगों की तरफ मुड़ते हुए उसने कहा : "मैं उसे एक
ही तीजया और चुभते हुए लफ्ज से खामोश कर सकता
हूं। लेकिन फिलहाल हम पाक और सजीदा बातचीत
कर रहे हैं, जहां तज मौजूं नहीं। हर चीज का मौका
होता है, इसलिए इस वक्त मैं भिखमगे की छींटाकशी
का जवाब नहीं दूंगा। . . . हां, तो मैं कह रहा था
कि मैं, ख्वाजा नसरुद्दीन, तुमको सलाह देता हूं कि
ऐ मुसलमानो, हाकिमों का हुक्म मानो और खुशहाली
तुम्हारे घरों में उतर आयेगी। लेकिन सबसे बड़ी बात
तो यह है कि ख्वाजा नसरुद्दीन होने का झूठा दावा
करने वाले मशहूर आवारों की तरफ ध्यान न दो। इसी
किस्म के एक आवारे ने अभी हाल में गड़बड़ी मचायी
थी और यह सुनकर कि मैं, असली ख्वाजा नसरुद्दीन
आ गया हूं, गधे के सिर से सींग की तरह गायब हो
गया। ऐसे सब जालियों को पकड़ लो और उन्हें अमीर
के सिपाहियों के हवाले करो।"
"बिलकुल दुरुस्त," बनावटी पोशाक फेंककर ख्वाजा
नसरुद्दीन साये से रोशनी में आकर बोला।
सभी लोगों ने उसे पहचान लिया और उसके पका-

एक आ खड़े होने से ताज्जुब में पड़ गये।
पीला पड़ गया। खोजा नसरुद्दीन उसके क
गया। अली चुपचाप उसके पीछे आ खड़ा हु
"तो, तुम हो असली खोजा नसरुद्दीन ?"
खुफिया ने घबराकर चारों तरफ देखा। उ
कांप रहे थे। आंखें चारों तरफ कुछ ढूंढ रही थीं
जवाब देने के लिए हिम्मत बटोरी :
"हां, मैं ही सच्चा और असली खोजा न
हूं। बाकी सब जालिये हैं, जालिये। तुम भी
हो।"
"मुसलमानो! भाइयो! अब किस बात का
है ?" खोजा नसरुद्दीन चिल्लाया। "इसने खु
किया है। पकड़ लो इसे। क्या तुमने अमीर क
नहीं सुना ? क्या तुम नहीं जानते कि खोज
द्दीन के साथ क्या सलूक करना चाहिए ?
इसे, वर्ना तुम पर बहुत कड़ा इल्जाम लगेगा।
खोजा नसरुद्दीन ने खुफिया की नकली दा
फेंकी।
चायखाने के सभी लोगों ने चेचकरू चेहर
नाक—जिससे उन्हें नफरत थी—और मक्का
पहचान लीं।
"इसने खुद कुबूला है," खोजा नसर
दाहिनी तरफ आंख मारते हुए कहा, "पकड
खोजा नसरुद्दीन को।" उसने बायीं तरफ आंख
चायखाने के मालिक अली ने ही सबसे पहल
पर हाथ छोड़ा। खुफिया ने अपने को छुड़ाने
कोशिश की, मगर भिश्ती, किसान और कारी
हाथापाई करने लगे। थोड़ी देर तक तो वहां
उठने गिरने के अलावा और कुछ नजर ही न
खोजा नसरुद्दीन सबसे ज्यादा जोर से हाथ
रहा था।
"य . य . . . यह तो मैं . . . मजाक

था," कराहता हुआ सूफिया बोला। "ऐ मुसलमानो ! मैं तो बस : : : म . . . जाक कर रहा था। मैं खोजा न . . . सरुद्दीन नहीं हूं । मुझे छोड़ दो !"

"तुम झूठ बोलते हो," खोजा नसरुद्दीन ने उसे डांटा। वह उसी तेजी से घूंसे चला रहा था, जिस तेजी से नानबाई आटा गूंधता है। "तुमने खुद कबूल किया है कि तुम खोजा नसरुद्दीन हो। हम सबने अभी-अभी सुना है। ऐ मुसलमानो ! यहां पर मौजूद हम सब लोग अमीर के बेइन्तहा वफादार हैं। वफादारी के साथ हमें उनके हुक्म पर अमल करना चाहिए। इसलिए, ऐ सच्चे मुसलमानो, इस खोजा नसरुद्दीन की अच्छी तरह मरम्मत करो। इसे महल तक घसीट ले जाओ और सिपाहियों के सुपुर्द कर दो। अल्लाह और अमीर के नाम पर इसे अच्छी तरह पीटो।"

भीड़ सूफिया को महल तक ले गयी। रास्ते भर लोग उसे जोर-शोर से पीटते रहे। सूफिया की रवानगी के वक्त खोजा नसरुद्दीन ने उसके एक ठोकर मारी और चायखाने में लौट आया।

"उफ्।" माथे का पसीना पोंछते हुए उसने कहा, "हमने उसकी ऐसी मरम्मत की है कि जिन्दगी भर नहीं भूलेगा। मालूम पड़ता है अब भी उसकी ठुकाई हो रही है।"

दूर से जोर की आवाजें और सूफिया की चीखें सुनायी पड़ रही थीं। हर एक को उससे कुछ न कुछ बदला लेना था। अमीर के हुक्म की बदौलत उन्हें इसका अच्छा मौका भी मिल गया था।

खुशी से हंसता हुआ चायखाने का मालिक अपनी तोंद थपथपा रहा था : "यह अच्छा सबक मिला बच्चू को। अब वह दोबारा मेरे चायखाने में कदम रखने की हिम्मत नहीं करेगा।"

खोजा नसरुद्दीन ने पीछे वाले कमरे में कपड़े

बदले, नकली दाढ़ी लगायी और एक बार फिर बगदाद का आलिम मौलाना हुसैन बन गया।

वह महल में वापस पहुंचा तो महल की हवालात से कराहने की आवाजें सुनायी दीं। उसने अन्दर झांक कर देखा। सूजा हुआ जख्मी बदन लिये बेचारा खुफिया नमदे पर पड़ा था। लालटेन लिये अर्सला बेग उसके पास खड़ा था।

ख्वाजा नसरुद्दीन ने बड़ी मासूमियत से पूछा : "किबला अर्सलां बेग! क्या मामला है भाई।"

"बड़ी बुरी खबर है, मौलाना हुसैन! बदमाश ख्वाजा नसरुद्दीन फिर शहर में लौट आया है। हमारे सबसे होशियार जासूस को उसने पीट डाला है। यह जासूस उस बदमाश के बदअसर को दूर करने के लिए मेरे हुक्म से अपने को ख्वाजा नसरुद्दीन बताकर बफा-दारी की और मजहबी बातें करता था। नतीजा आपके सामने है।"

"ओह! ओह!" खुफिया अपना जख्मी चेहरा ऊपर को उठाता हुआ कराहा। "अब कभी उस दोजखी आवारे के मामले में नहीं पड़ूंगा। अगली दफा तो वह मुझे मार ही डालेगा। मैं अब खुफियागीरी नहीं करूंगा। कल ही मैं यहां से बहुत दूर चला जाऊंगा—जहां मुझे कोई न जानता हो। वहां मैं कोई भली-सी नौकरी कर लूंगा।"

"मेरे दोस्तों ने वाकई ढंग से काम पूरा किया है," लालटेन की रोशनी में खुफिया की हालत देखते हुए और उसके लिए थोड़ा सा अफसोस जाहिर करते हुए ख्वाजा नसरुद्दीन ने मन ही मन सोचा। "अगर महल दो सौ कदम और दूर होता तो यह यहां तक जिन्दा न पहुंचता। अब देखना यह है कि इसने सबक सीखा है या नहीं।"

सुबह का वक्त था। ख्वाजा नसरुद्दीन ने खिड़की से बेचारे खुफिया को एक छोटी-सी गठरी लेकर बाहर

बढ़ती।

शहर में जब यह अफवाह फैली कि अमीर के नये आलिम मौलाना हुसैन ने इलाज में बड़े हुनर दिखाये हैं, तो सूदखोर जाफर ने बहुत उम्दा सौगातों से एक टोकरी भरी और महल जा पहुंचा।

टोकरी का सामान देखकर अर्सला बेग ने मदद करने की पूरी रजामंदी जाहिर की।

"किबला जाफर साहब! तुम बहुत ठीक मौके पर आये। हमारे आका शहंशाह का मिजाज आज बहुत अच्छा है। वह तुम्हारी दरख्वास्त जरूर मान लेंगे।"

अमीर ने सूदखोर की बात सुनी, सोने की हाथीदांत-जड़ी शतरंज की भेंट कबूल की और नये आलिम मौलाना हुसैन को बुला भेजा।

ख्वाजा नसरुद्दीन ने आकर कोर्निश की। अमीर बोले: "मौलाना हुसैन! यह शख्स सूदखोर जाफर है। यह हमारा वफादार गुलाम है और इसने हमारी

बदले, नकली दाढ़ी लगायी और एक बार फिर बगदाद का आलिम मौलाना हुसैन बन गया।

वह महल में वापस पहुंचा तो महल की हवालात से कराहने की आवाजें सुनायी दीं। उसने अन्दर झांक कर देखा। सूजा हुआ जख्मी बदन लिये चेचकरु खुफिया नमदे पर पड़ा था। लालटेन लिये अर्सलां बेग उसके पास खड़ा था।

ख्वोजा नसरुद्दीन ने बड़ी मासूमियत से पूछा: "किबला अर्सलां बेग! क्या मामला है भाई।"

"बड़ी बुरी खबर है, मौलाना हुसैन! बदमाश ख्वोजा नसरुद्दीन फिर शहर में लौट आया है। हमारे सबसे होशियार जासूस को उसने पीट डाला है। यह जासूस उस बदमाश के बदअसर को दूर करने के लिए मेरे हुक्म से अपने को ख्वोजा नसरुद्दीन बताकर वफादारी की और मजहबी बातें करता था। नतीजा आपके सामने है।"

"ओह! ओह!" खुफिया अपना जख्मी चेहरा ऊपर को उठाता हुआ कराहा। "अब कभी उस दोजखी आवारे के मामले में नहीं पड़ूंगा। अगली दफा तो वह मुझे मार ही डालेगा। मैं अब खुफियागीरी नहीं करूंगा। कल ही मैं यहां से बहुत दूर चला जाऊंगा—जहां मुझे कोई न जानता हो। वहां मैं कोई भली-सी नौकरी कर लूंगा।"

"मेरे दोस्तों ने वाकई ढंग से काम पूरा किया है," लालटेन की रोशनी में खुफिया की हालत देखते हुए और उसके लिए थोड़ा सा अफसोस जाहिर करते हुए ख्वोजा नसरुद्दीन ने मन ही मन सोचा। 'अगर महल दो सौ कदम और दूर होता तो यह यहां तक जिन्दा न पहुंचता। अब देखना यह है कि इसने सबक सीखा है या नहीं।"

सुबह का वक्त था। ख्वोजा नसरुद्दीन ने खिड़की से चेचकरु खुफिया को एक छोटी-सी गठरी लेकर बाहर

निकालते देखा। वह सिकुड़ा खड़ा था और बराबर अपनी दाढ़ी, कंधों और बग़लों पर हाथ फेर रहा था। बीच-बीच में कुछ सोने के लिए वह बैठ भी जाता था। सूरज की पहली किरणों के दौरान बाज़ार को उसने पार किया और दीवारों के साये में ग़ायब हो गया।

सुबह की किरणों से रात का अंधेरा भाग गया था। शबनम से धुली, चमकदार, साफ़ और पुरअमन सुबह थी। चिड़ियां चहचहा रही थीं, गा रही थीं और तरह तरह की सुरीली आवाज़ें निकाल रही थीं। तितलियां सूरज की पहली किरणों का मज़ा लूटने के लिए इधर से उधर उड़ रही थीं। ख़्वाजा नसरुद्दीन के सामने खिड़की पर एक मक्खी आ बैठी और आलमारी में एक मर्तबान में रखे हुए शहद की महक पाकर उसे तलाश करने लगी।

सूरज ख़्वाजा नसरुद्दीन का पुराना और वफ़ादार दोस्त था। वह अब निकल रहा था। हर सुबह उनकी मुलाक़ात होती और हर सुबह ख़्वाजा नसरुद्दीन को ऐसा मज़ा आता, गोया उसने साल भर से सूरज को न देखा हो। सूरज उभर रहा था—एक ऐसा नेक और सखी देवता जो सब पर एक-सा मेहरबान है। और, सुबह की धूप में चमकती हुई दुनिया अपना हुस्न निखार कर उसका इस्तक़बाल करती है। उड़ते हुए ऊन जैसे बादल, मीनारों की चमकती हुई ईंटें, नयी पत्तियां, पानी, घास, धूल—यहां तक कि क़ुदरत की बेरुख़ी के शिकार, उसके सौतेले बच्चे, बेरौनक़ पत्थरों, में भी सूरज के इस्तक़बाल के लिए एक अजीब हुस्न निखर आता। पत्थरों के खुरदरे किनारे इस तरह चमकने लगते गोया उन पर जवाहरात की कनी दी गयी हो।

दोस्त के मुस्काते चेहरे को दे
कैसे उदास रह सकता था,
एक दरख़्त जगमगा उठा और

ही ख्वोजा नसरुद्दीन भी जगमगा उठा—गोया वह खुद भी हरियाली में लिपटा हुआ हो। सबसे नजदीकी मीनार पर कबूतर गुटर-गूं गुटर-गूं कर रहे थे और अपने पर चोंचों से संवार रहे थे। ख्वोजा नसरुद्दीन की भी तबियत हो रही थी कि वह अपने पर संवारे। खिड़की के सामने तितलियों का एक जोड़ा उड़ रहा था; ख्वोजा नसरुद्दीन की तबियत हो रही थी वह भी एक तीसरी तितली बनकर उनके इस हसीन खेल में शामिल हो जाय।

ख्वोजा नसरुद्दीन की आंखें खुशी से चमक रही थीं। चचकरु ख्वफिया के बारे में उसने सोचा : काश! आज की यह खास सुबह उसकी नयी, साफ और अच्छी जिन्दगी का सबेरा बन सके। लेकिन जैसे ही उसने यह सोचा, उसे अफसोस के साथ ख्याल आया कि उस आदमी की रूह में बहुत ज्यादा बदकारियां जमा हो गयी हैं जिनकी तौबा मुश्किल थी; जैसे ही वह पूरी तरह ठीक होगा वह अपनी पुरानी बदकारियां फिर शुरू कर देगा।

बाद के वाकयात ने साबित कर दिया कि ख्वोजा नसरुद्दीन का ख्याल गलत नहीं था। वह आदमियों को इतनी अच्छी तरह पहचानता था कि गलती करना उसके लिए मुश्किल था, हालांकि अगर उसका ख्याल गलत निकलता तो उसे खुशी ही होती और वह ख्वफिया की नयी रूहानी जिन्दगी का इस्तकबाल करता। लेकिन जो चीज सड़ जाती है, वह दोबारा ताजा नहीं हो सकती, न खिल सकती है; बदबू खुशबू में नहीं बदल सकती।

अफसोस करते हुए ख्वोजा नसरुद्दीन ने एक आह भरी।

उसके खयालात की दुनिया ऐसी थी जहां इन्सान भाई-भाई की तरह रहें, जहां लालच, हसद, दगा और गुस्से का नाम न हो जहां सब एक-दूसरे की कद्र

पर मदद करें, और एक-दूसरे की खुशी में शामिल हों। मगर इस किस्म के हसीन खयालों में डूबे हुए उसे यह कड़वी सच्चाई नजर आयी कि इन्सान जैसे यह रहता है, नहीं रहना चाहिए—यानी दूसरों पर जब्र करते हुए और दूसरों को गुलाम बनाते हुए। वे अपनी रूह को बदनुमा बनाते जा रहे थे। पाक और ईमानदार जिन्दगी के उसूलों को समझने में इन्सानों को आखिर कितना वक्त लगेगा?

ख्वाजा नसरुद्दीन को इस बात में शक नहीं था कि एक दिन लोग इन उसूलों को समझेंगे। उसे पूरा यकीन था कि दुनिया में बुरे लोगों के मुकाबले अच्छे लोगों की तादाद ज्यादा है। सूदखोर जाफ़र और चेचकरू सूफ़िया और उनकी जलील रूहें महज ऐसी नापाक और गंदी मिसालें थीं जो आम नहीं हैं। उसे पूरा यकीन था कि कुदरत ने आदमी में नेकी भरी है और उसकी सारी बदी वह जहर है जिसे जिन्दगी के गलत और बेजा निजाम ने बाहर से उसकी रूह में भरा है। उसे पूरी उम्मीद थी कि वह वक्त भी आयेगा जब इंसान अपनी जिन्दगी के निजाम को बदलेगा और उसे बेहतर बनायेगा—ईमानदारी की मेहनत से अपनी रूहों को पाक बनायेगा।

ख्वाजा नसरुद्दीन के खयालात इसी किस्म के थे। यह बात उसके बारे में उन कहानियों से साबित होती है, जिन पर उसके दिल की छाप है। हालांकि उसकी याद को नीचता भरी जलन और बदगुमानी से स्याह करने की कोशिशें की गयीं, लेकिन इसमें कामयाबी न मिली क्योंकि झूठ कभी सच्चाई पर फतह नहीं पा सकता।

ख्वाजा नसरुद्दीन की याद हमेशा नेक और पाक रहेगी—उस हीरे की मानिंद जो हमेशा चमकता रहता है। आज भी तुर्की में जो मुसाफिर अक-शहर में उसके मामूली से मजार के सामने रुकते हैं, उसकी

चढ़ाई करते हैं। एक शायर के अल्फाज में वे कहते हैं :

"उसने अपना दिल जमीन को दे दिया, हालांकि खुद आंधी की तरह वह सारी दुनिया का चक्कर लगाता रहा। वह एक ऐसी आंधी थी, जिसने अपनी मौत के बाद अपने दिल में खिले सारे गुलाबों की खुशबू को दुनिया में बिखेर दिया। सारी दुनिया की खूबसूरती देखने में जो जिन्दगी गुजरे, वह बहुत हसीन जिन्दगी है। और, हसीन है वह जिन्दगी जो खत्म होने पर अपनी रूह की पाकीजगी छोड़ जाये।"

यह सच है कि कुछ लोग कहते हैं कि अक-शहर के मजार के अन्दर कोई नहीं है, कि खोजा नसरुद्दीन ने अपनी मौत की अफवाह फैलाने के लिए इसे जान-बूझकर बनवाया था और खुद सफर के लिए निकल पड़ा था। यह बात सच है या गलत ? मैं समझता हूं, हमें इस चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। हम तो सिर्फ यह जानते हैं कि खोजा नसरुद्दीन से कोई चीज दूर नहीं।

: ६ :

सुबह का वक्त जल्द गुजर गया। उमस-भरी दोपहरी शुरु हुई। अब सांस लेना भी मुश्किल हो रहा था।

भाग निकलने की तैयारी पूरी हो चुकी थी। खोजा नसरुद्दीन अपने कैदी के पास पहुंचा और उससे कहा :

"ऐ दानिशमन्द मौलाना हुसैन ! आपकी कैद की मियाद पूरी हुई। आज रात मैं महल छोड़ दूंगा। एक शर्त पर मैं आपका दरवाजा खुला छोड़ जाऊंगा : आप, यहां से दो दिन और न निकलें। अगर आप इससे जल्दी निकल पड़े, तो हो सकता है कि मैं उस

वक्त महल में ही मौजूद रहूं और तब मैं आप पर यह इल्जाम लगाने को मजबूर हो जाऊंगा कि आप निकल भागना चाहते थे। तब मैं आपको जल्लाद के सुपुर्द कर दूंगा। इसलिए, बगदाद के ऐ आलिम मौलाना हुसैन, अलविदा! मेरे बारे में बेरहमी से न सोचना। एक काम और मैं आपके सुपुर्द करता हूं। वह यह कि आप अमीर को मेरा असली नाम और सही वाकया बतायें। जरा गौर से सुनिये मौलाना हुसैन : मेरा नाम है—ख्वाजा नसरुद्दीन!"

"क-क-क्या . . . ?" बूढ़ा घबड़ाकर पीछे को हटता हुआ अचम्भे से बोला। इसके आगे वह एक लफ्ज भी न बोल सका। इस नाम ने ही मानो उसे गूंगा बना दिया हो।

दरवाजे के बन्द होने की आवाज हुई। जीने से उतरते ख्वाजा नसरुद्दीन के कदमों की आवाज धीमी पड़ती सुनाई दी। बूढ़े ने आहिस्ते से दरवाजा टटोला। दरवाजा खुला हुआ था। आलिम ने झांककर बाहर देखा। कोई नहीं दिखाई दिया। उसने जल्दी से दरवाजा बन्द कर लिया और सांकल चढ़ा दी। वह बड़बड़ाने लगा : "नहीं, मुझे यहां एक हफ्ते भले ही और रहना पड़े, लेकिन मैं ख्वाजा नसरुद्दीन से सरोकार रखना पसन्द न करूंगा।"

रात होने पर नीले आसमान में जब पहले सितारे चमकने शुरू हुए, तभी ख्वाजा नसरुद्दीन ने मिट्टी की एक सुराही उठायी और अमीर के हरम के दरवाजे पर तैनात पहरेदारों के पास पहुंचा।

साबुत अंडे निगलनेवाला मोटा और काहिल सिपाही कह रहा था : "वह देखो! एक सितारा और टूटा। अगर, जैसा कि तुम कहते हो, सितारे टूटकर जमीन पर गिरते हैं, तो लोगों को पड़े हुए क्यों नहीं ?"

"शायद वे समंदर में गिर जाते हैं !" दूसरे सिपाही ने जवाब दिया।

"ऐ बहादुर सिपाहियो !" ख्वाजा नसरुद्दीन ने टोका। "ख्वाजा सरा को बुलाओ। मैं बीमार दाश्ता के लिए दवा लाया हूं।"

ख्वाजा सरा आया। बड़ी इज्जत से उसने सुराही थामी। सुराही में खड़िया मिले सादे पानी के अलावा और कुछ नहीं था। दवा कैसे पी जायेगी इस बारे में ख्वाजा नसरुद्दीन ने उसे लम्बी हिदायत दी।

"ऐ दानिशमन्द मौलाना हुसैन ! आप दुनिया की सब बातें जानते हैं।" मोटे सिपाही ने चापलूसी भरी आवाज में कहा। "आपके इल्म की कोई हद नहीं। आप हमें बताइए कि आसमान से गिर कर सितारे कहां जाते हैं और लोगों को मिलते क्यों नहीं ?"

ख्वाजा नसरुद्दीन ने मजाक करने का मौका नहीं छोड़ा। बहुत संजीदगी से बोला: "तुम नहीं जानते ? जब सितारे टूटते हैं तो वे चांदी के छोटे-छोटे सिक्के बन जाते हैं और फकीर लोग उन्हें बटोर लेते हैं। लोगों को मैंने इसी तरह दौलतमन्द बनते देखा है।"

सिपाहियों ने एक-दूसरे को ताका। उनके चेहरे पर ताज्जुब की छाप थी।

उनकी बेवकूफी पर हंसता हुआ ख्वाजा नसरुद्दीन अपने रास्ते लगा। उसे खयाल भी न था कि उसका यह मजाक किसी वक्त कारगर साबित होगा।

आधी रात तक वह मीनार में रहा। आखिरकार सारा शहर और महल खामोशी में डूब गये। जाया करने के लिए अब वक्त नहीं था। गर्मी की रातें तेज परों पर उड़ती हैं। ख्वाजा नसरुद्दीन चुपचाप नीचे उतरा और चोरी-चोरी अमीर के हरम की तरफ बढ़ा। वह सोच रहा था कि पहरेदार अब तक नींद में गाफिल हो चुके होंगे। लेकिन, वहां पटुंन-

कर उसे धीमे-धीमे बोलने की आवाजें सुनाई दीं। उसे बहुत नाउम्मीदी हुई।

मोटा काहिल सिपाही कह रहा था : "काश ! एक सितारा टूटकर यहां भी गिर जाता तो चांदी बटोरकर हम लोग रईस बन जाते।"

उसके साथी ने जवाब दिया : "मई, मुझे तो यकीन नहीं होता कि सितारे टूटकर चांदी के सिक्के बन जाते हैं।"

"लेकिन बगदाद के आलिम ने तो यही कहा था।" पहले ने जवाब दिया।

"बेशक ! उनका इल्म गहरा है और वह गलत नहीं कह सकते।"

साये में छिपते हुए खोजा नसरुद्दीन भुनभुनाया : "खुदा की मार इन लोगों पर ! मैंने इनसे सितारों की बात की ही क्यों ? अब तो सवेरे तक यही तकरार रहेगी और भाग निकलने में देर हो जायगी।"

बुखारा के ऊपर आसमान में साफ और हलकी रोशनी में हजारों सितारे चमक रहे थे। यकायक एक नन्हा-सा सितारा टूटा और आसमान में तिरछा-तिरछा अपनी मौत की मंजिल पर बढ़ चला। चमकती हुई लकीर-सी छोड़ता हुआ एक और सितारा उसके पीछे हो लिया। आधी गर्मियां खत्म हो चुकी थीं और सितारे टूटने का मौसम आ रहा था।

"अगर ये सचमुच चांदी के सिक्के बनकर गिरते . . . " दूसरे पहरेदार ने कहा।

यकायक खोजा नसरुद्दीन के दिमाग में एक ख्याल कौंध गया। झटपट उसने चांदी के सिक्कों से भरी अपनी थैली खोली।

लेकिन देर तक कोई सितारा नहीं टूटा।

आखिर एक सितारा टूटा।

तभी ऊंचे-नीचे पत्थरों पर एक सिक्का खनका।

शर्म से पहरेदार मानो मृत बन गये। एक-दूसरे तरफ घूरते वे उठ खड़े हुए।
पहले ने कांपती आवाज में पूछा : "सुना तुमने ?"
"हं सुना त . . . तो" दूसरा हकलाकर बोला।
ख्वाजा नसरुद्दीन ने दूसरा सिक्का फेंका। वह दनी के दालान में गिरा और चमकने लगा। मोटा रेदार फपटकर उसके ऊपर लेट गया।
दूसरा पहरेदार ठीक से बोल भी नहीं पा रहा। डर के मारे उसकी जबान से लफ्ज नहीं फूट थे : क्या तु . . . तुम्हें व . . . वह मिला . . .?"
"मि . . . मिल गया !" कांपते होंठों से मोटा सिपाही हकलाया। उसने उठाकर सिक्का दिखाया।
यकायक मानो कई तारें एक साथ टूटकर तेजी से रहीं। ख्वाजा नसरुद्दीन मुट्ठी भर-भरकर सिक्के फेंकने लगा। रात का सन्नाटा सिक्कों की खनखनाहट से कांप रहा था। सिपाही अक्ल खो बैठे। अपने जे फेंककर, जमीन पर लोट-लोटकर, वे सिक्के ढूंढने लगे।
"यहां, यहां, यह रहा !" पहलेवाले ने फटी आवाज में कहा।
दूसरा रेंगता हुआ चुपचाप आगे बढ़ा। यकायक उसे बहुत से सिक्के मिल गये। खुशी से वह गलगलाने लगा।
ख्वाजा नसरुद्दीन ने एक मुट्ठी सिक्के उछाले और चोर दरवाजे से भीतर घुस गया। बाकी काम आसान था। पैरों की आहट मुलायम ईरानी कालीनों में खो गयी। मोड़ और रास्ते भी उसे याद थे। हिजड़े सो रहे थे।
भरी मुहब्बत से गुलजान ने उसे प्यार किया और कांपती हुई उससे लिपट गयी।
ख्वाजा नसरुद्दीन ने फुसफुसाकर कहा : "जल्दी करो !"
किसी ने उनको रोका नहीं। एक हिजड़ा नींद

थे कुनमुनाया और कराहने लगा। ख़ोजा नसरुद्दीन उस पर झुका; लेकिन हिजड़े की मौत अभी नहीं आयी थी; उसने होंठ चटखाये और फिर खर्राटे भरने लगा।

रंगीन दरवाज़े पर पहुंचकर ख़ोजा नसरुद्दीन ने होशियारी से बाहर नज़र डाली। सहन के बीच फूलों के बल बैठे अपनी-अपनी गरदनें आगे बढ़ाये सिपाही आसमान की तरफ़ आगे बढ़ाये सिपाही आसमान की तरफ़ टकटकी बांधे किसी सितारे के टूटने का इन्तज़ार कर रहे थे। ख़ोजा नसरुद्दीन ने एक मुट्ठी सिक्के और फेंके, जो दरख़्तों के दूसरी तरफ़ गिरे। उनकी खनखनाहट सुनकर जूते खटखटाते पहरेदार उधर ही दौड़ पड़े। जोश में वे अपने आसपास नहीं देख रहे थे। भालुओं की तरह ज़ोर से हांफते और समझ में न आने वाली बातें बड़बड़ाते वे आगे बढ़ गये और उस कंटीली झाड़ी को पार कर गये जिसने उनके कपड़े फाड़ दिये।

एक की कौन कहे, उस रात सारी दाश्ताएं चुरायी जा सकती थीं।

ख़ोजा नसरुद्दीन बराबर कह रहा था : "जल्दी करो, जल्दी !"

दोनों दौड़कर मीनार तक पहुंचे और सीढ़ियां चढ़ गये। अपने बिस्तर के नीचे से ख़ोजा नसरुद्दीन ने एक रस्सा निकाला। यह तैयारी उसने पहले ही कर ली थी।

गुलजान फुसफुसायी "बहुत ऊंचाई है . . . मुझे डर . . . ।"

ख़ोजा नसरुद्दीन ने एक फंदा बनाया और उसमें गुलजान को बांधा। फिर खिड़की के सींखचों को हटा [illegible]। इन्हें उसने पहले ही रेत डाला था। गुलजान [illegible] की मुंडेर पर जा बैठी। डर से वह कांप रही

उसकी पीठ को हल्का सा धक्का देते हुए ख्वो
नसरुद्दीन ने कड़ाई से कहा : "बाहर उतरो !"

गुलजान ने आंखें मींच लीं और चिकने पत्थर
झांककर हवा में झूलने लगी ।

जमीन पर पहुंचकर वह सम्भल गयी । तभी ऊ
से आवाज आयी : "भागो ! भागो ! भाग जाओ !"

खिड़की पर झुका हुआ ख्वोजा नसरुद्दीन हा
हिला रहा था और रस्सा ऊपर को खींच रहा था
गुलजान ने जल्दी से रस्सा खोला और सुनसान बाज
में गायब हो गयी ।

ख्वोजा नसरुद्दीन को नहीं मालूम था कि पूरे म
में शोरगुल और कुहराम मच गया है ।

मार पड़ने के तकलीफदेह तजुर्बे के बाद ख्वाजा स
को ऐन वक्त अपनी जिम्मेदारी का ख्याल आया अ
नयी दाश्ता के कमरे में जाकर आधी रात को झांका
उसका बिस्तर खाली पाकर भागा-भागा वह अमीर
पास पहुंचा और उन्हें जगा दिया ।

अमीर ने अर्सलां बेग को बुलाया । अर्सलां बेग
पहरेदारों को जगाया । फिर क्या था । मशालें भ
उठीं, ढालें और नेज़े खड़कने लगे ।

बगदाद के आलिम मौलाना हुसैन को बुला भे
गया । ख्वोजा नसरुद्दीन हाजिर हुआ ।

अमीर ने शिकायत करते हुए तेज आवाज में कहा
"मौलाना हुसैन ! यह क्या हालत है ? अमी
आजम, मावरुन्निसा, को अपने महल में भी बदम
ख्वोजा नसरुद्दीन से नजात नहीं ? ऐसा तो क
नहीं सुना गया था कि अमीर के हरम से दाश्ता चु
ली जाय !"

"ऐ अमीर-आजम !" ख्वोजा ने हिम्मत बटो
कर कहा । "यह भी मुमकिन है कि यह ख्वोजा नस
रुद्दीन की करतूत न हो ?"

"फिर कौन कर सकता है यह ?" फटी हुई आवा

थे अमीर चिल्लाये। "मालूम हमें इत्तिला दी जाती है कि वह बुखारा में लौट आया है और रात में हमारी दाश्ता गायब हो जाती है। उसके अलावा और हो ही कौन सकता है? तलाश करो। तलाश करो उसकी! जाने न पाये! सिपाहियों की तादाद तिगुनी कर दो। अभी वह महल से निकला नहीं होगा। ओ अर्सला बेग! यह न भूलना कि तेरे कन्धों पर तेरा सिर स्थि-पन से नहीं है।"

तलाश शुरू हुई। पहरेदारों ने महल का कोना-कोना छान मारा। हर तरफ मशालें जल रही थीं और हिलती हुई रोशनी फेंक रही थीं। इस तलाश में सबसे ज्यादा जोश से काम कर रहा था ख्वाजा नसरुद्दीन। कभी वह कालीन उठाता, कभी संगमरमर के हौजों में छड़िया डालकर देखता, कभी शोर-गुल मचाता हुआ तेजी से इधर-उधर भागता। केतली, सुराही, मर्तबान, यहां तक कि चूहे के बिलों तक में वह झांक रहा था।

"शहंशाहे-आजम!" अमीर की आरामगाह में वापस लौटकर वह बोला। "ख्वाजा नसरुद्दीन महल से निकल भागा है।"

अमीर गुस्से चिल्लाया: "मौलाना हुसैन! तुम्हारी बेवकूफी पर हमें ताज्जुब होता है। मान लो उसे महल में छिपने की कोई जगह मिल गयी हो? तब तो वह हमारी आरामगाह में भी आ धमकेगा! पहरेदार बुलाओ। फौरन बुलाओ। यहां आओ पहरेदार!" डर के मारे अमीर की घिग्घी बंधी थी।

बाहर तोप गरज उठी। यह तोप भगोड़े ख्वाजा ख्वाजा नसरुद्दीन को डराने के लिए दागी गयी थी।

अमीर एक कोने में दुबके हुए चिल्ला रहे थे: "पहरेदारों को बुलाओ! सिपाहियों को बुलाओ!"

उनका खौफ तभी मिटा जब अर्सला बेग ने आरामगाह के दरवाजे पर तीस और हर खिड़की के नीचे

दस-दस सिपाही तैनात कर दिये। तभी अमीर कोने से निकले और आजिजी से बोले : "मौलाना हुसैन! सच-सच बताओ, क्या तुम्हें यकीन है कि वह बदमाश अब हमारी आरामगाह में नहीं है?"

ख्वाजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया . "दरवाजे और खिड़कियों पर पहरा बैठा दिया गया है। कमरे में सिर्फ हम दो शख्स हैं, जहांपनाह। ख्वाजा नसरुद्दीन यहां हो ही कैसे सकता है?"

अमीर के डर ने अब गुस्से का रंग पकड़ा। "खबरदार! भागने का मौका नहीं मिलना चाहिए उसे।" वह चिल्लाये। "वह हमारी दाश्ता को भगाकर नहीं ले जा सकता। मौलाना हुसैन, हमारे गुस्से और नाराजगी की इन्तहा नहीं। हम उस दाश्ता से एक बार भी नहीं मिल सके। सोचो तो, एक बार भी नहीं। हमारा दिल यह खयाल आते ही मसोस उठता है। ओ मौलाना हुसैन! यह सब तुम्हारे उन बेवकूफ सितारों का ही कसूर है। इस बेइज्जती के लिए हम काट पाते तो सारे सितारों के सिर काट डालते। अर्सलां बेग को हमने हुक्म जारी कर दिया है। मौलाना हुसैन, तुम भी उस बदमाश को पकड़ने की पूरी कोशिश करो। याद रखो, ख्वाजा सरा के ओहदे पर तुम्हारी तैनाती इस काम में तुम्हारी कामयाबी पर ही मुनहसर है।" अमीर की उंगलियां रह-रहकर ऐंठ रही थीं, मानो ख्वाजा नसरुद्दीन के गले को टटोल रही हों।

दांतों से अपनी आहें दबाता हुआ ख्वाजा नसरुद्दीन आदाब के लिए झुक गया।

: ७ :

बाकी रात ख्वाजा नसरुद्दीन उस काफिर, बदमाश ख्वाजा नसरुद्दीन, को पकड़ने की तरकीबें अमीर को

दस-दस सिपाही तैनात कर दिये। तभी अमीर कोने से निकले और आजिजी से बोले : "मौलाना हुसैन! सच-सच बताओ, क्या तुम्हें यकीन है कि वह बदमाश अब हमारी आरामगाह में नहीं है?"

ख्वाजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया : "दरवाजे और खिड़कियों पर पहरा बैठा दिया गया है। कमरे में सिर्फ हम दो शख्स हैं, जहांपनाह। ख्वाजा नसरुद्दीन यहां हो ही कैसे सकता है?"

अमीर के डर ने अब गुस्से का रंग पकड़ा। "खबरदार! भागने का मौका नहीं मिलना चाहिए उसे!" वह चिल्लाये। "वह हमारी दाश्ता को भगाकर कहीं ले जा सकता! मौलाना हुसैन, हमारे गुस्से और नाराजगी की इन्तहा नहीं! हम उस दाश्ता से एक बार भी नहीं मिल सके! सोचो तो, एक बार भी नहीं! हमारा दिल यह ख्याल आते ही मसोस उठता है! ओ मौलाना हुसैन! यह सब तुम्हारे उन बेवकूफ सितारों का ही कसूर है। इस बेइज्जती के लिए हम काट पाते तो सारे सितारों के सिर काट डालते! अर्सला बेग को हमने हुक्म जारी कर दिया है। मौलाना हुसैन तुम भी उस बदमाश को पकड़ने की पूरी कोशिश करो। याद रखो, ख्वाजा सरा के ओहदे पर तुम्हारी तैनाती इस काम में तुम्हारी कामयाबी पर ही मुनहसर है।" अमीर की उंगलियां रह-रहकर ऐंठ रही थीं मानो ख्वाजा नसरुद्दीन के गले को टटोल रही हों।

शैतानी से अपनी आंखें दबाता हुआ ख्वाजा नसरुद्दीन आदाब के लिए झुक गया।

: ७ :

सारी रात ख्वाजा नसरुद्दीन उर्फ काबिल नजूमी ख्वाजा नसरुद्दीन को पकड़ने की तरकीबें अमीर को

अली और यूसुफ लुहार था। और भी बहुत-से लोग थे। जिस किसी से भी ख्वाजा नसरुद्दीन कभी मिला था, बात की थी, उससे पानी पिया था, या जिससे भी उसने अपने गधे के लिए एक मुट्ठी घास ली थी—वे सभी वहां मौजूद थे। इस जुलूस के पीछे-पीछे अर्सला बेग आ रहा था।

ख्वाजा नसरुद्दीन जब तक सम्हले-सम्हले और होश दुरुस्त करे तब तक फाटक बन्द हो चुका था और आहाता खाली हो गया था। कैदी कैदखाने पहुंच चुके थे। ख्वाजा नसरुद्दीन फौरन अर्सला बेग की तलाश में लौट पड़ा।

"अर्सला बेग साहब! क्या हुआ? ये लोग कहां से आये? इन लोगों का जुर्म क्या है?"

अर्सला बेग ने जीत के लहजे में कहा: "ये सब लोग ख्वाजा नसरुद्दीन के साथी और उसे पनाह देने वाले हैं। मेरे मुखबिरों और जासूसों ने इन लोगों का पता बताया था। इन सब को सरे आम बेरहमी से मौत की सजा दी जायेगी—या फिर वे ख्वाजा नसरुद्दीन से कोई ताल्लुक न होने का सबूत पेश करेंगे। लेकिन मौलाना हुसैन, आप इतने पीले क्यों पड़ रहे हैं? आप कुछ परेशान मालूम होते हैं?"

ख्वाजा नसरुद्दीन चौंका: "पीला? हां, हां, क्यों नहीं! इसका मतलब है कि इनाम आपको मिलेगा, मुझे नहीं।"

ख्वाजा नसरुद्दीन महल में रुकने को मजबूर हो गया। बेगुनाह लोग मौत के मुंह में जा रहे हों, तो वह इसके अलावा कर ही क्या सकता था।

दोपहर को फौज ने बाजार में मोर्चा जमाया। शाही तख्त के चारों तरफ तीन-तीन की कतार में सिपाही खड़े हो गये। नकीबों ने सजा का एलान कर दिया था। भीड़ चुपचाप खड़ी थी। तपते हुए आसमान से झुलसाने वाली गर्मी बरस रही थी।

महल के फाटक खुले और पुरानी तरतीब के मुताबिक पहले चोबदार, फिर पहरेदार, फिर मीरासी, फिर हाथी और दरबारी लोग निकले। आखीर में अमीर की सवारी दिखायी दी। भीड़ ने जमीन पर लेटकर कोर्निश की। सवारी तख्त तक आ गयी।

अमीर तख्त पर जा बैठे। मुजरिम लोग फाटक से बाहर लाये गये। भीड़ ने फ़सक,साहट से उनका इस्तकबाल किया। मुजरिमों के रिश्तेदार और दोस्त उधर टकटकी बांधे सामने की कतारों में खड़े थे।

जल्लाद कुल्हाड़ियां तेज करने, सूलियां गाड़ने और रस्से तैयार करने में मशगूल थे। उन्हें दिन भर के लिए काम मिल गया था, क्योंकि एक के बाद एक उन्हें आठ आदमियों को मौत के घाट उतारना था।

मौत के इस जुलूस में सबसे आगे था बूढ़ा नयाज। जल्लादों ने उसे बांहों में जकड़ लिया। दाहिनी तरफ फांसी थी, बायीं तरफ लकड़ी का कुन्दा, जिस पर सिर रख कर कुल्हाड़ी चलायी जाती। सामने की जमीन पर सूली गड़ी थी।

वजीर बख्तियार ने जोरदार और संजीदा आवाज में ऐलान किया :

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानुर्रहीम ! बुखारा के सुलतान, आफताब-ए-जहां, अमीर-आजम ने इन्साफ के तराजू में तौलकर अपनी रिआया में से आठ लोगों के जुर्म का फैसला किया है। इन लोगों ने अमन में खलल डालने, फूट फैलाने वाले, शरारत-पसन्द, काफिर, ख्वाजा नसरुद्दीन को पनाह दी थी।

"अमीर-आजम का हुक्म है कि आवारा ख्वाजा नसरुद्दीन को बहुत दिनों तक अपने घर में पनाह देने वाले नयाज कुम्हार को सबसे पहले मौत की सजा दी जाय। उसका सिर कलम कर दिया जायेगा। जहां दूसरे मुजरिमों की बात है, उनकी पहली सजा है नयाज की मौत देखना, ताकि वे अपने लिए और भी

सख्त मौत का ख्याल कर सके। इनमें से हर एक को किस ढंग से मारा जायेगा, इसका ऐलान बाद में होगा।"

वहां ऐसी खामोशी थी कि बख्तियार का हर लफ्ज आखिरी कतार तक सुनायी पड रहा था।

अपनी आवाज और ऊंची करते हुए उसने कहा : "हरेक को मालूम हो कि आइन्दा से खोजा नसरुद्दीन को पनाह देने वाले हर शख्स को यही सजा मिलेगी और वह जल्लाद के हाथों सौंप दिया जायेगा। लेकिन, अगर मौत की सजा पाने वाला कोई शख्स उस काफिर बदमाश का पता बतायेगा तो न सिर्फ उसकी खुद की सजा माफ कर दी जायेगी और उसे अमीर का इनाम व खुदा का करम मिलेगा, बल्कि वह औरों की सजा माफ कराने का भी हकदार होगा। नयाज कुम्हार! क्या तुम्हें खोजा नसरुद्दीन का पता बताना और अपने आप को व औरों को बचाना मंजूर है?"

नयाज बहुत देर तक चुपचाप सिर झुकाये खड़ा रहा। बख्तियार ने अपना सवाल दोहराया। नयाज ने जवाब दिया "नहीं, मैं नहीं कह सकता कि वह कहां है।"

जल्लाद उसे खींचकर लकड़ी के कुन्दे तक ले गये। भीड़ में कोई रो उठा। बूढ़ा झुका और गरदन घटाकर सफेद बालों वाला अपना सिर कुन्दे पर रख दिया।

तभी दरबारियों को कोहनी से हटाता हुआ खोजा नसरुद्दीन अमीर के सामने आ खड़ा हुआ। उसने इतने जोर से कहना शुरू किया कि भीड़ सुन ले :

"ऐ आका-ए-नामदार! जल्लादों को हुक्म दें कि सजा की तामील रोक दी जाय। मैं अभी और यहीं खोजा नसरुद्दीन को पकड़वा दिया दूंगा।"

अमीर ताज्जुब से उसकी तरफ देखने लगे। भीड़ में खलबली मच गयी। अमीर के इशारे पर जल्लाद ने कुल्हाड़ी कन्धे से उतार दी और पैरों के पास रख ली।

लौटने के लिए आजाद कर दिये जायेंगे। ऐ शहंशाह! मैंने सच कहा है न ?"

अमीर ने ताईद की, "मौलाना हुसैन, तुमने सच कहा है। हम वादा करते हैं कि ऐसा ही होगा। लेकिन तुम अब जल्द ही हमें उस सरदार की सूरत दिखाओ।"

ख्वाजा नसरुद्दीन ने भीड़ से पूछा, "आप लोग सुन रहे हैं न ? अमीर ने वादा किया है।"

उसने लम्बी सांस ली। उसे लगा कि हजारों आंखें उसी पर टिकी हैं।

"पनाह देने वालों का सरदार...."

वह लड़खड़ा गया। उसने अपने चारों तरफ देखा। चन्द लमहों में उसके चेहरे पर मौत की तकलीफ देखी। अपनी प्यारी दुनिया से, अपने आवाम से, सूरज से, वह विदा ले रहा था।

अमीर बेताबी से चिल्लाये "जल्दी करो, मौलाना हुसैन। जल्दी बताओ!"

खुली, खनकती आवाज में ख्वाजा नसरुद्दीन ने कहा:

"पनाह देनेवालों में अव्वल—आप हैं, अमीर!" उसने अपनी नकली दाढ़ी और साफा उतार फेंका।

भीड़ की सांस जैसे ऊपर रह गयी, वह हिली-डुली और खामोश हो गयी। अमीर की आंखें बाहर को निकल आईं। उसके होंठ हिले लेकिन कोई आवाज न निकली। दरबारी खड़े रह गये, मानो बुत बन गये हों।

यह खामोशी बहुत थोड़ी देर तक रही।

"ख्वाजा नसरुद्दीन! ख्वाजा नसरुद्दीन!" खुशी से भीड़ चिल्लायी।

"ख्वाजा नसरुद्दीन!" घबराकर दरबारी फुसफुसाये।

"ख्वाजा नसरुद्दीन!" अर्सलां बेग चौंका।

आखिर अमीर सम्भला और धीरे से बोला "ख्वाजा नसरुद्दीन!"

"हां, ख्वाजा नसरुद्दीन! ऐ अमीर! दौलत इन लोगों

"कैदियों को रिहा करो !"

"अमीर ने वादा किया है !"

"कैदियों को रिहा करो !"

ये नारे बुलन्द होते गये — बढ़ते गये। सिपाहियों की कतारें तितर-बितर होने लगीं।

यसिनमार अमीर के कान के पास झुका और बोला : "ऐ मेहरबान आका ! इन लोगों को रिहा करना होगा, वर्ना रिआया बगावत कर देगी।"

अमीर ने हामी में सिर हिलाया।

यसिनमार चिल्लाया — "अमीर अपना वादा पूरा करते हैं।"

सिपाहियों ने रास्ता खोल दिया। मौत की सजा पाने वाले लोग फौरन भीड़ में समा गये।

सिपाही ख्वाजा नसरुद्दीन को महल की तरफ ले चले। भीड़ में बहुत से लोग रो-रोकर उसके पीछे चिल्ला रहे थे :

"अलविदा, ख्वाजा नसरुद्दीन! हमारे प्यारे, नेक-दिल, ख्वाजा नसरुद्दीन! तुम हमेशा हमारे दिलों में रहोगे!"

ख्वाजा नसरुद्दीन सीना ताने, सिर ऊंचा किये, चल रहा था। उसके चेहरे पर डर की एक शिकन तक न थी। फाटक पर पहुंचकर वह पीछे को मुड़ा। भीड़ जोर से चीखी :

"अलविदा, ख्वाजा..."

अमीर जल्दी से सवारी में जा बैठे। शाही जुलूस तेजी से वापस लौट चला।

: ८ :

फैसला सुनाने के लिए दरबार लगा।

सिपाहियों से घिरा, बंधे हाथ, जब ख्वाजा नसरुद्दीन लाया गया तो दरबारियों ने आंखें नीची कर लीं। आलिम मुंह चढ़ाकर दाढ़ियों पर हाथ फेरने लगे। वे एक दूसरे को देखते भी शर्मा रहे थे। लम्बी सांस लेता और गला साफ करता अमीर दूसरी तरफ ताकने लगा।

लेकिन, ख्वाजा नसरुद्दीन की नजर सीधी व साफ थी। अगर उसके हाथ उसकी पीठ के पीछे बंधे न होते तो यही लगता कि मुजरिम वह नहीं, बल्कि वे सब दरबारी हैं जो बाहर बैठे थे।

आखिर कैद से रिहाई पाकर बगदाद के असली आलिम मौलाना हुसैन भी दरबार में हाजिर हुए। ख्वाजा नसरुद्दीन ने बड़े दोस्ताना ढंग से उन्हें आंख मारी। बगदाद के आलिम चौंक पड़े और नाराजगी से सिसकारी भरी।

फैसले में देर नहीं लगी। देर लगने की गुंजाइश भी नहीं थी। ख्वाजा नसरुद्दीन को मौत का हुक्म सुना दिया गया।

मुजरिम हर तरह की सजा से बेदाग छूट निकला है, तो क्या इससे यह साबित नहीं होता कि नापाक ताकतें, अंधेरे की रूहें, जिनका अमीर के हुजूर में नाम भी लेना मुनासिब नहीं, इसकी मदद करती रही हैं ?"

यह कहकर आलिम ने अपने कन्धों पर फूंक मारी। ख्वाजा नसरुद्दीन को छोड़कर बाकी सभी लोगों ने ऐसा ही किया।

आलिम ने फिर कहना शुरू किया : "मुजरिम की बाबत मिली पूरी इत्तला इकट्ठी करके और उस पर गौर करके हमारे अमीरे-आजम ने इसकी मौत के तरीकों के बारे में हर सुझाव को ठुकरा दिया है। उन्हें अन्देशा है कि नापाक ताकतें फिर एक बार इस मुजरिम की मदद करके मुनासिब बदले और सजा से इसे बचा लेंगी। मौत का एक और तरीका है जो इस मुजरिम पर नहीं आजमाया गया है, वह तरीका है—पानी में डुबाने का।"

बगदाद के आलिम ने सिर उठाया और जीत के अन्दाज में दरबार को देखा।

ख्वाजा नसरुद्दीन कुछ चौंका। अमीर ने उसका हिलना भांप लिया : "आ हां, तो यह है इसका राज !"

इस बीच ख्वाजा नसरुद्दीन सोच रहा था : "इन लोगों ने नापाक रूहों की बात करनी शुरू की है। यह अच्छा शगुन है। इसका मतलब है कि अभी उम्मीद नहीं खोनी चाहिए।"

बगदाद का आलिम कहता गया : "जो कुछ मैंने पढ़ा-सुना है, उससे मुझे मालूम हुआ है कि बुखारा में एक पाक तालाब है जो शेख तुरखान के तालाब के नाम से मशहूर है। जाहिर है कि बदी की ताकतें ऐसे तालाब के पास फटकने की मजाल नहीं कर सकतीं। इससे, ऐ शहंशाह, यह मतलब निकलता है कि इस मुजरिम को पाक पानी के भीतर काफी देर तक दबाये रखा जाए जिसके बाद यह मर जायगा।"

तभी दूसरे किनारे से लड़ाई-झगड़े की आवाजें आयीं। मर्सेला बेग ने जल्दी से अमीर को समझाया, "ऐ आका! उन्हें यह थैला भी ले लेने दीजिए। इसमें भी चीथड़े हैं।"

सिपाहियों से पहला थैला छापाखाने के मालिक अल और उसके दोस्तों ने छीना था; दूसरा यूसुफ की रहनुमाई में लुहारों ने। कुम्हारों ने तीसरा थैला छीना। चौथा बिना छीन-झपट के बखैरियत पहुंच गया।

मशालों की रोशनी में सिपाहियों ने भीड़ को दिखाते हुए उस बोरे को उठाया और उलट दिया। चीथड़े बाहर निकल पड़े।

परेशान और भौंचक्की भीड़ नाउम्मीदी से खामोश खड़ी रही। यही अर्सला बेग की चाल भी थी। वह जानता था कि बेसमझी से इंसान में नाकारापन आ जाता है।

पांचवें थैले से निपटने का वक्त आ गया। उसे लानेवाले पहरेदारों को रास्ते में दौर

: ९ :

पाही ख़ोजा नसरुद्दीन को क़ैदख़ाने से बाहर लाये तो
बोला : "क्या तुम लोग मुझे अपनी पीठों पर लादकर
चलोगे ? अफ़सोस कि मेरा गधा इस वक़्त न हुआ।
ही के मारे वह लोटपोट हो जाता।"

"ख़ामोश ! अपना मुंह बन्द कर।" सिपाहियों ने
ाड़कर कहा। "तू अभी रोयेगा।"

वे उसे माफ़ नहीं कर सकते थे, क्योंकि उसने ख़ुद
ने को अमीर के सुपुर्द कर दिया था जिससे कि उनका
ाम मारा गया था।

उन्होंने एक संकरा बोरा [illegible] और नसरुद्दीन
उसमें ठूंसने लगे।

ोहरा-तेहरा होता हुआ ख़ोजा नसरुद्दीन
लाया "अरे बेवकूफ़ो ! क्या इससे बड़ा बोरा नहीं
मिल सकता था तुम्हें ?"

पसीने से सराबोर, हांफते हुए सिपाहियों ने डपटकर
"ख़ामोश ! अब तेरी [illegible] [illegible] [illegible] हरामज़ादे
इस तरह न फंस नहीं तो तेरे पेट में ठूंस
।"

ारपीट शुरू हो गयी जिसकी वजह से महल के और
र भी वहां पहुंच गये। आख़िर बड़ी कोशिश के बाद
ही उसे बोरे में बन्द करने और बोरे का मुंह रस्से
ांधने में कामयाब हुए। बोरे के भीतर बदबू, अंधेरा
घुटन थी। ख़ोजा नसरुद्दीन की रूह पर काला
ा छा गया। अब बच निकलने की कोई उम्मीद
थी।

ाने प्यारा और सबसे ज़्यादा ताक़तवर चीज़, मौत,
ीमिज़ाज की 'ऐ क़िस्मत जो मेरी मां की तरह मुझ
मेहरबान है ! ऐ सबसे ज़्यादा ताक़तवर मौत, जिसने
तक अपने बच्चे की तरह मेरी हिफ़ाज़त की है !

: ९ :

सिपाही ख्वाजा नसरुद्दीन को कैदखाने से बाहर लाये तो वह बोला: "क्या तुम लोग मुझे अपनी पीठों पर लादकर ले चलोगे? अफसोस कि मेरा गधा इस वक्त न हुआ। हंसी के मारे वह लोटपोट हो जाता।"

"खामोश! अपना मुंह बन्द कर।" सिपाहियों ने बिगड़कर कहा। "तू अभी रोयेगा।"

वे उसे माफ नहीं कर सकते थे, क्योंकि उसने खुद अपने को अमीर के सुपुर्द कर दिया था जिससे कि उनका इनाम मारा गया था।

उन्होंने एक संकरा बोरा निकाला और नसरुद्दीन को उसमें ठूंसने लगे।

दोहरा-तेहरा होते हुए ख्वाजा नसरुद्दीन चिल्लाया - "अरे शैतानो! क्या इससे बड़ा बोरा नहीं मिल सकता था तुम्हें?"

पसीने से सराबोर, हांफते हुए सिपाहियों ने डपटकर कहा - "खामोश! अब तेरी नहीं चलने की। अबे हराम-जादे इस तरह न फैल, नहीं तो तेरे पेट में ठूंस देंगे।"

मारपीट शुरु हो गयी, जिसकी वजह से महल के और नौकर भी वहां पहुंच गये। आखिर, बड़ी कोशिश के बाद सिपाही उसे बोरे में बन्द करने और बोरे का मुंह रस्से से बांधने में कामयाब हुए। बोरे के भीतर बदबू, अंधेरा और घुटन थी। ख्वाजा नसरुद्दीन की रूह पर काला कोहरा छा गया। अब बच निकलने की कोई उम्मीद नहीं थी।

उसने मुकद्दर और सबसे ज्यादा ताकतवर चीज, मौके, से इल्तजा की: "ऐ किस्मत, जो मेरी मां की तरह मुझ पर मेहरबान है! ऐ सबसे ज्यादा ताकतवर मौके, जिसने अब तक अपने बच्चे की तरह मेरी हिफाजत की है!

चुके थे। लेकिन अब तक कुछ न हुआ था। वे लोग बारी-बारी से बोरा लाद रहे थे और हर दो मील पर कन्धे पर बोझा बदल रहे थे। ख्वाजा नसरुद्दीन छोटे-छोटे कदम गिन रहा था। इससे उसे अन्दाजा हो रहा था कि कितना फासला तय हो गया है और कितना बाकी है।

वह जानता था कि मुकद्दर और मौका उस शख्स की मदद नहीं करते जो रोना-पीटना है, जो हिम्मत से काम नहीं लेता। लेकिन जो शख्स लगन से बढ़ता जाता है, वह मंजिल तक पहुंच जाता है। अगर उसके पांव थक जायें और जवाब दे जायें, तो उसे हाथों के बल ही रेंगना चाहिए। तब जरूर उसे रात के अंधेरे में दूर तक फैले काफिलों के अलाव की तेज रोशनियां दिखायी पड़ेंगी, कारवां सही रास्ते पर जा रहे होंगे और जरूर कोई अकेला ऊंट उस मुसाफिर को मिल जायेगा जो उसे मंजिल तक पहुंचा देगा। लेकिन वह शख्स जो सड़क के किनारे बैठा रहेगा और नाउम्मीदी को सीने से लगा लेगा उसे बेदिल पत्थरों से कोई हमदर्दी नहीं मिलेगी—वह चाहे जितना रोये-गिड़गिड़ाये। रेगिस्तान में वह प्यास से मर जायेगा। उसका जिस्म बदबूदार लकड़बग्घों का शिकार बनेगा और उसकी हड्डियां गर्म रेत के नीचे दब जायेंगी। कितने ही लोग अपने वक्त से पहले मर जाते

नहर हता !

खोजा नसरुद्दीन ऐसी मौत को सच्चे इंसान के लिए नाक चीज समझता था।

"नहीं !" उसने कहा और दांत भींचकर दोहराया, हीं ! मैं आज नहीं मरूंगा ! मैं आज मरना नहीं ता !"

लेकिन एक संकरे बोरे में दोहरा-तेहरा मुड़ा, जहां ने की भी जगह नहीं थी, वह कर ही क्या सकता उसकी कोहनियां और टांगें उसके पेट से सटी हुई । कोई चीज आजाद थी तो सिर्फ उसकी जबान। रे के भीतर से वह बोला, "ऐ बहादुर सिपा-! जरा एक लमहे के लिए रुको। मरने से पहले दुआ करना चाहता हूं ताकि अल्लाह मेरी रूह को कर ले।"

अच्छा ! दुआ कर लो।" सिपाहियों ने बोरा र पर रख दिया। "लेकिन जल्दी। दुआ जल्द ही कर लो। हम तुम्हें बाहर नहीं निकालेंगे। तुम के अन्दर ही इबादत कर लो।"

"हम हैं कहां ?" खोजा नसरुद्दीन ने पूछा। "मुझे मालूम होना चाहिए क्योंकि मुझे मेरा मुंह सबसे की मसजिद की तरफ करना होगा।"

"हम लोग कर्शी फाटक के पास हैं। यहां चारों तरफ दे ही मसजिदें हैं। बस, अब तुम अपनी दुआ खत्म करो।"

"शुक्रिया, ऐ सिपाहियो !" गम्भीर आवाज में खोजा नसरुद्दीन ने कहा।

खोजा नसरुद्दीन खुद नहीं जानता था कि क्यों टाल रहा है। "चलो दुआ करने के नाम पर कुछ वक्त मिल ! शायद मिल जायगी। फिर देखा जायगा। सब कुछ ऐसा हो सकता है कि..."

वह ज़ोर ज़ोर से दुआ करने लगा। साथ ही सिपाहियों की बातें सुनने लगा।

"आख़िर ऐसा हुआ ही कैसे कि हम लोग फौरन ही न जान पाये कि यही आलिम ख़ोजा नसरुद्दीन है!" लोग कह रहे थे। "काश! उसे पहचान कर लोग पकड़ लेते तो अमीर से हमें भारी इनाम मिलता।"

सिपाहियों के ख़यालात इन्हीं जानी-पहचानी गलियों में भटक रहे थे, क्योंकि उनकी ज़िन्दगी का सारा कुछ लालच ही था।

ख़ोजा नसरुद्दीन फौरन इसका फायदा उठाने को तैयार हो गया।

"मुझे कोशिश करनी चाहिए कि ये लोग बोरे को अकेला छोड़ दें—चाहे थोड़ी देर के लिए ही सही...। तब शायद मैं रस्सा तोड़ने में कामयाब हो जाऊं! या शायद इधर से कोई गुज़रे जो मुझे आज़ाद कर दे।" उसने सोचा।

बोरे में लात मारते हुए एक सिपाही गुर्राया : "जल्द ख़त्म कर अपनी दुआ। तू सुन रहा है न? हम लोग अब ज़्यादा इन्तज़ार नहीं कर सकते।"

"ऐ नेक और बहादुर सिपाहियो! सिर्फ़ एक मिनट और!" ख़ोजा नसरुद्दीन बोला। "मुझे ख़ुदा से एक ही इल्तिजा और करनी है। ऐ क़ादिरे-मुतलक़! ऐ मेहरबान अल्लाह! तू ऐसा कर दे कि जिस किसी को भी मेरे दस हज़ार तंके मिलें वह उनमें से एक हज़ार किसी मसजिद में ले जाय और मुल्ला से मेरे लिए एक साल तक दुआ-ए-ख़ैर करने को कहे।"

दस हज़ार तंके!!!

दस हज़ार तंकों की बात सुनकर सिपाही ख़ामोश हो गये। ख़ोजा नसरुद्दीन हालांकि बोरे से बाहर नहीं देख सकता था, तो भी वह बता सकता था कि सिपाहियों

के चेहरों से क्या झलक रहा है, कि वे कैसे एक-दूसरे को ताक रहे हैं और एक-दूसरे को कोहनी मार रहे हैं।

सहमकर, दबी जुबान से, उसने कहा : "अब मुझे ले चलो, नेक सिपाहियो ! मैंने अपनी रूह अल्लाह के सिपुर्द कर दी है।"

सिपाही हिचकिचाये। उनमें से एक ख्वाजा नसरुद्दीन को उकसाते हुए बोला : "हम जरा देर और सुस्तायेंगे। ख्वाजा नसरुद्दीन, तुम यह न समझना कि हम लोग बुरे हैं, या हमारे दिल नहीं हैं। तुम्हारे साथ ऐसा सख्त बरताव करने के लिए हम अपने फर्ज की वजह से मजबूर हैं। अमीर से तनख्वाह पाये बिना हम लोग अपने खानदानों को पालने लायक हो जाते, तो तुम्हें रिहा करने में कोई हिचक न होती..."

दूसरा सिपाही फुसफुसाया : "यह तुम क्या कह रहे हो ? हमने उसे बाहर निकलने दिया तो अमीर हमारा सिर काट डालेंगे।"

पहले सिपाही ने सिसकारी भरी और जवाब दिया : "अपनी जुबान बन्द रख। हमें तो सिर्फ इसका रुपया चाहिए।"

ख्वाजा नसरुद्दीन उनकी फुसफुसाहट नहीं सुन सका, लेकिन वह जानता था कि किस सिलसिले में बातें हो रही हैं। बड़ी चालाकी से आह भरता हुआ वह बोला : "ऐ बहादुरो ! मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं। दूसरों की बाबत बुरा-भला क्या कहूँ। मैं खुद ही बहुत बड़ा गुनहगार हूँ। उस दूसरी दुनिया में अल्लाह ने अगर मुझे माफी बख्श दी, तो मैं तुम लोगों से वादा करता हूँ कि उसके तख्त के नीचे बैठकर तुम लोगों के लिए दुआ करूँगा। तुम कहते हो कि अगर तुम्हें अमीर की तनख्वाह की जरूरत न होती तो मुझे बोरे से बाहर आने देते ? जरा सोचो तो तुम कह क्या रहे हो ! तुम अमीर के हुक्म के खिलाफ काम करते, जो खुद एक बड़ा गुनाह

हैं • पड़ी-पड़ी । मैं यहाँ बहुत है की
गुनाहों भरी पर गुनाह का मजा नहीं । इन
ही अपने खुदा नमाज की तरह। और मैं
इन्तजार की तरह पूरी होकर रहेंगी ।"

सिपाही साहेबानी से एक-दूसरे में ढंग रहे थे
मसानुद्दीन की गुनाह कबूल करने और
करने की धुन को वे बुरा-भला कह रहे थे।

बातचीत में अब तीसरा सिपाही भी इन
गया जो कोई बीमारी भरी बात सुनता हु
तक खामोश था। अपने साथियों की बात
वह बोला "किसी शख्स को अपनी शर्मिन्दा
गुनाह सिर्फ मौत के डर से कबूल करते देखकर
की तकलीफ होती है। नहीं, मैं ऐसा नहीं हूं।
महज रास्ते ही अपने गुनाह कबूल कर लिए हैं
तब से अब तक पाक जिन्दगी बसर कर रहा हूँ
लेकिन तुम तो जानते ही हो भाइयो, अल्लाह को
करने वाले काम किये बगैर सिर्फ पाकीजगी काफी
होती।" वह इसी तरह की बातें कहता रहा और उ
साथी अपनी हंसी रोकने के लिए मुंह पर हाथ र
रहे। वे जानते थे कि यह शख्स अव्वल नम्बर
जुआरी और ऐयाश है। "और इसलिए मैं अप
पाकीजगी को मजबूत बनाने के लिए एक बड़ा
नेक काम कर रहा हूं। मैं अपने वतन में एक मस्जिद
बनवा रहा हूं और इसके लिए मैं और मेरे खानदान
वाले भर पेट खाना भी नहीं खाते।"

बाकी दो सिपाहियों में से एक से नहीं रहा गया
और वह कुछ दूर जाकर हंसने लगा। हंसी के मारे
उसका दम घुटा जा रहा था।

तीसरा सिपाही कहता गया - "मैं तांबे तक का एक
एक सिक्का बचा कर रखता हूं। लेकिन मस्जिद का
काम बहुत आहिस्ते चल रहा है। अभी हाल में मैंने
अपनी गाय बेची है। अब मुझे चाहे जूते तक बेच

हैं ? नहीं-नहीं ! मैं नहीं चाहता कि मेरी
तुम्हारी रूहों पर गुनाह का साया पड़े । उठाओ
से चलो मुझे तालाब की तरफ । अमीर की मंश
अल्लाह की मशा पूरी होकर रहेगी ।"

सिपाही परेशानी से एक-दूसरे को देख रहे थे ।
नसरुद्दीन को गुनाह कबूल करने और अफसोस
करने की धुन को वे बुरा-भला कह रहे थे ।

बातचीत में अब तीसरा सिपाही भी शामिल
गया, जो कोई शैतानी भरी चाल सोचता हुआ
तक खामोश था । अपने साथियों को आंख म
यह बोला : "किसी शख्स को अपनी गलतियां
गुनाह सिर्फ मौत के डर से कबूल करते देखकर
को तकलीफ होती है । नहीं, मैं ऐसा नहीं हूं ।
बहुत पहले ही अपने गुनाह कबूल कर लिए थे
तब से अब तक पाक जिन्दगी बसर कर रहा
लेकिन तुम तो जानते ही हो भाइयो, अल्लाह की
करने वाले काम किये बगैर सिर्फ पाकीजगी काफी
होती ।" वह इसी तरह की बातें कहता रहा और उ
साथी अपनी हंसी रोकने के लिए मुंह पर हाथ लग
रहे । वे जानते थे कि यह शख्स अव्वल नम्बर
जुआरी और ऐयाश है । "और इसीलिए मैं अ
पाकीजगी को मजबूत बनाने के लिए एक सही
नेक काम कर रहा हूं । मैं अपने वतन में एक मस
बनवा रहा हूं और इसके लिए मैं और मेरे खानद
वाले भर पेट खाना भी नहीं खाते ।"

बाकी दो सिपाहियों में से एक से नहीं रहा ग
और वह कुछ दूर जाकर हंसने लगा । हंसी के म
उसका दम घुटा जा रहा था ।

तीसरा सिपाही कहता गया : "मैं तांबे तक का ए
एक सिक्का बचा कर रखता हूं । लेकिन मस्जिद
काम बहुत आहिस्ते चल रहा है । अभी हाल में मैं
अपनी गाय बेची है । अब मुझे चाहे जूते तक बे

देने पड़ें—लेकिन अगर वह काम पूरा हो जो मैंने उठाया है, तो मैं नंगे पैर चलने को तैयार हूं।"

ख्वाजा नसरुद्दीन ने बोरे के भीतर एक सिसकी भरी। सिपाहियों ने एक-दूसरे को ताका। चाल काम कर रही थी। उन्होंने अपने चालाक साथी को कोहनी मारी कि वह अपनी बात जारी रखे।

वह बोला : "काश ! मुझे कोई शख्स मिल जाता जो मसजिद पूरी करने के लिए आठ-दस हजार तंके दे देता। मैं उससे वादा कर लेता कि पांच, बल्कि दस, साल तक लगातार अल्लाह के तख्त की तरफ मसजिद की छतों से इबादत के महकते हुए बादलों से लिपटा उसका नाम रोज ऊपर उठता रहेगा !"

दूसरा सिपाही बोला : "दोस्त मेरे पास दस हजार तंके नहीं हैं, लेकिन तुम मेरी बचत की कमाई, यानी पांच सौ तंके, कुबूल कर लो। मेरी यह नाचीज भेंट ठुकराना मत, क्योंकि मैं भी इस नेक काम में हाथ बटाना चाहता हूं।"

दबी हुई हंसी से कांपता सिपाही हकलाता हुआ बोला : "और मैं भी . . . लेकिन मेरे पास कुल तीन सौ तंके हैं . . ."

दर्द-भरी आवाज में ख्वाजा नसरुद्दीन बोला : "ऐ नेक इंसान ! ऐ सबसे ज्यादा पाक सिपाही ! काश, मैं तुम्हारी पोशाक का कोना अपने होंठों से चूम पाता ! मैं बड़ा गुनहगार हूं ! लेकिन मेरे ऊपर मेहरबानी करो और मेरी भेंट लेने से इनकार मत करो। मेरे पास दस हजार तंके हैं। जब मैंने बद इरादे से अमीर की खिदमत की थी, तो मुझे अकसर सोने और चांदी की थैलियां मिलती रहती थीं। मैंने दस हजार तंके बचाकर छिपा दिये थे। मैं सोचता था कि बचकर निकल भागने के वक्त मैं इस रकम को ले लूंगा और चूंकि मुझे कहीं कब्रिस्तान में ही वह रकम गाड़ दी थी—कब्र के एक पुराने पत्थर के नीचे।"

ख्वाजा नसरुद्दीन बोला : "वह कब्रिस्तान के मग-रिबी (पश्चिमी) कोने में है। लेकिन तुम मेरे सिपाही पहले मुझसे वादा करो कि मेरा नाम शाही इस बात तक सर्टिफिकेट में दर्ज किया जायगा।"

बेताबी से ऐंठता हुआ सिपाही बोला : "मैं बड़ा काज़ी हूं। मैं बादशाह और उनके दीवान के नाम पर वादा करता हूं। अब तुम जल्द बताओ कि वह रकम कहां गड़ी है?"

ख्वाजा नसरुद्दीन ने जवाब देने में काफी वक्त लगाया। वह सोच रहा था - "अगर इन लोगों ने तय किया कि पहले मुझे तालाब तक छोड़ आयें और रातों की खोज कल तक मुल्तवी कर दें तो बड़ा गजब होगा। नहीं, बेताबी और लालच के मारे ये लोग मरे जा रहे हैं। इन्हें डर होगा कि कोई और आकर इनसे पहले ही रकम न ले जाय। फिर, इन लोगों को आपस में भी एक-दूसरे पर यकीन नहीं। आखिर मैं कौन सी ऐसी जगह बताऊं जहां ये लोग ज्यादा से ज्यादा देर तक खोदते रहें।"

बोरे पर झुके सिपाही जवाब का इन्तजार कर रहे थे। ख्वाजा नसरुद्दीन को उनकी तेज सांसें सुनाई पड़ रही थीं। ऐसा लगता था मानो वे कहीं बड़ी दूर से दौड़कर आ रहे हों।

"अच्छा सुनो," वह बोला, "कब्रिस्तान के मगरिबी कोने में कब्रों के तीन पुराने पत्थर हैं, जो एक तिकोन बनाते हैं। इनमें तिकोन के तीनों कोनों के नीचे मैंने

तीन हजार, तीन सौ तैंतीस और एक तिहाई तंके
रखे हैं . . ."

"तिकोन के तीनों कोनों के नीचे," सिपाहियों ने
साथ दोहराया मानो जहीन शागिर्द अपने उस्ता
साथ-साथ क़ुरआन के लफ़्ज़ दोहरा रहे हों : "
हज़ार, तीन सौ तैंतीस और एक तिहाई तंके . . . "

उन लोगों ने तय किया कि दो सिपाही इस
की खोज में जायें और एक वहीं पहरा दे। इस पर
नसरुद्दीन को नाउम्मीद हो जाना चाहिए
लेकिन वह इंसान के मिज़ाज से अच्छी तरह
था। उसे पूरा यक़ीन था कि तीसरा सिपाही
देर तक नहीं रुकेगा। यह ख़याल गलत नहीं
अकेला रह जाने पर सिपाही गहरी सांसें भरता,
और सड़क पर अपने हथियार खड़खड़ाता चहलक़
करता रहा। इन आवाज़ों से ख़्वाजा नसरुद्दीन
उसके ख़यालात भांपने का मौक़ा मिला। सि
को अपने तीन हज़ार, तीन सौ तैंतीस और एक ति
तंकों की भारी फ़िक्र थी। ख़्वाजा नसरुद्दीन
मौनान से वक्त का इन्तज़ार करता रहा।

"बड़ी देर लगा दी उन लोगों ने।" सि
बोला।

"शायद वे रक़म को किसी दूसरी जगह छिपा
है, ताकि आप लोग कल इकट्ठे आकर उसे ले
ख़्वाजा नसरुद्दीन ने कहा।

बात अपना असर कर गयी, सिपाही ने
सांस खींची और जम्हाई लेने का बहाना किया

"मरने से पहले कोई नसीहत भरी कहानी
चाहता हूं।" बोरे के भीतर से ख़्वाजा नसरु
ने कहा। "ऐ नेक सिपाही! शायद तुम्हें कोई
याद हो जो तुम मुझे सुना सको।"

नाराज़ होकर सिपाही बोला : "नहीं, मुझे
कहानी याद नहीं। नसीहतवाली कोई कहानी

[illegible]

"ऐ मुकद्दर, किसी राहगीर को भेज!" ख्वाजा नसरुद्दीन दुआ करने लगा, "किसी राहगीर को भेज दे! या अल्लाह, किसी राहगीर को भेज दे!"

और मुकद्दर ने एक राहगीर भेज दिया।

तकदीर और सुनहरे मौके सिर्फ उसी शख्स की मदद करने आते हैं जो पूरे यकीन के साथ आखीर तक लड़ता है (यह बात हमने पहले भी कही है, लेकिन सच्चाई दोहराने से कम नहीं होती)। ख्वाजा नसरुद्दीन अपनी जिन्दगी को बचाने के लिए पूरी ताकत और लगन से जूझ रहा था। मुकद्दर इसकी मदद से इनकार नहीं कर सकता था।

राहगीर आहिस्ता-आहिस्ता आ रहा था। उसके कदमों की आवाज से ख्वाजा नसरुद्दीन ने अन्दाजा लगाया कि वह लंगड़ा है। वह हांफ भी रहा था, जिससे जाहिर था कि वह बुजुर्ग है।

बोरा रास्ते के बीचोंबीच पड़ा था। राहगीर रुका। कुछ देर तक बोरे को देखता रहा, फिर उसे पैर से टटोला।

खरखराती आवाज में उसने कहा : "क्या हो सकता है इस बोरे में? यह आया कहां से?"

वल्लाह! ख्वाजा नसरुद्दीन को सूदखोर जाफर की आवाज सुनायी दी। उसे पहचानने देर न लगी।

अब उसे कतई शक न था कि वह बच जायगा। जरूरत सिर्फ इस बात की थी कि सिपाही लौटने में देर लगायें।

उसने हौले से खासा, ताकि सूदखोर चौंक न पड़े।

"ओहो! इसमें तो कोई आदमी है!" पीछे को हटता हुआ जाफर चिल्लाया।

"बेशक इसमें आदमी है!" आवाज बदलकर बहुत इत्मीनान से ख्वाजा नसरुद्दीन बोला, "इसमें ताज्जुब की बात क्या है?"

"ताज्जुब की बात? तुम बोरे में बन्द क्यों हो?"

"यह मेरा निजी मामला है। तुम्हें इससे क्या? तुम अपना राह लगो। मुझे अपने सवालों से परेशान न करो।"

ख्वाजा नसरुद्दीन जानता था कि सूदखोर के दिमाग में खुजली मच रही होगी और वह नहीं टलेगा।

"सचमुच बड़े ताज्जुब की बात है," सूदखोर बोला। "एक आदमी बोरे में बन्द है और बोरा सड़क पर पड़ा है। ऐ भाई, तुम्हें क्या जबरदस्ती बोरे में बन्द किया गया था?"

"जबरदस्ती?" ख्वाजा नसरुद्दीन चिढ़ता हुआ बोला। "क्या ७ सौ तके मैं इसलिए खर्च करूंगा कि कोई मुझे जबर्दस्ती बोरे में बन्द करे?"

"७ सौ तके? तुमने ७ सौ तके क्यों खर्च किये?"

"ऐ मुसाफिर अगर तुम वादा करो कि मेरी बात सुनने के बाद तुम अपने रास्ते लगोगे और मुझे परेशान न करोगे तो मैं पूरी कहानी सुना दूं। यह बोरा एक आदमी का है, जो यहां बुखारा में रहता है। इसमें जादू की ताकत है। ताकत यह है कि बीमारी और बदसूरत जिस्म को ठीक कर देता है। इसका मालिक इसे किराये पर देता है। लेकिन वह भारी रकम लेता है और हर ऐरे-गैरे को नहीं देता। ।

"ए मुकद्दर किसी राहगीर को भेज," ख्वाजा नसरुद्दीन दुआ करने लगा, "किसी राहगीर को भेज दे। या अल्लाह किसी राहगीर को भेज दे।"

और मुकद्दर ने एक राहगीर भेज दिया।

तकदीर और मुकद्दर भले सिर्फ उसी शख्स की मदद करने आते हैं जो पूरे यकीन के साथ आखीर तक लड़ता है (यह बात हमने पहले भी कही है, लेकिन सच्चाई दोहराने से कम नहीं होती)। ख्वाजा नसरुद्दीन अपनी जिन्दगी को बचाने के लिए पूरी ताकत और लगन से जूझ रहा था। मुकद्दर इसकी मदद से इनकार नहीं कर सकता था।

राहगीर आहिस्ता-आहिस्ता आ रहा था। उसके कदमों की आवाज से ख्वाजा नसरुद्दीन ने अन्दाजा लगाया कि वह लंगड़ा है। वह हांफ भी रहा था, जिससे जाहिर था कि वह बुजुर्ग है।

बोरा रास्ते के बीचोंबीच पड़ा था। राहगीर रुका। ... तक बोरे को देखता रहा, फिर उसे पैर से ...

... आवाज में उसने कहा "क्या हो सकता है ? यह आया कहां से ?"

ख्वाजा नसरुद्दीन को सूदखोर जाफर की आवाज सुनायी दी। उसे पहचानते देर न लगी।

अब उसे कतई शक न था कि वह बच जायगा। जरूरत सिर्फ इस बात की थी कि सिपाही लौटने में देर लगायें।

उसने हँसी से खासा, ताकि सूदखोर चौंक न पड़े।

"ओहो! इसमें तो कोई आदमी है!" पीछे को हटता हुआ जाफर चिल्लाया।

"बेशक इसमें आदमी है!" आवाज बदलकर बहुत इत्मीनान से ख्वाजा नसरुद्दीन बोला, "इसमें ताज्जुब की बात क्या है?"

"ताज्जुब की बात? तुम बोरे में बन्द क्यों हो?"

"यह मेरा निजी मामला है। तुम्हें इससे क्या? तुम अपनी राह लगो। मुझे अपने सवालों से परेशान न करो।"

ख्वाजा नसरुद्दीन जानता था कि सूदखोर के दिमाग में खुजली मच रही होगी और वह नहीं टलेगा।

"सचमुच बड़े ताज्जुब की बात है," सूदखोर बोला। "एक आदमी बोरे में बन्द है और बोरा सड़क पर पड़ा है। ऐ भाई, तुम्हें क्या जबरदस्ती बोरे में बन्द किया गया था?"

"जबरदस्ती?" ख्वाजा नसरुद्दीन चिढ़ता हुआ बोला। "क्या छः सौ तके मैं इसलिए खर्च करूंगा कि कोई मुझे जबर्दस्ती बोरे में बन्द करे?"

"छः सौ तके? तुमने छः सौ तके क्यों खर्च किये?"

"ऐ मुसाफिर, अगर तुम वादा करो कि मेरी बात सुनने के बाद तुम अपने रास्ते लगोगे और मुझे परेशान न करोगे तो मैं पूरी कहानी सुना दूं। यह बोरा एक अरब का है, जो यहां बुखारा में रहता है। इसमें जादू की सिफत है। सिफत यह है कि बीमारी और बदनुमा जिस्म को ठीक कर देता है। इसका मालिक इसे किराये पर देता है। लेकिन वह भारी रकम लेता है और हर ऐरे-गैरे को नहीं देता।

लंगड़ा था, मेरे कूबड़ निकला था और मैं एक आंख से काना था। मैं शादी करना चाहता हूं। लड़की का बाप अपनी बेटी को मेरी बदसूरती देखने से बचाना चाहता था। सो वह मुझे इस अरब के पास ले गया। मैंने उसे छ सौ तंके दिये और चार घंटे के लिए यह बोरा ले लिया।

"चूंकि यह बोरा अपना असर कब्रिस्तान के आस-करीब ही दिखाता है, सो सूरज डूबने के बाद मैं इस कदीमी कब्रिस्तान चला आया। मेरी होनेवाली बीवी का बाप, जो मेरे साथ आया था, मुझे इस बोरे के भीतर घुसाकर और ऊपर से रस्सा बांधकर चला गया। मुमकिन था कि किसी गैर की मौजूदगी में इलाज न हो पाये। बोरेवाले अरब ने मुझे बताया था कि जैसे ही मैं अकेला रह जाऊंगा तीन जिन जोरों से पीतल के पर खड़खड़ाते हुए आयेंगे। इन्सानों जैसी ज़ुबान में वे मुझ से पूछेंगे कि कब्रिस्तान के किस हिस्से में दस हजार तंके गड़े हैं और इसके जवाब में मैं जादू के ये बोल सुनाऊंगा · "तांबे जैसी दाल है जिसकी, उसका माथा तांबे का। उकाब के दर पर उल्लू ! ऐ जिन, तू पूछता है पता उस रकम का जो तूने छुपाई नहीं, इसलिए पलट और चूम मेरे गधे की दुम !"

"बस, जैसा उसने बताया था हू-ब-हू वैसा हुआ। जिन आये और मुझसे पूछा कि दस हजार तंके कहां गड़े हैं, मेरा जवाब सुनकर वे तैश में आ गये और मुझे पीटने लगे। लेकिन मैं अरब की हिदायतों पर चलता हुआ चिल्लाता रहा—'तांबे जैसी दाल है जिसकी, उसका माथा तांबे का . इसलिए पलट और चूम मेरे गधे की दुम।' तब जिन बोरा उठाकर मुझे ले चले . इसके बाद मुझे कुछ याद नहीं। दो घंटे बाद मुझे होश आया तो मैं बिलकुल दुरुस्त हो गया हूं और उसी जगह पड़ा हूं, जहां से वे मुझे ले गये थे; मेरा कूबड़ गायब हो गया है, पैर सीधा हो

गया है और मैं दोनों आंखों से देख सकता हूं—इसका यकीन मैंने इस सूराख से झांककर कर लिया है जो मुझसे पहले किसी और शख्स ने इस बोरे में कर दिया था। अब मैं यहां सिर्फ इसलिए बन्द हूं कि पूरी रकम अदा करने के बाद उसे बेकार जाने देना ठीक नहीं। बेशक, एक गलती मैंने की। मुझे किसी ऐसे शख्स से पहले ही समझौता कर लेना चाहिए था जिसे ये सारी बीमारियां होतीं। तब हम लोग बोरे को साझे में किराये पर ले लेते और दो-दो घंटे इसमें रहते। इस तरह इलाज में कुल तीन-तीन सौ तके खर्च होते; लेकिन अब क्या किया जाय? रकम बरबाद तो हो, लेकिन असली बात तो यह है कि मेरा इलाज मुकम्मल हो गया।

"ऐ राहगीर! तुमने पूरी कहानी सुन ली है। अब तुम अपना वादा पूरा करो, यानी अपनी राह लगो। इलाज के बाद मुझे कमज़ोरी महसूस हो रही है। बात करने में तकलीफ होती है। तुम से पहले नौ शख्स मुझ से यही सवाल कर चुके हैं और बार-बार सारी बातें दोहराते मैं थक गया हूं।"

सूदखोर ने सब बातें ध्यान से सुनीं। सिर्फ बीच-बीच में वह ताज्जुब और अचम्भा जाहिर करने के लिए "सच?" "अच्छा!" "वाकई!" कहता गया।

"ऐ बोरे में बन्द इंसान! मेरी भी सुनो!" सूदखोर बोला। "हमारी इस मुलाकात से हम दोनों को फायदा हो सकता है। तुम्हें इस बात का गम है कि तुमने किसी ऐसे साझेदार को ढूंढने की कोशिश नहीं की जिसको तुम्हारी ही तरह की बीमारियां हों। लेकिन घबराओ नहीं। देर नहीं हुई है। मैं ठीक वैसा ही शख्स हूं जैसे को तुम्हें जरूरत है। मैं कुबड़ा हूं, दाहिने पैर से लंगड़ा हूं और एक आंख से काना हूं। बोरे में बाकी दो घंटे रह सकने के लिए खुशी से तुम्हें तीन सौ तंके दे दूंगा।"

बेजा इस्तेमाल न करे। उस मेहमान को मेजबान बेइज्जती से निकाल बाहर करता है जो दावत की खुशी के माहौल का बेजा फायदा उठा कर दूसरे मेहमानों की जेब काटने की हरकत करता है। और ऐसा ही चोर या बदनाम सूदखोर जो खुशी और मुहब्बत की इस दुनिया से बाहर निकाला जा रहा था।

ख्वाजा नसरुद्दीन को उसके लिए कतई अफसोस न था, क्योंकि जाहिर था कि उसके न होने से हजारों लोगों का बोझ हल्का होगा। ख्वाजा नसरुद्दीन को सिर्फ इस बात का गम था कि इस जमीन पर यह सूदखोर ही आखिरी और अकेला मनहूस शख्स नहीं है। काश! कोई सारे अमीर-उमराओं, मुल्लाओं और सूदखोरों को एक ही बोरे में बन्द करके दोस्त तुरखान के पाक तालाब में डुबा देता! तब उनकी बदबू दरख्तों पर खिलते फूलों को मुरझा न देती। तब चिड़ियों की चहचहाहट उनकी दौलत की खनक, झूठी नसीहतों और तलवारों की झनझनाहट में न खो जाती। तब इन्सान दुनिया की खूबसूरती का लुत्फ लूटने के लिए आजाद होते। वे अपने सबसे अहम फर्ज—हर चीज में और हर वक्त खुश रहने के फर्ज—को पूरा करने को आजाद होते!

इस बीच सिपाहियों ने वक्त की कमी पूरी करने के लिए तेजी से कदम बढ़ाये। आखिरकार वे दौड़ने लगे। बोरे में धक्के और हिचकोले खाता सूदखोर इतमीनान से इस अजीबोगरीब सफर के खात्मे का इन्तजार कर रहा था। सिपाहियों के हथियारों की झनझनाहट और उनके बूटों के नीचे पत्थरों की खड़क सुनता हुआ वह सोच रहा था कि क्यों ये ताकतवर जिन उड़ नहीं पड़ते, क्यों ये अपने तांबे के पंजों को जमीन पर रगड़ते हुए मुर्गों की तरह दौड़ रहे हैं।

आखिर दूर से पहाड़ी झरने कीसी आवाज सुनाई दी। सूदखोर ने समझा कि जिन उसे पहाड़ों—शायद

जिन्नों से आविष्कार हुआ थे? उन्होंने का [illegible] किया? ऐसा सम्भव ही कैसे हो सकता था कि जिन्नों बोरों को अपने तरह पटकवाने के लिए सीढ़ियां चढ़ रहे हों? इसका पक्का करके उन्होंने बोरों को [illegible] किया। बोरों के बोझ से [illegible] किया और [illegible]। मुद्रस्तोर कराह उठा।

"अरे ओ जिन्नो!" उसने चिल्लाकर कहा। "अगर तुमने बोरों को इस तरह पटकना शुरू किया तो इलाज होगा तो उसीका, मेरे हाथ-पांव टूट जायेंगे।"

जवाब में एक जोरदार ठोकर लगी।

"पाक तुरखान तालाब की तह में बहुत जल्द तेरा इलाज हो जायगा, हरामजादे!" किसी ने कहा।

मुद्रस्तोर यकायक घबरा उठा। पाक तुरखान के तालाब का इस इलाज से क्या वास्ता? और, जब उसे अपने पास ही अपने पुराने दोस्त—वह कसम खा सकता था कि यह वही है—महल के पहरेदार और फौज के सिपहसालार अर्सला बेग की आवाज सुनाई दी तो उसकी घबराहट ताज्जुब में बदल गयी। उसका दिमाग चक्कर खाने लगा। अर्सला बेग यहां कैसे नमूदार हुआ? वह जिन्नों को रास्ते में दौर करने के लिए डांट क्यों रहा था। जिन्न क्यों जवाब देते डर से कांपते मालूम होते थे? यह तो गैर-मुमकिन था कि अर्सला बेग जिन्नात का भी सिपहसालार हो! वह कैसा करे?

तेहरान, इस्ताम्बूल, बगदाद, काबुल और दूसरे शहरों की ओर दौड़ पड़े। उनके घोड़ों की टापों से पत्थर तितर-बितर हो रहे थे, नालों की रगड़ खाकर पत्थरों से चिनगारियां निकल रही थीं।

... आधी रात के सन्नाटे में, तालाब में बोरा फेंके जाने के चार घंटे बाद, अर्सलां बेग ने तालाब पर से पहरा हटा लिया।

"वह कोई भी क्यों न हो—खुद शैतान ही क्यों न हो—चार घंटे पानी में रहने के बाद जिन्दा नहीं बच सकता।" अर्सलां बेग ने कहा। "अब उसे निकालने की जरूरत नहीं। जिस किसी की तबियत चाहे, उसकी मदमदार लाश निकाल सकता है।"

रात के अंधेरे में जैसे ही आखिरी पहरेदार गायब हुआ, शोर मचाती भीड़ फिर किनारे की तरफ बढ़ चली। मशालें, जो पहले से ही तैयार कर रखी गयी थीं और नजदीक की झाड़ियों में छिपा दी गयी थीं, जला ली गयीं। ख्वाजा नसरुद्दीन की किस्मत पर मरसिया पढ़ती औरतें मातम करने लगीं।

"हमें चाहिए कि हम उसे दीनदार मुसलमान की तरह दफनाएं।" बूढ़े नयाज ने कहा। उसके कन्धों का सहारा लिये, सकते की हालत में खड़ी गुलजान, खामोश थी।

अपने-अपने हाथों में कंटिया लिये चायखाने का मालिक अली और यूसुफ लुहार पानी में कूद पड़े। वे दोनों काफी देर तक तलाश करते रहे। उन्होंने बोरे को पकड़ लिया और कंटिया में फंसाकर किनारे घसीट लाये। काला, मशालों की रोशनी में दमकता और पतावर में लिपटा बोरा जब सतह पर आया तो औरतों ने और जोर से सियापा किया। महल से उठती जश्न की आवाजें इसमें डूब गयीं।

दर्जनों हाथ एक साथ उठे और बोरे को उठा लिया।

"मेरे पीछे-पीछे आओ।" यूसुफ ने मशाल की रोशनी से रास्ता दिखाते हुए कहा।

एक बड़े-से दरख्त के नीचे बोरा रख दिया गया। लोग उसे घेरकर खामोशी से खड़े हो गये। यूसुफ ने एक चाकू निकाला, होशियारी से बोरे को लम्बाई में काटा, लाश के चेहरे पर एक नजर डाली और चौंककर पीछे हट गया। वह मानो पत्थर बन गया था। उसकी आंखें बाहर निकली पड़ती थीं। जुबान से बोल नहीं फूट रहा था।

यूसुफ की मदद के लिए दौड़कर अली उसके पास पहुंचा। लेकिन उसकी भी वही हालत हुई। अली जमीन पर बैठ गया, एक नजर लाश पर डाली और यकायक पीठ के बल गिर पड़ा। उसकी तोंद आसमान की तरफ उठी थी।

"क्या हुआ? क्या हुआ? क्या माजरा है?" भीड़ में से आवाजें उठीं। "हमें भी देखने दो, भाई। हटो, हटो। हम भी देखें।"

रोती हुई गुलजान लाश के ऊपर झुककर दोजानू बैठ गयी। लेकिन जैसे ही किसी ने लाश की तरफ मशाल बढ़ाई, वह डर और ताज्जुब से पीछे हट गयी।

मशालें लिये आदमी चारों तरफ जमा थे। तालाब का किनारा रोशन हो उठा था। बहुत-सी आवाजें एक साथ निकलीं और रात का सन्नाटा तोड़ दिया :

"जाफर!"

"यह तो सूदखोर जाफर है।"

"जाफर, जाफर! यह ख्वाजा नसरुद्दीन नहीं। यह तो सूदखोर जाफर है!"

ताज्जुब और सकते के पहले चन्द लमहे गुजर चुके थे। अब हर शख्स शोर मचाने, चिल्लाने और धक्कम-धुक्की करने लगा। लोग एक दूसरे के कन्धों पर से [illegible] कर देखने की कोशिश करने लगे। गुलजान [illegible] ऐसी हो गयी थी कि [illegible] नमाज हर

गया।
..., माना उस जूड़ी चढ़ आयी हो।

: ११ :

तालाब पर काम पूरा हो चुकने के बाद अमीर अपने दरबारियों के साथ महल को लौट आये।

इस बात का खतरा भांपकर कि मुजरिम के पूरी तौर पर डूब चुकने से पहले ही उसे बचाने की कोशिशें की जा सकती हैं, अर्सलां बेग ने तालाब के चारों तरफ पहरेदार तैनात कर दिये थे और हुक्म जारी कर दिया था कि कोई भी तालाब के किनारे न फटकने पाये। भीड़ कुछ आगे बढ़ी, लेकिन पहरेदारों के सामने ठिठककर डगमगायी, पीछे हटी, फिर गुस्से में एक बड़ी और काली दीवार के मानिन्द खड़ी हो गयी। अर्सलां बेग ने भीड़ को तितर-बितर करने की कोशिश की, मगर लोग वहां से दूसरी जगह हट गये, अंधेरे में छिप गये, और थोड़ी देर बाद फिर उसी जगह आ खड़े हुए।

महल में खुशी के नगाड़े बज उठे। अमीर ने दुश्मन पर फतह का जश्न मनाया। सोना और चांदी चकाचौंध फैला रहे थे। केतलियां उबल रही थीं। अंगीठियां सुलग रही थीं। तम्बूरे झनक रहे थे। नगाड़े गरज रहे थे, जिससे हवा कांप रही थी। दावत के लिए इतनी रोशनी की गयी थी कि लगता था, महल में आग लग गयी है।

लेकिन महल के इर्द-गिर्द बसे शहर में सन्नाटा था। घने अंधेरे का और उदास खामोशी का कफन ओढ़े पड़ा था।

अमीर ने उस दिन बड़ी फैयाजी से इनाम बांटे। कवियों को बख्शीशें मिलीं। कसीदे गाते-गाते शायरों के गले पड़ गये। बार-बार झुककर सोने-चांदी के सिक्के बटोरने वालों की पीठों में हल्का दर्द पैदा हो गया।

१६

के मारे उसे किनारे से दूर हटा ले गया। उसे डर था कि गुलजान का दिमाग न फिर जाय। शक और यकीन के बीच डगमगाती वह कभी हंसती और कभी चिल्ला उठती। एक आखिरी नजर डालने के लिए वह लाश की तरफ दौड़ पड़ती।

"जाफर! जाफर!" की खुशी की आवाजें इतने जोर से उठीं कि सारी जश्न की आवाजें फीकी पड़ गयीं। "यह सूदखोर जाफर है! कसम से, यह जाफर है! यह देखो! यह रहा उसका बटुआ, मय रसीदों के!"

काफी वक्त गुजर जाने के बाद, जब एक शख्स के होश-हवास दुरुस्त हुए, तो उसने भीड़ की तरफ मुखातिब होकर पूछा:

"लेकिन, ख्वाजा नसरुद्दीन कहां है?"

फौरन यही सवाल सबकी जुबानों पर दौड़ने लगा। एक चिल्लाहट मच गयी:

"ख्वाजा नसरुद्दीन कहां है?"

"हमारा प्यारा ख्वाजा नसरुद्दीन कहां है?"

"हां, हां, हमारा ख्वाजा नसरुद्दीन कहां है?"

"यहां है ख्वाजा नसरुद्दीन!" एक जानी-पहचानी आवाज ने जवाब दिया। सबने ताज्जुब से घूमकर देखा तो जीता-जागता ख्वाजा नसरुद्दीन सामने नजर आया। बिना पहरेदारों के, बड़े आराम से जम्हाई और अंगड़ाई लेता हुआ, वह भीड़ की तरफ आ रहा था। कब्रिस्तान के पास ही उसे नींद आ गयी थी। इसी वजह से उसे आने में देर हो गयी थी।

"लो, यह रहा ख्वाजा नसरुद्दीन!" वह बोला। "जो कोई मुझ से मिलना चाहता हो, यहां आ जाये। ऐ बुखारा के शरीफ बाशिन्दो! तुम सब तालाब पर क्यों जमा हुए हो और यहां क्या कर रहे हो?"

"क्या कर रहे हैं? तुम पूछते हो हम यहां क्या कर रहे हैं?" सैकड़ों आवाजों ने जवाब दिया। "ऐ

के मारे उसे किनारे से दूर हटा ले गया । उसे डर था कि गुलजान का दिमाग न फिर जाय । शक और यकीन के बीच डगमगाती वह कभी हंसती और कभी चिल्ला उठती । एक आखिरी नजर डालने के लिए वह लाश की तरफ दौड़ पड़ती ।

"जाफर ! जाफर !" की खुशी की आवाजें इतने जोर से उठीं कि शाही जश्न की आवाजें फीकी पड़ गयीं । यह सूदखोर जाफर है ! कसम से, यह जाफर है ! यह देखो ! पड़ रहा उसका बटुआ, भरा रसीदों से !"

काफी वक्त गुजर जाने के बाद, जब एक शख्स के होश-हवास दुरुस्त हुए, तो उसने भीड़ की तरफ मुखा-तिब होकर पूछा :

"लेकिन, ख्वाजा नसरुद्दीन कहां है ?"

फौरन यही सवाल सबकी जबानों पर दौड़ने लगा । एक चिल्लाहट मच गयी :

'ख्वाजा नसरुद्दीन कहां है ?"

'हमारा प्यारा ख्वाजा नसरुद्दीन कहां है ?"

हां, हां, हमारा ख्वाजा नसरुद्दीन कहां है ?"

'यहां है ख्वाजा नसरुद्दीन !" एक जानी-पहचानी आवाज ने जवाब दिया । सबने ताज्जुब से घूमकर ... तो जीता-जागता ख्वाजा नसरुद्दीन सामने नजर आ । बिना पहरेदारों के, बड़े आराम से जम्हाई और ... सोता हुआ, वह भीड़ की तरफ आ रहा था । ... के पास ही उसे नींद आ गयी थी । इसी वजह से आने में देर हो गयी थी ।

...तो, यह रहा ख्वाजा नसरुद्दीन !" वह बोला । "जो मुझ से मिलना चाहता हो — यहां आ जाये । ... के शरीफ बाशिन्दो ! तुम सब तालाब पर क्यों ... हुए हो और यहां क्या कर रहे हो ?"

...या कर रहे हैं ? तुम पूछते हो हम यहां क्या ... रहे हैं ?" सैकड़ों आवाजों ने जवाब दिया । "ऐ

ख्वाजा नसरुद्दीन ! हम लोग तो यहां तुमको अलवि
कहने, तुम्हारा मातम करने और तुम्हें दफनाने आये थे
"मुझे दफनाने ?" उसने पूछा "बुखारा के नें
बाशिन्दो ! क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि ख्वा
नसरुद्दीन का मरने का वक्त अभी नहीं आया, कि
अभी भी उसका मरने का इरादा नहीं है । कब्रिस्तान
पास तो मैं आराम करने के लिए लेट गया था । तु
लोग समझ बैठे कि मैं मर गया हूं ?"

वह इतना ही कह पाया था कि चायखाने का मालिक
अली और युसुफ लुहार खुशी से चिल्लाते हुए उस पर
टूट पड़े; उन्होंने खींचकर उसे अपना का दिया ।
नयाज भी लड़खड़ाता हुआ आगे बढ़ा, मगर भीड़ का
धक्का खाकर एक तरफ जा गिरा । ख्वाजा नसरुद्दीन ने
अपने को एक बड़ी भीड़ से घिरा पाया । हर आदमी
उससे गले मिलना और उसका इस्तकबाल करना चाहता
था । और वह ? वह एक-एक से गले मिलता ठीक उस
जगह की तरफ बढ़ रहा था जहां उसे गुलजान की बेताब
और नाराज आवाज सुनाई दे रही थी । और, आखिर
जब दोनों एक दूसरे के रूबरू हुए तो गुलजान ने उसके
गले में बांहें डाल दीं । ख्वाजा नसरुद्दीन ने उसका
नकाब उलट दिया, और इतने लोगों के बीच, बेधड़क
उसका बोसा लिया । तो भी, वहां मौजूद लोगों में
किसी को भी, यहां तक कि तहजीब और कायदों
बड़े से बड़े हिमायतियों को भी, इसमें कोई बेजा
काबिले एतराज बात नहीं दिखाई दी ।

लोगों को खामोश करने और उन्हें अपनी तरफ मुखा
तिब करने के लिए ख्वाजा नसरुद्दीन ने हाथ उठाया
"तुम लोग मेरा मातम करने के लिए यहां जमा हु
थे ? बुखारा के शरीफ बाशिन्दो ! क्या तुम नहीं जानत
कि मैं मर नहीं सकता ? क्या तुम नहीं जानते कि

मैं ख्वाजा नसरुद्दीन, मियां ।
आजाद हमेशा रहा किया ।

यह झूठ न कोई बकता हूं,
मैं कभी नहीं मर सकता हूं !"

जगमगाती मशालों की चकाचौंध में खड़ा वह गा
या । भीड़ ने भी जब इन कड़ियों को दोहराना
किया तो इस गाने ने रात के अंधेरे में डूबे बुखारा
गूंजा दिया ।

मैं ख्वाजा नसरुद्दीन मियां !
आजाद हमेशा रहा किया !
यह झूठ न कोई बकता हूं,
मैं कभी नहीं मर सकता हूं !

इस खुशी से महल की खुशी का मुकाबला ही क्या ?
"अरे यह तो बताओ ख्वाजा नसरुद्दीन," कोई
ल्लाया, "कि तुमने अपनी जगह सूदखोर जाफर को
में डुबोया ।"
"आहा !" यकायक ख्वाजा नसरुद्दीन को याद
या । यूसुफ भाई ! तुम्हें मेरी कसम याद है ?"
"जरूर याद है," यूसुफ ने जवाब दिया, "और तुमने
पूरा कर दिखाया, ख्वाजा नसरुद्दीन !"
"वह है कहां ?" ख्वाजा नसरुद्दीन ने पूछा । "सूद-
र कहां है ? क्या तुमने उसका बटुआ लिया ?"
"नहीं । हमने तो उसे छुआ तक नहीं ।"
"अरे . . . रे-रे !" ख्वाजा नसरुद्दीन ने कहा ।
बुखारा के शरीफ बाशिन्दो ! शराफत और नेक ख्याल
तुम्हें पैगम्बरों से मिले, लेकिन मामूली अक्ल कम
ती है ! क्या तुम लोग नहीं जानते कि यह बटुआ
दखोर के वारिसों को मिल गया तो वे पाई-पाई कर्ज
सूल कर लेंगे ? लाओ, फौरन उसका बटुआ मुझे दो ।"
शोर मचाते, धक्कम-धुक्की करते, बीसों आदमी
ख्वाजा नसरुद्दीन के हुक्म की तामील करने दौड़ पड़े ।
बटुआ ले आये और ख्वाजा नसरुद्दीन को दे दिया ।

मानिन्द अमीर और ताज आखों वाले उसके वजीरों के रहते इसकी कोई उम्मीद नहीं—लेकिन मान लो कि तुम में से कोई कभी अमीर हो ही जाय, तो भी उसे कभी ऐसा बटुआ लेकर न चलना चाहिए, नहीं तो चौदह पुश्तों तक उसकी बदनामी रहेगी ! उसे याद रखना चाहिए कि इस दुनिया में एक ख्वाजा नसरुद्दीन भी है, जिसका हाथ बहुत सख्त और मजबूत है। तुम लोगों ने खुद देखा है कि सूदखोर जाफर को उसने क्या सजा दी है। बुखारा शरीफ के शहरियो ! अब मैं तुम लोगों से रुखसत चाहता हूँ। लम्बे सफर पर रवाना होने का वक्त आ पहुंचा है। गुलजान, क्या तुम मेरे साथ चलोगी ?"

"तुम जहां जाओगे, तुम्हारे साथ चलूंगी।" वह बोली।

बुखारा के बाशिन्दों ने ख्वाजा नसरुद्दीन को बड़ी शान-शौकत से रुखसत किया। सरायों के मालिकों ने उसकी बीवी के लिए रुई के मानिन्द सफेद एक गधा लाकर दिया—जिसकी खाल पर एक भी काला धब्बा नहीं था और जो ख्वाजा नसरुद्दीन की आवारगी के वफादार साथी भूरे गधे के पास खड़ा शान से दुम हिला रहा था। भूरे गधे को भी अपने साथी से कोई रश्क नहीं था और वह खामोश खड़ा मजे से स्वीली तिपतिया घास खा रहा था। कभी-कभी अपनी थूथनी से वह सफेद गधे को दूर भी हटा देता मानो यह जताने के लिए कि अपने हुस्न की चमक के बावजूद सफेद गधा अभी वफादारी में उसके सामने नाचीज है।

लुहार अपने औजार ले आये और जल्द ही दोनों गधों के नये नाल लगा दिये। जीनसाजों ने दो बढ़िया जीनें बना दीं — एक मखमल से मढ़ी—नसरुद्दीन के लिए दूसरी चांदी से मढ़ी—गुलजान के लिए। कामदानी के मालिक ने दो बहुत बढ़िया चीनी प्याले और दो बेश-कीमती चायदानियां दीं। खिदमतगारों में बहादुर कुम्हार

इस्पात की एक तलवार, ख्वाजा नसरुद्दीन को भेंट की जिससे वह डाकुओं से अपनी हिफाजत कर सके। कालीन बनाने वालों ने जीन पर बिछाने के लिए कालीन दिये। रस्से बनाने वाले घोड़े के बालों का रस्सा लेकर आये। इस रस्से में यह खूबी थी कि सोते हुए मुसाफिर के चारों तरफ डाल दिया जाय तो जहरीले सांप वगैरा जानवर उसके कंटीले बालों के ऊपर खिसकने की हिम्मत नहीं कर सकते थे और इस तरह मुसाफिर को कोई नुकसान न पहुंचा सकते थे।

जुलाहे, तांबागार, दर्जी, मोची—सभी अपनी-अपनी कारीगरी के तोहफे लाये। मुल्लों, अफसरों और रईसों को छोड़कर, बुखारा के सभी बाशिन्दों ने ख्वाजा नसरुद्दीन को सफर का सामान मुहैया किया।

बेचारे कुम्हार मन मारे अलग खड़े थे। ख्वाजा नसरुद्दीन को देने के लिए उनके पास कुछ नहीं था। भला कोई आदमी मिट्टी के बरतनों का क्या करे जबकि उसके पास तांबागारों के दिये बरतन थे?

यकायक सबसे बुजुर्ग कुम्हार ने, जिसकी उम्र सौ साल से भी ज्यादा थी, ऊंची आवाज में कहा:

"कौन कहता है कि हम कुम्हारों ने ख्वाजा नसरुद्दीन को कुछ नहीं दिया? क्या यह हसीन दोशीजा, इसकी दुलहन गुलजान, कुम्हारों के शरीफ और मशहूर खानदान की ही बेटी नहीं है?"

कुम्हार खुशी से "वाह-वाह! खूब कहा! खूब कहा!" कह उठे। सभी ने गुलजान को हिदायत दी कि वह ख्वाजा नसरुद्दीन की वफादार और सच्ची हमराही बने ताकि उसके खानदान के आला नाम और शोहरत को बट्टा न लगे।

"सुबह होने वाली है," ख्वाजा नसरुद्दीन ने कहा. "थोड़ी देर में ही शहर के फाटक खुल जायेंगे। मेरा और दुलहन का चुपचाप निकल जाना जरूरी है।

अगर तुम लोग हमसे रुखसत करने चले तो पहरे
समझेंगे कि बुखारा की पूरी आबादी कहीं दूसरी ज
बसने के इरादे से शहर छोड़ रही है और तब वे फा
बन्द कर देंगे और कोई भी बाहर न जाने पायेगा। ।
लिए, बुखारा के ऐ शरीफ़ बाशिन्दो ! तुम
अपने-अपने घरों को जाओ ! अल्लाह करे तुम्हें
की नींद आये और बदकिस्मती का काला साया
तुम्हारे सिर पर न पड़े ! तुम्हें कामयाबी हासिल
ख्वाजा नसरुद्दीन तुमसे रुखसत होता है। कब त
लिए ? यह मैं खुद नहीं जानता !"

एक बारीक, हल्की-सी, किरण पूरब से फूटी। ता
पर हल्का-सा कोहरा उठा। भीड़ छंटने लगी।
मशालें बुझा रहे थे और कह रहे थे :

"अल्लाह करे तुम्हारा सफ़र बखैरो-खूबी पूरा ।
अपने वतन को न भूल जाना, ख्वाजा नसरुद्दीन !"

यूसुफ़ लुहार और अली से रुखसत दिल हिला
वाली थी। मोटा अली आंसुओं पर काबू न पा
था। वे उसके लाल गोल चेहरे को गीला कर रहे

फाटक खुलने के वक्त तक ख्वाजा नसरुद्दीन
के मकान में रहा। जैसे ही शहर के ऊपर मुअज्ज़
गमज़दा आवाज़ गूंजी, ख्वाजा नसरुद्दीन और गु
अपनी मंज़िल पर रवाना हो गये। बूढ़ा नयाज़
साथ सबसे करीब के कोने तक गया—ख्वाजा नस
उसे और आगे नहीं जाने देना चाहता था। वह
वहीं खड़ा आंसुओं के पर्दे से उन्हें तब तक
रहा, जब तक मोड़ पर दोनों गायब न हो गये।
की हल्की हवा उठी और बड़े करीने से सड़क साफ़
हुई सारे सुराग मिटा चली।

नयाज़ दौड़कर घर वापस पहुंचा। वह छत
गया। वहां से शहर की दीवार के पार दूर तक दे

सकता था। वह बड़ी देर तक वहां खड़ा देखता रहा। अपनी बूढ़ी आंखों से देर तक वह सूरज से तपी, पीली पहाड़ियों को ताकता रहा, जिनमें होकर बलखाती सड़क, मुर्दे फीते की तरह दूर तक फैली हुई थी। वह देख रहा था और बराबर आंसू पोंछता जा रहा था। उसकी कोशिशों के बावजूद रुकने का नाम नहीं लेते थे। उसने इतनी देर तक इन्तजार किया कि उसे फिक्र होने लगी। वह सोचने लगा—कहीं ख्वाजा नसरुद्दीन और गुलजान सिपाहियों के हाथ में तो नहीं पड़ गये।

आखिरकार उसे बहुत दूर दो छोटे-छोटे नुक्ते दिखायी दिये . . . एक भूरा और एक सफेद। ये नुक्ते दूर होकर धीरे-धीरे छोटे होते गये। कुछ देर बाद भूरा नुक्ता पहाड़ियों में कहीं घुल-मिल गया। सिर्फ सफेद नुक्ता देर तक दिखायी देता रहा...। कभी यह पहाड़ी सलवटों में गुम हो जाता और कभी दिखायी देने लगता। आखिर, वह भी गर्म धुन्ध में गायब हो गया।

पहला पहर बीत रहा था गर्मी बढ़ रही थी। इस गर्मी से बेखबर, बूढ़ा नयाज बहुत देर तक छत पर उदास खड़ा रहा। सफेद बालों से भरा उसका सिर कांपने लगता और गला रुंध जाता। अपनी बेटी और ख्वाजा नसरुद्दीन से उसे कोई शिकायत नहीं थी। उनके लिए वह हर खुशी और आराम की दुआ कर रहा था। उसे अफसोस था तो अपने लिए। उसका घर सूना हो गया था। बुढ़ापे के अकेलेपन में अब उसके घर में खुशी के गानों और हंसी से जिन्दगी भर देने के लिए कोई नहीं था।

गर्म हवा उठी और अंगूर की बेलों में सरसराती हुई लगी। छत पर सूखते बरतनों में हवा बज पतली और आजिजी भरी आवाज उन रही थी मानो वे रुखसत होनेवालों अफसोस मना रहे हों।

अपने पीछे कोई आवाज सुनकर नयाज रोश

में आया। उसने पीछे घूमकर देखा। पड़ोस में रहने वाले तीन भाई एक-एककर सीढ़ियां चढ़ रहे थे। ये तीनों कुम्हार तन्दुरुस्त कद्दावर और खूबसूरत भाई थे। नयाज के पास पहुंच कर वे अदब से झुके :

"नयाज साहब," सबसे बड़ा भाई बोला, "आपकी बेटी ख्वाजा नसरुद्दीन के साथ चली गयी। लेकिन इसका आपको गम या अफसोस नहीं होना चाहिए, क्योंकि दुनिया का यही रहन है। हिरनी हिरन के बिना नहीं रह सकती। गाय सांड के बिना नहीं रह सकती और बत्तख अपने नर के बिना नहीं रह सकती। फिर भला कोई हसीन दोशीजा एक सच्चे और वफादार के बिना कैसे रह सकती है? अल्लाह ने मावलक

सकता था। वह बड़ी देर तक वहां खड़ा देखता रहा अपनी बूढ़ी आंखों से देर तक वह सूरज से तपी, मटमैली पहाड़ियों को ताकता रहा, जिनमें होकर बलखाती सड़क, मरे फीते की तरह दूर तक फैली हुई थी। वह देख रहा था और बराबर आंसू पोंछता जा रहा था जो उसकी कोशिशों के बावजूद रुकने का नाम नहीं लेते थे। उसने इतनी देर तक इन्तजार किया कि उसे फिक्र होने लगी। वह सोचने लगा—कहीं ख्वाजा नसरुद्दीन और गुलजान सिपाहियों के हाथ में तो नहीं पड़ गये।

आखिरकार उसे बहुत दूर दो छोटे-छोटे नुक्ते-से दिखायी दिये . . एक भूरा और एक सफेद। ये नुक्ते दूर होकर धीरे-धीरे छोटे होते गये। कुछ देर बाद भूरा नुक्ता पहाड़ियों में कहीं घुल-मिल गया। सिर्फ सफेद नुक्ता देर तक दिखायी देता रहा...। कभी वह पहाड़ी सलवटों में गुम हो जाता और कभी दिखायी देने लगता। आखिर, वह भी गर्म धुन्ध में गायब हो गया।

पहला पहर बीत रहा था गर्मी बढ़ रही थी। इस गर्मी से बेखबर, बूढ़ा नियाज बहुत देर तक छत पर उदास खड़ा रहा। सफेद बालों से भरा उसका सिर कांपने लगता और गला रुंध जाता। अपनी बेटी और ख्वाजा नसरुद्दीन से उसे कोई शिकायत नहीं थी। उनके लिए वह हर खुशी और आराम की दुआ कर रहा था। उसे अफसोस था तो अपने लिए। उसका घर सूना हो गया था। बुढ़ापे के अकेलेपन में अब उसके घर में खुशी के गानों और हंसी से जिन्दगी भर देने के लिए कोई नहीं था।

गर्म हवा उठी और अंगूर की बेलों में सरसराती हुई धूल उड़ाने लगी। छत पर सुराही-बरतनों में हवा बज उठी। ऐसी पतली और आजिजी भरी आवाज उन बरतनों से निकल रही थी मानो वे रुखसत होनेवालों के बिछोह में अफसोस मना रहे हों।

में आया। उसने पीछे घूमकर देखा। पड़ोस में रहने वाले तीन भाई एक-एककर सीढ़ियां चढ़ रहे थे। ये तीनों कुम्हार तन्दुरुस्त कद्दावर और खूबसूरत भाई थे। नयाज के पास पहुंच कर वे अदब से झुके :

"नयाज साहब," सबसे बड़ा भाई बोला, "आपकी बेटी ख्वाजा नसरुद्दीन के साथ चली गयी। लेकिन इसका आपको गम या अफसोस नहीं होना चाहिए, क्योंकि दुनिया का यही रहन है। हिरनी हिरन के बिना नहीं रह सकती। गाय सांड के बिना नहीं रह सकती और बतख अपने नर के बिना नहीं रह सकती। फिर भला कोई हसीन दोशीजा एक सच्चे और वफादार साथी के बिना कैसे रह सकती है? अल्लाह ने मखलूक को जोड़ों से बनाया है जो यहां दुनिया में रहते हैं। उसने घास तक में नर और मादा के जोड़े बनाये हैं।

"लेकिन आपका बुढ़ापा गम में न कटे, नयाज साहब, इसके लिए हम तीनों भाइयों ने एक फैसला किया है जो आपसे कहने आये हैं। अब सुनिए : जो ख्वाजा नसरुद्दीन का रिश्तेदार है, वह बुखारा के शहरियों का रिश्तेदार है और इस तरह, नयाज साहब, आप हमारे रिश्तेदार हैं। आप जानते ही हैं कि पिछले साल आपके दोस्त और हमारे अजीज बालिद मरहूम मुहम्मद अली साहब को हमने रोते-बिलखते दफनाया था। और अब हमारे घर में अलाव के पास खानदान के बुजुर्ग की जगह खाली है। रोजाना इज्जत से सफेद दाढ़ी देखने की खुशी से हम महरूम हैं और सफेद दाढ़ी के बिना—जैसे कि मासूम बच्चे की किलकारी के बिना—घर सूना रहता है। किसी भी इन्सान को [illegible] सभी नाचीज हासिल होती है जब उसके एक तरफ हमारे बुजुर्ग की सफेद दाढ़ी हो जिसने उसे पैदा किया है, और दूसरी तरफ पालने में पड़ा वह नन्हा मुन्ना हो जिसे खुद उसने पैदा किया है।

"इसलिए हम नयाज साहब, हम आपसे [illegible]

सकता था। वह बड़ी देर तक वहां खड़ा देखता रह
अपनी बूढ़ी आंखों से देर तक वह सूरज से तपी, म
धीली पहाड़ियों को ताकता रहा, जिनमें होकर बलखा
सड़क, पूरी पीत की तरह दूर तक फैली हुई थी। व
देख रहा था और बराबर आंसू पोंछता जा रहा था।
उसकी कोशिशों के बावजूद रुकने का नाम नहीं ले
थे। उसने इतनी देर तक इन्तजार किया कि उसे दि
होने लगी। वह सोचने लगा—कहीं खोजा नमरुद्दी
और गुलजान सिपाहियों के हाथ में तो नहीं पड़ गये

आखिरकार उसे बहुत दूर दो छोटे-छोटे नुक्ते
दिखायी दिये एक भूरा और एक सफेद। ये नुक्ते
दूर होकर धीरे-धीरे छोटे होते गये। कुछ देर बाद
भूरा नुक्ता पहाड़ियों में कहीं घुल-मिल गया। सिर्फ
सफेद नुक्ता देर तक दिखायी देता रहा...। कभी वह
पहाड़ी सलवटों में गुम हो जाता और कभी दिखायी देने
लगता। आखिर, वह भी गर्म धुन्ध में गायब हो गया।

पहला पहर बीत रहा था गर्मी बढ़ रही थी। इस गर्मी
से बेखबर, बूढ़ा नयाज बहुत देर तक छत पर उदास
पड़ा रहा। सफेद बालों से भरा उसका सिर कांपने लगता
और गला रुंध जाता। अपनी बेटी और खोजा नसरुद्दीन
से उसे कोई शिकायत नहीं थी। उनके लिए वह हर खुशी
और आराम की दुआ कर रहा था। उसे अफसोस था तो
अपने लिए। उसका घर सूना हो गया था। बुढ़ापे के
अकेलेपन में अब उसके घर में खुशी के गानों और हंसी
जिन्दगी भर देने के लिए कोई नहीं था।
गर्म हवा उठी और अंगूर की बेलों में सरसराती हुई
उड़ाने लगी। छत पर सुराही-बरतनों में हवा भ
ऐसी पतली और आजिजी भरी आवाज उन
बरतनों से निकल रही थी मानो वे रुखसत होनेवालों
बिछोह में अफसोस मना रहे हों।

में आया। उसने पीछे घूमकर देखा। पड़ोस में रहने वाले तीन भाई एक-एककर सीढ़ियां चढ़ रहे थे। ये तीनों कुम्हार तदुरुस्त कठावर और खूबसूरत भाई थे। नयाज के पास पहुंच कर वे अदब से झुके :

"नयाज साहब," सबसे बड़ा भाई बोला, "आपकी बेटी ख्वाजा नसरुद्दीन के साथ चली गयी। लेकिन इसका आपको गम या अफसोस नहीं होना चाहिए, क्योंकि दुनिया का यही रहन है। हिरनी हिरन के बिना नहीं रह सकती। गाय सांड के बिना नहीं रह सकती और बतख अपने नर के बिना नहीं रह सकती। फिर भला कोई हसीन दोशीजा एक सच्चे और वफादार साथी के बिना कैसे रह सकती है? अल्लाह ने मखलूक को जोड़ों से बनाया है जो यहां दुनिया में रहते हैं। उसने घास तक में नर और मादा के जोड़े बनाये हैं।

"लेकिन आपका बुढ़ापा गम में न कटे, नयाज साहब, इसके लिए हम तीनों भाइयों ने एक फैसला किया है जो आपसे कहने आये हैं। अब सुनिए : जो ख्वाजा नसरुद्दीन का रिश्तेदार है, वह बुखारा के बाशिंदों का रिश्तेदार है, और इस तरह, नयाज साहब, आप हमारे रिश्तेदार हैं। आप जानते ही हैं कि पिछले साल आपके दोस्त और हमारे अजीज वालिद मरहूम मुहम्मद अली साहब को हमने रीतेरिवायात दफनाया था। और अब हमारे घर से अनाथ के पास खानदान के बुजुर्ग की जगह खाली है। शेजाना इज्जत से सफेद दाढ़ी देखने की खुशी से हम महरूम हैं और सफेद दाढ़ी के बिना—और बिना [illegible] हँसता रहता है किसी भी इन्सान की [illegible] तभी तस्कीन हासिल होती है जब उसके एक तरफ [illegible] की सफेद दाढ़ी हो जिसने उसे पैदा किया है, और दूसरी तरफ पालने में पड़ा वह नन्हा मुन्ना हो जिसे खुद उसने पैदा किया है।

"इसलिए ऐ नयाज साहब, हम आपसे दुनिया [illegible]

आये हैं कि आप हमारे आंसुओं की फरियाद सुनें और हमारी बात नामंजूर न करें। अब आप हमारे घर चलें, हम तीनों के वालिद और हमारे बच्चों के दादा बनें।"

उन भाइयों ने इतनी जिद पकड़ी कि नयाज से इनकार नहीं करते बना। नयाज उनके खानदान का बाबा बन गया और उसे पूरी इज्जत बख्शी गयी। इस तरह बुढ़ापे में नयाज को ईमानदारी और नेक जिन्दगी का यह सबसे बड़ा सिला मिला जो इस दुनिया में मुसलमानों के लिए सबसे बड़ी न्यामत है। वह नयाज बाबा बन गया—एक बड़े खानदान का बुजुर्ग, जिसके चौदह नाती-पोते थे। अंगूरों और सहतूत के रस से सने गन्दगी गालों के एक के बाद दूसरे जोड़े को देखकर उसकी आंखें खुशी से चमक उठतीं। अब कभी उसके कान खामोशी से परेशान न होते थे, यहां तक कि कभी-कभी तो इस शोरगुल से घबराकर अपने पुराने मकान में आराम करने चला जाता और उन दोनों की याद में खो जाता जो उसके दिल के इतने नजदीक थे और अब इतनी दूर चले गये थे—न जाने कहां।

बाजार के दिन नयाज बाजार जाता और दुनिया के कोने-कोने से गुजरते आये काफिलों के सरदारों से पूछता कि क्या उन्होंने सड़क पर दो मुसाफिरों को देखा है—एक मर्द, जो भूरे गधे पर सवार था; और एक औरत—जो ऐसे सफेद गधे पर सवार थी जिसके एक भी काला धब्बा नहीं? रेगिस्तान धूप से तपे माथों पर शिकन डालकर थोड़ी देर सोचते फिर सिर हिलाकर इन्कार कर देते : नहीं, उन्होंने ऐसे मुसाफिर नहीं देखे थे।

हमेशा की तरह ख्वाजा नसरुद्दीन बिलकुल लापता हो गया था..

की तरह किसी ऐसी जगह नमूदार होने के लिए कतई उम्मीद नहीं थी...।

आखिरी मंजिल

जो एक नये सफर की पहली मंजिल बन सकती है

> "मैंने सात सफर किये और हर सफर एक ऐसा अचम्भा है जो दिमाग को परेशान किये रहता है।"
>
> —सिंदबाद जहाजी

और वह वहां जा पहुंचा जहां उसकी कतई उम्मीद नहीं थी। वह इस्तम्बूल में नमूदार हुआ।

यह हुआ अमीर का खत सुलतान को मिलने के तीसरे दिन। हजारों नकीब इस शानदार बंदरगाह के गांवों व शहरों में जाकर ख्वाजा नसरुद्दीन की मौत का एलान कर रहे थे। मसजिदों में मुल्ला अमीर का खत पढ़ते और सुबह-शाम दो बार अल्लाह का शुक्र अदा करते।

महल के बाग में, फव्वारों की नम फुहारों से घने चनारों के साये में, सुलतान जश्न मना रहे थे। उनके चारों तरफ वजीरों, आलिमों शायरों व दूसरे मुसाहिबों की भीड़ थी जो बख्शीश और इनाम की उम्मीद में खड़े थे। सुराहियां हलवे और गर्म पकवानों से भरी किश्तियां लिये हब्शी भीड़ में घूम रहे थे। सुलतान आज बहुत खुश थे और मुस्करा रहे थे।

गांवों को दावत देते हुए उन्होंने शायरों और आलिमों क

पूछा : "क्या बात है कि गर्मी के बावजूद हवा में ताज़ा खुशबू और खुशगवार नमी है ?"

इसके जवाब में सुलतान के हाथ के घोड़े के बदन को मासूमी निगाहों से ताकते हुए उन्होंने कहा : "हमारे अज़ीमुश्शान शहंशाह की शान ने हवा में खुशगवार नमी पैदा कर दी है और उसमें खुशबू इसलिए है कि काफ़िर ख़ोजा नसरुद्दीन की नापाक रूह ने सारी दुनिया में ज़हर फैलानेवाली अपनी गन्दी बदबू फैलाना बन्द कर दिया है।"

इस्तम्बूल में नेकी और अमन कायम रखनेवाला महल के पहरेदारों का सरदार कुछ दूर खड़ा देख रहा था कि सब काम कायदे-कानून से चल रहा है या नहीं। बुखारा के मातहत के अर्सलां बेग से उसमें फर्क था तो सिर्फ इतना कि यह शख्स अर्सलां बेग से ज्यादा दुबला-पतला मगर उससे भी ज्यादा बेरहम था। उसकी ये दोनों खुसूसियतें इतनी जुड़ीमिली थीं कि इस्तम्बूल के बाशिन्दों ने इन पर बहुत पहले गौर कर लिया था और हर हफ्ते उसके गुसल के दिन महल के नौकरों से पूछते कि सरदार का वज़न बढ़ा है या घटा। अगर खबर उनके माफ़िक न होती तो महल के पड़ोस के सभी शहरी अपने घरों से तब तक उसके गुसल के अगले दिन न निकलते जब तक गजभर न हो जाते। वही खौफनाक शख्स इस वक्त सबसे अलग खड़ा हुआ था। लम्बी-दुबली गर्दन पर उसका साफेदार सिर इस तरह टंगा था, गोया एक बांस पर चढ़ा दिया गया हो (इस्तम्बूल के बहुत से बाशिन्दे इस तस्वीर को सुनकर चैन की सांस लेते)।

सब कुछ ठीक चल रहा था। दावत बदस्तूर जारी थी। किसी खतरे का अन्देशा नहीं था। महल के गुमाश्ते को दरबारियों की भीड़ से बड़ी होशियारी से सरदार की तरफ बढ़कर उसके कान में कुछ कहते किसी ने भी नहीं देखा। सरदार चौंका। उसके चेहरे का रंग बदल गया। वह

तजी से बाहर निकल गया। गुमाश्ता उसके पीछे-पीछे चल दिया। चन्द मिनट बाद ही वह फिर लौटा। उसका रंग पीला पड़ रहा था। मुंह बराबर चल रहा था, हालांकि आवाज नहीं निकल रही थी। कोहनी से दरबारियों को एक तरफ हटाता वह सुलतान के पास पहुंचा और कौर्निश में दोहरा झुक गया :

'ऐ शहंशाहे आज़म !...'

"क्यों ? अब क्या मुसीबत है ?" सुलतान ने चिढ़कर कहा। "क्या आज के दिन भी तुम हवालात और कोड़ों की ख़बर अपने तक नहीं रख सकते ? बोलो, क्या बात है ?"

"ऐ राज़ीदा, ऐ अज़ीमुश्शान सुलतान ! मेरी ज़ुबान बोलने से इनकार करती है।"

सुलतान ने कुछ परेशान होकर भवें तानीं। सरदार ने फुसफुसाकर कहा :

"ऐ आका ! वह इस्तम्बूल में ही है।"

"कौन ?" सुलतान ने कड़ककर पूछा, हालांकि वह समझ गये थे कि सरदार किस शख़्स का ज़िक्र कर रहा है।

"ख़ोजा नसरुद्दीन !!"

यह नाम सरदार ने तो बहुत धीमे से लिया था, लेकिन दरबारियों के कान तेज थे। उन्होंने सुन लिया। महल के पूरे मैदान में कानाफूसी फैल गयी।

"ख़ोजा नसरुद्दीन इस्तम्बूल में है !"

"तुम्हें कैसे मालूम ?" यकायक सुल्तान ने खोखली आवाज़ में पूछा। "तुम्हें कैसे मालूम ? तुमसे किसने कहा ? यह हो ही कैसे सकता है जब कि बुख़ारा के अमीर का यह ख़त हमारे हाथ में है जिसमें उन्होंने शाही यकीन दिलाया है कि ख़ोजा नसरुद्दीन अब ज़िन्दा नहीं है ?"

सरदार ने महल के गुमाश्ते को इशारा किया और वह सुलतान के पास एक शख़्स को ले आया। इस शख़्स की नाक चपटी थी, चेहरा चेचक के दागों से भरा था, आंखें पीली व कानी थीं।

"ऐ शहंशाह !" सरदार ने कहा। "यह शख्स बुखारा के अमीर के दरबार में बहुत दिनों तक जासूस का काम कर चुका है और ख्वाजा नसरुद्दीन को बखूबी पहचानता है। जब यह शख्स इस्ताम्बूल आया तो मैंने इसे जासूस का काम दे दिया और इसी ओहदे पर यह अब भी. . ."

"तू ने उसे इस्तम्बूल में देखा ?" सुलतान जासूस की तरफ मुड़े और पूछा। "तू ने उसे अपनी आंखों से देखा ?"

जासूस ने हामी भरी।

"शायद तूने गलती की है ?"

जासूस ने यकीन दिलाया। नहीं, इस मामले में वह गलती कर ही नहीं सकता था। ख्वाजा नसरुद्दीन के साथ एक औरत भी थी, जो सफेद गधे पर सवार थी।

"तू ने उसे वहीं क्यों नहीं पकड़ लिया ?" सुलतान चिल्ला उठे। "तूने पकड़कर सिपाहियों के हवाले क्यों नहीं कर दिया ?"

घुटनों के बल गिरकर कांपते हुए जासूस ने जवाब दिया : "ऐ संजीदा सुलतान ! बुखारा में एक मर्तबा ख्वांजा नसरुद्दीन के हाथों पड़ गया था। अल्लाह की मेहरबानी से ही मेरी जान बची थी। आज सवेरे जब मैंने उसे इस्तम्बूल की सड़कों पर देखा तो डर के मारे मेरी नजर धुंधली पड़ गयी। जब तक मेरे होश-हवास दुरुस्त हों तब तक वह गायब हो चुका था।"

सिपाहियों के सरदार को घूरते हुए, जो अदब से झुका खड़ा था, सुलतान चिल्लाये :

"तो ये हैं तेरे जासूस ? मुजरिम को देखते ही डर के मारे इनके होश फाख्ता हो जाते हैं ?"

ठोकर मारकर सुलतान ने बेचारे जासूस को एक तरफ हटाया, उठकर खड़े हुए और आरामगाह की तरफ चल दिये। पीछे-पीछे गुलामों की कतार भी चल पड़ी।

वजीर शायर व आलिम बेचैन भीड़ में से बाहर निकलने के रास्ते की तरफ भाग चले। कुछ देर बाद,

सरदार को छोड़कर, बाग में एक भी शख्स बाकी नहीं रहा। मजबूरी में खाली जगह को घूरता हुआ सरदार फव्वारे के संगमरमर के किनारे धम से बैठ गया। बहुत देर तक वहां बैठा वह पानी के हंसने और हौले-हौले उछलने की आवाज सुनता रहा। यकायक वह इतना सूख और सिकुड़ गया कि अगर इस्ताम्बूल के बाशिन्दे उसे देख पाते तो उनमें भगदड़ मच जाती। जूते छोड़-छाड़ वे हर तरफ को भाग निकलते।

इस बीच चेचकरू मुखबिर शहर की गर्म गलियों से भागता हुआ तेजी से समन्दर की तरफ आ रहा था। उसकी सांस फूल रही थी। वहां उसने एक अरबी जहाज देखा, जो रवाना होने ही वाला था। जहाज के मालिक को जरा भी शक नहीं था कि यह शख्स कोई भागा हुआ मुजरिम है। उसे जहाज पर ले जाने के लिए उसने बहुत ही ऊंचा किराया तलब किया। मोल-भाव करने के लिए जासूस रुका नहीं। फौरन जहाज पर चढ़ गया और एक गन्दे कोने में छिपकर लद से गिर पड़ा। बाद में जब इस्ताम्बूल की पतली मीनारें नीले कोहरे में छिप गयीं और ताजी हवा से पाल भर गये, वह अपनी पनाह की जगह से निकला, पूरे जहाज में घूमा और हर चेहरे को गौर से घूरने लगा। जब उसे यकीन हो गया कि ख्वाजा नसरुद्दीन जहाज पर नहीं है, तो उसने चैन की सांस ली।

तब से वह चेचकरू जासूस लगातार डर और अन्देशे की जिन्दगी काटता रहा। जिस शहर भी वह जाता—बुखारा, काहिरा, तेहरान, दमिश्क—कहीं भी तीन महीने से ज्यादा चैन से नहीं गुजार पाता, क्योंकि ख्वाजा नसरुद्दीन हर जगह जरूर जा पहुंचता और जासूस उससे मुलाकात हो जाने के डर से दूर भाग निकलता। यहां ख्वाजा नसरुद्दीन की तसवीर एक बहुत बड़े तूफान में देना मुनासिब है, जिसकी तेज [illegible]

पत्तियां और घास उखड़कर लगातार भागा करत
इस तरह दूसरों पर मुसीबतें ढाने का बदला
नौचक्कू जासूस को मिल गया।

दूसरे दिन से ही इस्तम्बूल में अजीबोगरी
दिलचस्प वाकयात होने लगे। . . लेकिन ऐसी बातो
चर्चा नहीं करनी चाहिए जो कहने वाले ने खु
देखी हों और ऐसे मुल्कों का जिक्र न करना चा
जहां किस्सा कहने वाला खुद न गया हो। इसी
इन लफ्जों से हम अपनी कहानी का आखिरी हि
खत्म करते हैं। कोई होशियार और मेहनती शख्स
ख्वाजा नसरुद्दीन के इस्तम्बूल, बगदाद, तेहर
दमिश्क और दूसरे मशहूर शहरों के सफर की न
किताब की शुरुआत बना सकता है।